y Arya Samaj

Agani—
shikha

Vol 17
1986-87

G... V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
079507

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

14 MAY 1995
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
H284/1906/द्विवा।।:.17
Stock Verification-2014
Stock Verification-2014
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4201
079507
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार
No 81
079507

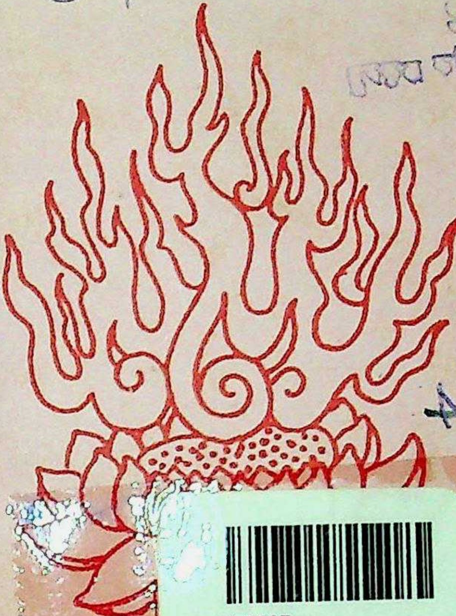

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

अगस्त १९८६ -87 वर्ष १७, अंक १, पूर्णांक १९३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश		१
संपादकीय : धर्म !	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
१५ अगस्त		८
स्वप्न और सिद्धियां		२९
भौतिक जगत्में अवतरण		३५
गीर्वाण-वाणी		३६
सोसायटी समाचार		३८

छपाईके खर्चे बढ़ते जा रहे हैं। अग्निशिखा और पुरोधाके चंदेसे हमारा खर्च पूरा नहीं पड़ता। कृपया अधिक-से-अधिक आजीवन सदस्य बनानेकी कोशिश कीजिये। दोनोंका सम्मिलित शुल्क है ४००; एक मुश्त या किस्तोंमें।

चेक न भेजें, उसमें बहुत असुविधा होती है। ड्राफ्ट, धनादेश या पोस्टल आर्डर भेज सकते हैं। अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

संपर्क : संपादक अग्निशिखा एवं पुरोधा, पांडिचेरी–६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेश

जीवनका महान् नियम

जीवनका महान् नियम यह है कि कोई योजना नहीं होनी चाहिए किन्तु एक अटल लक्ष्य रहना चाहिए। अगर इच्छा उस लक्ष्यपर केंद्रित हो जाय तो वह उसे संपादित करनेमें लग जाती है, तब परिस्थितियां ही उसे सही राह सुझाएंगी; किन्तु आयोजक हमेशा अप्रत्याशितसे ठोकर खाता है।

—श्रीअरविंद

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

धर्म !

भारत धर्मप्राण देश रहा है और उसकी आजकलकी समस्याओंका हल उसे वहींसे मिलेगा ऐसा कहनेवाला आज सनकी कहलाएगा क्योंकि हमारा राष्ट्र, जो स्वाधीनताकी नयी वर्षगांठ मनाने जा रहा है, स्वाधीनता-प्राप्तिके साथ अपने-आपको धर्मनिरपेक्ष घोषित कर चुका है, ऐसे राष्ट्रसे यह कहना कि समस्याओंका हल धर्मसे प्राप्त होगा पागलपन ही है। किंतु प्रत्येक शब्दका अर्थ हर मनुष्य अपने ढंगसे समझता है। ऐसे ही अनेक अनर्थोंका शिकार रहा है यह अति पुरातन शब्द धर्म।

सामान्यत: उसका अर्थ किया जाता है पूजा पाठ करना, माला जपना, रोज मंदिरमें जाना, शादी, श्राद्धके अवसरोंपर खास कर्मकाण्ड करना। इस धर्म शब्दकी गड़बड़के कारण हमने अपने देशमें दंगे और मार-काटको खूब प्रश्रय दिया और अब भी देते जा रहे हैं इसलिये 'धर्म'को उसके सच्चे अर्थमें समझना हमारा पहला कर्तव्य बन जाता है। यह तो सब जानते हैं कि ऐसी गहन समस्याका हल कोई मनीषी ही दे सकता है।

ऐसे ही कवि, मनीषी और मानवताके प्रेमी श्रीअरविंदने हमें धर्मका कहीं अधिक सच्चा और मनोवैज्ञानिक अर्थ बताया है। उनका कहना है कि प्रत्येकको सबसे पहले अपने अंतरतम 'स्व'को पाकर उसकी आज्ञाके अनुसार छोटी-से लेकर बड़ी सब क्रियाएं और निर्णय करने चाहिये क्योंकि 'स्व' उसका वह दिव्य रूप है जो भागवत चेतनाका एक अंश है। उसके अनुसार जीनेका अर्थ हुआ अपने धर्म, अपनी आत्मा और प्रकृतिके स्वभावके धर्मके अनुसार जीना। उनका कहना है प्रत्येकका धर्म अलग होगा, जितने मानव उतने ही धर्म होंगे। यह व्याख्या हमें धर्मके संकीर्ण रूपसे मुक्त करती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और धर्मको विश्वव्यापी मानव चरित्रके विकासके लिये नया आयाम देती है; तब धर्म सच्चे रूपमें, अपने असली रूपमें प्रकट होगा और उसका चिर-परिचित शीर्षक 'सनातन धर्म' सार्थक होगा।

यह कोई संयोग नहीं है कि श्रीअरविंदके जन्म-दिवसपर ही भारतको स्वाधीनता प्राप्त हुई। यह भगवान्‌की ओरसे मानों उन्हें जन्म-दिवसका उपहार मिला था क्योंकि भारतकी स्वाधीनताके लिये उन्होंने इंग्लैंडमें रहते हुए प्रयास शुरू किया था और भारतमें आनेके बाद तो वे पूरी तरह स्वाधीनता-संग्राममें कूद पड़े थे। जब वे अलीपुर जेलमें बंद थे और उन्हें श्रीकृष्णके दर्शन प्रत्येक प्राणी और वस्तुमें हुए तो उनके जीवनकी दिशा बदल गयी किंतु तब भी अपने देशको वे भूले नहीं। उनको भारतके सच्चे रूपके दर्शन हुए और उन्होंने घोषणा की कि भारतका सच्चा कार्य है अन्य राष्ट्रोंको आध्यात्मिकताकी ओर ले जाना। आजकल पश्चिममें आध्यात्मिकताकी ओर जो झुकाव है, वह उनके दर्शनकी पुष्टि करता है।

उनकी दृष्टिमें भारतका कार्य है एक नये जीवन दर्शनका प्रचार और प्रसार जिसके द्वारा मानव अपने सीमित और संकीर्ण मनसे ऊपर उठकर एक नये क्षितिज तक पहुंच पाए।

उनकी सान्ध्य वार्तासे यह उद्धरण उनकी संसारके प्रति उदासीनता नहीं बल्कि अनासक्त चिंतन प्रकट करता है। पन्द्रह अगस्तके बारेमें बोलते हुए वे कहते हैं, "इस दिवसको आत्मोत्सर्गका, आत्म-परीक्षणका और भावी प्रगतिकी तैयारीका दिवस मानना चाहिए। संभव हो तो एक विशेष शक्तिकी ओर ग्रहणशील होना चाहिए जो कार्यको आगे ले जाएगी।

"यह प्रत्येक व्यक्तिमें तभी किया जा सकता है जब वह सच्ची मनोवृत्ति अपनाए और उस दिन उचित परिस्थितिमें रहे।"

तो हम उसीके लिये प्रयत्न करें। यह अंक श्रीअरविंदके ही शब्दोंमें आपकी सहायता करेगा।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

अगस्त

१. सभी कार्योंमें, चाहे वे बौद्धिक हों या सक्रिय, तुम्हारा आदर्श वाक्य होना चाहिए 'याद करो और अर्पित करो'। तुम जो कुछ करो भगवान्के अर्घ्यके रूपमें करो। यह तुम्हारे लिये अच्छा अनुशासन होगा। यह तुम्हें बहुत-सी मूर्खतापूर्ण और बेकार चीजें करनेसे बचाएगा।

२. जब कभी तुम पाओ कि तुम कोई काम भगवान्की उपस्थिति-का अनुभव किए विना कर सकते हो और फिर भी पूरी तरह आराममें हो तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि तुम्हारी सत्ताका वह अंश समर्पित नहीं है।

३. भगवान्को संपूर्ण आत्म-दान करनेका करनेका एक तरीका है: अभिमानको छोड़कर पूर्ण नम्रतामें उनके चरणोंमें साष्टांग प्रणाम करना।

४. भगवान्के अर्पित होनेका एक तरीका है:
अपने-आपको उनके सामने फैलाना, जिस तरह पुस्तक खोली जाती है उस तरह सिरसे पांवतक अपने शरीरको खोलना, सारे केंद्र उनके आगे अनावृत करना ताकि उनके सारे क्रिया-कलाप पूरी सचाईमें दिखाई दें, जो किसी भी चीजको छिपने नहीं देती।

५. समर्पणका एक उपाय है कि उनके बाहुओंमें सुखसे बैठ जाना, प्रेमार्त और पूर्ण विश्वासके साथ उनमें लीन हो जाना।

६. उदाहरणके लिये तुमने किसी चीजके लिये वहुत कठोर श्रम किया, ताकि कुछ घटित हो, तुमने बहुत समय, शक्ति, संकल्प उसके लिये दिये और वह भी अपने लिये नहीं, बल्कि मान लो, भागवत कार्यके लिये; यह सारी मुसीबत झेलनेके बाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा काम करनेके बाद, सारे प्रयत्नोंके बाद, अब मान लो सब कुछ उल्टा हो जा रहा है, सफल नहीं हुआ तो अगर तुम सचमुच समर्पित हो तो कहोगे, "अच्छा है, अच्छा हुआ, ठीक है। मैं जो कर सकता था, मैंने किया। अब यह मेरा संकल्प नहीं, भगवान्‌का संकल्प है। मैं पूरी तरह उनके निर्णयको स्वीकार करता हूं।

७. जब तुम कुछ काम करो, तो हमेशा वे दो उपस्थित रहते हैं; मन और प्राण। तुम जो करो उसमेंसे वे अपने लिये लाभ या कुछ न कुछ खींचनेकी कोशिश करते रहते हैं: व्यक्तिगत संतोषका लाभ, सुखका लाभ, अपने बारेमें तुम्हारी जो अच्छी राय है उसका लाभ। अपने-आपको धोखा न देना बड़ा कठिन काम है।

८. तुम्हारे पास जो कुछ है, उसे देना प्रारंभ है।

९. तुम जो कुछ करो, उसे देना, यह राह है।

१०. वह सब दे देना जो तुम हो, यह है पूर्ति।

११. भगवान् मार्ग-दर्शन कर सकते हैं, हांकते नहीं।
'मनुष्य' नामक हर मानसिक सत्ताको आंतरिक स्वाधीनता दी गयी है कि वह भगवान्‌का नेतृत्व स्वीकारे या न स्वीकारे; अन्यथा सच्चा आध्यात्मिक विकास कैसे संभव होगा ?

१२. लड़खड़ाती श्रद्धा और मंद गति तथा आंशिक समर्पणकी भी शक्ति और परिणाम होते हैं वरना विरले ही साधना कर पाएंगे।

१३. केंद्रकी श्रद्धासे मेरा मतलब है आत्मामें श्रद्धा या पीछे स्थित केंद्रीय सत्तामें श्रद्धा, वह तब भी बनी रहती है जब मन शंका करता है और प्राण निराश हो जाता है तथा शरीर जवाब देना चाहता है।

१४. जैसा कि मैं तुमसे कह चुकी हूं, सब अप्रिय चीजोंसे पिंड छुड़ाने और तुम्हारे तथा भगवान्‌के बीचका परदा हटानेका परम रहस्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है समर्पण; संपूर्ण और निरंतर समर्पण, सभी बुरे विचारों और बुरी वृत्तियोंको समर्पण द्वारा विदा कर दो। यही विजयी मनोवृत्ति है और कभी असफल नहीं होती।

१५. गीताके शब्द याद रखो . . . सब धर्मोंका (सारे कानून, नियम, बाहरसे लादी गयी या अतीतकी आदतोंसे बनी हर प्रकारकी क्रिया या आचारसंहिता) त्याग कर और केवल मेरे आश्रयमें आ; मैं तुझे समस्त पाप और अशुभसे मुक्ति दिलाऊंगा—चिंता मत करो।

१६. जरा भी अधीरता नहीं,
विश्वास भरा धैर्य,
सबके लिये जितना अच्छा हो सकता है, सचमुच उतना अच्छा है।

१७. दूसरोंमें पूर्णताकी प्रतीक्षा करनेकी अपेक्षा जब मनुष्य स्वाभाविक रूपसे अपने-आपको पूर्ण करनेकी ओर मुड़ेगा तो वह बड़ा कदम होगा।

१८. हम प्रकाश और सत्यके दूत बनना चाहते हैं।

१९. तुम मुझे अपने-आपको जानने योग्य बनाओ,
मुझे अपनी सेवाके योग्य बनाओ,
मुझे 'तुम' बनने योग्य बनाओ।

२०. सब प्राणियोंमें 'आत्मा'को देखनेका अर्थ है सर्वत्र प्रभुको देखना।

२१. जब सारे मनुष्य परम प्रभुकी स्वाधीनताको जानेंगे तभी स्वाधीनता प्रकट की जा सकती है।

२२. समानता तभी प्रकट हो सकती है जब सारे मनुष्य परम प्रभुके बारेमें सचेतन हो जायं।

२३. भ्रातृभाव तभी प्रकट किया जा सकेगा जब सब यह अनुभव करें कि सब मनुष्य समान रूपसे परम प्रभुसे जन्मे हैं और उनके ऐक्यमें 'एक' हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४. मैं जिस स्वाधीनताकी बात करती हूं वह मन या प्राणकी सनकों और मौजकी नहीं बल्कि आत्माकी इच्छाका अनुसरण करनेकी स्वाधीनता है।

२५. मैं जिस स्वाधीनताकी बात कर रही हूं वह ऐसा कठोर सत्य है जो निम्नतर, अज्ञान भरी सत्ताकी सब दुर्बलताओं और कामनाओंपर विजय पानेमें प्रवृत्त रहता है।

२६. मैं जिस स्वाधीनताकी बात करती हूं वह है मनुष्यकी उच्चतम, उदात्ततम, और सबसे अधिक दिव्य अभीप्साको स्वार्पण करनेकी स्वाधीनता।

२७. स्वाधीनताका अर्थ अव्यवस्था और गड़बड़ीसे बहुत भिन्न है। मनुष्यको आंतरिक मुक्ति प्राप्त करनी चाहिये, और एक बार वह मिल जाय तो कोई भी तुमसे उसे छीन न पाएगा।

२८. जिस आत्माने उच्चतम आनंदको प्राप्त कर लिया है उसके लिये जीवन अशुभ या दुःखद भ्रांति नहीं हो सकता बल्कि सारा जीवन दिव्य प्रेमी और क्रीड़ाके साथीका लहराता प्रेम और अट्टहास्य बन जाता है।

२९. आत्माके सबसे विचित्र अनुभवोंमेंसे एक यह भी है कि जब वह मुसीबतोंकी छवि और धमकीसे परेशान होना छोड़ देती है तो मुसीबतें उसके इर्द-गिर्द कहीं नहीं रहतीं। तभी हम उन नकली बादलोंके पीछेसे भगवान्‌को अपने ऊपर हंसते हुए सुनते हैं।

३०. तो इस तरह प्रकाश हमेशा बढ़ता रहता है। रही परछाईकी बात तो वह केवल परछाई है और विकसित होते हुए प्रकाशमें गायब हो जाएगी।

३१. मानवजातिके लिये भगवान्‌का ध्येय है परम-आनंद। अपने लिये परम शुभको पहले प्राप्त कर ताकि तू उसे अपने साथियोंमें पूरी तरह बांट सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ अगस्त

१५ अगस्त १९२५ (शामके सात बजे श्रीअरविंदसे बातचीत)

श्रीअरविंद—कोई प्रथाको जारी रखेगा ?

शिष्य—हम हरी झंडीकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

श्रीअरविंद—सीटी बज गयी, तुम शुरू कर सकते हो।

शिष्य—हम आपकी साधनाके बारेमें कुछ जानना चाहते हैं।

श्रीअरविंद—(बंगलामें) आमार साधना! आमि कि साधना कोरछी? (मेरी साधना? क्या मैं साधना कर रहा हूं?) कोई और प्रश्न पूछो।

शिष्य—भौतिक स्तरसे लेकर अभीतकके अनुभवके आधारपर क्या आपका ख्याल है कि भौतिक स्तरपर अतिमानसको उतार लाना संभव है ?

श्रीअरविंद—क्यों नहीं? अगर यह संभव न होता तो मैं उसके लिये प्रयास न करता। लेकिन अगर तुम्हारे प्रश्नका मतलब हो, क्या इस बार और अभी यह करना संभव है तो और ही बात है।

शिष्य—जी, मेरा यही मतलब था।

श्रीअरविंद—यह सब मेरे बाहरकी चीजोंपर निर्भर है। यह देखना है कि क्या भौतिक स्तर प्रकाश ग्रहण करनेके लिये तैयार है क्योंकि हमेशा ऐसा नहीं होता कि प्रकाश आना चाहे तो भौतिक स्तर तैयार हो।

शिष्य—क्या आप इस विषयमें कोई निश्चिति दे सकते हैं ?

श्रीअरविंद—मैंने यह कभी नहीं कहा कि यह निश्चित है।

शिष्य—पिछले साल जब यह प्रश्न किया गया था . . .

श्रीअरविंद—तो मैंने क्या कहा था ?

शिष्य—आपने कहा, "अगले अगस्तमें पूछना।"

दूसरा शिष्य— आपने कहा था, 'पिछले वर्षकी अपेक्षा इस वर्ष यह अधिक संभव है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

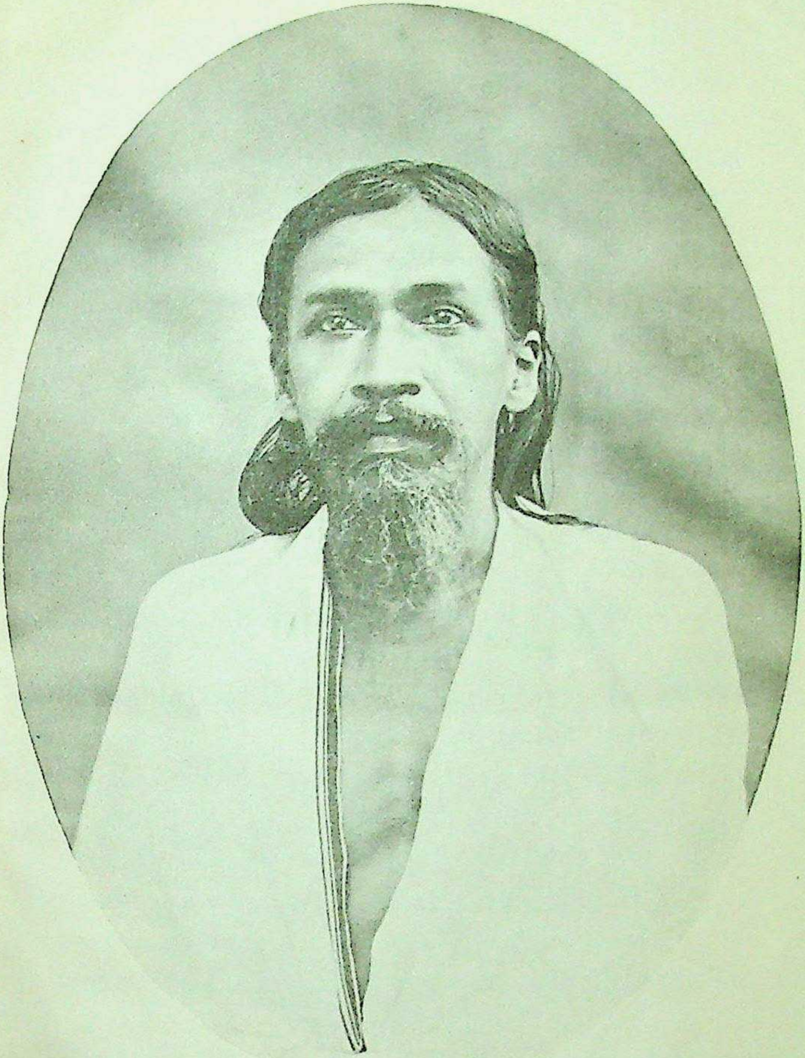

भविष्यमें देखते हुए श्रीअरविंद (१९१६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

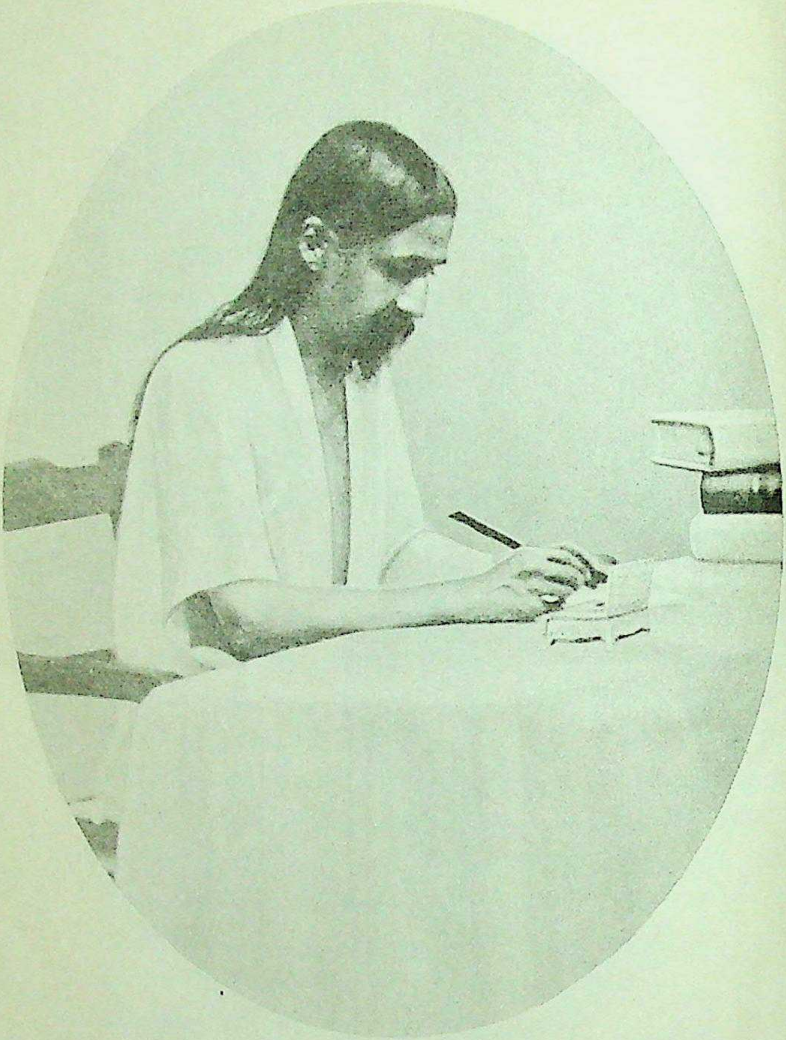

पांडिचेरीमें श्रीअरविंद (१९१८–२०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—यह बात ही और है। मैंने वह दूसरी बात नहीं कही होगी, अब कहता हूं। पिछले वर्षकी अपेक्षा इस वर्ष यह ज्यादा संभव है। (सब हंस पड़ते हैं मानों श्रीअरविंदने बात टाल दी हो।)

श्रीअरविंद—मैं मजाक नहीं कर रहा। ऐसी अभिव्यक्तियां हुई हैं जैसी पहले नहीं थीं। शक्ति अब भौतिक स्तरपर ज्यादा प्रत्यक्ष रूपसे काम कर रही है।

शिष्य—तो क्या अब आप निश्चिति दे सकते हैं?

श्रीअरविंद—मेरी जगह तुम आश्वासन दे सकते हो, मैं नहीं दे सकता। तुम अपने-आप देख सकते हो।

शिष्य—अगर मैं देख सकता तो आपसे न पूछता।

श्रीअरविंद—तो तुम अपनी जिम्मेदारीसे बचकर सारा बोझ मेरे ऊपर डाल देना चाहते हो?

शिष्य—अगर आप मुझे इस तरहसे पकड़ने लगें तब तो मैं कुछ नहीं कह सकता।

श्रीअरविंद—अच्छा, मैं समझता हूं कि तुम मुझसे सत्यकी आशा रखते हो, मधुर मिथ्यात्वकी नहीं। मुझे पिछले दो दिनोंसे यह बात बहुत जोरसे लग रही है, इसीलिये मैं यह कह रहा हूं। यह कोई व्यक्तिगत प्रश्न नहीं है। मैं सामान्य वातावरणकी बात कह रहा हूं। मैं देखता हूं, मैं देखता हूं कि प्रकाश और शक्तिका जितना अधिक अवतरण होता है, प्रतिरोध भी उतना ही जोरदार होता है। तुम अपने-आप देख सकते हो कि कोई चीज ऊपरसे उतर रही है। तुम जबर्दस्त प्रतिरोधका भी अनुभव कर सकते हो।

शिष्य—इस बार यह एकदम नयी चीज है।

और एक शिष्य—नयी एकदम नहीं है, इस बार इसे प्रकट किया गया है।

श्रीअरविंद—अब चूंकि हम सब निम्न प्राण और भौतिक स्तरोंपर आ गये हैं अतः संघर्ष बहुत अधिक तीव्र है और मैं वहींसे बोल रहा हूं, किसी उच्चतर दृष्टिकोणसे नहीं। (कुछ रुककर 'क' से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं 'क,' तुम अपनी जिम्मेदारीसे नहीं बच सकते।

मैं कोई अलग-थलग एकाकी योग नहीं कर रहा जब मैंने 'हमारा योग और उसका उद्देश्य'में वह वाक्य लिखा था जिसका बहुत दुरुपयोग हुआ है, तो उसके पीछे कुछ सत्य था यद्यपि उस समय मैं उससे अनभिज्ञ था। यह सच है कि मेरा योग मानवजातिके लिये नहीं है लेकिन वह स्वयं मेरे लिये भी नहीं है। निश्चय ही, औरोंके सिद्धि पानेसे पहले यह शर्त है कि पहले मैं सिद्धितक पहुंच सकूं। अगर मैं स्वयं अपनी मुक्ति या अपनी पूर्णता ही चाहता तो मेरा योग कबका समाप्त हो चुका होता।

शिष्य—आपने तीसरे पहरके वक्तव्यमें कहा था कि भौतिक स्तर-पर इससे पहले किसीने परीक्षण नहीं किया।

श्रीअरविंद—मैंने यह नहीं कहा कि भूतकालमें कोई प्रयास ही नहीं किया गया। प्रयास तो किये गये थे पर भौतिक स्तरपर कोई स्थिर प्राप्ति नहीं हुई, कोई आधार नहीं खड़ा किया गया। अगर कुछ किया गया होता तो अधूरा, अधकचरा ही सही, उस आंशिक प्राप्तिका कोई तो चिह्न रहता।

देखो मनमें चाहे जितनी आंशिक उपलब्धि हुई हो पर उसके लक्षण तो हैं। प्राणमें भी यही दशा है लेकिन भौतिक स्तरपर इसकी कोई निशानी नहीं है।

शिष्य—इसका मतलब तो यह हुआ कि अतिमानसको भौतिक स्तरतक लानेके लिये वातावरण तैयार करना बाकी है।

श्रीअरविंद—यही तो सारा प्रयास है। अगर तुम चाहते हो कि यह इस बार सफल हो तो तुम्हें उसके लिये तैयारी करनी होगी।

(अपनी ओर इशारा करते हुए) यह है केंद्र, इतना आश्वासन तुम इससे ले सकते हो लेकिन अगर हम सफल होना चाहें तो इस सबको एक पक्षमें होना चाहिए। अगर तुम विरोधी सुझावोंको स्थान दो तो जहां तुम अपनी प्रगतिको रोकते हो वहां औरोंके लिये भी सामान्य प्रगतिकी राहमें बाधा खड़ी करते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—भौतिक प्रकृतिके प्रतिरोधको रोकनेके लिये क्या करना चाहिए ?

श्रीअरविंद—तुम्हारे अंदर सत्यके लिये संपूर्ण अभीप्सा होनी चाहिए। यह सच है कि साधनामें ऐसे समय आते हैं जब मनमें अवसाद आ जाता है और उच्चतर उपस्थितिपर परदा पड़ जाता है, ज्ञान धुंधला पड़ जाता है। ऐसे समय अभीप्सा और श्रद्धा, जिसे रामकृष्ण अंध श्रद्धा कहते हैं, ही व्यक्तिकी सहायता करती हैं। सचमुच वह श्रद्धा अंधी नहीं होती। वह अंतरात्माकी स्मृति होती है। अगर कूएके रोग शमनके लिये श्रद्धा जरूरी है तो अतिमानसको नीचे लानेके लिये वह और भी अधिक जरूरी है। अगर मैं श्रद्धा खो बैठता तो कबका प्रयास छोड़ बैठता।

शिष्य—जी, और कोई होता तो कबका छोड़ देता। (हंसी)

शिष्य—क्या मनसे अतिमानसकी ओर संक्रमण अपने स्वभावमें अतिमानससे उसकी अपेक्षा ज्यादा ऊंचे लोकोंमें संक्रमणकी अपेक्षा अधिक तात्विक और उग्र है ?

श्रीअरविंद—तुम्हारा मतलब क्या है ? क्या तुम यह जानना चाहते हो कि क्या वह इतना ही निर्णायक कदम होगा जितना अज्ञानसे ज्ञानकी ओर ?

शिष्य—जी।

श्रीअरविंद—देखो, मन विभाजनके आधारपर काम करता है। वह चीजोंको हमेशा टुकड़ा-टुकड़ा करके लेता है, एक समयमें एक पहलू। उसे लेकर वह यूं काम करता है मानों वही पूर्ण हो। यह आधार ही गलत है।

अतिमानस ऐक्य है और उस ऐक्यके आधारपर ही वह विभाजनको जानता है। वह भगवान्की ओर ले जानेवाली निकटतम भूमिका है। हां, वह मनमें भी काम कर रहा है। लेकिन मनमें तुम सत्यको आंशिक रूपमें खोजते और पाते हो। मन ज्ञानके लिये प्रयास है स्वयं ज्ञान नहीं। मन केवल चित्रित करता है, प्राप्त नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकता। वह सत्यको पूरी तरह प्रकट नहीं कर सकता।

अतिमानस प्राणिक स्तरपर भी काम करता है। वहां उसकी क्रिया सहजवृत्तिके रूपमें यथार्थ किंतु गुप्त क्रियाके रूपमें रहती है जो अतिमानसके निकटतम है। लेकिन अतिमानस एकदम भिन्न है। तुम कह सकते हो कि वह कोई स्वचालित चीज है। लेकिन यांत्रिक नहीं। तुम कह सकते हो कि वह अपने-आप सक्रिय सत्य है। एक बार तुम अतिमानसको पा लो तो, अगर चाहो तो सूर्यके द्वारसे होकर निकल सकते हो। अगर तुम उससे ऊपर जाओ तो एक ऐसे लोकमें पहुंच सकते हो जहां किसी सूर्यकी जरूरत नहीं होती। लेकिन अगर तुम अतिमानसको नीचे ला सको तो यह तुम्हारे लिये अधिक संभव और सरल हो जाता है। उसके बाद यह सत्ताका खिलना, स्वाभाविक और सरल विकास ही होता है, लेकिन यहां सारा संघर्ष मन, प्राण और शरीरमें ही होता है।

तुम अतिमानसको पा गये हो इसका एक चिह्न यह है कि तुम्हें विचार करने या सोचने—जैसा कि हम समझते हैं—कोई जरूरत नहीं रहती। अतिमानसमें सोचनेकी जरूरत नहीं रहती। इसका यह मतलब नहीं है कि वहां कोई विचार नहीं रहता या सब कुछ कोरा ही कोरा रहता है। वहां कोई स्वयंभू चीज होती है जो कार्य करती है।

शिष्य—कैसे ?

श्रीअरविंद—"कैसे" यह तुम न समझ पाओगे।

शिष्य—लेकिन जब कोई विचार ही न हो तो मन कैसे काम करता है ?

श्रीअरविंद—मनमें तुम एक बिंदुसे दूसरे बिंदुतक सोचते हो फिर वहांसे दूसरे बिंदुपर जाते हो तब तुम उन सबको इकट्ठा करके कार्य-कारणके नातेमें जोड़ देते हो। अब मान लो कि ये सारे सैंकड़ों विचार एक साथ उठें, अपने सभी ब्योरोंको एक सेकेंडसे भी कममें प्रकट करें, तो क्या तुम इनकी कल्पना कर सकते हो ? यह है अतिमानसिक विचार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—मैं इसकी कल्पना कर सकता हूं।

श्रीअरविंद—हां, तुम कल्पना कर सकते हो, लेकिन जबतक तुम्हें अनुभव न हो, तुम उसका ठीक भाव नहीं पा सकते।

शिष्य—क्या आप अतिमानसके किसी और पहलूकी बात बता सकेंगे ?

श्रीअरविंद—कोई और पहलू ? यह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम यूं मन द्वारा समझ सको।

शिष्य—फिर भी हमें इससे कुछ तो सहायता मिलेगी ही।

श्रीअरविंद—उदाहरणके लिये युगपत् क्रियाशीलता और विश्राम, क्या तुम इसकी कल्पना कर सकते हो ?

शिष्य—क्या यह सच है कि सभी मानसिक क्षमताओंके साथ मेल खानेवाली क्षमताएं अतिमानसमें भी होती हैं ?

श्रीअरविंद—यह बात मैंने 'आर्य'में लिखी है। मैंने जब आर्य लिखा था तो मैं सीमा प्रदेशपर था। अब मैं वही बात नहीं कहूंगा। हर एकको उस भूमिकामेंसे गुजरना पड़ता है, यह सच है कि तर्क-बुद्धिसे मिलती-जुलती दिव्य मेधा है और तुम कह सकते हो कि जो दिव्य मेधाकी तरह काम करती है वह अतिमानसकी क्रियासे आती है लेकिन यह है बिल्कुल भिन्न चीज। मैं बात मनकी भाषामें कह रहा हूं। मैं केवल छाया दे सकता हूं, यह सच्ची चीज नहीं है। उदाहरणके लिये तर्कबुद्धि कार्य-कारणका पता लगाती और उन्हें जोड़ती है जब कि दिव्य मेधा सबको उचित संबंधमें रखती है। और भी चीजें हैं जिन्हें मनकी भाषामें व्यक्त नहीं किया जा सकता।

शिष्य—उदाहरणके लिये ?

श्रीअरविंद—विरोधी तत्त्वोंमें समाधान—उदाहरणके लिये पूर्ण नीरवता और पूर्ण अभिव्यंजना, क्या तुम इसे मनकी भाषामें व्यक्त कर सकते हो ?

शिष्य—जब अतिमानस उतर आयेगा तो वह अपनी ही भाषा विकसित करेगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—वहां भाषाकी जरूरत ही नहीं होती। मान लो तुम्हें अतिमानस मिल गया है और मुझे भी मिल गया है तो हमें भाषाकी जरूरत ही न होगी।

शिष्य—तो क्या तब हम सब चुपचाप बैठे रहेंगे सारे समय?

श्रीअरविंद—तुम्हारे लिये तो यह भयंकर चीज होगी न?

शिष्य—बरनार्ड शाके नाटक 'बैक टु मेथ्युसिला'में प्राचीन लोग यहां आते हैं और उनके साथ रहते हैं जिन्हें वहां 'बालक' कहा गया है। वे अगर ज्यादा समय रह जाएं तो बालक घबरा उठते हैं।

शिष्य—शायद 'क'को भय है कि तब वह कोई प्रश्न न पूछ सकेगा।

और एक शिष्य—उपनिषद्में याज्ञवल्क्य गार्गीसे कहते हैं, ज्यादा प्रश्न न करो नहीं तो तुम्हारा सिर गिर जायगा।

शिष्य—सिर गिर जाय तो एक आशीर्वाद होगा।

शिष्य—भौतिक स्तरकी विजय प्राप्त हो जाय तो क्या इसका यह मतलब होगा कि उन सब लोगोंमें भी विरोधी शक्तियोंकी पराजय जो योगकी ओर खुले नहीं हैं?

श्रीअरविंद—तुम घूम फिरकर वही मानव जातिका प्रश्न ले आते हो यानी तुम जानना चाहते हो कि क्या इस विजयका अर्थ विश्व-विजय होगा। जरा ठहरो, पहले उसे भौतिक स्तरपर स्थापित तो होने दो फिर देखेंगे।

शिष्य—क्या आज पहलेकी अपेक्षा अतिमानसिक अवतरणके लिये परिस्थितियां अधिक अनुकूल हैं? यदि हां तो कैसे?

श्रीअरविंद—भौतिक जगत्का ज्ञान इतना बढ़ गया है कि वह अपनी सीमाएं तोड़नेकी-सी स्थितिमें हो रहा है।

दूसरे, सारे जगत्में बाहरी और भीतरी मन, बाहरी और भीतरी प्राण, बाहरी और भीतरी भौतिकके परदोंको फाड़नेकी कोशिश की जा रही है। मनुष्य अधिक 'चैत्य' बन रहे हैं।

तीसरे, प्राण भौतिकपर इस तरह कब्जा करनेकी कोशिश कर रहा है जैसी उसने पहले कभी नहीं की। यह एक निश्चित चिह्न है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जब कभी उच्चतर सत्य नीचे आनेकी कोशिश करता है तो वह विरोधी प्राणिक शक्तिको धरतीपर उछालता है और भांति-भांतिकी असामान्य अभिव्यक्तियां दिखलायी देती हैं जैसे पागल होनेवालोंकी संख्या बढ़ जाती है, भूकंप बढ़ जाते हैं इत्यादि। और रेल, तार, हवाई जहाज आदि आधुनिक विज्ञानकी खोजोंके कारण जगत्में ज्यादा एकत्व आ रहा है। यह एकत्व उच्चतम शक्तिके अवतरणके लिए एक शर्त है और यही हमारी कठिनाई है। चौथे, ऐसे लोगोंकी संख्यामें वृद्धि जिनका बड़ी संख्यामें लोगोंपर जबर्दस्त प्राणिक प्रभाव है।

ये कुछ ऐसी निशानियां हैं जिनसे लगता है कि आज वैश्व परिस्थिति ज्यादा तैयार है। हां, हम पिछले प्रयासोंकी परिस्थितियों-के बारेमें कुछ भी नहीं जानते लेकिन जहांतक हम देख सकते हैं ये परिस्थितियां हमारे प्रयासको उचित ठहराती हैं।

शिष्य—क्या आप यह मानते हैं कि वैश्व शक्तियोंका ज्ञान योगका आवश्यक अंग है?

श्रीअरविंद—हां, क्योंकि तुम्हें ऐसी विरोधी शक्तियोंसे काम पड़ता है जो अपना प्रभाव डालती हैं और हमें उन्हें भी जानना चाहिये जो सहायता करती हैं। जब तुम व्यक्तिगत साधना कर रहे हो तब भी ये शक्तियां अपना अनुभव कराती हैं। हां जब तुम विकसित हो तो उनका रूप पूरी तरह बदल जाता है। इन वैश्व शक्तियोंकी गतिविधि निचले स्तरोंपर शुरू नहीं होती। वह ज्यादा ऊंचाईपर शुरू होती है, यह सच है कि सभी निश्चय ऊपर किये जाते हैं लेकिन उनका जिन स्तरोंसे संबंध होता है उनका पता नहीं लगने दिया जाता। बीचमें एक परदा आ जाता है और हर लोकको अपने निश्चय आप करनेकी छूट दी जाती है। संघर्षमें लगी शक्तियोंको यह छूट दी जाती है कि वे अपना फैसला आप करें। जब निर्णायक मोड़ आ जाता है तब उच्चतम निर्णयकी जानकारी दी जाती है; तुम कम ज्ञानको पानेकी कोशिश करके ज्यादा बड़े ज्ञानके विकासमें सहायता दे सकते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—इस योगमें हमारा क्या स्थान है ?

श्रीअरविंद—तुम्हारा स्थान ? इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?

शिष्य—मेरा ख्याल है कि मैं समझा नहीं सकता।

श्रीअरविंद—अगर तुम ठीक-ठीक उत्तर चाहते हो तो तुम्हें ठीक-ठीक प्रश्न करने चाहिएं।

और एक शिष्य—शायद वह यह जानना चाहता है कि इसमें साधकोंकी क्या जिम्मेदारी है ?

शिष्य—हां, मेरा यही मतलब था।

श्रीअरविंद—मैंने तो यह बात मजाकमें कही थी क्योंकि 'क' छिटक जाना चाहता था।

शिष्य—लेकिन मैंने उसे गंभीरतासे लिया।

श्रीअरविंद—लेकिन मैंने गंभीरतासे नहीं कहा था यद्यपि उसके पीछे कोई ऐसी बात थी जो गंभीर थी। (हंसी)

शिष्य—तो यह विरोधोंका अतिमानसिक समाधान है (फिर हंसी)

श्रीअरविंद—तुम एकाग्र अभीप्साद्वारा इस प्रयासमें सहायता कर सकते हो लेकिन वह करनेकी जगह अगर तुम विरोधी शक्तियोंके सुझाव सहते चले जाओ और उनके मंत्र जपते रहो जो तुमसे तथा औरोंसे कहते हैं कि यह संभव नहीं है तो तुम उनकी सहायता करोगे।

शिष्य—मैं एक और प्रश्न करूंगा।

श्रीअरविंद—अब समय हो गया फिर किसी दिन।

१५ अगस्त १९२६ को श्रीअरविंदका वक्तव्य

आज मैं १५ अगस्तके बारेमें कुछ शब्द कहूंगा। एक प्रश्न मुझसे अभी कुछ दिन पहले पूछा गया था। मैंने इस विषयपर कुछ मानसिक और रूढ़िवादी धारणाएं तोड़नेके लिये नकारात्मक उत्तर दिया था।

अब मैं विषयके सकारात्मक पक्षको लेता हूं। इसका एक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्ष भी है और अगर यह पक्ष न होता तो इस उत्सवके मनानेका कुछ भी अर्थ न होता। स्पष्ट कारणोंकी वजहसे मैं इसके व्यक्तिगत पहलूके बारेमें कुछ न कहूंगा। मैं साधारण और व्यापक रूपको लेकर यह बतलाऊंगा कि योगके लिये इसका क्या अर्थ हो सकता और होना चाहिए—यही तो हम सबका लक्ष्य है।

तुम सिद्धांत रूपसे जानते हो कि वह लक्ष्य, योग, क्या है। वह है धरतीपर साधारण मनुष्यको संतुष्ट करनेवाली चेतना, शक्ति, सत्य, सद्वस्तुसे भिन्न चेतना, शक्ति, सत्यका प्रकाश और दिव्य सद्वस्तुको उतारकर लाना जो पार्थिव चेतनाको ऊंचा उठाने और यहांकी हर चीजका रूपांतर करनेके लिये नियत है।

यह तबतक नहीं हो सकता जबतक कि ऊपरसे निर्णय न हो लेकिन यह तबतक नहीं हो सकता जबतक कि स्वयं पार्थिव चेतना अपने किन्हीं अंशोंमें, उन लोगोंमेंसे कुछमें, जो यहां निचले स्तरपर निवास करते हैं, उसे ग्रहण करनेके लिये तैयार न हो। एक बार यह चेतना, यह शक्ति उतर आये तो वह चिरकालके लिये उन लोगोंके लिये बनी रहेगी जो उसे पानेके लिये इच्छुक और योग्य हैं।

लेकिन हमने इस दिनको एक विशेष महत्त्व दिया है और अगर हम उस सत्यमें निवास करें जिसका यह प्रतीक है तो यह उचित होगा। हम इस दिनको व्यक्तिगत और सामान्य प्रगतिकी एक भूमिकाके रूपमें मान सकते हैं। इस दिनको उत्सर्ग, आत्म-परीक्षा और भविष्यकी प्रगतिके लिये तैयारीका दिन और अगर संभव हो तो ऐसी शक्तिके स्वागतका दिन बना सकते हैं जो प्रगतिके कामको आगे बढ़ायेगी।

यह काम हर एक व्यक्तिगत रूपसे कर सकता है अगर वह इस दिन सच्ची मनोवृत्ति अपनाए और उचित स्थितिमें रहे। उस दिन मैंने जो कहा था उसका यही मतलब था। असलमें हम लोग ही इस दिनको निर्णायक बना सकते हैं। हम लोग ही इसकी पूर्तिमें सहायक हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहलेसे ही आत्मोत्सर्ग होना चाहिए, अपने अंदर भूतपर नजर डालनी चाहिए कि हम कहांतक पहुंचे हैं, हमारे अंदर कौन-सी चीज तैयार है, कौन-सी चीज नहीं बदली जिसे बदलना बाकी है, कौन-सी चीज एक जटिल रूपांतरके लिये पीछे खड़ी प्रतीक्षा कर रही है, अभीतक कौन-सी चीज प्रतिरोध कर रही है और कौन-सी अंधेरी है। अभीप्सा होनी चाहिए, हम जिस परिवर्तनको जरूरी मानते हैं उसे सिद्ध करनेके लिये शक्तिका नीचे आह्वान होना चाहिए।

अगर हम इस दिन अपनेको इधर-उधर बिखेरते फिरें तो हम कुछ नहीं कर सकते। उसकी जगह होनी चाहिए तीव्र एकाग्रता ताकि आंतरिक सत्ता तैयार होकर प्रकाशको ग्रहण करनेके लिये ऊपरको उड़े। हम जिस अनुपातमें बाहरी रूप देनेवाली गतिको स्वीकार करते हैं, हम उच्चतर क्रियामें बाधा डालते हैं और भीतरी परिवर्तन-के लिये जरूरी ऊर्जाका अपव्यय करते हैं। साधारण दिनके क्रिया-कलापके अतिरिक्त जो कुछ किया जाये वह या तो इस गतिके अंग-के रूपमें या फिर इस तरह किया जाय जैसे वह सत्ताकी बाहरी सीमाके बाहर है और भीतरी गतिविधिको अस्तव्यस्त नहीं कर सकता और दिनकी सभी चीजोंका उपयोग प्रगतिके लिये किया जाय।

और अगर तुम सवेरे मेरे पास आओ तो यह रूढ़िगत प्रथाको पूरा करनेके लिये न हो, तुम्हारी अंतरात्मा और तुम्हारा मन ग्रहण करनेके लिये तैयार हो। अगर इस समय तुम मेरी बात सुन रहे हो, अगर यह सिर्फ तुम्हारी मानसिक रुचिको संतुष्ट करनेवाली चीज है तो मेरा चुप रहना ही ज्यादा ठीक होगा। लेकिन अगर यह कहींपर आंतरिक सत्ताको छूता है तभी इस दिनका कुछ उपयोग या उद्देश्य है और ध्यान भी ऐसी अवस्थामें करना चाहिए कि अगर कोई निर्णायक चीज न भी उतरे तो भी कुछ अंदर रिस कर तो जा ही सके जिसका परिणाम बादमें आये।

हमारे योगकी दृष्टिसे १५ अगस्तका एक अर्थ यह भी है। रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात कामका लेखा-जोखा देखनेकी, यह जाननेकी कि तुम कहां हो और कितना काम हो गया तो इस बारेमें कुछ बातें याद रखनी जरूरी हैं। तुम उन्हें मनसे जानते हो।

यह याद रखो कि अन्य योगोंके उद्देश्य हमारे लिये पहली अवस्थाएं या पहली शर्तें ही हैं। पहलेकी पद्धतियोंमें लोग ब्रह्मचेतना या वैश्व चेतनाका अनुभव पाकर या प्रकाश और शक्तिके अवतरण अथवा अनंतकी सूचना पाकर ही संतुष्ट हो जाते थे।

इतना काफी मान लिया जाता था कि मनको कुछ आध्यात्मिक अनुभूतियां हों और उसका आंशिक रूपांतर हो और प्राणका उसके साथ संबंध हो।

वे किसी स्थिर स्थितिकी खोज करते थे, मुक्ति उनका अंतिम लक्ष्य था। यह सब प्राप्त करनेके लिये, अनंत और वैश्व शक्तिकी ओर खुलनेके लिये, उसकी सूचनाएं पाने और उसका पूरा अनुभव करनेके लिये अहंके परे जाना, वैश्व मन, वैश्व आत्मा, विश्व पुरुषका अनुभव करना तो केवल पहली शर्त है।

हमें इस महत्तर चेतनाको सीधा प्राणिक सत्ता और भौतिक सत्तामें उतारना है ताकि परम अचंचलता और पूर्ण वैश्व भाव पूरी तरहसे, शिखरसे लेकर तलीतक आ जाय। अगर इतना न हो तो रूपांतरकी पहली शर्त पूरी नहीं होती।

दूसरी चीज जिसे हमें जानना और याद रखना है यह है कि कोई भी चीज तबतक पूर्णतया नहीं की जा सकती जबतक सब कुछ पूर्णतया न कर लिया जाय। इतना काफी नहीं है कि मन और प्राण तो खुल जाएं और भौतिक अंधकारमें पड़ा रहे।

इसी तरह मनका रूपांतर तबतक नहीं हो सकता जबतक प्राणका रूपांतर न हो जाय और अगर प्राणिक सत्ताका रूपांतर न हो जाय तो कोई भी प्राप्ति नहीं हो सकती क्योंकि प्राणिक सत्ता ही प्राप्त करती है। अगर मन केवल अंशतः बदले और प्राणिक सत्ता भी खुले और अंशतः बदल जाय तो यह हमारे प्रयोजनके लिये काफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है क्योंकि सारा-का-सारा प्राणिक क्षेत्र तबतक नहीं बदल सकता जबतक कि भौतिक भी पूरी तरह न खुले और रूपांतरित हो क्योंकि दिव्य प्राण अपने-आपको एक अयोग्य वातावरणवाले जीवनमें चरितार्थ नहीं कर सकता।

और अगर बाहरी मनुष्य न बदले तो आंतरिक भौतिक सत्ताका बदलना भी काफी नहीं है। योगकी इस पद्धतिमें एक पूर्ण समग्रता है और सब कुछ सबपर निर्भर है। कहींपर रुक जाना अगले जीवनके लिये तैयारी हो सकती है, विजय नहीं। किसी भी चीज-के स्थायी तौरपर बदलनेके लिये जरूरी है कि सब कुछ बदले। याद रखने लायक तीसरी चीज यह है कि अगर सब कुछ बदलना है तो उसके लिये संपूर्ण समर्पण जरूरी है।

इसका अर्थ यह है कि सत्तामें कहींपर कोई चीज बचाकर न रखी जाय, पुराने रूढ़िगत विचारोंसे और मानव तौर-तरीकोंसे कोई समझौता न हो। जहां कहीं कोई चीज बचाकर रखी जाती है उसका अर्थ होता है कि सत्यको स्वीकार नहीं किया गया और हम फिरसे आंशिक प्राप्ति और रूपांतरकी भूलको दोहराएंगे। हमें अज्ञानकी लीलाके लिये कोई क्षेत्र न छोड़ना चाहिए।

हमारे लिये सत्य और मिथ्यात्वके बीच, परा और अपरा प्रकृति-के बीच कोई समझौता न होना चाहिए। इन बातोंको याद रखते हुए हमें अपने कामका लेखा-जोखा देखना चहिए। यह देखो कि कितना कुछ करना बाकी है लेकिन निराशाके भावके साथ नहीं क्योंकि रास्ता बहुत लंबा और कठिन है, यह एक चमत्कारके रूपमें पूरा नहीं किया जा सकता। इसे एक महान् और पूर्ण गति द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। तुम्हें हर कदमको एक चिह्न, एक प्रोत्साहनके रूपमें मानना चाहिए, यह परात्परकी ओर एक कदम है। एक ओर विजय प्राप्तिके लिये दृढ़ प्रतिज्ञा और उत्साहकी कमी न हो, दूसरी ओर उतावली, अधीरता, अवसाद न आयें। रहे बस भागवत इच्छाकी निश्चितिका यह भाव, यह संकल्प, "तेरी इच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0795e7

हमारे अंदर पूर्ण होगी" और यह अभीप्सा कि "यह हमारे अंदर पूर्ण हो ताकि यह जगत्के अंदर पूर्ण हो सके।"

0795e7

१५ अगस्त १९२६को श्रीअरविंदके साथ बातचीत

शिष्य—इस बार आप हमारे प्रयासकी सफलताके बारेमें क्या कहेंगे ? पिछली बार आपने कहा था कि आप उसके बारेमें निश्चित थे।

श्रीअरविंद—मैंने यह नहीं कहा कि मैं निश्चित हूं। चलो 'क'से इस बारेमें पूछें।

एक और शिष्य—(पहलेसे) तुम इस तरह क्यों पूछ रहे हो ? पिछली बारकी बात उठाये बिना ही अपनी बात पूछ लो न।

शिष्य—इस समयकी सामान्य परिस्थितिको देखते हुए क्या आप कह सकते हैं कि आपको विश्वास है या नहीं ?

श्रीअरविंद—हमें विश्वास है भी और नहीं भी।

शिष्य—यह कैसे ?

श्रीअरविंद—मैं कह सकता हूं कि मैं नैतिक रूपसे निश्चित हूं परंतु व्यावहारिक रूपसे नहीं। मैं व्यावहारिक रूपसे निश्चित नहीं हूं क्योंकि भौतिक जगत्को कोई पश्चात्ताप नहीं है। सबसे बड़ी बाधा जो शायद अलंघ्य हो, जड़-भौतिक जगत्का रोड़ा है।

शिष्य—पश्चात्ताप नहीं है से आपका क्या मतलब है ?

श्रीअरविंद—पश्चात्ताप नहीं है का मतलब है जड़ जगत् भगवान् या भागवत जीवनके लिये तनिक भी परवाह नहीं करता।

शिष्य—जड़ भौतिक जगत्के प्रतिरोधसे आपका क्या मतलब है ?

श्रीअरविंद—उसकी किसी उच्चतर चीजकी ओर खुलनेकी असंभावना और वह जिसके लिये अभ्यस्त है उससे जरा भी भिन्न सोचनेकी अक्षमता। मेरा मतलब मनुष्यकी मूढ़ता और उसके अंधेपनसे है। जब मैं जड़ भौतिकके प्रतिरोधकी बात करता हूं तो मेरा मतलब बाहरी जड़-भौतिकसे नहीं बल्कि सूक्ष्म जड़से होता है। सूक्ष्म और बाह्य जड़ होता है और जब मैं कहता हूं कि जड़ भौतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभेद्य है तो मेरा मतलब यह होता है। सूक्ष्म जड़ने सत्यको स्वीकारा नहीं है, जड़-भौतिक मनने उच्चतर सत्यको नहीं स्वीकार किया है। भौतिक शक्तिके कोषाणुओंमें एक अपनी चेतना होती है और उस चेतनाको अपने-आपको सत्यकी ओर खोलना चाहिए। लेकिन जड़-भौतिक मन रूपांतरकी दिव्य संभावनापर विश्वास नहीं करता और जैसा कि मैंने कहा हमारे लिये जबतक सब कुछ न हो जाये तबतक कुछ नहीं हुआ।

शिष्य—और आप नैतिक दृष्टिसे निश्चित कैसे हैं ?

श्रीअरविंद—क्योंकि मैं अधिकाधिक शक्तिको भौतिकमें उतरते हुए देखता हूं और भौतिक सत्ता जागरणके लक्षण दिखा रही है।

शिष्य—लेकिन हम जानते हैं कि एक बार मन सत्यको स्वीकार कर ले तो वह उसका दबाव प्राणिक सत्तापर डालता है और उसे उच्चतर सत्यके लिये खोलता है और जब प्राण खुल जाय तो वह भौतिक सत्तापर दबाव डालता है। तो अब जब कि आप कह रहे हैं कि शक्ति भौतिक स्तरपर उतर रही है तो इसका मतलब यह हुआ कि वह अपने समयमें इस प्रतिरोधको जीत लेगी और बाकी स्वाभाविक रूपसे होता चलेगा।

श्रीअरविंद—जरूरी नहीं है कि वह चले ही।

शिष्य—मान लीजिये कि जड़ सत्ता नहीं बदलती ?

श्रीअरविंद—अगर वह न बदले तो वह एक अलंघ्य बाधा बन जायगी।

शिष्य—क्या जड़ तत्त्वके विरोधके सिवा कोई और बाधा नहीं है ?

श्रीअरविंद—नहीं, नहींके बराबर।

शिष्य—क्या इसका यह मतलब हुआ कि आसुरी शक्तियोंकी ओरसे कोई बाधा न आयेगी। मेरा मतलब आसुरिक प्राण लोकसे नहीं है बल्कि असुरकी सहायतासे आनेवाली भौतिक बाधाओंसे है।

श्रीअरविंद—हां, जड़ तत्त्वके इस सारे प्रतिरोधके पीछे आसुरी सहायता होती है लेकिन अगर स्वयं जड़ तत्त्व ही झुक जाय तो उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तियोंका कोई मूल्य न रहेगा। मेरा मतलब यह नहीं है कि उनकी ओरसे कोई कठिनाई नहीं आयेगी, मेरा मतलब यह कि वह गौण रह जायगी।

शिष्य—प्रतिरोधपर विजय पानेके लिये क्या शर्तें हैं, क्या उन्हें पूरा करनेके लिये हमारा भी कुछ दायित्व है ?

श्रीअरविंद—शर्तें ! यह कहना तो बहुत कठिन है (कुछ ठहर कर) और अगर मैं कहूं भी तो तुम समझ न पाओगे।

शिष्य—कहिये न। हम समझनेकी कोशिश करेंगे।

श्रीअरविंद—शर्त यह है कि मनुष्य सीधा देव लोकके साथ नाता जोड़ सके। यह तभी संभव होगा।

शिष्य—मैं तो कुछ भी न समझ पाया। आपको एक-एक शब्द समझाना होगा।

श्रीअरविंद—मैंने यही तो कहा था।

शिष्य—आपका मतलब निचले या उच्चतर देवोंसे है ?

श्रीअरविंद—मेरा मतलब देवोंसे है, प्राणिक या मानसिक देवोंसे नहीं।

शिष्य—लेकिन अगर सूक्ष्म भौतिक उच्चतर सत्यको स्वीकार कर ले ?

श्रीअरविंद—मेरे दृष्टांतमें तो उसने स्वीकार कर लिया होगा लेकिन इससे कुछ भी प्रमाणित नहीं होता। इसका यह अर्थ नहीं होता कि वह वैश्व सूक्ष्म भौतिकमें प्रतिष्ठित हो गया है या आधार-भूत, मौलिक रूपसे बदल गया है।

शिष्य—क्या पूरा भौतिक उसके आगे न झुकेगा ?

श्रीअरविंद—तर्ककी दृष्टिसे तो यह निश्चित है पर व्यावहारिक दृष्टिसे नहीं।

शिष्य—तो क्या उसकी वृत्तिमें परिवर्तनके कोई चिह्न नहीं हैं ?

श्रीअरविंद—नहीं; अभीतक परिवर्तनके कोई निर्णायक चिह्न नहीं हैं लेकिन चूंकि भौतिकमें अधिकाधिक शक्तिका अवतरण हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है इसलिये मैं कह सकता हूं कि नैतिक दृष्टिसे मुझे भरोसा है कि जड़ तत्त्व भी बदलेगा।

शिष्य—लेकिन अगर जड़ तत्त्वके नियम बदल जाएं तो क्या यह नहीं कहा जा सकता कि जड़ जड़ न रहेगा।

श्रीअरविंद—क्यों ?

शिष्य—क्योंकि जड़ तत्त्व अमुक नियमोंसे बना है।

श्रीअरविंद—नियमोंसे तुम्हारा क्या मतलब है ? जिन्हें तुम नियम कहते हो वे केवल आदतें हैं, अगर तुम अपनी आदतें बदल डालो तब भी तुम तुम ही रहोगे।

शिष्य—क्या कुछ लोग अपनी साधनाद्वारा जड़ जगत्के नियमोंको नहीं बदल सकते ?

श्रीअरविंद—हम बाहरी जड़ सत्ताको नहीं बदलना चाहते। केवल अमुक लोगोंमें जहां मनुष्य उच्चतर शक्तिके प्रति खुला हुआ है, यह परिवर्तन होगा, हर एकमें नहीं।

शिष्य—क्या समस्त मानव जातिकी वृत्ति इस बारेमें सफलता या असफलताका कारण हो सकती है ?

श्रीअरविंद—निश्चय ही उसका कुछ मूल्य तो है ही लेकिन इसका इस मामलेमें बहुत बड़ा असर नहीं होता।

शिष्य—भौतिक मन और जड़ मनमें क्या फर्क है ?

श्रीअरविंद—जड़ भौतिक मनका एक हिस्सा है।

शिष्य—और भौतिक क्या है ?

श्रीअरविंद—चूंकि मेरे अंदर इस विषयकी प्रेरणा नहीं है इसलिये मैं 'क'से समझानेके लिये कहूंगा (कुछ ठहर कर) मैंने भौतिकमें चार चीजोंके बारेमें कहा था १) भौतिक मन २) भौतिक प्राण ३) स्वयं जड़ द्रव्य और ४) भौतिकमें अतिमानस।

हम कह सकते हैं कि भौतिक मन मनका वह छोर है जो भौतिक जगत्के संपर्कमें आता है। वह जड़ तत्त्वद्वारा सीमित मन है जो विचारोंकी सहायताके बिना काम करता है, वह जगत्के केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक पहलूको देखता है और चीजोंको जैसी वे हैं, वैसी ही मान लेता है, वह उस दृष्टिके परे नहीं जाता। वह बाहरी जगत्के ज्ञान या भौतिक जगत्के ज्ञान या लक्ष्यपर निर्भर रहता है। वह इन्द्रियोंकी साक्षीपर निर्भर रहता है।

भौतिक प्राण है भौतिक शरीरसे सीमित प्राण। यह स्नायु संस्थानमें गति करता हुआ प्राण है। यह भौतिक शरीरके बिना नहीं रह सकता। यह शुद्ध प्राणिक सत्तासे और उसकी सापेक्ष स्वाधीनतासे एकदम अलग है, यह जड़-भौतिक नियमोंके अधीन प्राण है परंतु यह जीवनी शक्ति नहीं है। जीवनी शक्ति जड़ तत्त्वसे एकदम भिन्न वस्तु है। यह जड़ द्रव्यके विषयोंके अधीन जीवन है। जड़ द्रव्यमें भी महान् शक्ति है लेकिन यह जीवनी-शक्ति नहीं है। जीवनी शक्ति जड़ भौतिक जगत्से एकदम अलग है। वह स्वयं अपने लिये अपने-आपसे अस्तित्व रखती है और अपने-आपको जड़ परिस्थितियोंमें बांध कर नहीं रखती। प्राणके लिये कोई भी चीज, चाहे वह कितनी भी काल्पनिक या मूर्खतापूर्ण क्यों न हो, असंभव नहीं मालूम होती। वह प्राणकी भव्य महानता ही थी जिसके कारण नेपोलियनने कहा था, "कोई चीज असंभव नहीं है, 'असंभव' शब्दको शब्दकोशसे निकाल देना चाहिये।" नेपोलियनके द्वारा प्राणमय पुरुष बोल रहा था। यह सच है कि प्राणलोक किसी चीजको असंभव नहीं मानता। वह भौतिक जगत्की तरह उच्चतर संभावनाओंको अस्वीकार नहीं करता।

अब आता है शुद्ध जड़ जगत्। इसे यूरोपीय लोग निश्चेतना कहते हैं लेकिन वे जिस जड़ पदार्थको निश्चेतना कहते हैं उसमें जबर्दस्त शक्ति होती है। वस्तुतः हमारे प्रयासमें वही निर्णायक शक्ति होगी। अगर यह इस बार न किया जा सके तो इसे किसी और दिन करना होगा,—किसी और समय।

शिष्य—यह तो स्पष्ट है कि जड़ पदार्थमें बहुत ऊर्जा होती है।

एक और शिष्य—जड़ पदार्थ और ऊर्जा एक ही हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—यह केवल एक पहलू है जिसे वैज्ञानिक जानते हैं।

शिष्य—अगर परमाणुको तोड़ा जाय तो उसमेंसे इतनी शक्ति निकलेगी जो कुछ वैज्ञानिकोंके मतानुसार सारे जगत्को समाप्त कर देगी। किसी पदार्थमें परमाणुओंका स्थान बदल देनेसे ही पदार्थके गुण एकदम बदल जाएंगे। क्या आप जिस ऊर्जाकी बात कर रहे हैं वह उसी ऊर्जाका एक रूप है जिसकी बात वैज्ञानिक करते हैं?

श्रीअरविंद—हां, लेकिन वह जो जानते हैं वह उसका एक पहलू भर है क्योंकि उसमें केवल शक्ति ही नहीं होती, उसकी अपनी चेतना भी होती है, वह चीजको स्वीकार और अस्वीकार कर सकती है।

जड़ पदार्थ मन्द, निश्चेतन होता है। वह बदलना नहीं चाहता। वह कोई चीज प्रतिष्ठित नहीं करना चाहता। वह सभी भौतिक अवस्थाओंमें एक-सा रहता है और जड़ पदार्थके नियमोंका अनुसरण करता है। अभीतक जड़ पदार्थमें जो थोड़ा-सा परिवर्तन आया है उसे लानेमें ही प्रकृतिको हजारों वर्ष लग गये हैं और उसमें किसी ऊपरसे आनेवाली मन या प्राणकी शक्तिका असर है, स्वयं जड़ भौतिकमें निहित शक्ति, सामर्थ्य या स्वीकृतिका नहीं।

जब प्राणने जड़ भौतिकपर दबाव डालना शुरू किया तो वह अपने संभव असंभवके विचारको वहांतक नहीं ले जा सका, उसने जड़ पदार्थके साथ एक तरहका समझौता कर लिया और उसे भौतिकके जीवनकी सीमाओंको स्वीकार करना पड़ा।

शिष्य—आपने कहा कि जड़ भौतिकके प्रतिरोधपर विजय पाना संभव हो सकता है यदि हम सीधा देवलोकके साथ संबंध बना सकें। क्या इसकी कोई प्रक्रिया है, क्या वह अपने-आप आता है या उसे कोई उच्चतर शक्ति ले आती है?

श्रीअरविंद—उसके लिये तुम्हें पहले अपने अंदरकी यूरोपीय मानसिकतासे पिंड छुड़ाना होगा। तुम सभी अपने मनमें आधे यूरोपीय हो। मनके परे जाने और वस्तुओंपर मानव दृष्टिसे देखने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आदत छोड़नेके लिये एक निश्चित फैसलेकी जरूरत होती है। तुम्हें दो परस्पर विरोधी भूलोंसे, प्राणिक शक्तियोंको सच्चे देवता मानने और जड़वादी मनोवृत्तिको स्वीकार करनेसे बचना चाहिए।

शिष्य—लेकिन आपने कहा था कि सभी निर्णय यहां जगत्में चरितार्थ होनेसे बहुत पहले ऊपर ही लिये जाते हैं।

श्रीअरविंद—हां, उनके यहां होनेसे बहुत पहले।

शिष्य—तब तो इस बारेमें निश्चय पहले ही हो चुका होगा कि सत्य भौतिक स्तरपर सफल होगा या नहीं।

श्रीअरविंद—हो सकता है लेकिन हो सकता है कि वह तुम्हें बतलाया न जाय। तुम्हें अज्ञानके क्षेत्रमें ही काम करना होगा। कौन कह सकता है? हमें पता नहीं।

शिष्य—अगर हमें निर्णयका पहलेसे पता हो तो सारा रस जाता रहेगा।

श्रीअरविंद—अज्ञान आशीर्वाद है।

शिष्य—उत्तम पुरुष बहुवचनको भले पता न हो, मैं उत्तम पुरुष एकवचनके बारेमें पूछ रहा हूं।

शिष्य—अगर निश्चय हो चुका है तो यह भी ठीक हो चुका होगा कि इस बार सफलता मिलेगी या नहीं।

श्रीअरविंद—निश्चय, कहां?

शिष्य—वहां (ऊपर)।

श्रीअरविंद—मैं कह सकता हूं क्योंकि मैं वहांके निश्चयको जानता हूं और इस बातमें तनिक संदेहकी छायातक नहीं है कि एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी। प्रश्न इतना ही है कि क्या सफलता हमारे द्वारा, हमारे प्रयासोंसे मिलेगी।

शिष्य—अगर इस बार सफलता न मिले तो क्या ज्योति लौट जायेगी?

श्रीअरविंद—वह लौट भी सकती है और प्रतीक्षा भी कर सकती है। प्रश्न यह है कि क्या भौतिक जगत् ज्योतिको स्वीकार करनेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये तैयार है ? आजतक जब कभी सत्य आया है तो भौतिकने उसे स्वीकार नहीं किया।

शिष्य—जब आप कहते हैं कि यूरोपीय मन जड़वादी होता है तो इसका क्या मतलब होता है ?

श्रीअरविंद—यूरोपीय जड़वादसे हमारा मतलब है वह मनोवृत्ति जो जड़ भौतिकको विकासका आधार मानकर चलती है और वह जिस चीजकी अभ्यस्त नहीं है उसे माननेसे इंकार करती है।

मैं यूरोपीय मनकी निन्दा नहीं कर रहा, वह अपने तरीकेसे बहुत अच्छा है, लेकिन हम भौतिक सत्तामें एक निर्णायक परिवर्तन लानेकी कोशिश कर रहे हैं। यूरोपियन इसमें उल्टी भूल भी करते हैं, ऐसे यूरोपीय जो ऐसे जड़वादी सूत्रको माननेसे इंकार करते हैं जो मनको भौतिकसे बांधे रखना चाहता है, उसके बदले वे प्राणिक शक्तियोंको सच्चे देवोंके रूपमें मानते हैं। उदाहरणके लिये ऐसे लोग जो अतीन्द्रिय शोध, स्वतः लेख, अतीन्द्रिय संचार, माध्यमोंद्वारा परीक्षण करते हैं।

शिष्य—क्या आपका कहना है कि भौतिक नियम भी बदल जाएंगे ?

श्रीअरविंद—नियमसे तुम्हारा क्या मतलब है ? जो नियम कहलाते हैं वे बहुधा भौतिकके अभ्यास होते हैं। मैं पहले ही बता चुका हूं।

शिष्य—क्या मानव शरीर बदलनेके लिये बाधित होगा ?

श्रीअरविंद—यह जरूरी नहीं है कि उसे बदलना पड़े। इसमें भौतिक क्रियाओंकी संभावनाओं और क्षमताओंमें फर्क आ सकता है। इसका मतलब वैश्व भौतिकमें परिवर्तनसे नहीं है। यह केवल उन्हीं लोगोंमें होगा जो उच्चतर शक्तिकी ओर खुले हुए हैं। अगर अभेद्यों-का भेदन हो जाय तो यह एक चमत्कार होगा।

शिष्य—आज विज्ञानकी खोजें कम चमत्कारपूर्ण नहीं हैं।

श्रीअरविंद—जड़ भौतिक मनको चमत्कारोंकी जरूरत होती है। वह भूतकालके चमत्कारोंपर विश्वास करता है, भविष्यके चमत्कारोंपर नहीं। वह संतुष्ट तब होता है जब चमत्कार अभ्यासगत हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न और सिद्धियां

१५ अगस्त १९४७--स्वाधीन भारतको श्रीअरविंदका संदेश

१५ अगस्त स्वाधीन भारतका जन्मदिन है। यह दिन भारतके लिए पुराने युगकी समाप्ति और नये युगका प्रारंभ सूचित करता है। परंतु इसका महत्त्व हमारे लिए ही नहीं, बल्कि एशिया और संपूर्ण संसारके लिए भी है; क्योंकि यह राष्ट्रोंकी बिरादरीमें एक नयी शक्तिके प्रवेशका सूचक है जिसमें अवर्णनीय संभावनाएं हैं और जिसे मानवजातिके राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक भविष्यके निर्धारणमें एक बड़ी भूमिका निभानी है। व्यक्तिगत रूपमें मेरे लिए यह स्वभावतः प्रसन्नताकी बात है कि इस दिनने, जो केवल मेरे लिए ही महत्त्वपूर्ण था क्योंकि यह मेरा जन्मदिन है जिसे जीवन-संबंधी मेरी शिक्षाको माननेवाले लोग प्रतिवर्ष मनाते हैं, यह विशाल अर्थ तथा महत्त्व प्राप्त कर लिया है। एक गुह्यवेत्ताके रूपमें मैं, अपने जन्मदिनके भारतीय स्वाधीनता-दिवसके साथ इस प्रकार एक हो जानेको कोई दैवयोग या आकस्मिक संयोग नहीं मानता बल्कि यों मानता हूं कि जिस कार्यको लेकर मैंने अपना जीवन आरंभ किया था उसे मेरा प्रथ-प्रदर्शन करनेवाली भागवत शक्तिने अपनी अनुमति दे दी है और उसपर अपनी मुहर भी लगा दी है। निःसंदेह, आजके दिन मैं प्रायः उन सभी जागतिक आन्दोलनोंको, जिन्हें मैंने अपने जीवनकालमें ही सफल होते देखनेकी आशा की थी, पर जो उस समय असंभव स्वप्न-जैसे ही दिखाई देते थे, सफलता-के निकट पहुंचते देख सकता हूं या फिर उनका समारंभ हो गया है और वे अपनी सफलताकी ओर बढ़ रहे हैं।

इस महान् अवसरपर मुझसे संदेश देनेकी प्रार्थना की गई है, पर शायद मैं संदेश देनेकी स्थितिमें नहीं हूं। मैं बस इतना ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकता हूं कि उन लक्ष्यों और आदर्शोंकी व्यक्तिगत घोषणा कर दूं जिन्हें मैं अपनी बाल्यावस्था और यौवनसे पोसता आया हूं और जिनकी पूर्तिको मैं अब आरंभ होते देख रहा हूं, क्योंकि वे भारतकी स्वाधीनतासे संबद्ध हैं और उस कार्यके अंग हैं जिसे मैं भारतका भावी कार्य मानता हूं और जिसमें वह प्रमुख स्थान लिए बिना नहीं रह सकता। वस्तुतः मेरा हमेशासे ही यह विश्वास रहा है और मैंने हमेशा यह कहा भी है कि भारत केवल अपने भौतिक हितोंकी सिद्धिके लिए, विस्तार, महानता, शक्ति और समृद्धि पानेके लिए नहीं उठ रहा,—यद्यपि इनकी भी उसे उपेक्षा नहीं करनी होगी,—और निश्चय ही वह दूसरोंकी तरह अन्य देशोंपर आधिपत्य जमानेके लिए भी नहीं उठ रहा, बल्कि वह उठ रहा है सारी मनुष्यजातिके सहायक और नेताके रूपमें परमेश्वर और जगत्के हितके लिए। वे लक्ष्य और आदर्श अपने स्वाभाविक क्रममें ये थे: एक क्रांति जो भारतकी स्वाधीनता और एकता संपन्न करे; एशियाका पुनरुत्थान तथा स्वातन्त्र्य और उसका उस महान् भूमिकाको फिरसे प्राप्त करना जो उसने मानव सभ्यताकी उन्नतिमें निभायी थी; मानवजातिके लिए एक नये, अधिक महान्, उज्ज्वल और श्रेष्ठ जीवनका उदय जो अपनी संपूर्ण चरितार्थताके लिए बाहरी तौरपर राष्ट्रोंकी पृथक् सत्ताके अंतर्राष्ट्रीय एकीकरणपर आधारित होगा, उनके राष्ट्रीय जीवनको सुरक्षित और सुदृढ़ करेगा पर उन्हें एक दूसरेके पास लाकर सबपर अभिभूत करनेवाली एक एकताका रूप दे देगा; भारतके द्वारा अपने आध्यात्मिक ज्ञानका और जीवनको आध्यात्मिक बनानेके साधनोंका सारी जातिको दान देगा और अंतमें, क्रमविकासमें एक नया कदम उठायेगा जो चेतनाको उच्चतर स्तरपर उठाकर जीवनकी उन अनेक समस्याओंका हल करना प्रारंभ कर देगा जिन्होंने मनुष्यजातिको तभीसे हैरान और परेशान कर रखा है जबसे मनुष्योंने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाजके विषयमें सोचना और स्वप्न देखना शुरू किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत स्वाधीन हो गया है पर उसने एकता प्राप्त नहीं की, पाई है केवल टूटी-फूटी स्वतंत्रता। एक समय प्रायः ऐसा दीखता था मानों वह शायद फिरसे पृथक्-पृथक् राज्योंकी उस अव्यवस्थापूर्ण स्थितिमें जा गिरेगा जो ब्रिटिश विजयसे पहले विद्यमान थी। भाग्यवश अब ऐसी प्रबल संभावना उत्पन्न हो गई है कि इस प्रकारका संकटपूर्ण पुनःपतन टल जायगा। संविधान-सभाकी बुद्धिमत्तापूर्ण उग्र नीतिने इस बातको संभव बना दिया है कि दलित वर्गोंकी समस्या बिना फूट-फटावके हल हो जायगी। परंतु हिंदुओं और मुसलमानों-का पुराना सांप्रदायिक भेद देशके स्थायी राजनीतिक विभाजनके रूपमें सुदृढ़ हो गया दीखता है। यह आशा करनी चाहिए कि कांग्रेस और राष्ट्र तय किये गये इस विभाजनको सदाके लिए निर्णीत नहीं मान लेंगे, वे इसे एक कामचलाऊ अस्थायी उपायसे अधिक कुछ न समझेंगे। क्योंकि यदि यह बना रहा तो भारत भयानक रूपमें दुर्बल और अपंगतक हो सकता है; गृह-कलहका होना सदा ही संभव बना रह सकता है, नये आक्रमण और विदेशी राज्यका हो जाना तक संभव हो सकता है। देशके विभाजनको मिटना ही होगा,—हम आशा करें कि तनावके ढीले पड़नेसे, शांति और मेल-मिलापकी आवश्यकताको उत्तरोत्तर अधिक समझते जानेसे, साझे और संयुक्त कार्यकी और यहांतक कि इस प्रयोजनके लिए ऐक्यके किसी साधन-की भी सतत आवश्यकता अनुभव करनेसे यह विभाजन दूर हो जायगा। इस प्रकार एकता चाहे किसी भी रूपमें आ सकती है —उसके ठीक-ठीक रूपका व्यावहारिक महत्त्व भले ही हो, कोई आधारभूत महत्त्व नहीं है। परंतु चाहे किसी भी उपायसे हो, विभाजनको मिटना ही होगा और वह मिटकर रहेगा। क्योंकि ऐसा हुए बिना भारतका भविष्य भयानक रूपसे कुंठित, यहांतक कि विफल भी हो सकता है। परंतु ऐसा बिल्कुल नहीं होगा।

एशिया जग गया है और उसके बड़े-बड़े भाग स्वतंत्र हो गये हैं या इस समय बंधन-मुक्त हो रहे हैं, इसके अन्य भाग जो अभी पर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तंत्र हैं, कैसे भी संघर्षोंमेंसे क्यों न हो, स्वतंत्रताकी ओर बढ़ रहे हैं। केवल थोड़ा ही करना बाकी है और वह आज न सही कल पूरा हो जायेगा। उसमें भारतको अपनी भूमिका निभानी है और उसे उसने ऐसी सामर्थ्य और योग्यताके साथ करना शुरू कर दिया है जो अभीसे उसकी संभावनाओंकी मात्राको तथा उस स्थानको सूचित करती है जिसे वह राष्ट्रोंकी सभामें ग्रहण कर सकता है।

मानवजातिका एकीकरण प्रगतिके पथपर है, चाहे है अभी अधूरे प्रारंभके रूपमें ही, वह संगठित तो किया जा चुका है पर वह बड़ी भारी कठिनाइयोंके विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। लेकिन उसमें बल और वेग है और, यदि इतिहासके अनुभवको मार्गदर्शक माना जा सके तो, वह अनिवार्य रूपसे बढ़ता चला जायगा और अंतमें विजयी होगा। इस कार्यमें भी भारतवर्षने प्रमुख भाग लेना प्रारंभ कर दिया है और, यदि वह उस विशालतर राजनीतिज्ञताको विकसित कर सके जो वर्तमान घटनाओं और तात्कालिक संभावनाओंसे ही सीमित नहीं होती, बल्कि भविष्यमें पैठकर उसे देख लेती और निकट ले आती है, तो इस क्षेत्रमें भारतकी उपस्थिति यह दिखा सकती है कि मन्द एवं भीरुतापूर्ण विकास और द्रुत एवं साहसपूर्ण विकासमें कितना अधिक भेद है। जो कार्य किया जा रहा है उसमें महान् विपत्ति आ सकती है और वह उसमें बाधा डाल सकती या उसे नष्ट कर सकती है किंतु फिर भी अन्तिम परिणाम निश्चित है। क्योंकि, चाहे जो हो, एकीकरण प्रकृतिके विकासक्रममें एक आवश्यक क्रिया है, अनिवार्य गति है और उसकी उपलब्धिकी सुरक्षित रूपसे भविष्यवाणी की जा सकती है। राष्ट्रोंके लिए भी इसकी आवश्यकता स्पष्ट है, क्योंकि इसके बिना छोटे-छोटे राष्ट्रोंकी स्वाधीनता भविष्यमें कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकती और बड़े तथा शक्तिशाली राष्ट्र भी वास्तवमें सुरक्षित एवं निश्चित नहीं रह सकते। स्वयं भारत भी यदि विभक्त रहा तो अपनी सुरक्षाके बारेमें निश्चित रूपसे आश्वस्त नहीं रहेगा। अतएव एकीकरण सिद्ध होना सबके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हितकी बात है। केवल मानवीय अशक्तता एवं मूर्खतापूर्ण स्वार्थ-परता ही उसे रोक सकती है। इसके विरुद्ध तो, कहा गया है कि, देवताओंका प्रयत्न भी वृथा जाता है; परंतु यह भी प्रकृतिकी आवश्यकता और भगवान्की इच्छाके विरुद्ध हमेशा नहीं ठहर सकती। एकीकरणके साधित हो जानेपर राष्ट्रवाद पूर्णरूपसे चरितार्थ हो जायेगा; तब अंतर्राष्ट्रीय भावना और दृष्टि भी अवश्य विकसित होगी और अंतर्राष्ट्रीय पद्धति तथा संस्थाएं भी। यहांतक कि यह भी संभव है कि इस परिवर्तनकी प्रक्रियामें ऐसी प्रगतियां भी दिखाई दें जैसी कि दो या अनेक देशोंका एकसंग नागरिक होना, संस्कृतियों-का स्वेच्छापूर्वक घुलना-मिलना आदि, और राष्ट्रीयताकी भावना अपनी युद्धप्रियता छोड़ इन चीजोंको अपनी दृष्टिकी अखंडताके साथ पूर्णतया संगत अनुभव करे। एकताकी एक नई भावना मनुष्य जातिको अपने अधिकारमें कर लेगी।

संसारको भारतका आध्यात्मिक दान प्रारंभ हो चुका है। भारत-की आध्यात्मिकता यूरोप और अमरीकामें नित्य बढ़ती हुई मात्रामें प्रवेश कर रही है। यह आन्दोलन बढ़ेगा; वर्तमान कालकी विपदाओंके बीच अधिकाधिक लोगोंकी आंखें आशाके साथ भारतकी ओर मुड़ रही हैं और न केवल उसकी शिक्षाओंका बल्कि उसकी आंतरात्मिक और आध्यात्मिक साधनाका भी अधिकाधिक आश्रय लिया जा रहा है।

बाकी तो अभी एक व्यक्तिगत आशा है, एक विचार और आदर्श है जिसने भारत और पश्चिममें, दोनों जगह, दूरदर्शी विचारकोंको अपने वशमें करना शुरू कर दिया है। इस मार्गकी कठिनाइयां प्रयासके किसी भी अन्य क्षेत्रकी अपेक्षा बहुत अधिक जबर्दस्त हैं, परंतु कठिनाइयां जीती जानेके लिए ही बनी थीं और यदि 'परम इच्छाशक्ति'का अस्तित्व है तो वे अवश्य ही पराजित होंगी। यहां भी, यदि इस विकासको घटित होना है तो, चूंकि यह आत्मा और आंतिरक चेतनाकी अभिवृद्धि द्वारा ही होगा, इसका समारंभ भारत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ही कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्र विश्वव्यापी होगा फिर भी केंद्रीय आन्दोलन भारत ही कर सकता है।

ये हैं वे भाव और भावनाएं जिन्हें मैं भारतीय स्वाधीनताकी इस तिथिके साथ संबद्ध करता हूं। क्या यह घटनाक्रम पूरा होगा या कहांतक या कितनी शीघ्र पूरा होगा यह बात इस नये और स्वाधीन भारतपर निर्भर करती है।

सभी संभव कठिनाइयोंके होते हुए भारत जरूर उठेगा इसका आश्वासन माताजी और श्रीअरविंद, दोनोंने बार-बार दिया है। माताजी और श्रीअरविंदने भारतके विभाजनको कभी नहीं स्वीकार किया। स्वाधीनता-प्राप्ति दिवसपर माताजीने एक प्रार्थना पढ़ी थी। यदि भारतवासी इस प्रार्थनाको हृदयसे दोहरा सकें तो भारत मांका उज्ज्वल भविष्य ज्यादा जल्दी आ सकेगा।

"हे हमारी मां! हे भारतकी आत्म-शक्ति! हे जननी! तूने कभी, अत्यंत अंधकारपूर्ण अवसादके दिनोंमें भी, यहांतक कि जब तेरे बच्चोंने तेरी वाणी अनसुनी कर दी, अन्य प्रभुओंकी सेवा की और तुझे अस्वीकार कर दिया, तब भी तूने उनका साथ नहीं छोड़ा। हे मां! आज, इस महान् घड़ीमें, जब कि वे जग पड़े हैं और तेरी स्वतंत्रताके इस उषःकालमें तेरे मुखमंडलपर ज्योति पड़ रही है, हम तुझे नमस्कार कर रहे हैं। हमें पथ दिखा जिसमें स्वतंत्रताका जो विशाल क्षितिज हमारे सामने उन्मुक्त हुआ है वह तेरी सच्ची महानताका तथा विश्वके राष्ट्र-समाजके अंदर तेरे सच्चे जीवनका भी क्षितिज बने। हमें पथ दिखा जिसमें हम सर्वदा महान् आदर्शोंके पक्षमें ही खड़े हों और अध्यात्म-मार्गके नेताके रूपमें तथा सभी जातियोंके मित्र और सहायकके रूपमें तेरा सच्चा स्वरूप मनुष्य-जातिको दिखा सकें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक जगत्में अवतरण

१९२६के आरंभसे ही श्रीअरविंदने आश्रमका उत्तरदायित्व माताजी-को सौंपना शुरू कर दिया। माताजी बाह्य रूपसे आश्रमके संचालन और आंतरिक रूपसे साधकोंके पथ-प्रदर्शनका काम अपने हाथमें लेने लगीं। २४ नवंबर वह ऐतिहासिक दिवस था जिसे आश्रमके इति-हासमें माताजी और श्रीअरविंदके जन्मदिनके बराबर महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसका संक्षिप्त-सा वर्णन पुराणीसे सुनिये जो स्वयं वहां उपस्थित थे :

"एकदम स्तब्ध नीरवता छाई हुई थी . . . कइयोंने ऊपरसे उतरते हुए प्रकाशके सागरको देखा। सभी उपस्थित लोगोंने सिरके ऊपर एक दबावका अनुभव किया। सारा वातावरण मानों बिजलीकी ऊर्जासे भरा था . . . धीमे-धीमे, गौरवमय पग रखती हुई माताजी पहले आयीं और उनके पीछे-पीछे राजोचित गरिमाके साथ श्रीअरविंद पधारे . . . माताजी उनके पास दाहिनी ओर एक छोटे-से मूढ़ेपर बैठ गयीं।

"चारों ओर नीरवता छाई थी, दिव्यताका सागर स्तब्ध खड़ा था। लगभग पैंतालीस मिनटका ध्यान हुआ, उसके बाद एक-एक करके शिष्योंने माताजीको प्रणाम किया।

"माताजी और श्रीअरविंद दोनोंने उन्हें आशीर्वाद दिया। माताजीके हाथके पीछे श्रीअरविंदका हाथ था, मानों वे माताजीके द्वारा आशीर्वाद दे रहे थे। आशीर्वादके बाद उसी नीरवतामें ध्यान हुआ। नीरव ध्यान और आशीर्वादके बीच कइयोंको स्पष्ट अनुभूतियां हुईं। सब कुछ समाप्त होनेपर लोगोंने अनुभव किया कि वे दिव्य स्वप्नसे जागे हैं। तब उन्हें इस समारोहके वैभव, उसके काव्य और उसके सौंदर्यका भान हुआ। देखनेमें तो यही लग रहा था कि इस अवसर-पर मुट्ठी भर शिष्य दिव्य गुरु और दिव्य जननीसे आशीर्वाद पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे थे लेकिन यह उससे कहीं अधिक था। निश्चित रूपसे धरतीपर एक उच्चतर चेतनाका अवतरण हुआ था। उस गहरी नीरवतामें एक महान् आध्यात्मिक कार्यके वट-वृक्षकी कोंपलें फूटी थीं।

माताजी और श्रीअरविंद उठकर अंदर चले गये और उस नीरवतामें ही दत्ता (एक अंग्रेज शिष्या) ने अन्तःप्रेरणामें आकर घोषणा की: "आज प्रभु भौतिक तत्त्वमें अवतरित हुए हैं।"

अक्तूबर १९३५में श्रीअरविंदने इस अवसरके बारेमें लिखा था, "२४ नवंबर १९२६के दिन भौतिकमें श्रीकृष्णका अवतरण हुआ था। कृष्ण अतिमानसिक ज्योति नहीं हैं। कृष्णके अवतरणका मतलब है अधिमानसिक देवका अवतरण जो अपने-आप तो वास्तवमें अतिमानसिक नहीं हैं पर अतिमन और आनंदके अवतरणके लिये तैयारी कर रहे हैं। कृष्ण आनंदमय हैं, वे आनंदकी ओर अभिमुख विकासको अधिमानसके द्वारा सहारा देते हैं।"

गीर्वाण-वाणी

चंक्रमणं दिक् चक्रेऽस्मिन् कृत्वा देशं स्वमागता,
विदीर्य झंझावातं च निर्जनं च महावनम्।
पंचेन्द्रियाणि मनसा वशीकृत्य गुणत्रयम्,
व्यलोकयं शिवं व्याप्तं सर्वत्र जगतीतले॥१॥

कितने ही झंझावातों, निर्जन प्रदेशों तथा महावनोंको पार करती हुई, मैं दसों दिशाओंमें घूम-फिरकर अपने देश (अंतर्जगत्) में लौट आई। जब पांच इंद्रियों तथा त्रिगुणोंको मनद्वारा वशमें कर लिया तो मैंने देखा कि संसारमें सर्वत्र शिव ही व्याप्त हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशिरे वर्षतो मेघान्, कः पुमान् वारणे क्षमः
समीरवेगं कः कुर्यात् स्वकीये मुष्टिबन्धने।
पंचेन्द्रियाणि संयन्तुं, समर्थः स्यात्तु कश्चन,
अन्धकारे रविं बद्धुं, समर्थः स्यात्तदा नरः ॥२॥

शिशिरमें बरसनेवाले मेघोंको भला कौन रोक सकता है? वायुके वेगको भला कौन अपनी मुट्ठीमें बांध सका है? कोई तो अपनी पांच इन्द्रियोंको वशमें रखनेमें समर्थ हो। तब मनुष्य अंधकारमें सूर्यको पकड़नेमें समर्थ होगा।

सिंहीवधं किं कुर्याच्छशादनो
बन्ध्या न जानाति प्रसूतिपीडाम्।
नहि काचदीपस्य तुला ह्यलातके
न मक्षिकायां शलभस्य योग्यता ॥३॥

सिहनीका शिकार करना भला बाज क्या जाने? बांझ पुत्र-पीड़ा नहीं जानती। न कांचके दीपककी तुलना मशालसे की जा सकती है और न ही मक्खीमें शलभकी योग्यता होती है।

(भुवनवाणी प्रेस लखनऊसे प्रकाशित 'लल्द्यद'से साभार)

जो अपने हृदयमें सुनना जानता है उसके साथ समस्त सृष्टि भगवान्की बातें करती है।

*

कठिनाइयां होती ही हैं उनपर विजय प्राप्त करनेके आनंदके लिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१५ अगस्त श्रीअरविंदका जन्म दिन है। इस दिन दर्शनार्थी सुबह सवेरे श्रीअरविंदके कमरेका दर्शन करते हैं और फिर दससे साढ़े दसतक समाधिके चारों ओर ध्यान होता है।

श्रीअरविंद सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन १२, १३, १४ अगस्त-को होगा। इस अवसरपर देश भरसे लोग आते और आश्रम जीवनका लाभ उठाते हैं। श्रीअरविंदकी शिक्षाके बारेमें भाषण होते और सोसायटीके कामके बारेमें विचार-विमर्श होता है।

सोसायटीके सभापति और प्रधान सचिव श्री पी. पी. नारायणन और किशोरी लाल ढांढणिया श्रीअरविंदकी पैतृक भूमि देखने गये थे। उन्होंने वह स्थान भी देखा जहां श्रीअरविंदने उत्तरपाड़ा भाषण दिया था। कई शाखाओंमें ध्यान हुआ। २४ मई १९८६को डा. पी. पी. नारायणनके सभापतित्वमें सोसायटीकी सार्वजनिक वार्षिक सभा हुई जिसमें ३१.३.१९८५को खत्म होनेवाले वित्तीय वर्षका लेखा-जोखा देखा और पारित किया गया। सोसायटीकी वर्ष भरकी गतिविधियों-की सूचना दी गयी। पश्चिम बंगालके आंचलिक केंद्रोंकी बैठक २५ मईको हुई।

शिक्षा-शिविर—लगभग २५ अध्यापक और शिक्षामें रस लेने-वाले लोगोंका शिविर २७ मईसे ७ जूनतक पांडिचेरीमें हुआ। सोसायटी हर वर्ष मईके अंतमें एक शिक्षा शिविरकी व्यवस्था करती है जिसमें सच्ची शिक्षाके बारेमें अध्ययन किया जाता है।

श्री मनोजदासने बंबईकी श्रीअरविंद सोसायटी और वर्ल्ड यूनियन-के तत्वावधानमें 'आनंदके रहस्य'पर दो भाषण दिये।

श्री सुन्दरम्‌ने मईमें ओमपुरी शिविरमें भाग लिया और गुजरातके बहुतसे केंद्रोंमें श्रीअरविंद और उनके योगके बारेमें भाषण दिये।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Live in his Being, Shine with His Light,
Act with His Power, Rejoice with His Bliss."

The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast Packagings Private Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 *Telex:* 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

Works:

PLOT No. G. 1/3 MIDC AREA, BOISAR,
DIST. THANE MAHARASHTRA

Phones: 682, 491, 591 *Telex::* 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा. सीताराम जायसवालने 'बालकके पूर्ण विकासमें माता पिता और अध्यापकोंकी भूमिका'पर श्रीअरविंद भवन बंगलौरमें भाषण दिये।

नई दिल्ली—श्रीअरविंद सोसायटीने अपने केंद्रमें होनेवाले कार्य-क्रमोंकी सूचना मित्रोंतक पहुंचानेके लिये एक मासिक बुलेटिन प्रकाशित करना शुरू किया है। केंद्रमें हर रोज सवेरे योगकी कक्षाएं होती हैं। अप्रैलमें विवेकानन्द केंद्रके सहयोगसे योग चिकित्सा शिविर लगा। हर महीने पहले, तीसरे और चौथे शनिवारको डा. रामतीर्थ अग्रवाल चैत्य शक्ति और ध्यानके बारेमें और दूसरे शनिवारको न्यायमूर्ति रंगराजन सावित्रीके बारेमें भाषण देते हैं। यह केंद्र शीघ्र ही उपनिषद्, ध्यान तथा फ्रेंच, जर्मन और संस्कृतकी कक्षाएं शुरू करनेकी तैयारी कर रहा है। जिन्हें रस हो वे श्रीअरविंद सोसायटी केंद्र, अधचिनी रोड, नई दिल्ली-११००१७से पत्र-व्यवहार करें।

मद्रास श्रीअरविंद सोसायटीने १९८५-८६ में—श्रीअरविंदको पांडिचेरी आये ७५ वर्ष पूरे हुए—इस उपलक्ष्यमें ७५ घरोंमें श्रीअरविंद के ७५ चित्र लगाये। १) घरोंके चुनावमें अभीप्सा रखनेवाले युवकों-को प्राथमिकता दी गयी। २) सोलह उच्चतर विद्यालयोंके विद्यार्थियों-को माताजी और श्रीअरविंदकी पुस्तकें भेंटस्वरूप दी गयीं। छोटे बच्चोंको बीस हजार 'आदर्श बालक' देनेकी योजना बन रही है। ३) वर्तमान शिक्षाकी चुनौतियोंके सिलसिलेमें भावी शिक्षाके लिये हम क्या कर सकते हैं इस विषयमें एक दो दिनका कार्य-क्रम रखा गया जिसमें पांडिचेरीके श्री विजय और डा. महेश्वरने भाग लिया। इसमें अध्यापकों, अभिभावकों और अन्य लोगोंने काफी रस लिया। डा. श्री निवास अयंगारकी पुस्तक इस विषयके लिये आधार सामग्री थी। ४) सोसायटीने शैक्षिक अनुसंधान केंद्रकी सहायतासे एक शिक्षासंबंधी प्रशिक्षणकी कक्षाकी व्यवस्था की है जिसमें लगभग ३०० घंटोंका कार्य-क्रम है। ५) इस वर्ष दो पुस्तकें प्रकाशित की गयीं, पहली नीरद वरणकी श्रीअरविंदके साथ वार्तालाप दूसरी श्रीअरविंदकी शिक्षा और योगका तमिल संस्करण।

सोसायटीके नये केंद्र—१) श्रीअरविंद, केंद्र द्वारा श्री माणिकलाल शाह, अमृत संजीवन आरोग्य तीर्थ जंतराल (पंच महल) गुजरात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

२) मातृ गृह साधना केंद्र, द्वारा श्री आदित्य श्रीवास्तव ४७/७ किशोर गंज पन्ना (मध्य प्रदेश)

सोसायटीके सभापति श्री पी. पी. नारायणन मलयेशियाके प्रसिद्ध नेता हैं। उन्हें १ मईको लगभग आठ हजार लोगोंकी भीड़में उनकी सेवाओंके उपलक्ष्यमें एक स्वर्ण-पदक भेंट किया गया। उसपर लिखा है 'मलयेशियाके मजदूर वर्गके पिता'। वे अंतरराष्ट्रीय फ्री ट्रेड यूनियनके भी अध्यक्ष हैं।

धनादेश—आज बैंकोंने चेकपर फीस बढ़ा दी है। कृपया अपना चंदा या भेंट भेजते समय चेकसे न भेज कर ड्राफ्टसे या पोस्टल आर्डर या धनादेशसे भेंजे।

नये प्रकाशन

गुजराती—चंपकलालजीकी प्रार्थनाएं और उद्‌गार; मूल्य रु. १५; डाक व्यय अतिरिक्त।

पूजालालके नवीन प्रकाशन—योग तपस्या ३ रु.;
ज्वाला नो जन्म ३ रु.; श्रीअरविंदके ईशोपनिषद्‌का अनुवाद १२.५० सुभाषितमाला ४ रु. (संस्कृत); चिल्ड्रन आफ गाड ३.५० रु.।

प्राप्ति स्थान—शब्द, श्रीअरविंदाश्रम पांडिचेरी ६०५००२।

अंग्रेजी—सोसायटी एनुअल; मूल्य २० रु.।

श्रीअरविंद एंड द यूथ : बड़ौदा सोसायटीका प्रकाशन अंग्रेजी और गुजरातीमें।

द मदर: लेखक विल फ्राइड; अंग्रेजी १६ रु., जर्मन ३० रु.

टाक्स विद श्रीअरविंद: नीरद वरण (दो भागोंका) रु. १००.००।

लाइट ऑफ लाइट्स—श्री विजय द्वारा संपादित अंग्रेजीमें आध्यात्मिक कविताओंका संकलन; २५ रु.। **प्राप्ति स्थान**—शब्द।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

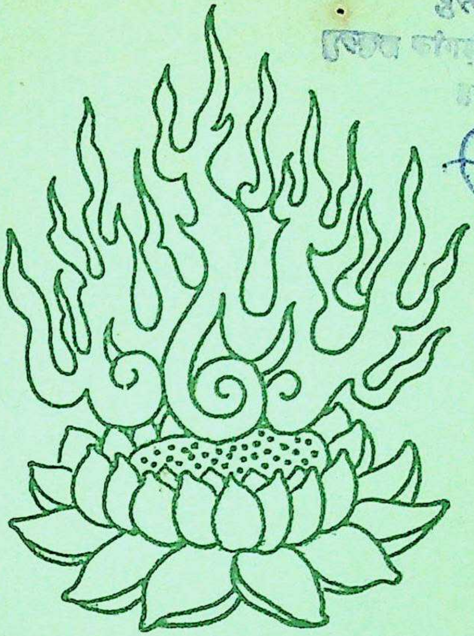

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

सितंबर १९८६

वर्ष १७, अंक २, पूर्णांक १९४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश		१
संपादकीय : पंगुम् लंघयते गिरिम्	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		४
कर्म—मूल्य और स्वरूप		७
कर्ममें सच्चा मनोभाव		१०
कर्ममें कामना और आत्मनिवेदन		२०
कर्मोंमें पूर्णता		२४
कर्म कैसे करें		२९
दिव्य कर्म		३३
श्रीअरविंद सोसायटी युवक परिषद्		आ० ३

छपाईके खर्चे बढ़ते जा रहे हैं। अग्निशिखा और पुरोधाके चंदेसे हमारा खर्च पूरा नहीं पड़ता। कृपया अधिक-से-अधिक आजीवन सदस्य बनानेकी कोशिश कीजिये। दोनोंका सम्मिलित शुल्क है ४००; एक मुश्त या किस्तोंमें।

चेक न भेजें, उसमें बहुत असुविधा होती है। ड्राफ्ट, धनादेश या पोस्टल आर्डर भेज सकते हैं। अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

संपर्क : संपादक अग्निशिखा एवं पुरोधा, पांडिचेरी—६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

संदेश

संपूर्ण सुखी रहनेके लिये

सरल होना कितना आसान है, केवल सद्भाव-पूर्ण होना, अच्छे-से-अच्छा करना, और उत्तम तरीकेसे करना; किसी बड़ी चीजकी रचना न करना, केवल प्रगतिके लिये, प्रकाशके लिये, सद्भावना-पूर्ण शांतिके लिये अभीप्सा करना और 'उसे' जो जगत्में जानता है, अपने लिये निर्णय करने दो कि तुम क्या बनोगे और तुम्हें क्या करना चाहिए। तब तुम्हें कोई चिंता नहीं रहती और तुम **पूरी तरह सुखी** रहते हो।

—माताजी

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

पंगुम् लंघयते गिरिम्

जीवनके बहुविध रंगोंमें हर मनुष्य नहाता है। उसकी प्रकृतिकी आवश्यकताके अनुसार उसपर जीवन अपने रंगोंकी बौछार करता है। हर मनुष्य अपने रंगको ही जीवनका रंग मान बैठता है। कुछ विरले ही उसके अनेक रंगोंको पहचान पाते हैं, उनमें नहा पाते हैं। और ऐसे व्यक्ति संसारमें विलक्षण माने जाते और वे ही जीवनके किसी-न-किसी क्षेत्रमें नेतृत्व करते हैं। अनेक रंगोंकी चित्रकारी, उनका सौंदर्य और माधुर्य केवल उसपर सुहाता है जिसमें साहस हो, संकल्प हो, जिसने हारको भूलकर भी पहचाना न हो।

आज हम ऐसे वीरोंका परिचय पाएंगे जिन्होंने सबसे हठी, दुराग्रही शारीरिक पराजयोंको पराजित किया था। शरीरके जड़ विरोधको अपनी अजेय इच्छाके बलपर सहकारमें बदल दिया था।

हम १९५६ में तैराकी विजेता शैली मनके जीवनकी झांकी लें। जब वह विजय मंचपर खड़ी हुई तो उसका चेहरा झर-झर बहते आंसुओंसे नहा उठा था। जनताने समझा कि ये अश्रु खुशीके होंगे, किसीने कल्पना न की होगी कि ये आश्चर्य और कृतज्ञताके द्योतक थे। अगर कोई उनसे कहे कि शैली पांच वर्षकी आयुमें पोलियो-का शिकार बन गयी थी तो कोई विश्वास न करेगा। उसके अवश अवयवोंमें थोड़ी गति लानेके लिये डाक्टरोंने उसे पानीमें उतार कर हाथोंको हिलानेकी कसरत करवानेकी सलाह दी थी। जिस दिन उसका हाथ पानीसे थोड़ा ऊपर उठा उस दिन उसकी खुशीकी हद न रही। फिर धीरे-धीरे सभी अंगोंमें शक्ति आई किंतु उसने कभी सोचा न था कि एक दिन वह विश्वके तैराकोंके बीच अपनी सफलता और पोलियोपर विजयकी पताका फहरा सकेगी। शैली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेली ओलम्पिक विजेता नहीं है जिसने अपनी शारीरिक अक्षमताको क्षमतामें बदल दिया हो।

अमरीकाके एक गरीब काले परिवारमें जन्मी विल्मा रुडोल्फ उन्नीस भाई बहनोंमें सत्रहवीं थी। समयसे पहले उसका जन्म हुआ था इसलिये जन्मके समय उसका वजन था २.०४ किलोग्राम। घरकी गरीबी ऐसी थी कि विल्मा मजाकमें कहती कि भोजन पानेके लिये उसे हमेशा दूसरोंसे होड़ करनी पड़ती थी। दुर्भाग्यने उसका पीछा न छोड़ा और चार वर्षकी आयुमें उसे एक साथ पोलियो, निमोनिया और स्कारलेट ज्वरने दबोच लिया। बिस्तरसे उठी तो बांया पांव बेकार हो चुका था। दो वर्षके बाद वह ब्रेस लगाकर चल पाई। डाक्टरके आदेशके अनुसार सारा परिवार बारी-बारीसे विल्माके पांवकी मालिश करता था। अब ब्रेस छोड़कर वह विशेष जूते पहनकर चलने लगी और एक ऐसा भी दिन आया जब वह अपने भाई बहनोंके साथ बास्केट बाल खेलने लगी। आगे चलकर एक और चमत्कार भी हुआ; वह बिना विशेष जूतोंके दौड़ने-कूदने लगी। स्कूलके खेलोंमें इतनी चमकी कि उसके कोचने उसे दौड़की प्रतियोगितामें जानेके लिये तैयार किया। उसकी दौड़ १९६०में रोमके ओलम्पिकमें स्वर्ण पदक जीतकर ही रुकी।

ये तो उनकी कहानी है जिन्होंने पोलियो जैसी त्रासदीसे मुक्ति पाई किंतु ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जिन्होंने अन्य शारीरिक अक्षमताओंको जीता। तान्या काजान्कीना बचपनसे ओलम्पिकमें अपने देशका प्रतिनिधित्व करनेका सपना देखा करती थी किंतु ओलम्पिकमें जानेसे पहले उसमें जो प्रशिक्षण शिविर लगा था वहां डाक्टरी जांचमें पता चला कि तान्याका हृदय कुछ गड़बड़ीमें पड़ा है। किसी भी क्षण वह दिलके दौरेको बुला सकता है। बेचारी तान्याके सपने चकनाचूर हो गये किंतु उसका कोच बहुत साहसी पुरुष था। उसने और तान्याने निश्चय किया कि वे रूठे हृदयको मना लेंगे और धीरे-धीरे खुले स्थानोंमें जाकर सावधानीसे कसरतें शुरू कर दीं। उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेहनत और संकल्प-शक्ति रंग लायी और तान्याने मोंटरेयलमें ८०० और १५०० मीटर दौड़में अपने देशको सर्वप्रथम स्थान दिलवाया।

तो ये हैं वे प्रेरक कहानियां जो हमें बताती हैं कि हम भी न केवल शारीरिक बल्कि हर प्रकारकी मानसिक और प्राणिक बीमारीको जीत सकते हैं क्योंकि हमारी मानसिक या वैचारिक गलतियां, मन और प्राणकी हर बेड़ियां और बुरी आदतें बीमारी ही तो हैं।

'स्वस्थ शरीरमें स्वस्थ मन और प्राण' यही हो हमारा आदर्श। उसके लिये अपनी ओरसे संकल्प, साहस और कड़ी मेहनत और भगवान्से प्रार्थना करनी चाहिए और तब उस परम करुणामयकी करुणा अवश्य बरसेगी।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

सितंबर

१. जो शक्तियां कार्य कर रही हैं उनका निरीक्षण करो, जीवनमें की गयी गलतियोंपर मनन करके उनके पीछेके सत्यको ढूंढ निकालो किंतु योजनाएं मत बनाओ।
   जो कार्य करना है उसकी व्यवस्था और उसका संपादन उच्चतर शक्तिपर छोड़ दो।
२. स्पष्ट, प्रबुद्ध, सचेतन और जाग्रत् बने रहो।
३. सत्ताका प्रत्येक भाग चाहे भगवान्को जानता, समझता न हो उसने उनका स्पर्श तक न पाया हो, फिर भी उसे उच्चतम भागकी आज्ञाका पालन करना चाहिये,—यही सचाईका सारतत्त्व है।
४. पीछे मत देखो, बल्कि हमेशा सामने देखो।
५. तुम्हारा जीवन भगवान्के सामने खुली किताब-सा होना चाहिये जो हमेशा जांचके लिये तैयार रहे। चेतनाके प्रकाशमें जिस बेचैनी होती हो और जो उससे छिपना चाहता हो, ऐसा कुछ भी न करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. कार्योंमें पूर्णताकी अभीप्सा सच्ची आध्यात्मिकता है।

७. शिक्षाको विकसित होती सत्ताओंमें जो कुछ विद्यमान है उसे उद्घाटित करना चाहिये और उसे खिलने देना चाहिये। जिस तरह सूर्यके प्रकाशमें फूल खिलते हैं, वैसे ही बच्चोंको हर्षमें खिलना चाहिये।

८. भारतने हमेशा मनुष्यमें व्यक्तिगत आत्माको देखा है, मन और शरीरमें लिपटे हुए दिव्यताके अंशको, वैश्व स्व और आत्माकी प्रकृतिमें सचेतन अभिव्यक्तिके रूपमें देखा है।

९. मैं चाहती हूं कि वे (सरकार) योगको शिक्षाके रूपमें मान्यता दें, यह हमारे लिये नहीं बल्कि राष्ट्रके लिये अच्छा होगा। भौतिक तत्त्वका रूपांतर हो जाएगा, वह एक ठोस आधार बनेगा। जीवन दिव्य बन जाएगा। इसके लिये भारत नेतृत्व करे।

१०. शिक्षाका उद्देश्य मनुष्यको जीवन और समाजमें सफल होनेके लिये तैयार करना नहीं है, बल्कि उसकी पूर्णताकी क्षमताको अपनी चरम सीमातक ले जाना है।

११. चाहे किसी धर्मकी कोई विशेष शिक्षा दी जाय या न दी जाय, भगवान्के लिये, मानवजातिके लिये, राष्ट्रके लिये जीना, और इनमें दूसरेके और अपने लिये जीना; इन सबको प्रत्येक राष्ट्रीय विद्यालयका आदर्श बनाना चाहिये।

१२. तुम्हें अपनी सत्ताकी गहराइयोंमें उसे खोजना चाहिये जो सर्वव्यापकताके भावको, सीमाहीन विस्तारको और अविच्छिन्न सातत्यको धारण करता है।

१३. व्यक्तिगत आराम, संतोष, मौज या सुखको खोजना छोड़ दो। प्रगतिके लिये एक जलती मशाल बनो। जो कुछ तुम्हारे साथ घटे उसे अपनी प्रगतिमें सहायताके रूपमें लो और तुरंत आवश्यक प्रगति कर लो।

१४. तुम जो कुछ करो उसमें मजा लेनेका प्रयास करो, किंतु मजेके लिये कभी कुछ न करो।

2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. कभी उत्तेजित, अधीर या विक्षुब्ध मत हो, सभी परिस्थितियोंमें पूरी तरह शांत बने रहो।

१६. हमेशा सतर्क रहो कि तुम्हें कौन-सी प्रगति करनी है और समय खोये बिना कर लो।

१७. शिक्षाका मुख्य लक्ष्य होना चाहिये विकसित होती हुई आत्मामें-से उस चीजको बाहर निकालना जो आत्मामें उत्तम हो और उसे किसी उदात्त कार्यके लिये पूर्ण बनाना।

१८. हमारा सारा जीवन भगवान्‌को अर्पित प्रार्थना होना चाहिये।

१९. प्रत्येक सवेरे उठकर, हम पूर्ण आत्मदानके लिये प्रार्थना करें।

२०. सच्ची पुकार निश्चय सुनी जाती है और उसका उत्तर दिया जाता है।

२१. हमें निरंतर अभीप्साकी स्थतिमें रहना चाहिये लेकिन जब हम अभीप्सा न कर पायं तो हम बालककी सरलतासे प्रार्थना करें।

२२. हम प्रार्थना करें कि भगवान् हमें अधिक सिखायें, हमें अधिकाधिक प्रकाश दें, हमारे अज्ञानको दूर करें और मनको प्रबुद्ध करें।

२३. भागवत करुणासे की गयी प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

२४. परम प्रभु दिव्य ज्ञान और पूर्ण ऐक्य हैं। दिनके हर क्षण हम उनको पुकारें ताकि हम उन्हें छोड़कर और कुछ न हों।

२५. जो सचाईके साथ भगवान्‌को पुकारते हैं उनके लिये कुछ भी असंभव नहीं होता।

२६. मेरा सब कुछ आपकी सेवामें रहे।

२७. हे प्रभु, तुम्हें जाननेकी तीव्र इच्छा मेरे अंदर जगाओ।

२८. मैं अभीप्सा करता हूं कि मेरा जीवन तेरी सेवामें समर्पित रहे।

२९. ऐसा कर कि मैं तेरे दिव्य मार्ग-दर्शनका अनुसरण करूं। मुझे अपनी सच्ची नियतिके बारेमें पता चले।

३०. हे प्रभु, तेरे माधुर्यने मेरी आत्मामें प्रवेश किया है और तूने मेरी समस्त सत्ताको हर्षसे भर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म—मूल्य और स्वरूप

केवल जान लेने भरसे क्या लाभ? मैं तुझे कहता हूं ज्ञानके अनुसार कर्म कर और वही बन जा। क्योंकि इसीके लिये भगवान्‌ने तुझे इस मानव शरीरमें भेजा है।

*

यदि तेरा उद्देश्य महान् हो और साधन छोटे, तो भी कर्म कर, क्योंकि केवल कर्मके द्वारा ही ये तेरे लिये वर्धित और विकसित हो सकते हैं।

*

निश्चय ही कामके बड़े और छोटे होनेका विचार आध्यात्मिक सत्यके लिये एकदम विजातीय है . . . आध्यात्मिक दृष्टिसे न कोई चीज बड़ी है न छोटी। ऐसे विचार पढ़े-लिखे उन लोगोंके विचारों जैसे हैं जो सोचते हैं कि कविता लिखना तो एक बड़ा काम है और जूते बनाना या खाना पकाना छोटा और नीचे दर्जेका। परंतु आत्माकी दृष्टिमें सब समान हैं—महत्त्व केवल उस आंतरिक भावनाका है जिसके द्वारा काम किया जाता है। किसी विशेष प्रकारके कामके बारेमें भी यही बात हैं, उसमें छोटा-बड़ा कुछ नहीं।

*

जो लोग पूरी सच्चाईके साथ माताजीके लिये कार्य करतें हैं वे स्वयं कार्यके द्वारा ही समुचित चेतना प्राप्त करनेके लिये तैयार किये जातें हैं, भले ही वे ध्यान करने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये न बैठें अथवा योगका कोई विशेष अभ्यास न करें। तुम्हें यह बतानेकी आवश्यकता नहीं कि ध्यान कैसे किया जाता है; अगर तुम अपने कर्ममें और सारे समय सच्चे बने रहो और अपने-आपको माताजीके प्रति खोले रखो तो जो कुछ आवश्यक है वह अपने-आप ही आयेगा।

*

कर्ममें चाहे जितनी भी कठिनाइयां क्यों न उठें, यदि मनुष्य उन्हें सच्ची वृत्तिमें ले तो उनसे अपनी समताको गहरा बनाकर उतना ही अधिक लाभ उठा सकता है। तुम्हें इस विषयमें सहायता ग्रहण करनेके लिये अपने-आपको खुला भी रखना चाहिये, क्योंकि प्रकृतिको बदलनेके लिये माताजीसे सदा ही सहायता आती रहेगी।

*

भगवान्‌के लिये कर्म करना शरीरसे उनकी प्रार्थना करना है।

*

सच्ची भावनामें किया गया कर्म ध्यान ही है।

*

यदि तुम कुछ भी न करो तो तुम्हें कोई अनुभव नहीं होगा। सारा जीवन ही अनुभवका क्षेत्र है। प्रत्येक क्रिया —व्यक्ति जो भी कर्म करता है वह और उसे जो भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार आता है वह—एक अनुभव हो सकती है, और एक अनुभव होनी चाहिये। कर्म विशेष रूपसे अनुभवका स्वाभाविक क्षेत्र है, जहां व्यक्तिको उस उन्नतिको कार्य रूप देना चाहिये जिसे वह अपने अंदर करनेका यत्न करता है।

यदि तुम कर्म नहीं करते और केवल ध्यान-चिंतनमें ही लगे रहते हो, यदि कोई भी कर्म न करते हुए तुम अपने अंदर ही बन्द रहते हो तो तुम नहीं जान पाते कि तुमने उन्नति की भी है या नहीं; ऐसी अवस्थामें तुम पूरी तरह अपने आत्मगत भ्रममें, अपनी उन्नतिके भ्रममें निवास करने लगते हो। इसके विपरीत यदि तुम अपने-आपको कर्ममें प्रवृत्त करते हो तो कर्मकी सारी परिस्थितियां, दूसरोंके साथ तुम्हारा संपर्क, भौतिक व्यस्तताएं, सब अनुभव-प्राप्तिके क्षेत्र बन जाते हैं, जहां तुम केवल यही नहीं जान पाते कि तुमने क्या उन्नति कर ली है बल्कि यह भी कि तुम्हें अभी और कौन-सी उन्नति करनी है।

*

मैं समझती हूं हर एकके लिये यह भिन्न-भिन्न होता है। प्रत्येकको उन क्रियाओंको ढूंढ़ निकालना चाहिये जो उसकी अभीप्साको, उसकी चेतनाको, वस्तुओंके प्रति उसके गहन ज्ञानको बढ़ाती हैं; दूसरी ओर उन क्रियाओंको भी देखना चाहिये जो इनमेंसे प्रत्येकको यांत्रिक बना देती हैं और वस्तुओंके साथ निरे भौतिक संबंधके धरातलतक नीचे उतार लाती हैं। सबके लिये कोई सामान्य नियम बनाना कठिन है।

सच तो यह है कि कामका अपने-आपमें महत्त्व नहीं है बल्कि उस तरीकेका महत्त्व है जिसके साथ इसे किया जाता है।

एकदम भौतिक प्रकारका काम भी, उदाहरणार्थ फर्श साफ करनेका काम एक अत्यंत गहरी चेतनाकी ओर ले जा सकता है यदि उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णता और विकासकी भावनाके साथ किया जाय, जब कि ऊंचे दर्जेके समझे जानेवाले काम भी, उदाहरणार्थ अध्ययन और साहित्य और कलात्मक काम विकासमें जरा भी सहायता नहीं पहुंचाते यदि उन्हें यश-प्राप्तिके लिये, स्व-प्रेमकी तुष्टिके लिये या किसी भौतिक लाभके उद्देश्यसे किया जाय। अतएव वर्गीकरण बाहरी तथ्यकी अपेक्षा आंतरिक वृत्तिपर अधिक निर्भर करता है। और यह बात प्रत्येक वस्तुपर लागू होती है।

*

अपने काममें जब तुम यह देखो कि कोई वस्तु तुम्हें बाहरसे तंग कर रही है तो अपने अंदर झांको और तुम पाओगे कि उससे मिलती-जुलती कठिनाई तुम्हारे अपने अंदर है। अपने-आपको बदल लो और बाहरकी परिस्थितियां बदल जायेंगी।

कर्ममें सच्चा मनोभाव

तुम्हारे लिये यह बिल्कुल संभव है कि तुम घरपर और अपने कामके बीच रहकर साधना करते रहो—बहुतसे लोग ऐसा करते हैं। आरंभमें यह आवश्यक है कि जितना अधिक-से-अधिक संभव हो उतना माताजीका स्मरण किया जाय, प्रत्येक दिन कुछ समय हृदयमें उनका ध्यान किया जाय, अगर संभव हो तो भगवती माताके रूपमें उनका चिंतन किया जाय, अपने भीतर उनको अनुभव करनेकी अभीप्सा की जाय, अपने कर्मोंको उन्हें समर्पित किया जाय और यह प्रार्थना की जाय कि वह भीतरसे तुम्हें पथ दिखायें और तुम्हें बल दें। यह आरंभिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था है जो बहुधा बहुत समय रहती है, पर यदि कोई सच्चाई और लगनके साथ इन अवस्थाओंमेंसे गुजरता है तो मनोवृत्ति कुछ-कुछ बदलना आरंभ कर देती है और साधकमें एक नयी चेतना खुल जाती है जो अंतरमें श्रीमांकी उपस्थितिके बारेमें, प्रकृतिमें और जीवनमें होनेवाली उनकी क्रियाके बारेमें अथवा सिद्धिका दरवाजा खोल देनेवाली किसी अन्य आध्यात्मिक अनुभूतिके बारेमें अधिकाधिक सचेतन होना आरंभ करती है।

*

तुमने जिन कठिनाइयोंका जिक्र किया है, वे सब बहुत स्वाभाविक चीजें हैं जो अधिकतर लोगोंमें सामान्य रूपसे पायी जाती हैं। स्मरण करना और सचेतन होना व्यक्तिके लिये उस समय अपेक्षाकृत सरल होता है जब वह शांत होकर ध्यानमें बैठा हो पर कामकी व्यस्ततामें ऐसा करना कठिन है। कर्ममें भी स्मृति और सचेतनता क्रमशः बढ़ती रहती है। इसे एकाएक ही प्राप्त कर लेनेकी आशा तुम्हें नहीं करनी चाहिये। कोई भी इसे एकदम नहीं प्राप्त कर सकता। यह प्राप्त होती है दो तरीकोंसे : पहला माताजीकी स्मृतिको बनाये रखनेका और कर्मको, प्रत्येक समय जब भी कुछ किया जाय, उन्हें निवेदित करनेका यदि व्यक्ति अभ्यास करता है (काम करते हुए सारे समय नहीं बल्कि प्रारंभ करते समय या जब भी याद कर सके) तो धीरे-धीरे यह प्रकृतिके लिये सहज और स्वाभाविक चीज बन जाती है। दूसरा, ध्यानके द्वारा एक आंतरिक चेतनाका विकास शुरू हो जाता है और जो कुछ समय बाद, एकाएक या अचानक नहीं, स्वयमेव अधिकाधिक स्थायी होता जाता है। व्यक्ति इसे उस बाहरी चेतनासे पृथक् अनुभव करता है जो कार्य करती है। प्रारंभमें यह पृथक् चेतना काम करते समय अनुभव नहीं होती पर ज्यों ही काम समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाता है व्यक्ति महसूस करता है कि यह सारे समय वहां उपस्थित थी, पीछे रहकर निरीक्षण कर रही थी। बादमें कामके बीचमें भी यह महसूस होने लगता है मानों व्यक्तिके अपने ही दो भाग हों, एक पीछे रहकर निरीक्षण करता, सहारा देता, माताजीका स्मरण करता और उन्हें अर्पण करता रहता है और दूसरा काम करता रहता है। जब यह हो जाता है तब सच्ची चेतनासे कर्म करना अधिकाधिक आसान होता जाता है।

*

(सदा भगवान्द्वारा ही शासित होना)

पहली चीज है—इसके लिये निरंतर अभीप्सा करना, दूसरी है, अपने अंदर एक प्रकारकी निश्चलता बनाना, और बाह्य कर्मसे इस निश्चलतामें पीछे हट आना और सुननेके लिये एक प्रकारकी प्रतीक्षा करना, किसी ध्वनिको सुननेके लिये नहीं बल्कि अंतरात्माके द्वारा उच्चतर चेतनाका आध्यात्मिक संवेदन और निर्देशन प्राप्त करनेके लिये।

*

सच्चे कार्योंको करनेके लिये यदि तुम्हारे अंदर उपयुक्त चेतनाकी बहुत अधिक चाह और अभीप्सा है, तो वह तुम्हें इन अनेक तरीकोंमेंसे किसी एकसे प्राप्त हो सकती है :—

१. तुम अपने प्रयासोंको इस प्रकार देखनेकी आदत डाल सकते हो या योग्यता पैदा कर सकते हो कि तुम कार्यकी प्रेरणाको आते हुए और साथ ही उसके स्वरूपको भी देख सको।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. एक ऐसी चेतना प्राप्त हो सकती है कि जब कभी कामके बारेमें गलत विचार या प्रेरणा उठे या गलत संवेदन आये तो उसे बेचैनी हो।

३. हो सकता है कि जब तुम कोई गलत काम करने जा रहे हो तो कोई चीज तुम्हारे भीतर तुम्हें चेता दे और रोक दे।

*

व्यक्तिको एक ही काम हमेशा उत्साहके साथ कर सकना चाहिये और साथ ही उसे तैयार रहना चाहिये कि क्षणभरकी सूचनापर वह किसी दूसरे काममें लग सके या अपने कार्यक्षेत्रको बढ़ा सके।

*

तुम प्रत्येक क्षण अपने संकल्पको अभीप्साके रूपमें एक उपहार बना सकते हो: एक ऐसी अभीप्साका जिसका बहुत सीधा-सा रूप यह होता है—यह नहीं कि, "हे भगवान्, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो" बल्कि यह—कि "ऐसी कृपा करो कि मुझसे जितना अधिक-से-अधिक बन सके मैं सर्वोत्तम चीज ही किया करूं।"

हो सकता है तुम प्रत्येक क्षण इस बातको न जान पाओ कि क्या करना सर्वोत्तम है और उसे कैसे किया जाय, पर तुम अपने संकल्पको भगवान्पर छोड़ दो कि वह, जो भी सर्वोत्तम संभव है, जो भी सर्वोत्तम चीज संभव है, उसे करे। तुम देखोगे कि इसके बहुत ही आश्चर्यजनक परिणाम होते हैं। इसे सचेतनता, सच्चाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और धैर्यके साथ करो और तुम विराट्-पगोंसे प्रगति-पथपर अपनेको बढ़ता पाओगे। इसका ऐसा ही परिणाम होता है, है न! व्यक्तिको कार्योंको, आत्माके पूरे उत्साहके साथ और संकल्पकी पूरी शक्तिके साथ करना चाहिये, प्रत्येक क्षण जो भी सर्वोत्तम संभव है, जो भी सर्वोत्तम चीज संभव है, उसे ही करो। दूसरे क्या करते हैं इससे तुम्हारा कोई मतलब नहीं—यह एक ऐसी चीज है जिसे मैं तुम्हारे सामने जितनी बार दोहराऊं कम है।

*

प्र०—काम शुरू करनेसे पहले यह कैसे जानें कि यह तरंग भगवान्से ही आयी है?

उ०—यह ज्ञान तुममें इसलिये नहीं है क्योंकि तुम जानना नहीं चाहते। सुनो, मैं नहीं मानती कि कोई ऐसा व्यक्ति भी है जिसमें कोई चीज बहुत सुस्पष्ट न हो पर तुममें जाननेकी चाह सच्ची होनी चाहिये—हम लौट-फिर कर सदा उसी चीजपर आ जाते हैं कि तुम्हें सच्चाईसे चाहना चाहिये। पहली शर्त है विषयपर ऊहापोह न करना अर्थात् सब प्रकारके विचार न गढ़ने चाहियें, विचारों और संभावनाओंको एक-दूसरेके विरोधमें खड़ा करके एक भयानक मानसिक क्रियामें न लग जाना चाहिये। सबसे पहले समस्याको इस प्रकार सामने रखो मानो तुम उसे किसी औरके सामने रख रहे हो। और फिर शांत हो जाओ, बिना कोई चेष्टा किये वैसे ही शांत बने रहो। तब कुछ समय बाद तुम देखोगे कि कम-से-कम तीन विभिन्न बातें तुम्हारे सामने घट सकती हैं, कभी-कभी अधिक भी। एक बुद्धिजीवीका उदाहरण लें, जो अपने मस्तिष्कके संकेतोंके अनुसार कार्य करता है। वह अपनी समस्याको सामने रखकर प्रतीक्षा करता है। यदि वह सच्चे रूपमें सतर्क रहता है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह देखेगा कि (यहां कालक्रम अनिवार्य नहीं है, वह किसी भी भिन्न क्रममें आ सकता है) पहले एक विचार आता है (ऐसा अधिकतर बौद्धिक व्यक्तिमें ही देखनेमें आता है) "यदि मैं इसे इस ढंगसे करूं तो यह ठीक रहेगा, इसे इसी ढंगसे होना चाहिये" अर्थात् यह हुई एक मानसिक रचना। दूसरी चीज है एक प्रकारका आवेग: "मुझे यह करना चाहिये, यह ठीक है, मुझे ऐसा ही करना चाहिये।" इसके बाद आती है तीसरी चीज: जो जरा भी शोर-गुल नहीं करती, और न ही अपने-आपको दूसरोंपर लादनेका प्रयत्न करती है, पर उसमें एक निश्चयताकी शांति होती है—यह बहुत अधिक सक्रिय नहीं होती, न कोई आघात पहुंचाती है, न ही कार्यकी ओर धकेलती है किन्तु यह एक ऐसी वस्तु होती है जो जानती है और शांत, बहुत शांत रहती है। यह दूसरोंका विरोध नहीं करती, न ही यह कहती है: "न, यह गलत है।" यह केवल कहती है: "यह इस तरह है।" बस, इतना ही और फिर यह आग्रह नहीं करती। अधिकतर व्यक्ति पर्याप्त रूपसे नीरव या सतर्क नहीं होते कि वे इसे समझ सकें क्योंकि यह शोर नहीं मचाती। किन्तु मैं तुम्हें इस बातका विश्वास दिलाती हूं कि यह सबके अंदर विद्यमान होती है और यदि व्यक्तिमें वास्तविक सच्चाई है और वह सच्चे रूपसे नीरव रह सकता है तो वह इसे समझ जायेगा। लेकिन जो वस्तु सोचती है वह तर्क करना आरंभ करती है: "किन्तु, इस वस्तुका तो यह परिणाम होगा ही और इस दूसरी वस्तुका वह परिणाम होगा और यदि व्यक्ति ऐसा करे..." और 'यह' और 'वह'...का शोर फिरसे आरंभ हो जाता है। दूसरी वस्तु (प्राण) कहेगी: "हां, इसे ऐसा ही करना चाहिये, तुम समझते नहीं, ऐसा ही, ऐसा ही अनिवार्य है।" इस प्रकार तब तुम जान जाओगे। और तुम अपनी प्रकृतिके अनुसार या तो प्राणिक प्रवृत्तिको चुनोगे या मानसिक निर्देशको, पर बिरले ही ऐसा होता है कि तुम पूरी शांतिसे अपने-आपसे कहो: "हां, मैं इसे ही करूंगा, चाहे जो हो," चाहे वह तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत सुखकर न भी प्रतीत होती हो। किंतु यह वहां होती सदा है। मेरा विश्वास है कि हत्या करनेसे पहले यह हत्यारे तकमें होती है, समझे ! किंतु उसकी बाह्य सत्ता इतना शोर मचाती है कि उसे इसको सुननेका विचारतक ही नहीं आता। किन्तु यह वहां होती है सदा, सदा। प्रत्येक परिस्थितिमें, प्रत्येक सत्ताके अंतरतममें यह छोटा-सा संकेत सदा रहता है (इसे वाणी नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह आवाज नहीं करती।) यह भागवत कृपाका छोटा-सा संकेत होता है और कभी-कभी इसकी बात माननेमें बहुत अधिक प्रयत्न करना पड़ता है, क्योंकि शेष सारी सत्ता इसका उग्रतापूर्वक विरोध करती है, एक तो इस विश्वासके साथ कि वह जो सोचती है वही सत्य है और दूसरा, अपनी इच्छाके बल और शक्तिके साथ किन्तु मुझसे यह मत कहो कि इसे जानना असंभव है, क्योंकि यह सत्य नहीं है। व्यक्ति जान सकता है, केवल व्यक्ति सदा वह नहीं करता जो उसे करना चाहिये और कभी-कभी, यदि वह जानता भी है कि क्या करना चाहिये तो, वह उसे न करनेका कोई-न-कोई बहाना ढूंढ़ लेता है। तुम कहते हो, "आखिर, मैं इस आंतरिक संकेतके बारेमें बहुत विश्वस्त नहीं हूं क्योंकि यह काफी आग्रह नहीं करता कि मैं इसपर विश्वास कर सकूं।" किंतु यदि तुम पूरी तरह तटस्थ होते, दूसरे शब्दोंमें, यदि तुममें कोई इच्छा न होती, न मानसिक, न प्राणिक और न शारीरिक, तो तुम निश्चयपूर्वक जान लेते कि यही है वह कार्य जिसे तुम्हें करना चाहिये, दूसरा नहीं। पर ये पसंदगियां हैं—पसंदगियां और इच्छाएं—जो रास्तेमें आती हैं और बाधा बन जाती हैं। तुम्हें प्रतिदिन ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिल सकते हैं। जब लोग यह कहना आरंभ करते हैं: "सचमुच, मुझे पता नहीं कि मैं क्या करूं", इसका अर्थ होता है कि उनकी अपनी कोई पसंद है। किंतु यहां आश्रममें, जैसा कि वे जानते हैं, यहां कोई और वस्तु भी है, और वे कभी-कभी उधर ध्यान भी देते हैं, उन्हें यह अस्पष्ट-सा अनुभव होता है कि बात बिल्कुल ऐसी ही नहीं है:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह ठीक ऐसा ही नहीं है, मुझे चैन नहीं है।" इसके अतिरिक्त तुमने अभी कहा था कि परिणाम ही संकेत प्रदान करता है, यहांतक कि यह कहा भी गया है (पुस्तकोंमें भी लिखा गया है) कि भागवत इच्छाका मूल्यांकन परिणामोंके द्वारा होता है, जिस वस्तुको सफलता मिलती है उसके पीछे भागवत इच्छा होती है, जिसे सफलता नहीं मिलती उसमें भगवान्‌की इच्छा नहीं होती।" यह फिर उन बहुत-सी मूर्खताओंमेंसे एक मूर्खता है जो पर्वतके समान बड़ी है। यह समस्याका मानसिक सरलीकरण है, जो कि बिल्कुल हास्यास्पद है। बात ऐसी नहीं है। यदि किसीको संकेत मिल सकता है तो वह है व्याकुलता, जरा-सी व्याकुलता, कोई बहुत बड़ी व्याकुलता नहीं--- व्यक्तिगत सच्चाईके अनुसार---बहुत थोड़ी-सी।

तुम्हें पता है यहां एक अन्य मार्ग भी है, बहुत ही सरल, (मुझे पता नहीं तुम उसका प्रयोग क्यों नहीं करते, क्योंकि यह बिल्कुल ही प्रारंभिक है) तुम कल्पना करो कि मैं तुम्हारे सामने खड़ी हूं और अपनेसे कहो, "क्या मैं इस कामको बिना किसी कठिनाई और प्रयत्नके और बिना किसी झिझक व संकोचके माताजीके सामने कर सकूंगा?" यह तरीका तुम्हें कभी धोखा नहीं देगा। यदि तुम सच्चे हो तो तुम्हें तत्काल ही पता लग जायेगा। यह बहुत-से व्यक्तियोंको मूर्खताके कगारपर रोक देगा।

*

प्र०---जिस समय हम मानसिक प्रवृत्तियोंमें अथवा बुद्धि के व्यापारोंमें एकाग्र रहते हैं उस समय हम भगवान्‌को कभी-कभी क्यों भूल जाते अथवा उनके स्पर्शको क्यों गंवा देते हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ०—यह इसलिये होता है कि तुम्हारी चेतना अभीतक बंटी हुई है। तुम्हारे मनमें भगवान् अभीतक अच्छी तरहसे बस नहीं गये हैं, अभीतक तुम दिव्य जीवनपर पूर्ण रूपसे न्यौछावर नहीं हुए हो। नहीं तो चाहे जितना भी तुम मन-बुद्धिके व्यापारोंमें लीन क्यों न रहो फिर भी तुमको यह भान रहेगा कि भगवान् तुम्हारी सहायता कर रहे हैं और तुमको धारण किये हुए हैं।

अपनी प्रत्येक प्रवृत्तिमें, चाहे वह बौद्धिक हो या सक्रिय, तुम्हारा एकमात्र मंत्र होना चाहिये 'स्मरण और समर्पण।' तुम जो भी करो वह सब भगवान्के अर्पणरूप हो। और यह भी तुम्हारे लिये एक सुन्दर अनुशासन बन जायगा और अनेक मूर्खतापूर्ण और निरर्थक काम करनेसे तुम्हें रोक देगा।

प्र०—कर्मके आरंभमें प्रायः ऐसा किया जा सकता है, किन्तु जैसे-जैसे कोई कार्यमें लीन होता जाता है वैसे-वैसे वह भूलता जाता है। स्मृति बनाये रखनेका क्या उपाय है?

उ०—जिस अवस्थाको प्राप्त करना है, जो योगकी वास्तविक पूर्णता है, अंतिम प्राप्ति और सिद्धि है, जिसके लिये बाकी सब कुछ केवल तैयारी-मात्र है, वह एक ऐसी चेतना है जिसमें भगवान्के बिना कुछ भी कर सकना असंभव है। कारण, उस समय यदि तुम भगवान्के बिना होओ तो तुम्हारी क्रियाका आधार ही लुप्त हो जाता है, ज्ञान, शक्ति सब कुछ चले जाते हैं। परंतु जबतक तुम यह अनुभव करते रहोगे कि जिन शक्तियोंका तुम उपयोग कर रहे हो वे तुम्हारी अपनी हैं तबतक तुम भगवान्के सहारेकी कमी कभी अनुभव नहीं करोगे।

योग-साधनाकी प्रारंभिक अवस्थामें यह बहुत संभव है कि बहुधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम भगवान्‌को भूल जाओ। परंतु सतत अभीप्साके द्वारा तुम्हारी स्मृति बढ़ जाती है और विस्मृति घटती जाती है। परंतु इसको किसी कठोर तपस्या या कर्तव्यके रूपमें नहीं करना चाहिये, यह तो प्रेम और आनंदकी एक सहज अभिव्यक्ति होनी चाहिये। जब तुम इस प्रकार कर सकोगे तब तुम्हारी साधनामें शीघ्र ही एक ऐसी अवस्था आ जायेगी कि यदि प्रत्येक क्षण और प्रत्येक कार्यमें तुम भगवान्‌की उपस्थितिका अनुभव न करो तो तुम तुरंत अपने-आपको अकेला, उदास और दुःखी अनुभव करने लगोगे।

जब भी तुम्हें ऐसा लगे कि तुम भगवान्‌की उपस्थितिका अनुभव किये बिना ही किसी कामको कर सकते हो और फिर भी चैनसे रह सकते हो, तभी तुमको यह समझना चाहिये कि तुम्हारी सत्ताके उस भागका अभीतक समर्पण नहीं हुआ है। यह तो साधारण मानव-समाजका तरीका है जिसे भगवान्‌की कोई जरूरत नहीं महसूस होती। परंतु दिव्य जीवनके साधकका तरीका सर्वथा भिन्न होता है। और जब भगवान्‌के साथ तुम्हारी पूर्ण रूपसे एकता हो जाती है, तब यदि क्षण भरके लिये भगवान् तुमसे अलग हो जायें तो बस, तुम निश्चेतन होकर गिर पड़ोगे। कारण, अब भगवान् ही होते हैं तुम्हारे प्राणके प्राण, तुम्हारे समग्र जीवन, तुम्हारे एकमात्र और संपूर्ण आश्रय। अब यदि भगवान् तुम्हारे साथ न हों तो फिर तुम्हारे पास कुछ रह ही नहीं जाता।

*

कर्ममें भी तपस्या है जिसका अर्थ है कि अपनी कोई पसंद न हो और जो करना हो उसे रुचिपूर्वक किया जाय। जो मनुष्य पूर्णता प्राप्त करना चाहता है उसके लिये कोई काम छोटा या बड़ा अथवा महत्त्वपूर्ण या साधारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होता। जिसके अंदर आत्म-प्रभुत्व और उन्नतिकी अभीप्सा है उसके लिये सभी कार्य समान रूपसे उपयोगी हैं। यह कहा जाता है कि मनुष्य केवल वही काम भली प्रकार कर सकता है जिसमें उसकी रुचि होती है। यह सच है, पर इससे भी अधिक सच यह है कि प्रत्येक कार्यमें, यहांतक कि अत्यंत तुच्छ प्रतीत होनेवाले कार्यमें भी वह रस ले सकता है। इस सफलताका रहस्य पूर्णताकी तीव्र अभीप्सामें निहित है। जो भी कार्य या कर्तव्य तुम्हारे हिस्सेमें आये उसे उन्नतिके संकल्पके साथ करो, तुम जो भी करो, अच्छे-से-अच्छे तरीकेसे करो, इतना ही नहीं, पूरी गंभीरताके साथ पूर्णताकी ओर उत्तरोत्तर बढ़नेके सतत प्रयासके साथ करो। इस प्रकार सभी कार्य, अति स्थूल साथ ही अत्यधिक कलापूर्ण और बौद्धिक कार्य भी, निरपवाद रूपमें रोचक बन जायेंगे। उन्नतिका क्षेत्र असीम है, और छोटी-से-छोटी वस्तुके लिये भी व्यक्ति एकाग्र हो सकता है।

कर्ममें कामना और आत्म-निवेदन

यह समझना कि कामनाके बिना कर्म असंभव है या कम-से-कम निरर्थक है एक आम भूल है। हमें बताया जाता है कि यदि कामनाका अन्त हो जाता है तो कर्मका भी अन्त हो जाना चाहिये। परंतु यह अन्य अति सरल व्यापक सामान्य सिद्धांतोंकी भांति उतना सच्चा नहीं है जितना भेदक और सीमा बांधनेवाले मनके लिये आकर्षक है। संसारमें होनेवाले कामका बहुत बड़ा भाग कामनाके किसी भी तरहके हस्तक्षेपके बिना संपन्न होता है; यह प्रकृतिकी शांत आवश्यकता तथा स्वाभाविक नियमके कारण चलता रहता है। मनुष्य भी सहज आवेग, प्रेरणा तथा सहजबोधके वश निरंतर नाना प्रकारके कार्य करता है अथवा वह मानसिक आयोजना या सचेतन प्राणिक इच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या भावमय कामनाके बिना शक्तियोंकी स्वाभाविक आवश्यकता और नियमके अनुसार ही काम करता है। कितनी ही बार उसका कार्य उसके संकल्प या उसकी कामनाके विपरीत होता है; यह किसी आवश्यकता या दबावके अधीन, किसी आवेगके वश, उसके अंदरकी जो शक्ति आत्माभिव्यक्तिके लिये प्रेरणा देती है उसकी आज्ञाके अनुकूल अथवा सचेतन रूपसे एक उच्चतर नियमके अनुसार उसके अंदरसे निःसृत होता है। कामना एक और प्रलोभन है जिसे प्रकृति-ने सचेतन प्राणियोंके जीवनमें अपने मध्यस्थ उद्देश्योंके लिये एक विशेष प्रकारका राजसिक कर्म संपन्न करनेके लिये महान् स्थान दिया है। परंतु यह उसका एकमात्र इंजन नहीं है, यहांतक कि यह प्रधान इंजन भी नहीं है। जबतक कामना रहती है तबतक बड़ी उपयोगी होती है: यह हमें जड़तासे उठनेमें सहायता पहुंचाती है और अनेक तामसिक शक्तियोंका प्रतिवाद करती है, अन्यथा वे शक्तियां कर्मको रोक ही देतीं। परंतु जो जिज्ञासु कर्म-मार्गपर बहुत आगे बढ़ गया है वह इस मध्यवर्ती अवस्थाको पार कर चुका है जिसमें कामना सहायक इंजन होती है। इसका वेग अब उसके कामके लिये अनि-वार्य नहीं रहता, बल्कि यह अत्यंत भयानक रूपमें बाधक होता है और स्खलन, अयोग्यता तथा विफलताको जन्म देता है। दूसरे लोग वैयक्तिक रुचि या वैयक्तिक हेतुके अनुसार कार्य करनेको बाध्य होते हैं, परंतु उसे निर्वैयक्तिक या वैश्व मनके द्वारा अथवा अनंत पुरुषके अंग या यंत्रके रूपमें कार्य करना सीखना होगा। शांत उदा-सीनता, प्रसन्न तटस्थता या दिव्य शक्तिको आनंदपूर्ण प्रत्युत्तर—भले ही उस शक्तिका आदेश कुछ भी क्यों न हो—वह शर्त है जिससे वह कोई प्रभावपूर्ण कर्म कर सकता है। उसका परिचालन कामनाके द्वारा नहीं, आसक्तिके द्वारा नहीं बल्कि ऐसे संकल्पके द्वारा हो जो दिव्य शांतिमें गति करता है, एक ऐसे ज्ञानके द्वारा जो परात्पर ज्योतिसे आता है, एक ऐसे संवेगद्वारा जो परमानन्दका बल हो।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार अपने कर्मोंकी भावनासे मनुष्य अपने जीवनको पुरुषोत्तमके प्रति पूजात्मक कर्ममें परिवर्तित कर सकता है क्योंकि गीतामें कहा गया है कि, "जो मुझे भक्ति भरे हृदयसे पत्र-पुष्प या फल-तोय अर्पित करता है, उसकी वह भक्ति-भेंट मैं स्वीकार करता हूं और उसका उपभोग करता हूं।"[1] यह बात नहीं कि कोई समर्पित बाहरी भेंट ही इस प्रकार प्रेम और भक्तिपूर्वक दी जा सकती है, बल्कि हमारे सब विचार, हमारे सब भाव और संवेदन तथा हमारी सब बाह्य चेष्टाएं और उनके रूप एवं विषय भी सनातनके प्रति ऐसे उपहार हो सकते हैं। यह ठीक है कि एक विशेष कार्यका या कार्यके किसी विशेष रूपका अपना महत्त्व होता है, यहांतक कि बहुत अधिक महत्त्व होता है, परंतु मुख्य वस्तु तो कार्यगत भावना ही है। कार्य जिस भावनाका प्रतीक या जिसकी मूर्त्त अभिव्यक्ति होता है वही भाव इसे संपूर्ण मूल्य प्रदान करता है तथा इसका मर्म बताकर इसका समर्थन करता है।

*

इस दीर्घ पथका प्रथम सोपान यह है कि हम अपने सभी कर्म अपनेमें तथा जगत्में विद्यमान भगवान्को यज्ञ-रूपमें अर्पित करें। यह मन तथा हृदयका भाव है; इसे आरंभ करना तो इतना कठिन नहीं, किन्तु इसे पूर्ण रूपमें सच्चा एवं व्यापक बनाना अत्यंत कठिन है। द्वितीय सोपान है अपने कर्मोंके फलके प्रति आसक्तिका परित्याग। कारण, यज्ञका एकमात्र सच्चा, अवश्यंभावी तथा परम स्पृहणीय फल—एकमात्र आवश्यक वस्तु—यही है कि हमारे भीतर भागवत उपस्थिति एवं

---

[1]पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मना।। गीता ९-२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागवत चेतना तथा शक्ति प्रकट हो और यदि यह उपलब्ध हो जाय तो और सब कुछ स्वयंमेव प्राप्त हो जायेगा। यह है हमारी प्राणिक सत्ता, हमारे कामनामय पुरुष और हमारी कामनामय प्रकृतिमें विद्यमान अहंमयी इच्छा-शक्तिका रूपांतर और यह करना पहले सोपानसे कहीं अधिक कठिन है। तृतीय सोपान है केंद्रीय अहंभाव तथा कार्यकर्ताके अहंकारसे भी छुटकारा पा लेना। यह सबसे कठिन रूपांतर है और यदि पहले दो सोपान पार न कर लिये गये हों तो इसे पूर्णतया संपन्न किया ही नहीं जा सकता। पर वे प्रारंभिक सोपान भी तबतक पार नहीं हो सकते जबतक रूपांतरकी इस गति-को सफल बनानेके लिये तीसरा सोपान प्रारंभ नहीं हो जाता और अहंभावका विनाश कर, कामनाके असली मूलका ही उन्मूलन नहीं कर देता। जब कोई जिज्ञासु अपने क्षुद्र अहंभावको अपनी प्रकृतिमें-से निकाल फेंकता है तभी वह उस सच्चे पुरुषको जान सकता है जो भगवान्‌के अंश और शक्तिके रूपमें ऊपर है और तभी वह भागवत शक्तिके संकल्पसे भिन्न अन्य समस्त प्रेरक शक्तिका परित्याग भी कर सकता है।

*

एक दूसरा भी तरीका है जो एक लंबे समयतक मेरा अपना रहा है—वह है एक ऐसी स्थिति जिसमें काम बिना किसी व्यक्तिगत विचार या मानसिक क्रियाके हस्तक्षेपके अपने-आप होता रहता है और चेतना शांत रूपसे भगवान्‌में स्थिर रहती है। पर यह स्थिति उतनी प्रयत्न करनेसे नहीं आती जितनी एक अति सहज, सतत अभीप्सा और आत्मदानके संकल्पके द्वारा आती है—या फिर यह आती है चेतनाकी एक क्रियासे, अपनी आंतरिक सत्ताको यंत्रात्मक सत्तासे पृथक् करके। अभीप्सा और आत्मदानके संकल्पका महत्तर शक्तिको कार्य करनेके लिये नीचे पुकार लाना, एक ऐसा तरीका है जिससे महान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणामोंकी प्राप्ति होती है, चाहे कुछ लोगोंको इसे प्राप्त करनेमें लंबा समय लगता है।

*

तुम जो भी करो, जो भी प्रक्रिया प्रयुक्त करो, उसमें चाहे तुमने अत्यधिक प्रवीणता और शक्ति भी प्राप्त कर ली हो, तो भी तुम्हें फल सदा भगवान्‌के हाथोंमें छोड़ देना होगा। प्रयत्न तुम सदा कर सकते हो किन्तु यह भगवान्‌की इच्छापर है कि वे तुम्हारे प्रयत्नोंका फल तुम्हें दें या न दें। यहीं तुम्हारी व्यक्तिगत शक्ति समाप्त हो जाती है; यदि फल मिलता है तो उसे लानेवाली भगवान्‌की शक्ति है, तुम्हारी नहीं।

कर्मोंमें पूर्णता

सामान्य जीवनका स्वरूप है—व्यक्तिगत लक्ष्य और इच्छापूर्तिके लिये कर्म करना जो कि किसी मानसिक या नैतिक नियंत्रणके अधीन होती है और कभी-कभी किसी मानसिक आदर्शसे प्रभावित होती है और गीताके योगके तत्त्व हैं—अपने कर्मका भगवान्‌के प्रति यज्ञरूपसे अर्पण, इच्छापर विजय, निरहंकार और निष्काम कर्म, भगवान्‌के लिये भक्ति, वैश्व चेतनामें प्रवेश, सब प्राणियोंके साथ एकात्मताका बोध और भगवान्‌के साथ एकता। इन तत्त्वोंके साथ यह योग अतिमानसिक प्रकाश और शक्तिके अवतरणको, जो कि उसका अंतिम उद्देश्य है, तथा प्रकृतिके रूपांतरको जोड़ देता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल मुक्ति ही नहीं अपितु पूर्णता कर्मयोगका लक्ष्य होना चाहिये। भगवान् हमारी प्रकृतिद्वारा तथा हमारी प्रकृतिके अनुसार ही कर्म करते हैं; यदि हमारी प्रकृति अपूर्ण हो तो कर्म भी अपूर्ण, मिश्रित एवं अयुक्त होगा। यहांतक कि उसमें स्थूल भ्रांतियों, असत्यों, नैतिक दुर्बलताओं, पथसे हटानेवाले प्रभावोंसे रुकावट भी पड़ सकती है। भगवान्‌का कर्म हमारे अंदर तब भी होता रहेगा, पर होगा हमारी दुर्बलताके अनुसार, अपने उद्‌गमकी शक्ति और पवित्रताके अनुसार नहीं। यदि हमारा योग सर्वांगीण योग न होता, यदि हमें अपनी अंत:स्थित आत्माकी मुक्ति, या प्रकृतिसे वियुक्त पुरुषकी निश्चल सत्ता ही अभीष्ट होती तो इस क्रियागत अपूर्णताका कुछ मूल्य न होता। शांत, अक्षुब्ध, हर्षरहित, विषादरहित, पूर्णता और अपूर्णता, गुण और दोष तथा पाप और पुण्यको अपना न मानते हुए, यह देखते हुए कि प्रकृतिके गुण ही अपने क्षेत्रमें कार्य करते हुए यह मिश्रण पैदा करते हैं, हम आत्माकी नीरवतामें पीछे हट सकते थे और शुद्ध एवं निर्लिप्त रह कर केवल साक्षीकी भांति प्रकृतिके व्यापारोंको देख सकते थे। परंतु सर्वांगीण सिद्धिमें यह हमारे मार्गका एक सोपानमात्र हो सकती है, अंतिम पड़ाव नहीं। क्योंकि हमारा लक्ष्य आत्मसत्ताकी निश्चलतामें ही नहीं वरन् प्रकृतिकी गतिमें भी दिव्य सिद्धि उपलब्ध करना है। ऐसा पूरी तरह तबतक नहीं हो सकता जबतक हम अपने कार्योंके प्रत्येक पगमें तथा उनकी प्रत्येक गतिविधि और रूपरेखामें, अपने संकल्पके प्रत्येक झुकाव, प्रत्येक विचार, भाव एवं आवेगमें भगवान्‌की उपस्थिति और शक्तिको अनुभव नहीं कर लेते। इसमें संदेह नहीं कि एक दृष्टिसे हम अज्ञानकी प्रकृतिमें भी भगवान्‌की उपस्थिति एवं शक्तिका अनुभव कर सकते हैं परंतु वह एक प्रच्छन्न दिव्य शक्ति तथा उपस्थिति, एक वामनाकृति एवं क्षुद्र मूर्ति है। हमारी मांग इससे बहुत बड़ी है, वह यह कि हमारी प्रकृति भगवान्‌के परम सत्य एवं परा ज्योतिमें, नित्य आत्म-चेतन संकल्पकी शक्ति और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनातन ज्ञानकी बृहत्तामें भगवान्की ही एक शक्ति बन जाय।

अहंका पर्दा हटानेके बाद प्रकृति और उसके उन निम्नतर गुणोंका पर्दा हटाना होता है जो हमारे मन-प्राण-शरीरपर शासन करते हैं। अहंकी सीमाएं ज्यों ही लुप्त होने लगती हैं त्यों ही हमें पता चल जाता है कि वह पर्दा किस चीजका बना हुआ है और हम अपनेमें विश्व-प्रकृतिकी क्रिया होती देखते हैं एवं विश्व-प्रकृतिके भीतर या इसके मूलमें विश्वात्माकी उपस्थिति तथा जगद्व्यापी ईश्वरकी विराट् गति अनुभव करते हैं। यंत्रके स्वामी इस अखिल क्रियाके पीछे खड़े हैं और क्रियाके भीतर भी उनके स्पर्श तथा एक महान् पथप्रदर्शक या प्रवर्तक प्रभावकी प्रेरणा उपस्थित रहती है। तब हम अहं या अहं-शक्तिकी सेवा नहीं करते; हम जगत्के स्वामी और उसके विकास-संबंधी आवेगकी आज्ञाका पालन करते हैं। पग-पगपर हम संस्कृतके एक पद्यकी भाषामें कहते हैं कि "मेरे हृदयमें बैठे हुए आप मुझे जैसे प्रेरित करते हैं वैसे ही हे स्वामिन्, मैं कार्य करता हूं।" फिर भी वह कार्य दो अत्यंत भिन्न कोटियोंका हो सकता है, एक केवल प्रकाशयुक्त, और दूसरा महत्तर एवं परा प्रकृतिमें रूपांतरित तथा उन्नीत। कारण, हम अपनी प्रकृतिद्वारा धारित एवं अनुसृत होकर कर्म मार्गपर चलते चले जा सकते हैं जैसे प्रकृति और इसके अहंता-रूपी भ्रमके द्वारा "यंत्रारूढ़की भांति" चलाये जाते थे, पर अब हम इस बातको पूर्ण रूपसे समझते हुए चल सकते हैं कि इस यंत्रकी क्रिया क्या है और सब कर्मोंके स्वामी, जिन्हें हम इस क्रियाके पीछे अनुभव करते हैं, अपने जगत्के प्रयोजनोंके लिये इसका क्या उपयोग करते हैं। निश्चय ही यह वह अवस्था है जिसे अनेक महान् योगी भी आध्यात्मीकृत मनके स्तरोंपर प्राप्त कर चुके हैं; परंतु यह आवश्यक नहीं कि सदा सर्वदा ऐसी ही स्थिति रहे, क्योंकि इससे भी महान् अतिमानसिक संभावना है। अध्यात्म-भावापन्न मनसे ऊंचे उठ जाना तथा परमोच्च माताकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आद्या भागवती सत्य-शक्तिकी जीवंत उपस्थितिमें सहज रूपसे कर्म करना भी संभव है। हमारी गति उसकी गतिसे एकीभूत तथा उसमें निमज्जित हो जायगी, हमारा संकल्प उसके संकल्पसे एकीभूत तथा हमारी शक्ति उसकी शक्तिमें विमुक्त हो जायगी और हम यह अनुभव करेंगे कि वह हमारे द्वारा इस प्रकार कर्म कर रही है मानों परमा प्रज्ञा-शक्तिके रूपमें अभिव्यक्त साक्षात् भगवान् ही कर्म कर रहे हों। और हमें अपने रूपांतरित मन, प्राण तथा शरीर ऐसे जान पड़ेंगे मानों वे अपनेसे अत्युच्च उस परा ज्योति एवं शक्तिके माध्यम हों जो, अपने ज्ञानमें परात्पर तथा परिपूर्ण होनेके कारण, अपनी क्रिया-पद्धतिमें निर्भ्रान्त हैं। हम इस ज्योति एवं शक्तिके वाहन, साधन तथा यंत्र ही नहीं, अपितु एक परम उदात्त शाश्वत अनुभूतिमें इसके अंग बन जायेंगे।

*

कर्मोंमें पूर्णताके लिये अभीप्सा ही सच्ची आध्यात्मिकता है।

*

दो वस्तुओंपर विचार करना है: चेतना और वे यंत्र जिनके द्वारा चेतना अभिव्यक्त होती है। पहले हम यंत्रोंको लें: मानसिक सत्ता जो विचारोंको उत्पन्न करती है, भावुक सत्ता जो भावनाओंको जन्म देती है, प्राणिक सत्ता जो कार्य करनेकी शक्ति उत्पन्न करती है और भौतिक सत्ता जो कार्य करती है।

एक प्रतिभावान् व्यक्ति किसी भी चीजको हाथमें ले सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कोई सुन्दर चीज गढ़ सकता है क्योंकि वह प्रतिभावान् है। पर यदि इस प्रतिभावान् व्यक्तिको एक संपूर्ण यंत्र दे दो तो वह एक अद्भुत वस्तु गढ़ लेगा। एक महान् संगीतकारको लो, वह टूटे-फूटे पियानोसे भी—चाहे उसमें कई स्वर न हों—एक सुन्दर चीज पैदा कर लेगा। पर यदि तुम उसे एक बढ़िया, सुस्वर पियानो दे दो तो वह और भी अधिक सुन्दर चीज कर सकेगा। दोनों अवस्थाओं में चेतना वही है किन्तु अभिव्यक्तिके लिये उसे अच्छे यंत्रकी आवश्यकता है—एक ऐसे शरीरकी जिसमें मानसिक, प्राणिक, आंतरात्मिक और भौतिक क्षमताएं हों।

यदि तुम्हारा शारीरिक निर्माण ठीक ढंगसे न हुआ हो, अर्थात् तुम्हारा शरीर बेडौल हो तो अच्छी प्रशिक्षा पाकर भी वह एक सुन्दर और गठीले शरीरवाले व्यक्तिके समान व्यायाम नहीं कर सकेगा। मनके साथ भी ऐसा ही है—जिस व्यक्तिका मन सु-व्यवस्थित, संहत, पूर्ण और सूक्ष्म होता है वह अपने-आपको उस व्यक्तिसे कहीं अधिक अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सकेगा जिसका मन साधारण कोटिका और अव्यवस्थित है। सबसे पहले तुम्हें अपनी चेतनाको शिक्षित करना चाहिये—अपने प्रति सचेतन होना चाहिये, अपने आदर्शके अनुसार ही अपनी चेतनाको व्यवस्थित करना चाहिये, किन्तु साथ ही अपने शरीरके यंत्रोंकी उपेक्षा मत करो।

तुम्हारे अंदर दोनों चीजें होनी चाहियें, उच्चतर चीज है वह चेतना जो तुम्हें ठीक गति करने योग्य बनाती है, लेकिन उसमें सबका समावेश नहीं है। जब तुम पूर्णताके लिये प्रयास करते हो तो, तुम एकको पा चुके हो इस बहाने दूसरीकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म कैसे करें

जब तुम्हें थकावट लगने लगे तो अत्यधिक परिश्रम मत करो, बल्कि आराम करो—केवल अपना साधारण काम-काज ही करते रहो। चंचल भावसे सारे समय यह या वह करते रहना इसे ठीक करनेका तरीका नहीं है। जब थकान महसूस हो तो एकमात्र आवश्यक वस्तु है, अंदर और बाहरसे शांत रहना। शक्ति सदा तुम्हारे निकट है, तुम उसका अपने अंदर आह्वान कर सकते हो और वह इन चीजोंको दूर कर देगी, पर उसे ग्रहण करनेके लिये तुम्हें शांत रहना सीखना होगा।

*

भौतिक वस्तुओंमें व्यवस्थापूर्ण सामंजस्य एवं संगठन कार्यकुशलता और पूर्णताका आवश्यक अंग है और यह यंत्रको दिये गये किसी भी कामको करनेके लिये उपयुक्त बना देता है।

*

नियमित हो सकनेकी क्षमता एक बहुत बड़ी शक्ति है, —इससे व्यक्ति अपने समयका और 'अपनी गतिविधियों-का स्वामी बन जाता है।

*

संकल्पका मतलब है, इच्छाशक्तिका ऐसा प्रयास कि निश्चित समयके अंदर काम पूरा हो जाय। यह कोई बंधनकारी 'प्रतिज्ञा' नहीं है कि उस समयतक काम पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो ही जायगा। यदि यह पूरा न भी हो पायें तो अपना प्रयत्न ऐसे ही जारी रखना चाहिये जैसे कोई तारीख निश्चित की ही न गयी हो।

*

यह बिल्कुल सच है कि भौतिक वस्तुओंमें एक चेतना होती है जो सार-संभालका अनुभव करती एवं उसका उत्तर देती है, और लापरवाह स्पर्श या रूखे व्यवहारको झट महसूस करती है। इस बातको जानना तथा महसूस करना और उनके साथ सावधानी बरतना सीखना चेतनाकी एक बहुत-बड़ी प्रगति है।

*

यदि तुम कोई काम भली प्रकार करना चाहते हो, चाहे वह जो भी हो—किसी भी प्रकारका और छोटे-से-छोटा कार्य भी, जैसे खेल खेलना, पुस्तक लिखना, चित्रकारी अथवा संगीतका अभ्यास करना, दौड़में भाग लेना, जो भी हो —यदि तुम उसे ठीक ढंगसे करना चाहते हो तो तुम्हें वही बन जाना होगा जो तुम करते हो, तुम वह छोटे-से व्यक्ति नहीं बने रह सकते जो अपने कार्यका एक साक्षीमात्र होता है, क्योंकि यदि तुम साक्षीमात्र ही हो तो तुम . . . तुम अब भी अपने अहंकी ओरसे अनजान बने हुए हो। यदि तुम अपने अंदर वही बन जाते हो जो कि तुम करते हो, तो यह एक बहुत बड़ी प्रगतिका चिह्न है। छोटे-से-छोटे ब्यौरेतकमें यह बात सीखनी चाहिये। एक मनोरंजक उदाहरण लो। तुम एक बोतल भरना चाहते हो। तुम अपने-आपको एकाग्र करते हो। (तुम इसे एक अनुशासनके रूपमें, एक व्यायामके रूपमें कर सकते हो); तुम एक बोतलके पदार्थको दूसरी बोतलमें भरना चाहते हो। जबतक तुम भरी जानेवाली बोतल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हो, भरनेवाली बोतल और भरनेकी क्रिया होते हो, अर्थात् जबतक तुम यही बने रहते हो, तबतक सब कुछ ठीक चलता है। किन्तु यदि दुर्भाग्यवश तुम एक क्षणके लिये भी यह सोचते हो, "ओह, सब ठीक है, मैं ठीक प्रकारसे कार्य कर रहा हूं," तो अगले ही क्षण पदार्थ नीचे गिर जाता है। सभी वस्तुओंके साथ ऐसा ही होता है; सबके साथ। इसीलिये अनुशासन सीखनेके लिये कर्म एक बहुत अच्छा साधन है। कारण, कार्य करनेवाला व्यक्ति बननेकी जगह तुम्हें कार्य बनना पड़ेगा, नहीं तो तुम कार्यको भली भांति कभी नहीं कर सकोगे। यदि तुम कार्य करनेवाला व्यक्ति ही बने रहोगे जो कार्य कर रहा है और साथ ही तुम विचारोंको चक्कर काटने दोगे तो यह निश्चय जानो कि तुम नाजुक चीजोंको हाथमें लोगे तो वे टूट जायेंगी, यदि तुम खाना पका रहे हो तो वह जल जायेगा, यदि तुम खेल रहे हो तो गेंद तुम्हारी पकड़से बार-बार चूक जाया करेगी ! तो, इस प्रकार कर्म एक बड़ा भारी अनुशासन है, क्योंकि यदि सचमुच तुम किसी कामको अच्छी तरह करना चाहते हो तो यही एकमात्र तरीका है जिससे तुम उसे अच्छी तरह कर सकते हो।

*

प्र०—क्या आलस्य आनेपर भी काममें लगे रहना अधिक अच्छा नहीं है ?

उ०—यह कार्यपर निर्भर करता है। हम यहां एक अन्य क्षेत्रमें प्रवेश करते हैं।

यदि तुम किसी सामूहिक काममें लगे हो, अपने व्यक्तिगत काममें नहीं, तब चाहे जो भी हो, तुम्हें उसे करते ही रहना चाहिये। यह एक प्रारंभिक अनुशासन है। तुमने एक कामको अपने हाथमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया है या तुम्हें वह दिया गया है और तुमने उसे अपने ऊपर ले लिया है, इसलिये उसे करना स्वीकार कर लिया है और उस अवस्थामें तुम्हें उसे करना ही चहिये। जो भी हो, जबतक तुम बिल्कुल ही बीमार नहीं पड़ जाते, रोगकी ऐसी गंभीर अवस्थातक ही नहीं पहुंच जाते कि तुम हिल-डुल ही न सको, तबतक तुम्हें उसे करना ही चाहिये। अगर तुम थोड़े-बहुत बीमार हो तब भी तुम्हें करना चाहिये। एक निःस्वार्थ कार्य सदा ही तुम्हारे छोटे-मोटे रोगोंको ठीक कर देता है। स्वभावतया यदि तुम्हें बिस्तरपर लेटना पड़ता है और तुम हिल भी नहीं सकते, तुम्हें तेज ज्वर है या कोई और गंभीर रोग है, तब बात दूसरी है। किंतु यदि ऐसा न हो, यदि तुम अपनेको मामूली-सा ही अस्वस्थ अनुभव करो: "मैं अपनेको पूरा स्वस्थ अनुभव नहीं कर रहा, थोड़ा सिरमें दर्द है या कुछ अपचकी शिकायत है, या जुकाम है या खांसी है," यदि ऐसी कोई बात है तो अपना काम करते रहो, अपने विषयमें सोचो ही मत, कामके विषयमें सोचो, उसे अधिक-से-अधिक अच्छे ढंगसे करो, यह तुम्हें तत्काल ही ठीक कर देगा।

सच तो यह है कि रोग केवल एक असंतुलन है; अब, यदि तुम एक अन्य संतुलन स्थापित कर सको तो यह असंतुलन अपने-आप मिट जायेगा। रोग सदा, सब परिस्थितियोंमें—जब डाक्टर कहे कि कीटाणु ही हैं, तब भी—हर हालतमें—सत्तामें एक प्रकारका असंतुलन ही होता है, विभिन्न प्रकारकी क्रियाओं एवं शक्तियोंमें असंतुलन होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य कर्म

यदि तुम दिव्य कर्मोंके सच्चे कर्ता बनना चाहते हो तो तुम्हारा पहला लक्ष्य यह होना चाहिये कि तुम सारी कामनाओंसे और अपने-आपको ही सर्वस्व माननेवाले अहंकारसे सर्वथा मुक्त हो जाओ। तुम्हारा समस्त जीवन भगवान्के प्रति अर्पण और उनके लिये यज्ञ हो। कर्ममें तुम्हारा एकमात्र लक्ष्य हो भगवती शक्तिकी सेवा करना, उनका स्वागत करना, परिपूर्ण करना, उनको प्रकट करनेवाला यंत्र बनना। तुम्हें भागवत चेतनामें तबतक विकसित होते जाना है जबतक तुम्हारी इच्छा और उनकी इच्छामें भेद न रह जाय, तुम्हारे अंदर उनकी प्रेरणाके अतिरिक्त और प्रेरक हेतु न रहे, कोई कर्म ऐसा न हो जो तुम्हारे अंदर और तुम्हारे द्वारा होनेवाला उन्हींका सचेतन कर्म न हो।

जबतक तुम इस संपूर्ण सक्रिय एकत्वके योग्य नहीं हो जाते तबतक तुम्हें यही मानना चाहिये कि तुम्हारी देह और आत्मा मांकी सेवाके लिये ही बनी हैं, जो सब कुछ उन्हींके लिये करती हैं। यदि तुम्हारे अंदर यह बोध प्रबल हो कि तुम एक अलग कर्ता हो और तुम यह अनुभव करो कि तुम ही कर्म कर रहे हो फिर भी कर्म मांके लिये ही किया जाना चाहिये। अहंकारमय पसंदके सारे जोर, वैयक्तिक लाभकी सारी लोलुपता और स्वार्थी कामनाओंकी सारी मांगोंको प्रकृतिमेंसे मिटा देना होगा। फलकी कोई मांग या पुरस्कारकी कोई खोज नहीं होनी चाहिये। तुम्हारे लिये एकमात्र फल है भगवती मांकी प्रसन्नता और उनके कार्योंकी पूर्ति। तुम्हारा एकमात्र पुरस्कार होगा भागवत चेतना, शांति, बल और आनंदमें उत्तरोत्तर उन्नति। सेवाका आनंद और कर्मके द्वारा आंतरिक विकासका आनंद ही निःस्वार्थ कार्यकर्ताके लिये यथेष्ट पुरस्कार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर एक समय आयेगा जब तुम अधिकाधिक यह अनुभव करोगे कि तुम यंत्र हो, कर्ता नहीं। पहले तो तुम्हारे भक्ति-बलसे भगवती मांके साथ तुम्हारा संबंध इतना घनिष्ठ हो जायगा कि हर समय बस एकाग्र होकर सब कुछ उनके हाथोंमें सौंपना होगा और तुम्हें उनका साक्षात् निर्देश, उनकी सीधी आज्ञा या प्रेरणा मिल जायेगी, और इसका निश्चित संकेत मिलेगा कि क्या करना है, कैसे करना है और क्या फल होगा। बादमें तुम यह अनुभव करोगे कि भगवती शक्ति तुम्हें केवल प्रेरणा ही नहीं देतीं, मार्ग ही नहीं दिखातीं बल्कि तुम्हारे कर्मोंको शुरू भी करती हैं और पूरा भी, तुम्हारी सारी गतियां उन्हींसे निकलती हैं, तुम्हारी सारी शक्तियां उन्हींकी हैं, तुम्हारे मन, प्राण, शरीर उन्हींके कर्मके सचेतन और आनंदमय यंत्र हैं, उनकी लीलाके साधन हैं, स्थूल जगत्में उनकी अभिव्यक्तिके सांचे हैं। इस एकता और निर्भरतासे अधिक सुखद स्थिति और कोई नहीं हो सकती, क्योंकि यह पग तुम्हें अज्ञानके संघर्ष और भारमय जीवनके प्रदेशकी सीमाके पार ले जाता है, तुम फिर अपनी अध्यात्मसत्ताके सत्यमें, उसकी गंभीर शांतिमें, उसके तीव्र आनंदमें जा पहुंचते हो।

जब यह रूपांतर हो रहा हो उस समय यह विशेष रूपसे आवश्यक है कि तुम अपने-आपको अहंकारकी समस्त विकृतियोंके दोषसे मुक्त रखो। किसी भी मांग या हठको घुसकर आत्मदान और बलिदानको कलंकित न करने दो। कर्ममें या फलमें कोई आसक्ति न हो, अपनी कोई शर्त न हो, तुम्हें जिस शक्तिके अधीन रहना है, उसपर अपने अधिकारका कोई दावा न हो। भगवतीके यंत्र होनेका कोई अभिमान न हो, कोई घमंड या दंभ न हो। मनमें या प्राण और देहके किसी भागमें कोई ऐसी चीज न रहनी चाहिये जो तुम्हारे द्वारा काम करती हुई महती शक्तियोंको अपने निजी काममें लगाकर विकृत कर दे या उनका अपनी व्यक्तिगत और पृथक् तृप्तिके लिये प्रयोग करे। तुम्हारी श्रद्धा, तुम्हारी निष्ठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तुम्हारी अभीप्साकी विशुद्धता संपूर्ण हो और सत्ताके सब क्षेत्रों और स्तरोंमें व्याप्त हो जाय। तब, विघ्न उत्पन्न करनेवाला प्रत्येक तत्त्व, विकृत करनेवाला प्रत्येक प्रभाव क्रमशः तुम्हारी प्रकृतिसे झड़ जायगा।

इस परिपूर्णताकी अंतिम अवस्था तब आयेगी जब भगवती मांके साथ तुम्हारा पूरा तादात्म्य होगा, जब तुम यह अनुभव करोगे कि तुम कोई पृथक् भिन्न सत्ता, यंत्र, सेवक या कर्मी नहीं हो, वरन् वास्तवमें भगवती मांकी संतान, उनकी चेतना और शक्तिके शाश्वत अंश हो। सदा वे तुम्हारे अंदर रहेंगी और तुम उनके अंदर; तुम्हें यह सतत, सहज और स्वाभाविक अनुभव होगा कि तुम्हारा सारा सोचना, देखना, सुनना और कर्म करना, तुम्हारा श्वास-प्रश्वास और हिलना-डुलना भी उन्हींसे आता है, उन्हींका है। तुम जानोगे, देखोगे और अनुभव करोगे कि उन्होंने ही तुम्हें अपने-आपमेंसे एक व्यक्ति और शक्तिके रूपमें निर्मित किया है, अपने अंदरसे लीलाके हेतु प्रकट किया है, और फिर भी तुम सदा उन्हींके अंदर सुरक्षित हो, उन्हींकी सत्ताके सत्, उन्हींकी चेतनाकी चेतना, उन्हींकी शक्तिकी शक्ति और उन्हींके आनंदके आनंद हो। जब यह स्थिति पूर्ण होगी और अतिमानसिक शक्तियां तुम्हें बिना रोकके परिचालित कर सकेंगी, तभी तुम उनके दिव्य कर्मोंमें पूर्णता प्राप्त करोगे; तब ज्ञान, संकल्प और कर्म निश्चित, सरल, ज्योतिर्मय, अबाध, निर्दोष, परमेश्वरसे निःसृत एक प्रवाह, शाश्वतकी एक दिव्य गतिधारा होंगे।

*

तेरे कर्मोंमें ये तीन तत्त्व सदा ही रहते हैं—स्वामी कर्त्ता और यंत्र। अपने अंदर इनका यथार्थ स्वरूप निर्धारित कर लेना और यथार्थ रूपसे इनपर अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लेना ही कर्मोंका रहस्य एवं कर्मोंके आनंदका रहस्य है।

पहले तू भगवान्‌का यंत्र होना और उसे अपना स्वामी स्वीकार करना सीख। यंत्र है वह बाह्य वस्तु जिसे तू 'अपना-आप' कहता है; यह है मनका एक सांचा, शक्तिका एक प्रेरक बल और एक स्थूल आकारमय मशीनरी जो नानाविध कमानियों, दांतों, शिकंजों तथा अन्य कलपुर्जोंसे भरपूर है। इसे कर्त्ता या स्वामी न कह, यह कभी भी कर्ता या स्वामी नहीं हो सकता; अपने-आपको तू नम्रता-पूर्वक पर गर्वके साथ, भक्ति, शरणागति और प्रसन्नताके साथ भगवान्‌का एक यंत्र स्वीकार कर।

इससे बढ़कर गर्व और गौरवकी बात कोई नहीं है कि व्यक्ति अपने स्वामीका परिपूर्ण यंत्र हो।

तू पहले पूरी तरह आज्ञापालन करना सीख। तलवार इस बातका चुनाव नहीं करती कि वह कहां वार करेगी, तीर यह नहीं पूछता कि उसे किधर छोड़ा जायेगा, मशीनकी कमानियां उस माल-पर आग्रह नहीं करतीं जो उसके श्रमसे तैयार किया जायेगा। ये चीजें तो प्रकृतिके उद्देश्य और उसकी कार्य-प्रणालीद्वारा निश्चित होती हैं। और जितना ही अधिक सचेतन यंत्र प्रकृतिके शुद्ध और सच्चे विधानको अनुभव करना और उसकी आज्ञा-पालन करना सीखेगा उतनी ही जल्दी उससे संपादित होनेवाला कर्म पूर्ण एवं निर्दोष होगा। स्नायविक प्रेरक बलकी अपनी पसंद तथा दैहिक और मानसिक उपकरणोंका विद्रोह कार्यको केवल हानि ही पहुंचा सकते हैं।

अपने-आपको तू भगवान्‌के निःश्वासमें बहने दे, और आंधीमें

(शेष आवरण ४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills
(Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Live in his Being, Shine with His Light,
Act with His Power, Rejoice with His Bliss."

The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast Packagings Private Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 *Telex:* 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

Works:

PLOT No. G. 1/3 MIDC AREA, BOISAR,
DIST. THANE MAHARASHTRA

Phones: 682, 491, 591 *Telex::* 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Selfishness kills the soul; destroy it. But take care that your altruism does not kill the souls of others.

Sri Aurobindo

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद सोसायटी युवक परिषद्

देशकी युवा पीढ़ीमें माताजी और श्रीअरविंदके अंतर्दर्शनमें रस बढ़ता जा रहा है।

सोसायटीके युवा परिषद्की इच्छा है कि वह इस अभीप्साको कार्यान्वित करनेमें आपकी सहायता कर सके। वह सभी युवकोंको इस कार्यमें भाग लेनेका निमंत्रण दे रहा है।

युवा परिषद्के सदस्य : माताजीने दृढ़ताके साथ कहा है कि यौवन उम्रपर नहीं व्यक्तिके भावपर निर्भर है। तदनुसार युवा परिषद्में उम्रकी कोई कैद न होगी। उसमें प्रवेश पानेके लिए जाति, धर्म, मत-मतांतर आदिका ख्याल न रखा जायेगा।

युवा परिषद्का सदस्य होनेके लिये ये बातें जरूरी हैं :—

१—श्रीअरविंद सोसायटीका सदस्य होना। परिषद्की अलग सदस्यता न होगी।

२—माताजीने सदस्योंके लिये जो तीन काम जरूरी बतलाए थे उन्हें पूरा करना :

(क) माताजी, श्रीअरविंदकी कृतियोंको पढ़नेमें हर रोज कुछ समय लगाना।

(ख) आत्म-निरीक्षणके लिये कुछ समय रखना, अपने-आपसे अपने जीवनके लक्ष्य और उसे पानेके अच्छे-अच्छे उपायके बारेमें प्रश्न करना।

(ग) युवा परिषद्के कामके लिये कुछ समय निकालना और उसे निःस्वार्थ भावसे करना।

३—अपने यहांके सोसायटीके केंद्र या शाखाके काममें सक्रिय भाग लेना और उसके विकासके लिये प्रयत्न करना।

युवा कार्यमें समन्वय : हम शाखाओं और केंद्रोंसे निवेदन करते हैं कि वे अपने यहां युवा कार्यमें ताल-मेल बैठानेके कामके लिये उचित व्यक्तियोंके नामकी सिफारिश करें ताकि सोसायटीकी कमेटी उनपर विचार करके स्वीकृति दे सके।

जिन लोगोंको युवा परिषद्के काममें रस हो वे विजय, युवा परिषद्, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी–६०५००२से पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

उड़नेवाले पत्तेके समान हो जा; उसके हाथमें अपने-आपको रख दे और उस तलवार-सा हो जा जो आघात करती है और उस तीर-सा जो अपने लक्ष्यकी ओर उड़ा चला जाता है। तेरा मन ऐसा हो जैसे मशीनका स्प्रिंग, तेरी शक्ति ऐसी हो जैसे पिस्टनका गोली-की तरह वेगपूर्वक छूट पड़ना और तेरा कर्म ऐसा हो जैसे लक्ष्य-वस्तुपर इस्पातकी चोट, जो चूर्ण-विचूर्ण करती और आकारका निर्माण करती है, तेरी वाणी ऐसी हो जैसी एरणपर पड़नेवाले हथौड़ेकी चोट और श्रमरत इंजनका आर्तनाद और तुरहीका घोष जो परमेश्वर-की शक्तिको दिग्दिगंतमें गुंजा देता है। जिस किसी भी तरह हो, तू यंत्रभावसे वह कर्म कर जो तेरे लिये स्वाभाविक और निर्दिष्ट हो।

तलवार युद्ध-क्रीड़ामें आनंद पाती है, तीर अपनी सनसनाहट और उड़ानमें उल्लास अनुभव करता है, पृथ्वी अंतरिक्षमें चकरानेवाली प्रदक्षिणामें हर्षोल्लासित है, और सूर्य अपने जाज्वल्यमान तेजस्पुंज एवं अपनी सनातन गतिके सम्राट-सम आनंदमें मस्त है। हे आत्म-सचेतन यंत्र, तू भी अपने निर्दिष्ट कर्मोंका आनंद ले।

तलवारने न तो अपने बनाये जानेकी मांग की थी, न वह अपना उपयोग करनेवालेका प्रतिरोध करती है और न ही टूट जानेपर विलाप करती है। बनाये जानेका एक आनंद है, उपयोग किये जाने-का एक आनंद है, एक तरफ रख दिये जानेका एक आनंद है और तोड़ दिये जानेका भी एक आनंद है। उस सम आनंदको ढूंढ़ निकाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

4201
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

अक्तूबर १९८६ वर्ष १७, अंक ३, पूर्णांक १९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश		१
संपादकीय : भारतकी एकता	अनुबेन	२
दैनन्दिनी		५
श्रीअरविंदाश्रम		८
श्रीअरविंद शिक्षा-केंद्र	सीमा	१६
शारीरिक शिक्षण	विश्वज्योति	२०
भोजनालयका विकास	अनुबेन	२३
नेत्र-चिकित्सा	ऊर्मिला, श्याम कुमार	२७
साकार कल्पना-लोक	वन्दना	२९
ग्लोरिया	वन्दना	३१
सोसायटी समाचार		३३

अपरिहार्य कारणोंसे पत्रिकाएं छपनेमें इतना विलंब हो गया।

बढ़ते हुए खर्चके बारेमें हमारी टिप्पणी देखकर हमारे एक प्रेमी पाठकने जिनकी अपनी आय अधिक नहीं है, हमें सहायताके लिये १००० रुपये और उनकी छोटी-सी लड़कीने ग्यारह रुपये भेजे हैं। इस भेंटका मूल्य आंकना कठिन है। हमने इस राशिको पत्रिकाओं-के लिये न लेकर छोटी-सी पुस्तक "बच्चोंके श्रीअरविंद"के लिये लिया है। यह पुस्तक उस छोटी बच्चीकी भेंटके रूपमें उसीकी उम्रके छोटे-छोटे बच्चोंको निःशुल्क दी जा रही है।—संपादक

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेश

अपनी कठिनाइयोंको भूल जाओ।

भगवान्‌के लिये अधिकाधिक पूर्ण यंत्र बननेका विचार करते रहो और भगवान् तुम्हारी सब कठिनाइयोंको जीत लेंगे और तुम्हारा रूपांतर कर देंगे।

—माताजी

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतकी एकता

रह रह कर स्मृति पटलपर श्री जैनेन्द्र कुमारकी एक सार्थक, सजीव कहानी कौंध जाती है।

दो शिकारी किसी बड़े जंगलमें शिकार करने गये किंतु हाथ कुछ न आया। थकानसे निढाल हो कर वे एक बड़े बरगदके नीचे बैठ गये। बातों ही बातोंमें एकने कहा कि जंगल बीहड़ है, बहुत घना और भयंकर है। दूसरेने कहा, "हां भैया, बड़ा डरावना है।" सुस्ता कर दोनों यों ही बातें करते हुए चले गये।

उनके जाते ही शीशमका पेड़ सहमता हुआ-सा बोला, "बरगद बाबा, आपके पास दो पशु आये थे वे कौन हैं?" बरगदने कहा, "मैं बचपनसे उन्हें देखता आया हूं। उनको आदमी कहते हैं। बेचारों-के पत्ते नहीं होते बस तनेसे निकली दो शाखाएं हैं, और दूसरी दो शाखाओंके सहारे इधर-उधर खिसकते हैं।" शीशमने पूछा, "क्या वे हमेशा ऐसे बौने और सिकुड़ेसे रहते हैं? कभी ऊंचे नहीं उठते?" बरगदने बुद्धिमानोंकी तरह सिर हिला कर कहा, "कैसे उठ सकते हैं? उनकी जड़ें ही कहां हैं, फिर जड़ों जैसा जो है वह जमे तो कैसे जमे जब वे सारे समय इधर-से-उधर नाचते फिरते हैं? वे जिन्दा कैसे रहते हैं?"

बांस जो उनकी बातचीत ध्यानसे सुन रहा था बोल पड़ा, "दादा, आप इतने वर्षोंसे यहां रहते आये हैं, आपने जंगल देखा है? वे आदमी कह रहे थे कि जंगल डरावना होता है।"

शीशमने सिर हिला कर कहा, "हां, मैंने भी सुना था, जंगल क्या होता है?"

बरगदने कहा, "मैं इतने वर्षोंसे यहां रहता हूं लेकिन मैंने जंगल-को नहीं देखा, बाघ देखे, शेर देखे, हाथी, चीता, भालू और भेड़िये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखे लेकिन यह जंगल नामका पशु कभी नहीं देखा।"

किसीने कहा "ऐसा लगता है यह प्राणी शेर, चीतेसे भी ज्यादा खतरनाक है।"

बरगदने कहा, "जब आदमी जैसा बुद्धिमान् प्राणी कहता है तो सचमुच जंगल डरावना होगा। उसके पास एक टहनी-सी होती है जिसको छूकर वह आग निकाल कर शेर, चीतेको मार डालता है। मैंने मरा हुआ शेर देखा है, हाथी देखा है लेकिन मरा हुआ जंगल नहीं देखा।"

यूं सब पेड़ोंमें चर्चा चलती रही। बरगदने घाससे पूछा, "तूने जंगल देखा है? तू तो सब जगह घूमती रहती है।" घासने हाथ जोड़कर कहा, "दादा, मैंने जंगल नहीं देखा, मैं तो हवाके सामने झुकती हूं। हवाकी बातें सुनती और उसीमें मगन रहती हूं। कभी जंगलका नाम नहीं सुना।" सारे वृक्ष इस अज्ञात जंगलके नामसे ही परेशान हो उठे। उसी समय मृगराज सिंह वहांसे गुजरा। बरगदने कहा, "क्यों भैया शेर, तुम तो सबके राजा हो। हमने सुना है कि एक भयंकर प्राणी होता है जिसका नाम है जंगल। तुमने उसे देखा है?" शेर दहाड़ा और बोला, "जंगल कौन है? उसे मेरे सामने लाओ, मैं उसे अभी ठीक करूंगा।" निराश होकर बरगद बोला, "तुमने भी उसे नहीं देखा?" शेर बोला, "मेरे सामने आ जाये तो मैं उससे लड़ कर उसकी धज्जियां उड़ा दूंगा।" शेर ऐसा दहाड़ा कि पक्षी डर कर आकाशमें उड़ गये, पेड़ सिहर उठे। बरगद बोला, "पशुओंके राजा, जंगल तुमसे डर कर कहीं छिप गया होगा। आकाशमें तो नहीं है। शायद जमीनके नीचे बैठा हो।" शेर चला गया।

अब शाम हो गई और सरसराता हुआ कौन आया? सांप! बरगदने उससे जंगलके बारेमें पूछा तो वह बोला, "जमीनके नीचे पातालतक मैं घूम आया हूं। जंगल नामका प्राणी वहां नहीं था। वह कोई हवाई प्राणी हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी दिनोंतक सारे पेड़ चिंतित रहे, चर्चा करते रहे, अंतमें उन्होंने सोचा कि शायद जंगलका अस्तित्व ही नहीं है। वह आदमी नामक प्राणीकी कल्पना ही है।

बरगदने कहा, "मित्रो! हम जंगलकी बातें कर-करके उसे अपना दुश्मन नहीं बनाएंगे। वह भयंकर और डरावना है; क्या मालूम वह हमारे साथ कैसा बर्ताव करे? दो पांव वालोंको आने दो। हम उनसे ही पूछेंगे। सच्चाई जाने बिना छोड़ेंगे नहीं।" कुछ दिनों बाद मुसीबतके मारे वे दो शिकारी फिर जंगलमें आये। सारे पेड़ और पशु उन्हें घेर कर खड़े हो गये। अचकचा कर उन्होंने बंदूक निकाली लेकिन बरगद दादाने कहा, "मार काटसे कुछ न होगा। हम शांतिसे बात कहना चाहते हैं, तुम हमें यह बताओ कि जंगल नामका प्राणी कौन-सा है और कहां रहता है? शिकारी एक दूसरेका मुंह ताकने लगे तो बरगद बोला, "उस दिन तुम मेरी छायामें बैठकर कह रहे थे न कि जंगल बीहड़ है, डरावना है! तो वह है कहां?" शिकारीकी सांसमें सांस आयी, एक बोला, "तुम ही तो जंगल हो!!!"

बरगद बोला, "वाह! मैं बरगद हूं, जंगल नहीं!" बांस फूटा, "मेरा रेशा रेशा कहता है मैं बांस हूं। जंगल कहांसे घुस पड़ा!"

जैनेन्द्रजीकी कहानी आगे चलकर बताती है कैसे बरगदको पता चलता है कि जंगल क्या है।

हमारी दशा भी उन अबोध वृक्षों-सी है। हम पंजाबको लेकर, महाराष्ट्रको लेकर इस राष्ट्रके सारे छोटे-बड़े प्रदेशोंको लेकर इसी तरह उलझ पड़ते हैं, और जिसके हम सब अंग हैं उस विशाल भारत-भूमिको भूल जाते हैं। काश! कोई हमारी आंखोंमें उंगली देकर हमें मातृ-भूमिके समग्र व्यक्तित्वकी अनुभूति करा सके। हमें अपने छोटे घरौंदोंसे निकाल माताके विशाल भवनमें प्रविष्ट करा सके।

जंगल उन असंख्य वृक्षोंका जमघट था जिसका व्यक्तित्व विशाल बन कर मानव जैसे बुद्धिमान प्राणीको भी सहमा देता था। इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह जब उसके छोटे-बड़े अंग एकत्र हो संसारके सामने इकाई बन कर खड़े होंगे तब भारत भी एक दुर्धर्ष, अजेय राष्ट्र बन संसारमें अपना विशिष्ट स्थान बना पाएगा।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

अक्तूबर

१. केवल दिव्य शक्ति भारतकी सहायता कर सकती है। अगर तुम राष्ट्रमें श्रद्धा जगा सको और संबद्धताकी रचना कर सको तो वह किसी भी मानव-रचित शक्तिसे अधिक समर्थ होगी।

२. मेरे ख्यालसे मनुष्यका मुस्कुराना कभी जरूरतसे ज्यादा नहीं हो सकता। जो सब परिस्थितियोंमें मुस्कुराना जानता है वह आत्माकी सच्ची स्थितप्रज्ञाके बहुत नजदीक होता है।

३. जीवन रातके अंधेरेमें सफर है। आंतरिक प्रकाशकी ओर जागो।

४. बाहरसे साहस, अंदर शांति और भागवत कृपामें निश्चल अविचलित विश्वास रखो।

५. संसारमें एक नये प्रकाशका उदय हो रहा है। जाग उठो और उसे ग्रहण करने, उसका स्वागत करनेके लिये एक हो जाओ।

६. सच्ची आध्यात्मिकता जीवनके परित्यागमें नहीं बल्कि जीवनको दिव्य पूर्णताके साथ पूर्ण बनानेमें है। यही बात है जो भारतको सारे संसारको दिखानी है।

७. अपने जीवनके सच्चे लक्ष्यको कभी मत भूलो और चेतनाके उच्चतम शिखरसे ही कार्य करो। भगवान्के आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. दिव्य शिक्षाको पढ़ना अच्छा है।
उसे सीखना और भी अच्छा है।
किंतु उत्तम है उसे जीना।

९. जो पूर्णताके मार्गपर बढ़ना चाहता है उसे मार्गकी कठिनाइयोंकी शिकायत कभी न करनी चाहिये; क्योंकि हर कठिनाई नयी प्रगतिका अवसर होती है। शिकायत करना दुर्बलता और कपटका चिह्न है।

१०. हे भारत, आध्यात्मिक ज्ञान और प्रकाशकी भूमि! अपने कार्यके प्रति जाग्रत् हो। ऐक्य और सामंजस्यकी राह दिखा।

११. प्रभु, मैं तुम्हारा होकर रहना चाहता हूं और तुम्हारे योग्य होना चाहता हूं। मुझे अपना आदर्श बालक बना लो।

१२. प्रकाशके लिये अभीप्सा करो और भागवत कृपापर विश्वास रखो।

१३. सुखी और सार्थक जीवनके लिये मुख्य आवश्यकताएं हैं सचाई, विनम्रता, अध्यवसाय और प्रगतिके लिये अतृप्य प्यास।

१४. सबसे बढ़कर तुम्हें प्रगतिकी असीम संभावनापर विश्वास होना चाहिये। प्रगति यौवन है, सौ सालकी आयुमें भी तुम युवा रह सकते हो।

१५. परम प्रभुकी शक्ति अनंत है--संकीर्ण है तो हमारी श्रद्धा।

१६. भगवान्‌की सहायता मनुष्य जितनी ग्रहण कर सकता है उससे कहीं अधिक विशाल है।

१७. हमारी श्रद्धाकी कमी ही हमारे सीमाबंधनोंकी रचना करती है।

१८. हम जो कुछ करते हैं और जिसके लिये कोशिश करते हैं वह सब श्रद्धासे होता रहता है। अगर हमारी श्रद्धा अपूर्ण हो तो हम कुछ भी न कर पायेंगे।

१९. जब हमारी श्रद्धा त्रुटिपूर्ण हो तो हमारा कार्य धीमा पड़ जाता है और बहुत बार असफल हो जाता है; लेकिन श्रद्धा हो तो हमारे लिये काम कर दिये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०. भागवत उपस्थिति ही जीवनको अर्थ देती है। यह उपस्थिति सारी शांति, सारे हर्ष, समस्त सुरक्षाका स्रोत है।

२१. इस उपस्थितिको अपने अंदर पा लो और तुम्हारी सारी कठिनाइयां दूर हो जाएंगी।

२२. जीवन सत्य और मिथ्यात्व, प्रकाश और अंधकार, प्रगति और अवनतिके बीच और ऊंचाइयोंकी ओर आरोहण या अतल गहराईमें पतनके बीच सतत चुनाव है। प्रत्येक व्यक्ति स्वाधीनतासे चुन सकता है।

२३. परहितवाद, कर्तव्य, परिवार, देश और मानवता; ये आत्माके यंत्र न हों तो उसके लिये कारागार बन जाते हैं।

२४. सब कुछ सुवर्ण, और सुवर्ण और सुवर्ण था, सुवर्ण प्रकाशका वेगवान प्रवाह अविच्छिन्न धारामें नीचे बह रहा था और अपने साथ यह चेतना ला रहा था कि देवोंका पथ सूर्यालोकित पथ है जहां कठिनाइयां अपनी वास्तविकता खो बैठती हैं। अगर हम उसे चुनना चाहें तो ऐसा पथ हमारे आगे खुल रहा है।

२५. हमारे विचार अभीतक अज्ञान भरे हैं, उन्हें प्रबुद्ध होना चाहिये। हमारी अभीप्सा अभीतक अपूर्ण है, उसे शुद्ध होना चाहिये। हमारा कार्य अभीतक शक्तिहीन है, उसे प्रभावशाली होना चाहिये।

२६. प्रभु, हम तेरे सामने इसलिये हैं कि तेरी इच्छाके अनुसार सब कुछ हो। हमारे विचारोंमें जो सारी बाधाएं, सारे संदेह, सारी कमजोरियां और सीमाएं हैं उन्हें हटा दे, हमारे ज्ञानपर जो कुछ पर्दा डालता है, हमारी बुद्धिको जो कुछ छिपा देता है उसे दूर कर दे।

प्रत्येक हृदयमें अपनी चरम लौ जगा।

२७. हर क्षण नव जीवनमें कैसे नया जन्म लिया जाय, यह जानना शाश्वत यौवनका रहस्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८. श्रद्धा और अविचलित विश्वास रखो। बाकी सब भगवान्की कृपा कर देगी।

२९. यह मत सोचो कि तुम जानते हो। हमेशा अधिक जाननेकी कोशिश करो।

३०. भगवान्की ओर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करनेका सबसे अच्छा उपाय है सरल भावसे सुखी रहना।

३१. एक प्रकाश है जो मार्ग-दर्शन करता है, एक शक्ति है जो सहायता पहुंचाती है।

श्रीअरविंदाश्रम

(एक विहंगम दृष्टि)

(प्रस्तुत लेखमें तिथिक्रम या किसी और प्रकारका क्रम नहीं रखा गया, केवल एक स्थलाकृतिक दृश्य दिया जा रहा है। आश्रमके क्रिया-कलापके बारेमें पढ़ते समय पाठक यह ख्याल रखें कि वहां सब मिलाकर दो हजारसे कम ही लोग हैं जिसमेंसे लगभग चार सौ तो सत्तर वर्षसे ऊपरके होंगे, लगभग छह सौ विद्यालयके विद्यार्थी और अध्यापक होंगे जिनसे हम आश्रमके इन कार्योंमें अधिक सहायताकी आशा नहीं कर सकते। यहां काम करनेके बारेमें कोई नियम नहीं है, ज्यादा काम करनेवालेको कोई पुरस्कार या न करनेवालेको दंड नहीं मिलता। कामका एकमात्र पुरस्कार है उससे मिलनेवाला आनंद, उससे होनेवाला चेतनाका विकास। हर काम भगवान्की सेवाके रूपमें ही किया जाता है जिसमें उच्च-नीचका कोई भाव नहीं रहता।—सं०)

बात शायद सन् ४३, ४४ की है। एक भक्त कोई काम शुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहते थे। उन्होंने श्रीअरविंदको पत्र लिखकर उनसे पथ-प्रदर्शन मांगा। श्रीअरविंदने लिखा, बड़े पैमानेपर काम करना हो तो उसके दो तरीके हैं, एक भारतीय और दूसरा यूरोपीय। भारतीय तरीकेमें वट-वृक्षका छोटा-सा बीज जमीनमें डाला जाता है, उसकी देखभाल की जाती है और वह बढ़ता जाता है। बढ़ते-बढ़ते वट-वृक्ष और फिर वट-वन बन जाता है। इसमें पहलेसे योजनाएं नहीं बनायी जातीं, नक्शे नहीं बनते, पहलेसे भावी आवश्यकताओं की पूर्तिके उपाय नहीं किये जाते।

दूसरा है यूरोपीय तरीका। उसमें सब कुछ पहलेसे ही सोच विचार कर तय कर लिया जाता है। कारखाना शुरू होनेसे पहले यह ठीक कर लिया जाता है कि कहां कितनी कैसी कीलोंकी, पेंचों-की जरूरत होगी। कितना, कौन-सा सामान कब खरीदना होगा।

श्रीअरविंदाश्रम शुद्ध रूपसे भारतीय ढंगसे सहज स्वाभाविक रूपमें बढ़ रहा है। एक समय था जब श्रीअरविंद अपने इने-गिने साथियों-के साथ एक छोटे-से मकानमें रहते थे। उनके साथी बारी-बारीसे खाना पका लेते थे। स्नान करनेके लिये सबके लिये कुल जमा एक तौलिया था और चूंकि श्रीअरविंद सबके बाद स्नान करते थे इसलिये सबके उपयोग कर चुकनेके बाद ही तौलिया उन्हें मिलता था। श्रीअरविंदके लिखे हुए पत्र मौजूद हैं जिनमें वे अपनी आर्थिक विपन्नताका खाका खींचते हैं।

उसके बाद माताजी आयीं। माताजी क्या आयीं, उनके साथ महालक्ष्मीने पदार्पण किया। श्रीअरविंदके भोजन, वस्त्र आदिकी व्यवस्था सुधर गयी। मकानकी देख-भाल ठीक तरहसे होने लगी और लोगोंमें भी एक नया जीवन आ गया। लेकिन कुछ दिन ऐसे भी गुजरे कि माताजीको शामको साड़ी धोकर सुखानी पड़ती थी ताकि सवेरेतक सूख जाय।

आश्रममें पकानेका, बरतन धोनेका काम नौकर करते थे। माताजी-ने बिना बोले धीरे-धीरे सुव्यवस्था लानी शुरू की। पहले माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं खाना दिया करती थीं, बादमें परोसनेका काम साधकोंके हाथमें आ गया। दो जवान लड़कियां आयीं और उन्होंने अनाज फटकने, बीनने और छाननेके सारे कामसे लेकर खाने पकानेतकका काम अपने हाथमें ले लिया। उन्हीं दिनों माताजीका एक वाक्य लोगोंके सामने आया कि भगवान्के लिये किया गया काम शरीरके द्वारा की गयी प्रार्थना है।

धीरे-धीरे आश्रमकी आबादी बढ़ने लगी और आबादीके साथ नयी आवश्यकताएं भी बढ़ीं। माताजीका शुरूसे ही एक स्वप्न था कि संसारमें एक स्थान ऐसा हो जहां मनुष्य अपने कपड़े, खानेकी चिन्तासे मुक्त हो सके ताकि वह तन-मनसे भगवान्की सेवा करनेका अवसर पा ले। शायद इसी स्वप्नका बीजारोपण हुआ और 'प्रॉस्पेरिटी' (समृद्धि) नामक विभागका आरंभ हुआ। यहां पंडित सातवलेकरजीकी एक घटनाका उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा। जब वे आश्रम आये तो उन्हें प्रॉस्पेरिटी विभाग भी दिखलाया गया। इसको देखते ही वे एकदमसे चहक उठे और बोले—वाह! यह है सच्ची प्रॉस्पेरिटी। दुनियामें जहां देखो लोग-बाग आस्टेरिटी (कठोर जीवन) की गुहार मचाते फिरते हैं लेकिन माताजीने यह प्रॉस्पेरिटी नाम देकर सचमुच एक वैदिक स्वप्नको साकार बनाया।

प्रॉस्पेरिटीसे महीनेकी हर पहलीको आश्रमवासियोंको तेल साबुनसे लेकर कपड़े-लत्तोंतक सभी जरूरतकी चीजें मिलती हैं। इधर बढ़ई लोहार आदिके कामोंकी जरूरत पड़ी तो उनके छोटे-छोटे कारखाने बन गये। माताजीने गोलकोण्ड नामक एक अतिथिशाला बनवाना शुरू किया जिसकी गिनती भवन निर्माणकी दृष्टिसे संसारके बहुत सुन्दर मकानोंमें की जाती है। इसकी आवश्यकताओंको दृष्टिमें रखते हुए एक कारखानेका आरंभ हुआ जिसमें लोहे, लकड़ी पीतलकी अनेक आवश्यक चीजें तैयार की जाने लगीं। अब यह कारखाना 'आर्पागों'के नामसे प्रसिद्ध है। आश्रम और गोलकोण्डकी आवश्यकताएं पूरी करनेके साथ ही यह आश्रमसे संबंध रखनेवाले लोगोंके लिये भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी आवश्यकताओंके अनुसार चीजें बना कर देने लगा। इस तरह इसमें व्यापार पक्ष भी आ गया।

आश्रमके मकानोंकी संख्या बढ़ने लगी। उनकी बिजली, पानी-की आवश्यकताओंको पूरा करनेके लिये बिजली-पानी-विभाग खुला जिसमें अब पंखे, रेडियो, दूरदर्शन आदिसे लेकर बड़ी-बड़ी मशीनोंकी मरम्मत करनेकी भी व्यवस्था है। महायुद्धके दिनोंमें बिजलीकी बहुत कठिनाई हो गयी थी इसलिये जेनरेटर भी लग गये जो आवश्यकता पड़नेपर आश्रमके मुख्य भवन, भोजनालय, क्रीडांगण आदिकी मांग पूरी कर सकते हैं। मकान बनानेवाले विभाग भी हैं जिन्होंने आश्रमके अनेक बड़े-बड़े मकान बनाये हैं। एक मकान आजकल बन रहा है जिसमें शायद १६० व्यक्ति रह सकेंगे।

आश्रमके साथ संबंध रखनेवालोंको अपनी आवश्यकताकी चीजें उचित दामपर मिल सकें इस उद्देश्यसे शहरमें ऑनेस्टी सोसायटी नामक दुकान खोली गयी। माताजी यह मानती हैं कि धनका उपयोग धन कमाना नहीं, भगवान्‌की सेवा करना है। आश्रमकी इन व्यापारिक संस्थाओंके कारण पांडिचेरीमें अन्न आदि आवश्यक वस्तुओंमें कभी काला बाजार बहुत पनप नहीं पाया।

इस शताब्दीके चौथे दशककी बात है। आसामसे एक चायके बागवाले सज्जन आये। उन्होंने देखा कि पांडिचेरीके बाजारमें फल और तरकारीका प्रायः अभाव-सा रहता है। उन्होंने एक बगीचा ले लिया और अपने-आप उसमें कामपर जुट गये। वहां पपीते, टमाटर, नींबू, अमरूद और कई तरहकी तरकारियां पैदा होने लगीं। गोभीके फूलके लिये कहा जाता था कि यह पांडिचेरीमें हो ही नहीं सकता; इस बगीचेने दिखा दिया कि लगनसे काम किया जाय तो सब कुछ हो सकता है।

माताजीने और भी कई छोटे-मोटे बगीचे और खेत ले लिये जहां फल फूलके अतिरिक्त धानकी खेती शुरू हुई और अब आश्रम अपनी आवश्यकताका पूरा धान अपने-आप पैदा कर लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रमके पास एक बंजर भूमि पड़ी थी जिससे कुछ भी पैदा होनेकी आशा न थी। एक भक्त वह जमीन देखने गये और उन्होंने कहा, 'अगर अच्छी जमीन हो तो कोई भी बेवकूफ वहां बहुत कुछ पैदा कर लेगा। इस जमीनमेंसे कुछ पैदा करना आश्रमका काम है।' अब उस जमीनमें काफी कुछ हो रहा है, तरकारियां और फल होते हैं जिनमें विशेष है चीकू, खरबूज, तरबूज आदि और एक गोशाला भी है जहांसे दो ढाई सौ लीटर दूध रोज आश्रमके भोजनालयमें आता है। नारियलोंकी वहांपर इफरात है।

इसके बाद ही आश्रमके प्रसिद्ध ग्लोरिया लैंडका काम शुरू हुआ जहां रासायनिक उर्वरकोंके बिना सब तरहकी खेती की जा रही है। उनका काम देखनेके लिये, बिना रासायनिक उर्वरकोंके धानकी सफल खेतीका अध्ययन करनेके लिये बांगला देश, फिलिपीन्स आदि देशोंके और दूसरी ओर अफ्रीकाके अनेक कार्यकर्ता आते रहते हैं। हरित-क्रांतिके देशके लोगोंसे सुना कि उनके देशमें रासायनिक उर्वरक दे देकर धानकी पैदावार तो बहुत बढ़ा ली गयी है लेकिन भूमि बराबर अपनी शक्ति खो रही है और जो चावल पैदा भी होता है उसमें इतना सार नहीं होता। वहां अधिक मात्रामें भात खानेपर भी थोड़ी देर बाद भूख लग आती है जब कि यहां कम भात खानेपर भी शरीर और की मांग नहीं करता। उन लोगोंका कहना है कि रासायनिक उर्वरकोंका उपयोग तो बिल्कुल निषिद्ध होना चाहिए। आश्रम इस विषयमें प्रचार नहीं करता किन्तु व्यावहारिक रूपमें परिणाम सामने रखकर आपसे अपने-आप निर्णय करनेके लिये कहता है।

पांडिचेरी आनेसे पहले भी श्रीअरविंद का लेखन कार्य काफी चलता रहता था जिसका प्रकाशन इधर-उधरसे होता था। जब श्रीअरविंदकी चीजोंकी मांग बढ़ी तो कलकत्तेमें आर्य पब्लिशिंग हाउसने इस कामका बीड़ा उठाया। पुस्तकोंका प्रकाशन और विक्रय उन्हींके हाथमें था। दूसरे महायुद्धके आरंभमें माताजीने अनुभव किया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह व्यवस्था संतोषजनक नहीं है और आश्रमका एक अपना प्रेस होना जरूरी है। उन्हीं दिनों हैदराबाद रियासतके प्रेसके एक वरिष्ठ अधिकारी यहां आये और उन्होंने श्रीअरविंदाश्रम प्रेसका काम शुरू करवा दिया।

अब आश्रमका प्रकाशन विभाग माताजी और श्रीअरविंदकी सभी पुस्तकें, आश्रमवासियोंकी अनेक पुस्तकें, उनके अनुवाद, उनके संबंधमें पुस्तकें प्रकाशित करता है। आश्रम प्रेसमें संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इतालवी, हिन्दी, बंगला, गुजराती, तमिल, तेलगु, कन्नड़ आदि भाषाओंकी पुस्तकें और प्राय: इन सभी भाषाओंमें, किसीमें मासिक, किसीमें त्रैमासिक पत्रिकाएं छापता है और नयी-से-नयी मशीनें आ गयी हैं या आ रही हैं। इस प्रेसको कई वार सर्वोत्तम छपाई, प्रदर्शन, जिल्दसाजी आदिपर पुरस्कार मिल चुके हैं। इसके साथ ही एक अभिलेखागार है जहां माताजी और श्रीअरविंदके सभी मूल लेख उनकी हस्तलिपिमें सुरक्षित हैं।

पुस्तकें प्रकाशित करना या छापना अपने-आपमें काफी बड़ा काम है लेकिन बेचनेकी ठीक व्यवस्था न हो तो यह सारा बेकार हो जाता है। इसके लिये माताजीने 'श्रीअरविंद बुक्स डिस्ट्रीब्यूशन एजेंसी' या संक्षेपमें 'शब्द'का बीज बोया। यह दिल्ली, बम्बई, फ्रांकफुर्त, सिंगापुर आदिके पुस्तक मेलोंमें भाग लेता रहता है और विभिन्न देशों और जातियोंके लोगोंको माताजी और श्रीअरविंदका परिचय देता है।

कवि श्रीअरविंद चित्रकला, संगीत, मूर्तिकला आदिके अच्छे पारखी थे। इनके बारेमें उनके लेख बहुत गंभीर और प्रामाणिक हैं। माताजी केवल पारखी नहीं अपने-आप चित्रकार और संगीतकार भी थीं। स्वभावत: आश्रममें इन कलाओंको अच्छा प्रोत्साहन मिला। भारतीय और पाश्चात्य संगीत और नृत्यके अपने-अपने विभाग हैं और एक अच्छी शिल्पशाला भी है जहां माताजीके तथा आश्रमके कलाकारोंके बनाये हुए चित्र देखे जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कशीदाकारी, बाटिक, मार्बलिग आदिके अपने-अपने विभाग हैं। एक कुटीर उद्योग है। ये सब इसी तरह शुरू हुए थे। कुछ लड़कियोंकी इच्छा हुई कि माताजीकी साड़ीपर कुछ चित्र बना दें, माताजीके उपयोगके लिये कोई सुन्दर चीज तैयार कर दें। माताजी हर नये प्रयासको प्रोत्साहन देती थीं, इन प्रयासोंको भी प्रोत्साहन मिला और धीरे-धीरे इनके छोटे-मोटे विभाग बन गये जिन्होंने वाणिज्यमें भी पांव रखा। क्रीड़ांगणके लिये बनियाइनों और मोजोंकी जरूरत हुई और आश्रमके कुटीर उद्योग विभागमें ये चीजें बनने लगीं। अब कुटीर उद्योग प्रचुर मात्रामें बनियाइन, मोजे और अगरबत्तियां बनाता है जिनका बाहरके बहुतसे लोग क्रय भी करते हैं। यहांका रेस्तरां अनेक प्रकारकी मिठाइयां, आइसक्रीम आदि बनाता है। इसके साथ एक अतिथिशाला भी है।

कॉटेजकी अगरबत्तियोंका नाम लेते ही ओरोशिखाकी याद आती है जहां ओरोशिखा अगरबत्तियां बनती हैं। आश्रमकी इस संस्थाका आरंभ एक इतालवी इंजीनियरने किया था। इसका कारखाना शहरके बाहर एक गांवमें है। माताजीने उन सज्जनसे कहा था कि कारखाना बनानेके साथ ही साथ तुम्हें साथके गांवकी सहायता भी करनी चाहिए। सहायताके लिये तमिल शब्द है 'उदवी'। उन्होंने ओरोशिखाके मुनाफेमेंसे 'उदवी' नामक संस्था शुरू की जो आसपासके गांवकी सहायता करती है। इसमें मुख्य रूपसे उल्लेखनीय है एक विद्यालय जिसमें गांवके लगभग ढाई सौ बच्चे पढ़ते हैं जिन्हें विद्यालयकी ओरसे खाना, कपड़े आदि जरूरतकी चीजें बिना दामके दी जाती हैं और पढ़ाईमें केवल अक्षर ज्ञान नहीं, कला, नृत्य, शारीरिक प्रशिक्षण आदिकी भी व्यवस्था है।

माताजी हर चीजमें, जीवनके हर क्षेत्रमें सौंदर्य देखना चाहती थीं। जहांतक संभव हुआ आश्रमके हर मकानके साथ छोटा-सा बगीचा लगाया गया। माताजीके उपयोगके लिये हाथ बना क़ागज तैयार किया गया जिसके मुख्य तत्त्व थे सौंदर्य और मजबूती। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रमके हाथ बने कागजकी काफी मांग रहती है।

शायद हमें फिरसे एक बार याद कर लेना चाहिए कि माताजीके अनुसार आजके मानव-जीवनके सभी व्यापारोंमें सबसे अधिक गंदगी है राजनीति और व्यापार व्यवसायमें। राजनीतिका तो आश्रममें पूरी तरह निषेध कर दिया गया किन्तु व्यापारको कुछ ऊंचा उठानेके लिये आश्रमके अमुक विभागोंमें स्थान दिया गया ताकि उसमें भरसक शुद्धि लानेकी कोशिश की जा सके।

आश्रमके विभागोंपर झींगुरकी सी उड़ान भरते हुए भी हमने काफी समय और स्थान ले लिया। अब लेखको समाप्तिकी ओर ले जाना चाहिए।

प्राचीन योग भौतिक शरीरकी अवहेलना किया करते थे। जहां उन्होंने 'शरीरमात्रम् खलु धर्मसाधनम्' कहा, जहां शरीरको आत्माका रथ कहा वहां भी अंतमें शरीरको छोड़कर ब्रह्ममें जा मिलनेको अपना ध्येय, बनाया परंतु माताजी और श्रीअरविंदके योगमें भौतिक शरीरका रूपांतर, उसके अंदर उच्चतम चेतनाका अवतरण ही लक्ष्य रहा है अतः शरीरको सुन्दर, सुदृढ़, बलवान् और स्वस्थ बनाना जरूरी माना जाता है। शरीरको मजबूत और सुनम्य बनानेके लिये क्रीड़ांगण है जहां तरह-तरहके व्यायामोंकी और खेल-कूदकी व्यवस्था है। साथ ही रोगको दूर करनेके लिये अनेक चिकित्सालय हैं।

माताजीने कहा है कि जितने मनुष्य हैं उतनी ही चिकित्सा पद्धतियां हो सकती हैं। हर एकके शरीर, उसका स्वभाव, उसकी प्रकृतिकी मांग अलग होती है। हो सकता है कि एक औषध एकके लिये तो अमृतका काम करे और दूसरेके लिये विषका। इसमें बहुत कुछ उसकी शिक्षा-दीक्षा, वातावरण, विश्वासपर निर्भर होता है। रोगीके विश्वास और चिकित्सकके व्यक्तित्वका अत्यधिक महत्त्व है। आश्रममें तरह-तरहके, जहां तहांके लोग हैं अतः चिकित्सा पद्धतियोंकी भी भीड़ है। यहां एलोपैथी, आयुर्वेद, होम्योपेथी, प्राकृतिक चिकित्सा, बायोकेमिक और पुष्प-चिकित्सा आदिकी समु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित व्यवस्था है, जो जहां जाना चाहे जा सकता है।

शिक्षाके क्षेत्रमें भी यहांका विद्यालय अपनी अलग-अलग छाप रखता है। विद्यार्थी परीक्षाके भयसे रटन विद्याको नहीं अपनाता क्योंकि यहां परीक्षाएं होती ही नहीं। जहांतक संभव हो विद्यार्थी अपनी रुचिके अनुसार विषयोंका चुनाव स्वयं करता है और बहुधा अध्यापक भी स्वयं चुनता है। अतः यहांका विद्यालय बच्चोंके लिये हौआ नहीं बल्कि उनका प्यारा दोस्त है। न ही यहांके स्कूलकी कोई यूनीफार्म ही है। विद्यालयमें प्रवेश करते ही रंग-बिरंगे बच्चे-बड़े फुदकते नजर आयेंगे।

लीजिये फुदकते-फुदकते हम और आप भी आश्रमके कुछ मुख्य विभागोंपर एक विहंगम दृष्टि डाल आये।

श्रीअरविंद शिक्षा-केंद्र

सन् १९२६में श्रीअरविंद आश्रमने निश्चित रूप लेना शुरू किया। भावी मानव जातिकी धरतीपर उच्चतम चेतना और दिव्य जीवनकी स्थापना करनेके लिये तैयार करना ही इस आश्रमका एकमात्र लक्ष्य था।

श्रीअरविंद अपने प्रारंभिक जीवनमें अध्यापक रहे थे। भारतके उज्ज्वल भविष्यके लिए शिक्षा सुधार उन्हें बहुत जरूरी लगता था। २ दिसंबर सन् १९४३ को श्रीमांने आखिर इस दृष्टिको एक ठोस रूप दे ही दिया।

असलमें युद्धके कारण परिस्थितियां कुछ ऐसी हो गयीं कि चारों ओरसे भक्त जन परिवारसहित आश्रममें उमड़ पड़े। परिवारोंके साथ आये छोटे-छोटे बच्चे। और इन बच्चोंके साथ शिक्षाकी समस्या पैदा हुई, जिसका हल करनेके लिये एक छोटे-से स्कूलका जन्म हुआ जहां शुरू-शुरूमें कुल मिला कर केवल बीस विद्यार्थी रहे होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कुछ ही समयमें अनोखी रफ्तारके साथ स्कूल विकसित होने लगा। सन् १९४४ को स्कूलके साथ खेल-कूदका कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। उसी साल शारीरिक शिक्षा केंद्रमें एक पुस्तकालयका उद्घाटन हुआ और बच्चोंकी चिकित्साका भी प्रबंध किया गया (आज श्रीअरविंद पुस्तकालयमें कुल मिलाकर ८८००० पुस्तकें हैं और हर महीने करीब ३० पत्रिकाएं उपहारके रूपमें आती हैं)।

शिक्षा केंद्रमें केवल मानविकी ही नहीं आधुनिक भौतिक विज्ञानको भी पूरा महत्त्व दिया गया। जहां साहित्य, संगीत, कला, नृत्य आदिके शिक्षणकी व्यवस्था की गयी वहीं १९४५ में रसायन और भौतिकीके लिये एक प्रयोगशालाका आरंभ हुआ।

जैसे-जैसे विद्यार्थी उच्च प्राथमिक शिक्षा स्तरपर पहुंचने लगे वैसे-वैसे विश्व विद्यालयका अभाव महसूस होने लगा। २४ अप्रैल १९५१को पांडिचेरीमें एक सम्मेलन हुआ जिसमें श्रीअरविंदकी स्मृतिमें अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय स्थापित करनेका निश्चय किया गया। ६ जनवरी १९५२ को श्रीमांने इस विश्वविद्यालयका उद्घाटन किया, आगे चल कर इस स्थानकी शिक्षाके लक्ष्यको ध्यानमें रखते हुए इसका नाम 'विश्वविद्यालय'से शिक्षा केंद्र में परिवर्तित कर दिया गया। और इस केंद्रका नाम हुआ 'श्रीअरविंद अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र'। संगीत, नृत्य, चित्रकारी और अन्य बहुत-सी कलाएं स्कूल जीवनके महत्त्वपूर्ण अंग बन गईं। विद्यार्थियोंकी संख्या बढ़नेके साथ-साथ बहुतसे छात्रालय भी खोले गये। आज यहां कुल मिला कर छोटे-छोटे दस छात्रालय हैं।

सन् १९५८तक श्रीमां स्वयं बहुत उत्साहके साथ स्कूलके जीवनमें भाग लेती रहीं। वह बच्चों-बड़ोंकी कक्षाएं भी लेती थीं और फिर खेल-कूदमें भी उन्होंने विशेष रुचि ली और बच्चोंके शारीरिक विकास पर पूरा ध्यान दिया। शुरूमें वे बच्चोंके गृहकार्यकी कापियां देखतीं, अध्यापकोंको आदेश देतीं और खेल-कूदपर अपने-आप नजर रखती थीं। इस देशमें शरीरकी उपेक्षा की गयी थी, 'जो खेलोगे कूदोगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगे गंवार' कहा जाता था। माताजीने सर्वांगीण शिक्षापर जोर दिया। शरीरको देवालय बनानेके प्रयास शुरू हुए। शुरूमें तो वे स्वयं भी टेनिस खेलती थीं पर बादमें काम-काजमें इतनी व्यस्त रहने लगीं कि उनका टेनिस खेलना बंद हो गया।

आज भी इस विद्यालयमें बच्चोंको उनके दिव्य प्रेमकी पवित्र छायामें रहनेका अवसर मिलता है।

यह केंद्र चार भागोंमें विभाजित है--

१) किंडरगार्टन (शिशु-विहार) २) फ्लावर रूम ३) प्राथमिक विद्यालय ४) ज्ञान मंदिर। शिशु विहार ४ से ६ साल तकके बच्चोंके लिये एक खास जगह है जहां उन्हें खेल-खेलमें शिक्षाकी पहली झलक मिलती है। यहां बच्चे जो जी चाहें कर सकते हैं; उन्हें पूरी-पूरी आजादी दी जाती है और हर तरहकी कलाके लिये सामग्रियां दी जाती हैं ताकि बच्चेके मानसिक विकासमें किसी प्रकारकी बाधा न हो। यहां बच्चे संस्कृतमें श्लोक गाना और फ्रेंचमें बात करना सीखते हैं। छोटे होनेके कारण उन्हें कोई नयी भाषा सीखनेमें ज्यादा दिक्कत नहीं होती और कुछ ही समयमें वे एक-दूसरेसे बेझिझक फ्रेंचमें बातचीत कर लेते हैं।

फ्लावर रूम ६ से ९ साल तकके बच्चोंका उपवन है, जहां बच्चों-को खेलनेके अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रेंच और संस्कृत पढ़ाने लिखानेके साथ-साथ थोड़ा बहुत गणित और व्याकरणसे परिचित कराया जाता है किंतु अध्यापक इस बातका ध्यान अवश्य रखते हैं कि बच्चोंपर किसी भी तरहका मानसिक तनाव न पड़े। अतः जहांतक हो सके इन्हें सब कुछ एक रुचिकर खेलके रूपमें सिखाया जाता है।

९ सालके बाद बच्चेका स्कूलमें प्रवेश होता है जहां उसे सामान्यतः सभी विषय सीखनेके लिए प्रोत्साहित किया जाता है। बेहतर यही है कि स्कूलमें हम सब तरहके विषयोंमें चंचुपात करें।

ज्ञान-मंदिर (जो बाहरके कॉलेजके बराबर है) में विद्यार्थियोंको पूरी स्वतंत्रता दी जाती है। हर विद्यार्थीके पाठ्यक्रमका चुनाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी अपनी रुचिपर निर्भर है। वह अपने विषय स्वयं चुन सकता है, यहांतक कि उसे अपने मनचाहे अध्यापकको चुननेकी भी पूरी आजादी दी जाती है। इससे विद्यार्थी स्वयं ही निर्णय लेना सीखता है और साथ-ही-साथ उसका अत्मविश्वास भी बढ़ता है। ज्ञान-मंदिर-का पाठ्यक्रम केवल तीन वर्षका है।

विद्यार्थीकी कक्षाका स्तर विषयपर आधारित होता है यानी हर विद्यार्थी विषयमें रुचि और योग्यताके अनुसार स्वतंत्र रूपसे उन्नति कर सकता है। अर्थात् विद्यार्थी विभिन्न विषय विभिन्न स्तरोंपर पढ़ सकता है।

विज्ञानके विषय फ्रेंचके माध्यमसे पढ़ाये जाते हैं; इतिहास तथा भूगोल अंग्रेजीके माध्यमसे। फ्रेंच, अंग्रेजी तथा संस्कृत प्रायः सभी पढ़ते हैं, इसके अतिरिक्त प्रत्येक विद्यार्थी अगर चाहे तो अपनी मातृ-भाषा पढ़ सकता है। और अगर उसे दूसरी विदेशी-भाषाएं सीखने-में रुचि हो तो उसके लिये भी सभी प्रकारकी सुविधाएं प्राप्त हैं।

सामान्यतः कक्षामें दससे ज्यादा बच्चोंको नहीं रखते ताकि अध्या-पक प्रत्येकका पूरा पूरा ध्यान रख सके। हर एककी कमजोरियों-को समझ सके, उनकी सहायता कर सके और सबकी समस्याओंको हल कर सके। इससे उनके बीच विद्यार्थी और अध्यापकका नहीं बल्कि दो खास मित्रोंका संबंध रहता है जो खुले मनसे, बिना किसी हिचकिचाहटके एक-दूसरेसे परामर्श कर सकते हैं, अपनी-अपनी कठिनाइयां पेश कर सकते हैं और नये विचारोंको प्रस्तुत कर सकते हैं : यह सुन्दर समझौता शिक्षामें एक नया रस पैदा करता है, दूसरे स्कूलोंकी तरह विद्यार्थियोंको परीक्षाओंके बोझसे नहीं लादा जाता क्योंकि उनसे खामखां बच्चोंमें मानसिक तनाव पैदा होता है।

बच्चोंको निष्कपट, सरल, सुन्दर और ऋजु मनुष्य बनाना ही इस केंद्रका एकमात्र लक्ष्य है ताकि वे श्रीमां व श्रीअरविंदके स्वप्नोंके संसारकी नींव डाल सकें और भविष्यको एक ज्योतिर्मय मोड़ दे सकें। इसीलिये, यहां हमें होशियार बच्चे नहीं अपितु जीती-जागती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माएं चाहिये। हमें ऐसे व्यक्ति चाहियें जिनमें एक नये जीवनकी अभीप्सा हो।

यह केंद्र एक दिव्य प्रयोगशाला है जहां प्रत्येक विद्यार्थीको प्रकृतिके रहस्य जाननेके लिये, अपनी चेतना विकसित करनेके लिये, अपनी वास्तविकता ढूंढ़नेके लिए, आत्मसंयम लानेके लिये और अपनी सारी कमजोरियोंसे लड़नेके लिये पूरे अवसर दिये जाते हैं।

माताजीने विद्यार्थियोंको एक छोटी-सी प्रार्थना दी थी। यही उनके जीवनमें मशालका काम करती है, हर विद्यार्थीमें एक नये जीवनके लिये, कुछ कर सकनेके लिए आकांक्षा पैदा कर सकती है: —हमें वह वीर योद्धा बना जिसे बननेके लिये हम अभीप्सा करते हैं। वर दे कि हम डटे रहनेका प्रयास करनेवाले भूतकालके विरुद्ध सफलतापूर्वक उस भविष्यका युद्ध लड़ सकें जो अभी जन्म लेनेको है ताकि नयी चीजें अभिव्यक्त हो सकें और हम उन्हें ग्रहण करने योग्य बनें।

—सीमा

शारीरिक शिक्षण

शुरू-शुरूमें बारह वर्षसे कमके बच्चोंको आश्रममें रहना मना था। किंतु जब दूसरा महायुद्ध आरंभ हुआ तो माताजीने साधकोंके बच्चोंको पांडिचेरी आनेकी अनुमति दे दी। धीरे-धीरे काफी बच्चे जमा हो गये और एक विद्यालय और क्रीड़ास्थलकी कमी खलने लगी।

सन् १९४४में माताजीने 'प्लेग्राउण्ड'का उद्‌घाटन किया। लेकिन आज आप जिस प्लेग्राउण्डको देखते हैं, उसकी व्यायामशालाका निरीक्षण करते हैं उसके आधुनिक उपकरणोंकी प्रशंसा करनेसे नहीं चूकते हैं किंतु उस समयका प्लेग्राउण्ड कुछ और ही था। वह एक फरासीसी प्रोफेसरका कदली वनम् था जिसमें चिमगादड़ों, मकड़ीके जालों और सांपोंकी भरमार थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुरूमें जब शारीरिक शिक्षण विशेष रूपसे आयोजित नहीं था तब बच्चोंकी कोई वर्दी भी नहीं थी। धीरे-धीरे लड़के लड़कियोंने खेल-कूदमें भाग लेना शुरू किया। उम्रके अनुसार बच्चोंके कई वर्ग बनाये गये। और हर वर्गकी अपनी वर्दी निश्चित हुई। उस समय लड़कियां पाजामा और कमीज पहना करती थीं। वक्तके साथ बड़े और बूढ़ोंने भी, माताजीके ९९ वर्षसे कम उम्रके बालकों तकने, खेल-कूद और कसरतोंमें भाग लेना शुरू किया।

सन् १९४६में माताजी प्लेग्रांउड आईं। कई वर्षोंके बाद वे आश्रमके बाहर निकली थीं। अगले ही वर्ष उन्होंने भी 'टेबल टेनिस' खेलना शुरू किया।

सन् १९४८में आश्रमने समुद्र तटपर एक जमीन सरकारसे लीजपर ली। उस समय वह जगह गंदगीसे भरी थी कारण, लोग उसके दो उपयोग करते थे, एक सार्वजनिक कूड़ेदानका दूसरे खुले दिशा मैदान-का, नाकपर कपड़ा रखे बिना उधरसे गुजरना कठिन था। धीरे-धीरे मेहनत और सहनशीलताके साथ आश्रमके लोगोंने उसे उपयोग लायक बनाया। और वह हमारा टेनिस ग्राऊंड बन गया जहां और भी कई खेल होते हैं। स्वय माताजी कई वर्षोंतक यहां टेनिस खेला करती थीं। एक कम्यूनिस्ट नेता पांडिचेरी आये तो इसे देख कर कह उठे, 'मैं जब कभी विदेश जाता था तो मेरा हृदय अपने देशकी विपन्नतापर रो उठता था। मुझे मालूम न था कि मेरे देशके एक कोनेमें ऐसी चीज है जिसे देखकर मैं अपना सिर ऊंचा कर सकता हूं।' सन् १९५१ में आश्रमको 'स्पोर्ट्स ग्रांउड मिला। उसकी भी अपनी ही कहानी है, उसमें एक तरण ताल भी है। आश्रमके व्यायामसंबंधी महत्त्वपूर्ण प्रदर्शन यहीं होते हैं।

आज करीब सात आठ सौ लोग—मर्द, औरतें, बच्चे—तीन साल-के बच्चोंसे लेकर ८० सालके बूढ़ोंतक—अपने शारीरिक शिक्षणमें भाग लेते हैं, माताजीका कहना है, "हर आदमीका शारीरिक शिक्षण जन्मसे ही आरंभ होना चाहिये और उम्र भर जारी रहना चाहिये। शुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेके लिये कोई भी वक्त बहुत जल्दी नहीं है और कोई भी वक्त ऐसा नहीं है कि व्यायाम शुरू न किया जा सके। अगर किसी भी कारणसे बचपनमें या यौवनमें यह शिक्षण नहीं दिया गया है, तो उसे किसी भी उम्रमें शुरू कर सकते हैं।" किंतु यह बात सही है कि पूरे कार्यक्रमको व्यक्तिकी उम्र और शारीरिक अवस्थाके अनुसार तैयार करना चाहिये।"

हमारे यहां तीन सालकी उम्रसे लेकर छः सालतक बच्चे बालोद्यानमें खेलते हैं। छः सालसे लेकर चौदह सालतक बच्चे हरी वर्दीवाले वर्गमें रहते हैं। इसमें भी पांच उपवर्ग हैं (ए ५, ए ४, ए ३, ए २, और ए १) जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, उनके कार्यक्रम भी कठिन होते जाते हैं। फिर तीन सालतक बच्चे लाल वर्गमें रहते हैं: दो साल तक बी २ में और एक सालतक बी १ में। सत्रह वर्षकी उम्रसे लड़कों और लड़कियोंको अलग कर दिया जाता है। दोनों सिलेटी रंगके आधे पैन्ट पहनते हैं। लड़कियोंका वर्ग सी ग्रुप कहलाता है, और लड़कोंका डी ग्रुप। यहां बच्चे तबतक रहते हैं जबतक कि उनकी पढ़ाई खत्म न हो जाये। उसके बाद खाकी वर्ग आता है। लड़कियोंका वर्ग ई ग्रुप कहलाता है और लड़कोंका एफ ग्रुप। यहां लोग चालीस वर्षकी उम्रतक रहते हैं। इसके उपरान्त जिन लोगोंको शारीरिक शिक्षण जारी रखना होता है उनमेंसे औरतोंको जी ग्रुपमें भेजा जाता है और मर्दोंको एच ग्रुपमें।

यहांपर जिम्नास्टिक्स, ऐथलेटिक्स, तैरना, खेल, जूडो, बाक्सिग और मल्लयुद्ध, सभी तरहके व्यायाम सिखाये जाते हैं। सी और डी ग्रुपतक सब कुछ अनिवार्यतः करना पड़ता है। उसके बाद अपनी इच्छानुसार अपने-अपने विषय चुननेकी पूर्ण छूट दी जाती है।

यहां श्रीअरविंद आश्रममें जो कार्य किया जाता है उसका एकमात्र उद्देश्य है—मनुष्यका सर्वांगीण रूपांतर।

माताजीका कहना है "जैसे-जैसे हम उस पूर्णताकी ओर बढ़ेंगे, जो कि हमारा लक्ष्य है वैसे-वैसे हम देखेंगे कि जिस सत्यकी खोज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम कर रहे हैं वह प्रधान रूपमें चार तत्त्वोंसे बना है: प्रेम, ज्ञान, शक्ति और सौंदर्य। ये चार गुण सत्यके हैं, जो अपने-आप हमारी सत्तामें अभिव्यक्त होंगे। हमारा चैत्य पुरुष सच्चे और विशुद्ध प्रेमका वाहन होगा, हमारा मन निर्मल ज्ञानका, हमारा प्राण अजेय शक्ति और सामर्थ्यको अभिव्यक्त करेगा, और हमारा शरीर पूर्ण सौंदर्य और सामंजस्यकी मूर्ति होगा।"

शारीरिक शिक्षणके बाहरी और भीतरी स्वरूपका वर्णन करते हुए श्रीअरविंद कहते हैं, "अपने अधिक बाहरी रूपमें वे (खेल-कूद, व्यायाम आदि) केवल मन-बहलाव और खेल-कूद लगते हैं। और उन्हें लोग मनोरंजनके लिये अथवा अपने शरीरकी शक्ति और कार्य करनेकी स्वाभाविक वृत्तिका उपयोग करनेके लिये अथवा अपने शरीरके स्वास्थ्य और बल-सामर्थ्यके विकास और रक्षणके साधनके रूपमें अपनाते हैं; परंतु वे उससे कहीं बढ़कर हैं और हो सकते हैं; वे अपनी आदतों, क्षमताओं और गुणोंके विकासके लिये सुयोग बन सकते हैं, जिनकी जीवनमें बहुत अधिक आवश्यकता होती है। ये युद्धके समय और शांतिके समय जनताकी सेवाके लिये बहुत अधिक उपयोगी होते हैं। तथा देशके राजनीतिक और सामाजिक क्रिया-कलापोंमें, और निस्संदेह सबसे अधिक मानवीय प्रयासोंमें मिल-जुल-कर काम करनेके क्षेत्रमें आवश्यक होते हैं। सच पूछा जाय, तो इस विषयका यही राष्ट्रीय पक्ष है जिसे मैं विशेष रूपसे महत्त्व देना चाहता हूं . . . ।"

—विश्वज्योति

भोजनालयका विकास

आश्रमका विकास पूर्व निश्चित योजनाके अनुसार न होकर बिल्कुल पनपते बिरवेकी तरह सहज स्वाभाविक रूपसे हुआ है।

मनुष्य योग करे या भोग उसे शरीरको निभानेके लिए, भोजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना पड़ता है। इसलिये आश्रमकी स्थापना हुई, उससे भी पहले भोजनकी कुछ व्यवस्था तो थी ही। आज उस पाक व्यवस्थाका वर्णन सुनकर आश्चर्य होता है। लकड़ीके चूल्हेपर मिट्टीके बरतनोंमें खाना पकाया जाता था और पकानेवाली थीं स्थानीय नौकरानियां जिन्हें सफाईका स्वप्नमें भी ख्याल न आता होगा। भात थोड़ा किरकिरा रहता था क्योंकि उनके घरोंमें धानको फटककर साफ किया जाता था, बीननेका झंझट वे न करती थीं। उन दिनों भोजन आश्रमके मुख्य भवनमें ही परोसा जाता था। भोजन करनेवालोंकी संख्या भी अधिक न थी, कुल मिला कर पचीस थे। श्रीमां स्वयं खाना परोसती थीं। उनकी देखभालमें रसोईकी धीरे-धीरे उचित सफाई होने लगी।

धीरे-धीरे आश्रमवासियोंकी संख्या तिरानवे तक पहुंच गयी। उनमें जो महिलाएं थीं उन्होंने सोचा, "क्यों न हम अपने भाई-बहनोंके लिये खाना पकाएं!" श्रीमांसे अनुमति पाकर वे भोजनालयके काममें जुट गयीं और नौकरानियोंको विदा कर दिया गया। बड़े-बड़े बरतन उठाते समय कभी वे फिसल जातीं तो गरम भात उन्हें झुलसा देता किंतु वे अपना काम जारी रखती थीं क्योंकि यह काम उनके लिये 'भागवत कार्य' था। उन्हें श्रीमांसे हर बार प्रोत्साहन मिलता, मुसीबतके समय अचानक सहायता मिलती। काम उनके लिये आंतरिक प्रगतिका माध्यम बन गया। अभीतक वे मिट्टीके बरतनोंमें पकाती या करती थीं और वही चिरपरिचित चूल्हा था जिसमें लकड़ी जला करती थी। सारा कमरा धुंएंसे भर जाता था और उसकी कडुवाहटसे आंखें जलने लगतीं। जब आश्रमवासियोंकी संख्या तिरानवेतक पहुंच गयी तब धान बीनने और रखनेके लिये अलग "ग्रेनरी" बनानेकी जरूरत पड़ी और इस तरह वह विभाग भी स्वतः बन गया। वे महिलाएं सुबह चार बजे काममें लग जातीं तो बारह बजे निकल पाती थीं। फिर दोपहरको दो बजेसे रातके दसतक कुछ-न-कुछ काम चलता रहता। अब पीतलके बड़े हांडोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना बनने लगा और सारे बरतन रसोई करनेवाले ही मांजते। काम शुरू करनेके पहले सब लोग कुछ मिनट चुप रह कर अपना काम और शक्ति भगवान्के अर्पित करते, समाप्त करते समय भी मौन खड़े रह कर उन्हें अपनी कृतज्ञता अर्पित करते थे। आश्रम-का एक कमरा बढ़ती संख्याको अपने अंदर समा न पाया तो भोजना-लयको वर्तमान विशाल भवनमें स्थानान्तरित किया गया।

हर रोज श्रीमांके पास चावलकी राशिसे लेकर प्रत्येक छोटे-बड़े कामका ब्यौरा रिपोर्टमें लिखा जाता था। उन दिनों रिपोर्टको श्रीअरविंद देखते थे। एक दिन श्रीमांने भोजनालयके किसी कार्यकर्तासे पूछा "क्या आजकल बरतनोंको अधिक लापरवाहीसे रखा जाता है?" कार्यकर्ताने साश्चर्य जानना चाहा कि उन्हें यह बात कैसे मालूम हुई तो उन्होंने मुस्कुरा कर कहा कि रातको बरतन आये थे और उन्होंने शिकायत की थी। यह सुनते ही नानी दादीकी याद आती है जो घरमें सबको बरतनोंको सावधानीसे रखनेकी सलाह दिया करती थीं और जो कहा करती थीं कि यदि उन्हें पटका या पछाड़ा जायगा तो वे रातको काशी विश्वनाथके पास जा कर हमारी शिकायत कर देंगे। इसके बाद श्रीमांने भोजनालयके कार्यकर्ताओंको एक संदेश भेजा जो आज भी हमारे सबके लिये उपयोगी है। उनका संदेश था: "तुम जिन भौतिक चीजोंका उपयोग करते हो उनका सावधानीके साथ उपयोग न करना निश्चेतना और अज्ञानका चिह्न है।

"अगर तुम भौतिक चीजोंकी—वे चाहे कुछ भी क्यों न हों—देखभाल नहीं करते तो तुम्हें उनका उपयोग करनेका कोई अधिकार नहीं है।"

आश्रमवासियोंकी संख्या बढ़ रही थी और दर्शनार्थियोंकी भीड़ भी जोर पकड़ रही थी। दर्शनके दिनोंमें आश्रम विद्यालयके विद्या-र्थियोंने खाना परोसने और अन्य छोटे-मोटे कामोंमें सहायता करना शुरू किया। आरोवीलके शिलान्यासके दिन लगभग पांच छः हजार लोगोंको भोजन कराया गया।

श्रीअरविंद शताब्दी आ रही थी और लगभग आठ दस हजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शनार्थियोंके आनेकी संभावना थी। जिस तरह घर आये अतिथिको हम भोजनके लिये बाहर भेजनेकी बात नहीं सोच सकते उसी तरह श्रीमांको भी—जो कभी-कभी हमसे भी अधिक भारतीय गृहिणी जैसा व्यवहार करती थीं—यह पसंद न था कि उनके यहां आये दर्शनार्थी कहीं और भोजन करनेके लिये बाध्य हों। अब सवाल उठा कि क्या खुला चूल्हा और पीतलके हांडे समयपर भोजन दे पाएंगे ? आवडी कांग्रेसके समय जिस तरह खाना तैयार हुआ था उसकी पूछ-ताछ की गयी। खडकवांसलाकी सैनिक संस्थासे संपर्क साध कर वहांकी व्यवस्था भी देखी गयी। यह सब कुछ देखनेके बाद यह निश्चय हुआ कि भापसे पकानेमें सबसे ज्यादा आराम रहेगा, लेकिन छोटेसे कुकरमें पकाना एक बात है और सैंकड़ों व्यक्तियोंके लिये पकाना और। अब डबल जैकेटके स्टेनलेस बरतनोंकी खोज शुरू हुई। जब वे कहींसे प्राप्त न हुए तो 'आरपागों' आश्रमके स्टेनलेस स्टीलके कराखानेसे मांग की गयी। पहला बरतन दूध उबालनेके लिये बना और हजार लीटर दूध दस मिनटमें गरम होकर तैयार हो गया। उसके बाद काम सरल बन गया। इस समय सारा भोजन भापसे पकाया जाता है।

रसोईघर देखकर कोई सोच न पाएगा कि यहां भोजन पकाया जाता है। कहीं बड़े सिलेंडर हैं, कहीं पाइप बरतनोंके चारों ओर घूम रहे हैं, कहीं घड़ीनुमा तापमान यंत्र लगे हैं।

आजकल ऐसे सैलानी भी आते हैं जो न केवल भोजन करते हैं बल्कि अपने यहां अपनानेके विचारसे रसोई देखने आते हैं। देश-की बड़ी-बड़ी संस्थाओंके लोग इसे देखनेके लिये आते हैं। यह अप्रत्या-शित विकास कभी-कभी चमत्कार-सा लगता है किंतु यह है समर्पित भावनासे किये गये कार्यपर भगवान्‌का वरदान।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्र-चिकित्सा

श्रीअरविंदके योगमें शरीरको बहुत महत्त्व दिया गया है, और शास्त्रोंके अनुसार भी शरीरको मंदिर कहा गया है जिसमें भगवान् रूपी आत्माका निवास है। श्रीअरविंदके आश्रममें इस मंदिरकी देख-भाल करनेकी पूरी व्यवस्था की गयी है।

माताजीका कहना है कि किसी चिकित्सा-पद्धतिको अपने-आपमें पूर्ण नहीं कहा जा सकता। भिन्न-भिन्न मनुष्योंके लिए भिन्न-भिन्न चिकित्साएं हैं। एकके लिए जो चीज अनुकूल सिद्ध हो सकती है वही दूसरेके लिए प्रतिकूल हो सकती है। यहां आश्रममें श्रीमांने सभी चिकित्सा-पद्धितियोंकी अलग-अलग व्यवस्था करके एक हदतक उन्हें प्रोत्साहित किया है।

शायद सन् १९३६ या ३७ में डा. आर. एस. अग्रवाल नामके एक युवा नेत्र चिकित्सक आश्रम आये। यह चिकित्सक अमरीकाके डा. बेट्सकी पद्धतिसे आंखोंके लिए व्यायाम आदि करवाते थे। माताजीको लगा कि इस पद्धतिमें कुछ सत्य अवश्य है। धीरे-धीरे उन चिकित्सकका संपर्क माताजी और आश्रमके साथ बढ़ता गया और वह आश्रममें ही बस गये और यहांपर एक नेत्र चिकित्सालय स्थापित हो गया।

व्यायामोंसे लोगोंको लाभ हुआ। बाहरसे लोग इसके लिए आने लगे और धीरे-धीरे इस पद्धतिका प्रचार होने लगा। डा. को बाहर शिविर लगानेके लिए निमंत्रण मिलने लगे। अब डा. अग्रवाल इस संसारमें नहीं हैं किंतु उनका यह बीजारोपण आज भी फल-फूल रहा है। अब भी बाहरसे रोगी आते रहते हैं तथा कई स्थानोंपर जैसे बोकारो, दिल्ली आदिमें शिविर होते हैं।

इस चिकित्सालयका नाम है 'स्कूल फॉर परफेक्ट आई साईट'। यहां चिकित्सा नहीं की जाती, आपरेशन या दवाईका जोर नहीं है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक तरह देखना सिखाया जाता है। यदि इन व्यायामोंको नियमित रूपसे जारी रखा जाय तो भविष्यमें चश्मेकी आवश्यकता न रहेगी और आंखें स्वस्थ रूपसे काम करती रहेंगी। इन व्यायामोंसे चश्मके बढ़ते हुए नंबरको घटाया जा सकता है। ये व्यायाम किसी-को हानि नहीं पहुंचाते। मुख्य रूपसे ये बच्चोंके लिए काफी उप-योगी सिद्ध हुए हैं। व्यायामकी कुछ विधियां इस प्रकार हैं। हर एक व्यायाम कम-से-कम पांच मिनट करना चाहिए--

१--सूर्य व्यायाम--सूर्यके सामने खड़े होकर, आंखें बंद करके शरीरको घड़ीके लोलककी तरह हिलाना।

२--आंखें धोना--एक प्यालेमें पानी भरकर आंखको उसमें डुबाना और पलक खोलना तथा बंद करना। दूसरी आंखके लिए पानी बदल कर यही चीज दुहराना।

३--पामिंग--आंखोंको बंद करके (भींच कर नहीं) हथेलीसे ढकना।

४--मोमबत्तीकी रोशनीमें पढ़ना--अंधेरे कमरेमें मोमबत्ती जला-कर, यथा सुविधा बैठकर कोई पुस्तक (पुस्तककी लिखावट छोटे अक्षरमें हो तो अच्छा है) लेकर पढ़ना, प्रत्येक पंक्तिके अंतमें पलक झपकना।

५--गेंद खेलना--गेंदको उछालना और वापस हथेलीमें लेते समय पलक झपकाना।

६--वाष्प और ठंडे पानीकी पट्टी--चौकोर मुंह वाले बर्तनमें गर्म पानी लेकर उसे सामने रखें। एक बड़े तौलिएसे सिरको ढककर बर्तनको इस प्रकार ढकें कि भाप आंखोंमें लग सके। भाप-में पलकोंको खोलना और बंद करना, उसके बाद रुईके फाहोंको ठंडे पानीमें भिगोकर निचोड़ लेना और दोनों आंखोंपर फाहे रखकर कुछ देर विश्राम करना आदि अनेक व्यायाम हैं।

सभी चिकित्सा-पद्धतियोंकी तरह इसमें भी रोगीकी श्रद्धाका महत्त्व बहुत अधिक है।

--उर्मिला

--डा. श्याम कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साकार कल्पना-लोक

अपने बचपनके संस्मरणोंमें श्रीमती महादेवी वर्मा कहती हैं कि स्कूलसे लौटकर अगले दिन सवेरे तक उनका मुख्य काम यही होता था कि यह सोचें कि स्कूल न जानेके लिये कौनसे नये बहानेका आविष्कार किया जाय। हममेंसे कइयोंको इससे मिलते-जुलते अनुभव होंगे। बहुतसे अध्यापक सरस विषयोंको भी शुष्क बनानेमें निष्णात होते हैं।

आज हम जिस स्कूलको देखने गये थे वह इससे उल्टे प्रकारका है। श्रीअरविंद आश्रमका एक अगरबत्ती बनानेका लघु उद्योग है 'ओरोशिखा' जो आश्रमसे आठ दस किलोमीटरकी दूरीपर है। कारखाना उस इलाकेकी आर्थिक उन्नति करनेमें सहायक है और उसके साथ ही एक छोटा-सा विद्यालय चल रहा है जिसमें आठ कक्षाओं-तक पढ़ाई होती है। इसका नाम है 'उदवी' या सहायता।

शीतल-मंद सुगन्धका मजा लेते हुए हमारी बस उदवी तक आन पहुंची। झुग्गी झोंपड़ियोंमें रहनेवाले बच्चोंके चक्रव्यूहमें पहुंचनेसे पहले ही 'गुड मार्निग अक्का', 'गुड मार्निग डांस टीचर'की गुहारें सुनायी देने लगीं। अक्का कहते हैं बड़ी बहनको। अनुबेन यहांके सभी बच्चोंकी अक्का और साथ ही नृत्य शिक्षिका हैं। उन्होंने कइयोंको दुलराया, सहलाया, पुचकारा और मुश्किलसे प्रेमके चक्रव्यूहमेंसे निकल कर हम स्कूलकी ओर बढ़े। जान पहचान न होते हुए भी उनके प्रेमकी प्रसादी मुझे भी मिली।

बच्चोंकी वेश-भूषा आदि देखकर कुतूहल पैदा होनेसे पहले ही अनुबेनने उसका समाधान कर दिया। स्कूलमें प्रवेश करते ही अध्यापिकाएं दतून कुल्ला करवातीं और स्नान करवा कर उजले कपड़े पहना देती हैं, पास ही धोबी घाट लगा है जहां बच्चोंके कपड़े धुल रहे हैं। इस तरह बिना ढिंढोरा पीटे बच्चोंके माध्यमसे गांव वालोंको सफाईका संदेश दिया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालोद्यानमें देखा खेल ही खेलमें बच्चे गिनना, चीजें पहचानना, स्मरण शक्ति बढ़ाना, चित्र बनाना और न जाने ऐसी कितनी चीजें सीख रहे हैं। यहांके सम्मोहनसे छूट कर बड़ी कक्षाओंकी तरफ बढ़ी, वहां सफाई अभियानकी धूम मची है। इस स्तरके बच्चे अपने कपड़े आप धोते, सुखाते हैं, उस ओर कमरोंमें झाड़ू-बुहारीका बाजार गर्म है और तीसरी ओर किताबोंकी अलमारी साफ हो रही है। हर कक्षाके लिये एक छोटी-सी बगिया है जिसकी देख-भाल उस कक्षाके जिम्मे है। कोई पानी दे रहा है, कोई सूखे पत्ते चुन रहा है और कोई मॉनीटरकी आंख बचा कर अपनी सहेलीके जूड़ेके लिए एक मोगरा तोड़ रहा है, जितने हाथ उतने काम।

टन टन टन घंटी बजी और मॉनीटरोंने अपनी-अपनी कक्षाको पंक्ति-में खड़ा कर दिया। अनुबेन एक कक्षाके साथ एक मजेदार परीक्षण कर रही हैं, कैसेट प्लेयरपर कोई अच्छा संगीत बजता है। आज 'काल आफ द वैली'का संगीत था। पांच मिनटके बाद संगीत बंद हो जाता है और बच्चे अपने सामने रखे कागजोंपर चित्र आंकनेमें जुट जाते हैं। इस संगीतकी नीरवतामें आयी प्रेरणाका परिणाम सचमुच सुन्दर होता है। इसके बाद प्रार्थना कक्षमें अनुबेनने सबको एक सुन्दर शिक्षा-प्रद कहानी सुनायी जिसके बाद सबके सब अपनी-अपनी कक्षाकी ओर इस तरह दौड़े मानों वहां लड्डू बंट रहे हों।

इतनेमें साढ़े नौ भी हो गये और नाश्तेकी घंटी बजी। यहां बच्चोंको सवेरेका नाश्ता, दोपहरका खाना और शामको खेल-कूदसे पहले नाश्ता विद्यालयकी ओरसे दिया जाता है। बच्चे नाश्ता समाप्त करके झूलोंपर चढ़ बैठते हैं और पेंगें भरते हुए आसमानकी खबर लाते हैं।

मैं अभी इसमें ही खोयी सी थी कि अनुबेनने कहा, जरा वह कारखाना भी देख आओ जो इस विद्यालयका जनक है और मैं अपने पुराने सहपाठी तपनके साथ हो ली।

यहां तरह-तरहकी अगरबत्तियां बनती हैं। हम एक बड़ेसे कक्षमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचे जहां लगभग पचास स्त्रियोंके हाथ मशीनकी तरहसे सलाइयोंपर मसाला लगानेमें जुटे थे। कुछ लोग इन्हें तैयार हो जानेपर तौल-तौल कर पैकेटोंमें भरने और उन्हें बंद करनेपर तैनात थे। एक और कमरेमें पैकेट बनानेके लिये हाथ बने कागजपर मार्ब्लिंग हो रही थी। हर चीजका अपना सौंदर्य था, हर चीजमें एक कला थी।

अब हमारे लौटनेका समय हो रहा था। विद्यालयकी ओर लौटी तो देखा अनुबेन हाथोंमें फूल लिये बसके इंतजारमें खड़ी हैं। ये केवल खुशबू बिखेरनेवाले फूल न थे, 'ये अपनी अक्काके लिये बच्चोंके प्रेमकी सौगात थे।' इतनेमें बस आ गयी और हम इस साकार कल्पना-लोकसे विदा लेकर उसमें जा बैठे और उसने पांडिचेरीकी ओर दौड़ना शुरू किया। मनमें यह विचार चक्कर लगा रहा था कि प्रेम और निःस्वार्थ भावसे किये गये कामकी अपनी ही छटा होती है।

——वन्दना

ग्लोरिया

आजकलके माचिसबक्सी इमारतोंके युगमें हरियालीकी पांच फुट जमीन भी हृदयमें हिलोरें भर देती है फिर जहां १०० एकड़ तक आंखोंको ठंडक प्रदान करनेवाली हरियाली बिछी हो वहांके जितने गुणगान किये जायें कम हैं।

आश्रमके द्युमन भाईके साथ मैं आश्रमके 'ग्लोरिया फार्म'पर पहुंची। जिसने १५ साल पहले इस ऊसर, बंजर भूमिको देखा होगा वह आज यहां चप्पे-चप्पेपर छायी इस हरी-भरी कृषिको देख यहांके कार्यकर्ताओंकी मेहनतकी प्रशंसा करते नहीं थकेगा। इस स्थानके प्रमुख कार्यकर्ता हैं मणीन्द्र दा।

ग्लोरिया फार्म पहुंचकर मानों हवा ही बदल गयी। हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत किया मणीन्द्रदाने। दायीं तरफ दीवारपर भारतके नक्शेके बीचोंबीच माताजीका प्रतीक जगमगा रहा है, उसीके सामने पक्के फर्शपर धानका मोटा कालीन-सा बिछा है जिसपर ट्रैक्टर चलाया जा रहा है, मणीन्द्रदाने बताया कि यह धान काटनेकी ऋतु है और इस समय यहां दो ढाई सौ मजदूर लगे हैं। वैसे उनके यहां ७० स्थायी मजदूर हैं और ३० दिन प्रतिदिनकी दिहाड़ीपर काम करते हैं। इनमें अधिकांश महिलाओंका है। आगे बढ़े नहीं कि धानकी पकी सुनहली बालियोंने ठमका दिया, दूर-दूरतक सोना ही सोना बिछा था। उन्होंने बताया कि यहां पानीकी बड़ी किल्लत थी और धान पानीकी बहुत मांग करता है, हमने कुंए खुदवाये और अब हम उनसे न केवल अपनी ही भूमि सींचते हैं बल्कि जरूरत पड़नेपर गांववालोंकी भी मदद करते हैं।

अभी धराका सुनहरा दामन छूटा नहीं कि हम नारियल-कुंजकी भूल-भुलैयामें आन पहुंचे। यहांपर एक पंथ दो काजवाली कहावत चरितार्थ हुई है। यानी नारियल तो लगाये ही हैं साथ-साथ उनकी छांहोंमें केले भी लगा दिये हैं लेकिन इतनेसे आश्रमके भोजनालयकी जरूरत पूरी नहीं पड़ती अतः नारियल कुंजकी सरहदके उस पार कदली वनम् भी है। कदली वनम्‌को पार करते न करते हम एक ऐसी खुशबूके इन्द्रजालमें घिर गये कि मन बौरा गया, हां आम्र-कुंज जो बौरा उठा था। उधर बड़े-बड़े कद्दू फुटबालोंकी तरह जमीनपर बिखरे पड़े थे और साथ-साथ भिण्डी, टमाटर, लौकी, अमरूद, पपीता इत्यादि स्वस्थ सब्जी, फलोंके दर्शनने पेटमें अनायास भूख-भूखकी गुहार मचा दी।

ग्लोरियाकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां कीटनाशक दवाइयोंका उपयोग बिल्कुल नहीं किया जाता। आजकल सारे संसारका, विशेषकर विदेशोंका, यह रोना है कि उनके यहांकी फल, तरकारी देखनेमें शानदार भले हों लेकिन उनका सारतत्त्व घटता जा रहा है। कहते हैं भूमि ही भूमिको उपजाऊ बनाती है, भूमिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक एक कीटाणु एक लघु हल है जो २४ घंटोंमें अपने शरीरके वजनकी मिट्टीको जोत देता है, इनको नष्ट कर हम प्रकृतिकी सहजता-पर कुठाराघात करते हैं। ग्लोरिया एक ऐसा स्थान बन गया है जहां कृत्रिम तरीकोंके बिना कृषिके प्रचार, प्रसार, उनके सकल परी-क्षणोंके साथ-साथ सम्मेलन, अधिवेशन हुआ करते हैं जिनमें देश-विदेशके लोग शामिल होते हैं। ऐसा ही एक अधिवेशन जनवरी १९८७में फिरसे होनेवाला है।

यह असंभव है कि ग्लोरियाकी बात छिड़े और गौओंकी चर्चा न हो। अब हम पहुंचे गोकुल, जी हां, मणीन्द्रदाने कितना सार्थक नाम दिया है अपनी गोशालाको। नन्दिनी, हिडिम्बा, मीरा, यशोदा, कामिनी न जाने कितनी गौएं हुलस हुलस कर उनके इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगीं। मजबूत पुट्ठों और सुन्दर थनोंवाली गायों तथा सांडों-का दर्शन नयनोंमें कपूरकी सी ठंडक उतार रहा था। दूर-दूरसे स्वस्थ, सुन्दर गायें लायी गयी हैं यहां, परिणाम यह है कि नयी पौध अधिक दुधारु हैं।

ग्लोरियापर एक विहंगम दृष्टि डाल अब हमारा लौटनेका समय आ गया था, लो जहां कभी ये मजदूर खेतोंमें लगे थे अब वालीबॉल खेल रहे हैं। यही तो है यहांका जादू। तथाकथित मालिक और मजदूरोंमें भाईचारेका रिश्ता है।

यह रिश्ता यूं ही कायम रहे इस दुआके संग-संग हम भी उस शस्य श्यामल भूमिको अलविदा कह पांडिचेरीकी ओर रवाना हो गये।

——वन्दना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

१५ अगस्तको आश्रममें श्रीअरविंदका ११४ वां जन्म दिन मनाया गया। सोसायटीकी शाखाओंने भी यह दिन मनाया। हमें माताजी-के ये शब्द याद रखने चाहिये, "श्रीअरविंदको हम सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यही दे सकते हैं कि हमारे अंदर प्रगतिके लिये प्यास हो और हम अपनी समस्त सत्ताको दिव्य प्रभावोंकी ओर खोल दें। जिनके वे धरतीपर संदेशवाहक हैं।"

लन्दनमें २२ जुलाईको माधव पंडितने श्रीअरविंदके पवित्र अवशेषोंकी प्रतिष्ठा की। वहां एक सुन्दर भवन, समाधि और वाटिका है। श्री पंडितने इस अवसरके महत्त्वकी व्याख्या की और उसके बाद भारतीय विद्या भवनमें 'भारतीय संस्कृतिकी सार्विकता' तथा मैंचेस्टर विश्व विद्यालयमें 'योग--तब और अब' पर भाषण दिये।

१९८६ के वार्षिक अधिवेशनके समाचार

श्रीअरविंद सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन १२, १३, १४ अगस्त-को हुआ। बहुतसे सदस्यों और संबद्ध व्यक्तियोंने इसमें भाग लिया। मंचपर माताजीकी कुरसी रखी गयी थी और लोग माताजीकी उप-स्थितिका अनुभव कर रहे थे। शुरूमें माताजीके संगीतके साथ ध्यान हुआ और फिर ध्यानके बारेमें नवजातजीका ध्वन्यांकित भाषण सुनाया गया।

किशोरी लाल ढांढणियाने अपने भाषणमें कहा कि आजकी विषम स्थितिमें संसार नेतृत्वके लिये भारतकी ओर देख रहा है। इस समय जिन्हें माताजी और श्रीअरविंदके साथ संबंध जोड़नेका सु-अवसर प्राप्त हुआ है उनकी विशेष जिम्मेदारी है। हम सबको माताजीकी शक्तिका यंत्र बननेके लिये तैयार होना चाहिये।

सोसायटीके सभापति डा. पी. पी. नारायणनका स्फूर्तिदायक, ज्ञान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्धक भाषण हुआ। वह पूरा-का-पूरा अंग्रेजी 'एम'के अक्तूबर अंक-में छपा है।

चायके बाद श्रीमती भक्तिबेन शाहने अपने पांच बड़े चित्रोंका अलबम बांटा।

दूसरे अधिवेशनमें श्रीमती लक्ष्मण बेन मेलवानीने पांडिचेरीकी नारी परिषद्के क्रिया-कलापके बारेमें अपनी रिपोर्ट पढ़ कर सुनायी। श्रीमती अनुबेनने काउंसिलके उद्देश्योंपर भाषण दिया। श्रीमती विद्यावती कोकिलने शक्ति-रूपा नारी तथा श्रीमती कांताने भावी समाजमें नारीकी भूमिकापर प्रकाश डाला।

१२ तारीखकी दोपहरका अधिवेशन शिक्षाके अर्पित था जिसमें डा. महेश्वर 'शिक्षामें एक नये आन्दोलन'के बारेमें बोले कि नयी शिक्षाके बारेमें माताजी और श्रीअरविंदने कार्य आरंभ किया था। भाषणके बाद प्रश्नोत्तर हुए और शिक्षाके बारेमें डा. श्री निवास आयंगरने महत्त्वपूर्ण टिप्पणियां कीं।

दूसरे दिन श्री माधव पंडितके तत्त्वावधानमें साधनाके बारेमें बात-चीत हुई और प्रश्नोत्तर हुए। दोपहरको श्री गोपाल भट्टाचार्यने विदेशोंमें सोसायटीके कार्यके बारेमें बतलाया और उसके बाद श्री विजय पोद्दारने साधनामें कर्मके महत्त्वके बारेमें और कर्ममें मनोवृत्ति-के बारेमें जरूरी बातें बतलायीं। दोपहरको सोसायटीके सदस्योंने कार्यके बारेमें अपने सुझाव दिये और इसके बारेमें प्रश्न-उत्तर हुए।

अधिवेशनके तीसरे दिन श्री नीरदवरणने श्रीअरविंद और आश्रमके बारेमें और श्री मोना सरकारने माताजीके साथ शारीरिक शिक्षणके बारेमें अपने संस्मरण सुनाये। डा. आयंगारने 'आजकी स्थिति और श्रीअरविंदकी शक्ति'के बारेमें भाषण दिया।

श्री शिवाभाई अमीनने श्रीअरविंदके स्वाधीनता दिवसपर दिये गये संदेशका महत्त्व बतलाते हुए कहा कि किसीने माताजीसे पूछा था कि भारतके लिये जरूरी एकता और श्रद्धाको कैसे लाया जा सकता है तो उन्होंने कहा, "श्रीअरविंदकी शिक्षाका अनुसरण करनेसे, उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ अगस्त ४७ के संदेश पढ़ने और फिर फिर पढ़नेकी जरूरत है। करोड़ों देशवासियोंको उनका यह संदेश समझानेकी जरूरत है। भारतको श्रीअरविंदके विश्वास और उनकी श्रद्धाकी जरूरत है।"

श्री प्रदीप नारंगने श्रद्धा, निर्भयता, साहस और अध्यवसायकी आवश्यकतापर जोर दिया। सभापतिने सभी केंद्रोंके योजना-बद्ध कामपर जोर देते हुए सोसायटीके कामके लिये धनकी आवश्यकतापर प्रकाश डाला और कहा कि जिन लोगोंके बसमें हो उन सबको वार्षिक सहायता अवश्य देनी चाहिये।

अंतमें श्रीअरविंदका एक उद्धरण बांटा गया जिसमें वे कहते हैं, "सबसे पहले आध्यात्मिक मनुष्यके जीवनमें जिस चीजका महत्त्व है वह यह नहीं है कि वह बाहरसे कैसा था और अपने समकालीन लोगोंकी दृष्टिमें कैसा था। महत्त्व इसका है कि वह अंदरसे क्या था और उसने क्या किया।"

घोषणाएं

अर्पिता केंद्र कलकत्ताकी सचिव श्रीमती अर्पिताने श्रीअरविंदकी पुस्तक 'द मदर'को अंग्रेजी ब्रेलमें छपवा कर तैयार किया है। जिन लोगोंको रस हो वे श्रीमती अर्पिता, ४ डा. सुन्दरी मोहन ऐवेन्यू, फ्लैट, नं. १, कलकत्ता–७०००१४से पत्रव्यवहार करें।

कलकत्तेकी ओरो सर्विसने ओरो टी और सन के थैले बेचने शुरू किये हैं। पता : श्रीअरविंद भवन, शेक्सपीयर सरणी कलकत्ता–७०००७१

उत्तर प्रदेशकी प्रादेशिक सोसायटीका सोलहवां वार्षिक अधिवेशन २ से ४ अक्तूबरतक मेरठमें होगा।

श्रीअरविंद सोसायटीकी कार्यकारिणीसे श्री गुरु प्रसाद व्यक्तिगत कारणोंसे मुक्त हो गये हैं, उनके स्थानपर श्री गोपाल भट्टाचार्य चुने गये हैं।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Live in his Being, Shine with His Light,
Act with His Power, Rejoice with His Bliss."

The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast Packagings Private Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 *Telex:* 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

Works:

PLOT No. G. 1/3 MIDC AREA, BOISAR,

DIST. THANE MAHARASHTRA

Phones: 682, 491, 591 *Telex::* 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

O Lord, awaken in me an ardent desire to know Thee. I aspire that my life may be consecrated to Thy service.

The Mother

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY -
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे भगवान्‌के साथ ऐक्य प्राप्त है उसके लिये हर जगह भगवान्‌का पूर्ण सुख और आनंद है। वह हर जगह और हर परिस्थितिमें हमारे साथ रहता है।

—श्रीमां

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्र व्यवहार करें।

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी : लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद सोसायटीसे ५० अंग्रेजी पुस्तिकाओंका एक सेट छपा था जो काफी लोकप्रिय रहा था। अब उनका एक नया संशोधित परिवर्द्धित संस्करण छप रहा है। उसकी पहली पुस्तकें एस्पिरेशन, सरेंडर एंड ग्रेस, छपकर तैयार हैं। प्रत्येकका दाम ५ रुपये। प्राप्ति स्थान—शब्द, श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरी–६०५००२।

सोसायटीकी सदस्यताके नये फार्म अक्तूबर अंकके साथ भेजे जा रहे हैं। कृपया उन्हें भर कर तुरंत भेज दीजिये।

सोसायटीकी युवा परिषद्‌की सदस्यताके बारेमें आपको पहले सूचना दी जा चुकी है। उसकी सदस्यताके लिये कोई अलग फार्म या शुल्क नहीं है। जिन्हें और किसी जानकारीकी जरूरत हो वे यूथ कोआर्डिनेटर, श्रीअरविंद सोसायटी पांडिचेरी–६०५००२को पत्र लिखें।

सोसायटीकी नारी परिषद्‌के बारेमें आपको सूचना दी जा चुकी है। अब वह कुछ और काम हाथमें लेना चाहती है। जानकारीके लिये को-आर्डिनेटर वीमेन्स कांउसिल, श्रीअरविंद सोसायटी पांडि-चेरीको लिखें। उसकी ओरसे 'अवेकनिंग' नामक मासिक पत्र निकल रहा है।

केंद्रोंके समाचार

हमारी देहरादून शाखाने सूचना दी है कि उनके यहां हर रोज ध्यान हुआ करता है। दर्शन दिवसपर विशेष आयोजन होता है और समय-समयपर योगपर भाषण होते हैं। उनके सदस्योंमें अधिकतर लोग शिक्षा-क्षेत्रसे संबंध रखते हैं। उन्होंने युवा परिषद् और नारी परिषद् भी शुरू की हैं। भारतीय सेवा अकादमी और दून स्कूल-के अधिकारियोंने भी माताजी, श्रीअरविंदकी शिक्षामें रस लेना शुरू किया है।

नई दिल्लीके केंद्रमें अपने सामान्य कार्यक्रमके अतिरिक्त डा. नाडकर्णी और डा. मधुसूदन रेड्डीके भाषण हुए, शेराके श्री मणि भाई पटेलने एक्यू प्रेशरके बारेमें प्रदर्शन दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

वाराणसी केंद्रने राष्ट्रीय चरित्र-निर्माणमें नारियोंकी भूमिकाके बारेमें तीन दिनका सम्मेलन किया।

पश्चिम बंगालमें श्री सुधीर दीवान भद्रपुर (बीरभूम)के केंद्रमें आये और वहां आसपासके लोगोंके साथ सोसायटीके कार्यके बारेमें उन्होंने परामर्श किया।

बंगलोर शाखामें हर शनिवारकी शामको संगीत और हर रविवारको सवेरे १० से १२ तक ध्यान तथा स्वाध्याय होता है। वहां पुस्तकालय, वाचनालय और अतिथिशालाकी अच्छी व्यवस्था है।

राजुला (गुजरात)में हर रविवारको ध्यान तथा स्वाध्यायके लिये बैठकें हुआ करती हैं। यहां एक पुस्तकालय भी है।

हांग कांगमें ७ जूनको आश्रमकी फिल्म दिखलायी गयी।

सोसायटीका नया केंद्र

श्रीअरविंद सोसायटी बारांगोर सेंटर, द्वारा श्री नीरद चंद्र राय, ८८/३ सी, मैराडांगा रोड, मृणाल पार्क, कलकत्ता—७०००३६।

प्रकाशन

आदर्श बालककी तरह केशवजीने 'आदर्श मां बाप' पुस्तक वितरणका बीड़ा उठाया है। पहली पुस्तक आदर्श बालक १४ भारतीय और ७ यूरोपीय भाषाओंमें छप रही है।

आइडियल पैरेंटकी एक हजार प्रतियोंका मूल्य ५०० रखा गया है। संपर्क सूत्र केशवजी, श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरी–६०५००२।

डा. महेश्वरीकी एक पुस्तक 'फ्राम क्राइसिस टु लिबरेशन' दिसंबर ८६ में छप कर तैयार हो जायगी। इसका मूल्य २० रु. होगा। जानकारीके लिये लेखकको आश्रमके पतेपर पत्र लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

भूमिका ६
१—मनसे समर्पण करना ७
२—प्राणका प्रतिरोध, प्रकाशका आरोहण ७
३—उज्ज्वल प्रकाश ८
४—एक मानसिक रोग ८
५—आश्रममें आयुर्वेद ९
६—नींद ११
७—लेखन तथा अनुवाद कार्य ११
८—बिना शर्तकी भेंट ११
९—जन्मदिनपर प्रणाम १२
१०—कहानीका प्रकाशन १२
११—माताजीके बारेमें लेख १३
१२—हंसके विशेषांकके बारेमें १३
१३—हैदराबादका सत्याग्रह १३
१४—माताजीका फ्रेंच पत्र १४
१५—वही मानसिक रोगी १४
१६—प. ले. को गुरुकुल ले जानेकी बात १५
१७—उसी विषयमें १५
१८—कामके बारेमें सोचना १५
१९—मच्छरदानी, तकिया आदि १६
२०—कामके बारेमें शिकायत १६
२१—प्राणिक विक्षोभ १७
२२—ध्यानमें मनका न लगना १७
२३—अपने काम, मनोवृत्ति आदिसे असंतोष १८
२४—पुस्तक पढ़नेका अधिकार १९

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५—रोमान्तिका (खसरा) १९
२६—निराशा और ऊब २०
२७—क्रीड़ांगणमें बातचीत २१
२८—बच्चेकी तरह सहज और सरल २१
२९—एक वाक्यके ठीक अनुवादके बारेमें २२
३०—आश्रममें काम देना २२
३१—संसारकी शोचनीय स्थितिपर माताजीका आश्वासन २३
३२—क्षमाके साथ आशीर्वाद २३
३३—काम ही एकमात्र साधना २४
३४—स्थिर शांति २४
३५—भारतीय भाषाएं २५
३६—कामसे कतराना २७
३७—कम काम करना २७
३८—आश्रममें प्रवेश २७
३९—'सफेद गुलाब'में 'क'की भूमिकाके बारेमें २८
४०—अनु द्वारा हिन्दीमें लिखा 'राजकुमार' नाटक २८
४१—कामकी व्यवस्था २९
४२—एक स्वप्न ३१
४३—चीनका हमला ३१
४४—अच्छी सलाह ३४
४५—अदृश्य आगमन ३४
४६—महत्त्वाकांक्षा ३४
४७—इन्फ्लूएंजा ३५
४८—माताजीका नया शरीर ३५
४९—भौतिक ग्रहणशीलता ३६
५०—रामायणमें पाठभेद ३६
५१—माताजीके अतीतके बारेमें ३७
५२—चीजोंकी अव्यवस्था ३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५३—माताजीकी दयालुता ३८
५४—बनारसी मां, इसी विषयमें विज्ञप्ति ३९
५५—एक पागल स्त्री ४०
५६—विद्यार्थियोंका शुद्ध भाषा बोलनेसे कतराना, स्वाभाविक चमत्कार ४१
५७—विद्यार्थियोंमें लोकप्रियता ४२
५८—दासतासे बचना ४२
५९—मारपीट ४४
६०—एकमात्र सहायता ४४
६१—डाक्टरके यहां जाना ४५
६२—माताजीकी आज्ञा ४५
६३—श्रेय मुझे मिले ४६
६४—कम खर्च इमारतें ४६
६५—क्या तुम तैयार हो ४७
६६—लोगोंके इरादे ४७
६७—डांटकी जरूरत ४८
६८—भय ४८
६९—अच्छे-से-अच्छा करो ४८
७०—तहरी हिन्दी ४९
७१—महत्त्वाकांक्षाका उपयोग ४९
७२—आश्रममें आर्थिक कठिनाई ५०
७३—हम कहां खड़े हैं ? ५१
७४—पूजा-पाठ ५१
७५—उग्र स्थितिका सामना करना ५२
७६—श्रीअरविंदके नामका उपयोग ५३
७७—जुर्माना ५३
७८—घनिष्ठ शत्रुता ५४
७९—भारतका भविष्य, एक स्वप्न ५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८०—धन ५५
८१—मानव जीवन—स्पंदनोंकी राशि ५५
८२—आमूल परिवर्तन ५६
८३—समयकी गति, राधा कृष्ण ५७
८४—प्रयासकी मांग ५८
८५—भागवत कृपा अपार है ५९
८६—सतर्क श्रद्धा ५९
८७—किसी संगठनका संचालन ६०
८८—किसीके आश्रममें रहनेके बारेमें ६०
८९—जब चीजें गलत होती जा रही हों ६१
९०—आर्थिक बरबादी ६१
९१—पशु-पक्षी और भोजनका स्वाद ६२
९२—विद्यालय खोलना ६२
९३—ध्यानमें कठिनाइयां ६२
९४—खानेके सोडेका उपयोग ६३
९५—इमलीका प्रयोग ६४
९६—ईमानदारीके साथ व्यापार, दिव्य जीवनकी तैयारी ६४
९७—सच्ची आवश्यकता पूरी होगी ६७
९८—जो ठीक और उचित है वह किये जाओ ६८
९९—काम करते जाओ ६८
१००—लक्ष्यके प्रति सच्चा बनना ६९
१०१—कमजोरीका डर ७०
१०२—साहस बनाये रखो ७०
१०३—सच्ची स्थिति ७१
१०४—भारतकी रक्षा ७२
१०५—आश्रमपर आक्रमण (माताजीका वक्तव्य) ७२
१०६—महाकालीका कार्य ७३
१०७—वही ७४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०८—वही ७४
१०९—निराशाका उत्तर ७५
११०—नारियल ७५
१११—शब्दातीत क्रिया ७६
११२—भागवत कृपाका फैसला ७६
सोसायटी समाचार ७८

इस अंकका दाम ४ रु.

वार्षिक अग्निशिखा १०.०० पुरोधा १४.०० दोनों २२.००
आजीवन अग्निशिखा १७५.०० पुरोधा २२५.०० दोनों ४००.००

पत्र, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

कृपया चेक न भेजें और ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

प्रिय पाठक,

आप अग्निशिखा और पुरोधाको पसंद करते होंगे तभी तो यह पृष्ठ खोला है।

हमने दोनों पत्रिकाओंका चंदा मिलाकर २२ वार्षिक रखा है जो हमारे खर्चसे लगभग दस रुपये कम पड़ता है और अब आपको मालूम ही होगा कि डाक खर्च भी बेतहाशा बढ़ रहा है। हम चंदा नहीं बढ़ाना चाहते क्योंकि जिनकी जेब ज्यादा नहीं दे सकती उन्हें वंचित न रहना पड़े। लेकिन जो लोग दे सकते हैं उनसे हमारा आग्रह है कि वे चंदेकी अपेक्षा कुछ अधिक भेजें या आजीवन सदस्य बन जाएं और दूसरोंको भी बनाएं।

पत्रिकाओंको चलानेकी जिम्मेदारी आपकी है।

संपादक पुरोधा एवं अग्निशिखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

इन पृष्ठोंमें हम माताजीके साथ एक आश्रमवासीका पत्र-व्यवहार दे रहे हैं। उसने गुरुकुल कांगड़ीसे शिक्षा समाप्त करके श्रीअरविंदके बड़े गुरुकुलमें सन् १९३८ में प्रवेश पाया था। शुरूके कुछ पत्रोंका उत्तर श्रीअरविंद ने दिया है और बाकी सबका माताजीने।

इस आश्रमवासीने, जो अपने-आपको कार्यकर्ता कहना पसंद करता है, आश्रममें सब प्रकारके पापड़ बेले हैं, पीर, बावर्ची, भिश्ती, खर सब तरहके काम किये हैं अतः उसके पत्र-व्यवहारमें रसोई घरसे लेकर प्रशासन और पठन-पाठन आदि अनेक विषयोंकी बातें आ जाती हैं। इसमें माताजीके अनेक रूपोंका परिचय मिलता है, जहां उच्चतर और गुह्य जीवनकी बातें हैं वहीं नौकरोंके साथ व्यवहार, खाना पकाने, तेल, इमलीके व्यवहार आदिके बारेमें भी प्रामाणिक मार्ग-दर्शन मिलता है। आशा है पाठकोंको अपने-अपने रसकी चीज, अपने-अपने क्षेत्रमें पथ-प्रदर्शन मिल सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीका पत्र-व्यवहार

एक कार्यकर्तासे

१—मनसे समर्पण करना

श्रीअरविंदाश्रममें आनेपर भिन्न-भिन्न लोगोंकी अलग-अलग तरहकी प्रतिक्रिया होती है। कइयोंकी अचानक अंदरकी आंखें खुल जाती हैं और वे अपना सब कुछ माताजीको अर्पित कर देना चाहते हैं। यहां कुछ इसी तरहकी प्रतिक्रिया हुई थी और इस पत्र लेखकने माताजीको लिखा, "मैं अपना सब कुछ अर्पित कर देना चाहता हूं, मेरे पास कुछ कपड़े हैं और कुछ पुस्तकें। बतलाइये मैं इनका क्या करूं ?"

श्रीअरविंद—जब तुमने अपने मनसे समर्पण कर दिया है और यह मानते हो कि जो कुछ तुम्हारे पास है वह माताजीका है और उन्हींको अर्पित है तो इस बाहरी क्रियाकी जरूरत नहीं। अगर तुम्हें यह जरूरी लगता है तो तुम ये चीजें 'क' को दे दो और माताजी तुम्हें ये चीजें तुम्हारे उपयोगके लिये लौटा देंगी।

२ सितंबर १९३८

२—प्राणका प्रतिरोध, प्रकाशका आरोहण

माताजी; ऐसा लगता है कि कलका प्रणाम मेरे लिये बहुत बड़ा आशीर्वाद था। मैं सारे दिन ऐसी अवस्थामें रहा जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सुख और आनंद इसके मुख्य भाग थे। जरा-सा भारीपन—नहीं, कोई भी शब्द मेरे भावको स्पष्ट नहीं कर पाता, एक प्रकारका भारीपन और निराशाका मिश्रण था। शायद मेरी मरती हुई महत्त्वाकांक्षाएं इसका कारण थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—यह प्राणके प्रतिरोधके कारण था जिसे लगता है कि प्रकाशके दबावके कारण उसे अपनी कामनाएं छोड़नी पड़ेंगी।

ध्यानमें मुझे ऐसा लगा कि सिरसे पांवतक मेरा सारा शरीर बहुत उज्ज्वल प्रकाशमें बदल गया है। पहले मैं श्रीअरविंदकी पुस्तक 'छह कविताएं' नहीं समझ पाता था लेकिन इसके बाद मैं उसे समझ पाया . . . . . .

श्रीअरविंद—चेतनाकी ठोस ज्योति पैदा करनेवाला प्रकाशका आरोहण, हमेशा साधनाके निर्णायक अनुभवोंमेंसे एक होता है।

२६ सितंबर १९३८

३—उज्ज्वल प्रकाश

माताजी, मैंने पिछले पत्रमें अपने प्रकाशके अनुभवकी बात कही थी, उसके बादसे मैं हमेशा सिरपर या हृदयमें सारे समय प्रकाश देखता रहा हूं। कभी-कभी मेरे सिरपर बहुत उज्ज्वल प्रकाश दिखलायी देता है, कभी सिरपर या सारे शरीरमें अग्नि दिखायी देती है लेकिन आग गरम नहीं होती, देखनेमें अच्छी लगती है।

डाक्टरोंका कहना है कि निरंतर प्रकाश आंखोंके लिये अच्छा नहीं होता, मेरा ख्याल है कि यह प्रकाश बिल्कुल हानिकर नहीं होता है न?

श्रीअरविंद—यह प्रकाश भौतिक नहीं है, यह आंखोंको नुकसान नहीं पहुंचाता।

२८ सितंबर १९३८

४—एक मानसिक रोग

आश्रमके एक आदमीका दिमाग कुछ चल गया था। उसे बाहर जानेकी सलाह दी गयी। वह आश्रमसे गुरुकुल कांगड़ी चला गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहां बिल्कुल स्वस्थ रहा। कुछ समयके बाद वह लौट आया। उसे आश्रममें प्रवेश करनेकी स्वीकृति नहीं मिली। वह प. ले. का परिचित था। उसने माताजीसे पूछा कि अगर वह मुझसे मिलने आये तो मुझे क्या वृत्ति अपनानी चाहिये, मैं उसे पांडिचेरीमें रहनेकी सलाह दूं या यहांसे चले जानेके लिये कहूं।

श्रीअरविंद—वह न केवल हमारी स्वीकृतिके बिना बल्कि बार-बार हमारे मना करनेपर आया है। उसे न तो आश्रममें प्रवेशकी स्वीकृति दी जा सकती है न पांडिचेरीमें रहनेकी सलाह। यह उसके लिये अच्छा नहीं है, उसका मानसिक रोग बढ़ जायगा और स्वयं उसके लिये तथा औरोंके लिये बेहद तकलीफका कारण होगा, तीव्र साधना या एकांतवासके बिना काम और अध्ययन करते हुए सामान्य जीवन बिताना ही उसके लिये हितकर है, उसके ठीक रहनेके लिये यही एक रास्ता है।

अगर तुम उससे मिलो तो कहना कि वह चला जाय। अगर उसे लौट कर गुरुकुल चले जाने और वहीं सामान्य जीवन बितानेके लिये मनाया जा सके तो यह उसके लिये सबसे अच्छी बात होगी।

२३ अक्तूबर १९३८

५—आश्रममें आयुर्वेद

प. ले. आयुर्वेदका स्नातक था। माताजीने उसे चिकित्साके सिवाय और बहुत प्रकारके काम दिये। उसके एक हितैषीने सलाह दी, 'तुम माताजीसे पूछ कर एक छोटा-सा औषधालय खोल लो, तुम्हारी विद्या भी काम आयेगी और दूसरोंका भी उपकार होगा।' उसे बात जंच गयी और उसने इस विषयका एक पत्र माताजीको लिख दिया। जवाबमें श्रीअरविंदका यह पत्र आया। मजेदार बात यह है कि उस पत्रका उत्तर केवल हां या ना में हो सकता था पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना विस्तृत उत्तर पाकर वह खुशीसे नाच उठा--उसकी बहुत इच्छा थी कि श्रीअरविंदका एक लंबा पत्र मिले।

श्रीअरविंद--तुमने जो प्रस्ताव किया है, उसका सवाल ही नहीं उठता और यह आश्चर्यकी बात है कि 'क' इस बातको भूल गया है। यहां फ्रेंच भारतमें किसी फ्रेंच डाक्टरके सिवा और कोई चिकित्साका काम नहीं कर सकता इसी कारण 'ग' जो होम्योपैथीमें प्रवीण है पांडिचेरीवालोंका इलाज नहीं कर सकता, जबतक उसे फ्रेंच डाक्टर ही न बुलायें। और कहा जाता है कि यह भी पूरी तरह कानूनी नहीं है। वह केवल बाहरसे आनेवालों, जैसे हैदराबादवालोंकी और आश्रमवालोंकी चिकित्सा कर सकता है, हम केवल आश्रमवासियोंके लिये औषधालय रख सकते हैं क्योंकि हम खानगी तौरपर आश्रमवालोंका ही इलाज करते हैं और पांडिचेरीके डाक्टरोंसे प्रतियोगिता नहीं करते, यहांके चिकित्सा-विभागके लोगोंके साथ हमारा अच्छा संबंध है क्योंकि वे अपने हस्पतालमें हमारे दो डाक्टरोंकी सहायता लेते हैं। अगर वे चाहें तो हमारे औषधालय और साधकोंकी चिकित्साको भी कानूनके विरुद्ध बता कर बंद कर सकते हैं।

हो सकता है कि पांडिचेरीमें कुछ लोग आयुर्वेदकी चिकित्सा करते हों पर है यह कानूनके विरुद्ध और आश्रम यह नहीं कर सकता।

और फिर इस प्रकारका लोकोपकारका काम हमारे आश्रमके क्षेत्रसे बाहर है। यहां रामकृष्णाश्रमकी तरह नहीं है, हम सार्वजनिक कार्योंसे बचते हैं और अपने-आपको केवल आश्रमके आध्यात्मिक कार्यतक ही सीमित रखते हैं। कुछ और करनेका मतलब होगा व्यष्टिगत और सामुदायिक आध्यात्मिक चेतना और जीवनके निर्माणके कार्यपर एकाग्र होनेकी जगह सामान्य स्तरपर अपनी शक्तिको बिखेरना।

२७ अक्तूबर १९३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—नींद

माताजी; मेरे नींदके घंटे अभीतक निश्चेतन होते हैं, मुझे उनके बारेमें कुछ नहीं पता होता। क्या यह तमस्‌के कारण है?

श्रीअरविंद—नहीं सामान्य नींद हमेशा निश्चेतन होती है और अवचेतन निद्राकी अवस्थामें चेतना लानेमें समय लगता है।

२९ अक्तूबर १९३८

७—लेखन तथा अनुवाद कार्य

प. ले. को लिखनेका बहुत शौक था। वह कभी अपनी चीजें लिखता और कभी औरोंकी चीजोंका हिंदीमें अनुवाद करता था जो अलग-अलग पत्रिकाओंमें छपा करता था। उसने माताजीसे पूछा कि क्या वह इस तरहका काम कर सकता है, कहीं वह उसकी साधनामें बाधक तो न होगा?

तुम कभी-कभी अनुवादका यह काम कर सकते हो लेकिन इस हदतक नहीं कि तुम उसीमें डूब जाओ। तुम्हारी चेतना साधनाके लिये मुक्त रहनी चाहिये।

प्रेम और आशीर्वाद।

२९ दिसंबर १९३८

८—बिना शर्तकी भेंट

किसीकी मृत्यु हो गयी। प. ले. की इच्छा थी कि उसकी संपत्ति माताजीके पास आ जाय। माताजीसे पूछनेपर उत्तर मिला:

"तुम्हारे पत्रके उत्तरमें मैं यही कह सकती हूं कि अगर उस संपत्तिका मूल्य मुझे भेंट किया जाय तो निश्चय ही मैं उसे स्वीकार कर सकती हूं लेकिन मैं उसके लिये मांग नहीं कर सकती। मैं उसे बिना शर्तकी भेंटके रूपमें ही ले सकती हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा प्रेम और मेरे आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं।

२० जनवरी १९३९

९—जन्मदिनपर प्रणाम

प. ले. आश्रममें अपने पहले जन्मदिनके लिये माताजीके पास प्रणामके लिए गया तो उन्होंने जरा पीछे हट कर सिर हिलाया। यह घबरा गया कि मामला क्या है। माताजीको चिट्ठी लिखकर इसका मतलब पूछा।

मैं तुमसे बस इतना ही कहना चाहती थी कि तुम प्रणाम कर सकते हो, ऐसा लगता था कि तुम सकुचा रहे थे।

प्रेम और आशीर्वाद

२७ जनवरी १९३९

१०—कहानीका प्रकाशन

प. ले. पूरा गांधीवादी था और अभी उसके आश्रममें पैर जम ही रहे थे लेकिन दूसरी ओरसे रस्साकशी भी हो रही थी। उसने लिखा: भारतमाता और मातृभाषा, ख्याति, गांधीजीका सामीप्य और बड़े परोपकारी कार्योंके नामसे मेरे आगे चारा डाला जा रहा है। अब काका कालेलकरके साथ काम करनेका सुझाव आया है, ऐसी कृपा कीजिए कि ये प्रलोभन मुझे आपकी बांहोंमेंसे छीन न पायें।

मैंने एक कहानी लिखी है, क्या मैं उसे प्रकाशनके लिये भेज सकता हूं?

तुम उसे भेज सकते हो बशर्ते कि उसमें कोई आपत्तिजनक चीज न हो यानी कोई राजनीतिक, सामाजिक विवादकी बात न हो।

मेरे प्यारे बालकको प्रेम और आशीर्वाद।

२५ मार्च १९३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११—माताजीके बारेमें लेख

प. ले. मासिक 'हंस'के श्रीअरविंदांक का संपादन कर रहा था। उसकी इच्छा थी कि इस अंकमें माताजीके बारेमें भी लेख हो। उनसे पूछा तो माताजीने यह जवाब दिया :

मैं नहीं चाहती कि मेरे जीवनके बारेमें कुछ छापा जाय। जब कभी किसीने इसके लिये अनुमति मांगी है, मैंने हमेशा इंकार किया है।

मेरा प्रेम और आशीर्वाद।

३ अप्रैल १९३९

१२—हंसके विशेषांकके बारेमें

ऊपर जिस विशेषांककी बात की गयी है वह तैयार हो गया लेकिन उसे भेजनेसे पहले संपादकका दिल बैठने लगा। उसे लगा कि अनुवाद किसी कामका नहीं हुआ और सारी चीज बेकार है। उसने माताजीसे पूछा कि अब क्या किया जाय।

तुमने अपने अनुवादपर बहुत मेहनत की होगी इसीलिये तुम उससे इतने असंतुष्ट हो और यह कुंठा आ गयी है लेकिन मुझे विश्वास है कि अनुवाद ठीक हुआ है और मुझे प्रकाशन स्थगित करनेका कोई कारण नहीं दीखता।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

२४ मई १९३९

१३—हैदराबादका सत्याग्रह

हैदराबादमें आर्य समाजका सत्याग्रह चल रहा था, आर्य समाजके प्रसिद्ध नेता स्वामी अभयदेव हैदराबादके प्रधान मंत्री सर अकबर हैदरीसे इस विषयमें बातचीत करना चाहते थे। सर अकबर माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और श्रीअरविंदके भक्त थे और पांडिचेरी आते रहते थे। इस बारेमें माताजीने इस प. ले. को लिखा :

मेरे पास अभयका पत्र आया है। तुम उसे लिख सकते हो, आश्रम-के साथ संबंध रखनेवाले किसी भी व्यक्तिका किसी प्रकारकी राज-नीतिमें हिस्सा लेना एकदम निषिद्ध है। उसे सर अकबरके पास नहीं जाना चाहिये और वह गया भी तो यह बिल्कुल बेकार होगा। अगर वह गया और सर अकबरने हमसे इस बारेमें कुछ पूछा तो हम यह कहनेके लिये बाधित होंगे कि उसने यह हमारी स्वीकृतिके बिना किया है। तुम उसे हमारा आशीर्वाद भेज सकते हो।

३ जून १९३९

१४—माताजीका फ्रेंच पत्र

मेरे प्यारे बालक, मैं हमेशा उपस्थित हूं, तुम्हारे पास, तुम्हारे अंदर और मेरे आशीर्वाद तुम्हारे साथ रहते हैं।

१९ जून १९३९

१५—वही मानसिक रोगी

पहले जिस आश्रमवासीका दिमाग चल जानेकी बात कही गयी थी वह प. ले. से मिलने आया। उसने कहा, माताजी, श्रीअरविंद ऊपर-ऊपरसे कहते हैं कि मैं चला जाऊं, सचमुच उन्हें मेरे यहां रहनेमें कोई आपत्ति नहीं। इसपर माताजीने लिखा :

यह बिल्कुल गलत है, श्रीअरविंद और मैं, हम दोनों चाहते हैं कि वह चला जाय। हमें विश्वास है कि पांडिचेरीका जलवायु उसके मानसिक संतुलन और उसके स्वास्थ्यके लिए अनुकूल नहीं है।

२१ जून १९३९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६—प. ले. को गुरुकुल ले जानेकी बात

आचार्य अभयदेव प. ले. को अपने साथ गुरुकुल ले जाना चाहते थे। उन्होंने माताजीको इस विषयमें लिखा। माताजीने प. ले. को लिखा:

अभयने मुझे लिखा है कि वह तुम्हें अपने साथ गुरुकुल ले जाना चाहता है। **मैंने अभी उसे कोई उत्तर नहीं दिया है।** पहले मैं यह जानना चाहती हूं कि तुम्हें इस बारेमें कैसा लगता है, अगर तुम **मुझसे** पूछो तो मुझे तुम्हारे यहांसे जानेका कोई कारण नहीं दीखता। लेकिन तुम इस विषयमें निःसंकोच होकर साफ-साफ अपने भाव बतलाओ।

मेरे प्यारे बालकको मेरा प्रेम और आशीर्वाद।

२५ सितंबर १९३९

१७—उसी विषयमें

प. ले. ने माताजीको स्पष्ट शब्दोंमें लिख दिया कि वह किसी हालतमें उनका आश्रम छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहता, वे स्वयं कहीं भेजें तो और बात है।

मैं तुम्हारे उत्तरसे पूरी तरह खुश हूं यद्यपि इसमें मेरे लिये आश्चर्यकी बात कुछ नहीं है। मुझे मालूम था कि तुम्हारे हृदयमें क्या है लेकिन अभयसे सुनिश्चित रूपसे ना कहनेके लिये मैं तुम्हारा लिखित उत्तर चाहती थी।

तुम बिल्कुल निश्चित रहो, मैं तुम्हें यहांसे नहीं भेजूंगी।

मेरे प्यारे बालकको प्रेम और आशीर्वाद।

२५ सितंबर १९३९

१८—कामके बारेमें सोचना

माताजी, मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि क्या आपके कामके बारेमें सोचना आपके बारेमें सोचनेका एक भाग नहीं है। क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह उचित मनोवृत्ति है कि चाहे मैं आपको याद न कर सकूं फिर भी आपके कामके बारेमें सोचता रहूं।

यह बिल्कुल ठीक है।

२७ नवंबर १९३१

१९—मच्छरदानी, तकिया आदि

माताजी, मैं यहां तकिया या मच्छरदानीका उपयोग नहीं करता। मैं खाटपर कुछ बिछाये बिना या जमीपर चटाई बिछा कर सोता हूं। मुझे बतलाया गया है कि आपको यह पसंद नहीं है। क्या यह ठीक है? पहले मैं यह सब तपस्याके भावसे करता था पर अब यह बात नहीं है। मुझे इस तरह रहनेकी आदत हो गयी है और मैं कोई कारण नहीं देखता कि मैं इसे बदलकर आपसे अधिक खर्च किस लिए करवाऊं। क्या आपको इसमें कोई आपत्ति है?

मुझे बिल्कुल कोई आपत्ति नहीं है, आश्चर्य है कि तुमसे किसने कहा कि मुझे आपत्ति होगी।

२०—कामके बारेमें शिकायत

एक समय प. ले. भोजनालयकी गाड़ी खींचा करता था और घर-घर भोजन पहुंचाता था, उसके कानमें बात पड़ी कि किसीने उसके कामके बारेमें माताजीसे शिकायत की है। उसने माताजीसे पूछा तो उत्तर मिला:

तुम्हारे गाड़ीके कामके बारेमें मुझसे किसीने कोई शिकायत नहीं की। विश्वास रखो अगर मुझे तुम्हारे कामके बारेमें तुमसे कुछ कहना होता तो मैं सीधा तुम्हें ही लिखती।

तुम औरोंकी भूलों और कमजोरियोंके बारेमें चिंता न करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकमात्र जरूरी बात यह है कि लोगोंकी बातोंपर विश्वास न करो, खास तौरपर जब वे मेरे नामसे कुछ कहें।

मेरा प्रेम और आशीर्वाद।

२० जुलाई १९४०

२१—प्राणिक विक्षोभ

माताजी; आप जानती ही हैं कि मुझे क्या हो गया है। कृपया बतलाइये कि ऐसी अवस्थामें जब मैं भीतरी और बाहरी संघर्षमें पड़ा हूं, मुझे क्या करना चाहिये। काश, मैं उन लोगोंके लिये सद्भावना रख सकता जो मेरी बाहरी तकलीफोंके लिये जिम्मेदार हैं लेकिन मैं ऐसा कर नहीं पाता। कृपया, मुझे कोई ऐसा सामान्य निर्देश कीजिये जो मेरी वर्तमान स्थितिमें सहायक हो सके। मैं इतना छुई मुई हो गया हूं कि जरा-सी चीज भी मुझे विचलित कर देती है।

ये प्राणिक विक्षोभ हैं जो साधनाके दौरान अपने-आपको प्रकट करते हैं। इन्हें निकाल बाहर करना चाहिये। यह न मानना चाहिये कि ये स्वाभाविक गतिविधियां हैं जो औरोंकी गलत क्रियाओं-द्वारा औचित्य पाती हैं और जबतक बाहरी कारण बने रहेंगे तबतक इनका रहना अवश्यंभावी है, वास्तविक कारण भीतरी है और इसे केवल यौगिक तपस्या, चौकसी, प्राणिक गतिविधियोंसे निर्लिप्तता और शांत किंतु कठोर अस्वीकृतिसे ही दूर किया जा सकता है।

मेरा प्रेम और आशीर्वाद।

२६ जुलाई १९४०

२२—ध्यानमें मनका न लगना

प. ले. ने शिकायत की कि उसका मन ध्यानमें नहीं लगता, अपने कामसे भी उसे असंतोष था :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर बाहरी रूपसे तुम्हें ध्यानमें सफलता न भी मिले तो भी ज्यादा अच्छा यही है कि तुम काम जारी रखो, अपनी निम्न प्रकृति-के विरोधकी अपेक्षा अधिक आग्रही बनो।

मैं तुम्हारे काम करनेके ढंगसे पूरी तरह संतुष्ट हूं और निश्चय ही यह तुम्हें मेरे नजदीक आनेमें सहायता देगा।

मेरा प्रेम और आशीर्वाद।

१३ सितंबर १९४०

२३—अपने काम, मनोवृत्ति आदिसे असंतोष

प. ले. को अपने कामसे, अपनी मनोवृत्तिसे और स्वयं अपने-आपसे बहुत असंतोष था। उसने एक पत्रमें यही रोना रोया तो श्रीअरविंदका जवाब आया।

तुमने अपने पत्रमें मनकी जिस अवस्थाका वर्णन किया है वह निश्चय ही उस तनावके कारण होगी जो चैत्यकी माताजीके आगे पूर्ण समर्पण करनेकी प्रबल इच्छा और किसी प्राणिक मन और सतही बुद्धिमें बैठे अवरोधके बीच संघर्षके कारण पैदा हुआ है। यह मन उस अड़चनका आत्म-निन्दा द्वारा समर्थन करता है (जो उतने अच्छे आधारपर नहीं होती जैसी कि उचित आत्म-परीक्षा होगी) और तुम जो कुछ भी करो उसपर प्रश्न करता है ताकि तुम दोष और गलत हेतुके सिवा कुछ न देख सको। इससे बेचैनी, संदेह और तनाव पैदा होते हैं, तुम्हारी साधनामें बाधा पड़ती है और चैत्य प्रेरणाओंकी मुक्त क्रियामें वाधा पड़ती है।

तुम्हें अपना काम इस सरल विश्वासके साथ करना चाहिये कि माताजी उसे सराहती और स्वीकार करती हैं, और यह ऐसा ही है—क्योंकि तुम्हारा काम बहुत अच्छा और उनके लिये उपयोगी रहा है, चैत्य गतिविधिको सरल सहज रूपमें, बाहरी मनके किसी हस्त-क्षेपके बिना कार्यमें प्रकट होने दो। बहुत संभव है कि इससे तनाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक हो जायगा और तब तुम्हारी साधना शांत स्थिर प्रसन्नताके साथ आगे बढ़ सकेगी। उसे अपने सत्य और माताजीके प्रेम भरी स्वीकृतिका विश्वास होगा।

६ दिसंबर १९४३

२४—पुस्तक पढ़नेका अधिकार

माताजीका यह वाक्य 'प्रार्थना और ध्यान' तथा 'शिक्षा' नामक पुस्तकोंके साथ एक अलग कागजपर लिखा हुआ है:

'इस किताबको तबतक न पढ़ो जबतक कि तुम्हारा इरादा इसे क्रियामें लानेका न हो।'

२५—रोमान्तिका (खसरा)

१९५२में प. ले. को रोमान्तिका (खसरा) हो गयी थी। आश्रममें ऐसे रोगीको अलग रखा जाता है। वह हमेशा कहा करता था कि मुझे साधनामें रस नहीं है, मैं केवल काम करनेके लिये आया हूं, माताजीने उसे लिख भेजा:

मेरे आशीर्वाद तुम्हारे साथ हैं,

तुम्हें इस बीमारीको इस बातके चिह्नके रूपमें लेना चाहिये कि तुम्हारे विश्वासके बावजूद और शायद तुम्हारी प्रतिज्ञाके होते हुए भी, तुम्हें साधना करनी होगी और काममें अपनी बाहरी चेतनाके साथ गहरी समझ और मनोवैज्ञानिक रूपांतरको भी जोड़ना होगा। इस एकांतवासका इस प्रयोजनके लिये उपयोग करो।

मेरी सहायता और प्रेम तुम्हारे साथ हैं।

६ अप्रैल १९५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६—निराशा और ऊब

माताजी, मैं अपने कामका स्तर अच्छा करनेकी कोशिश कर रहा हूं, पता नहीं मुझे सफलता मिल रही है या नहीं। बीमारीके बाद मेरा उत्साह वापिस नहीं आया है। अधिकाधिक उपयोगी होनेकी इच्छा भी ढीली पड़ गयी है।

माताजी, या तो मुझे उपयोगी बनाइये या फिर जाने दीजिये। मैं अनुपयोगी जीवन नहीं जीना चाहता। हो सकता है अगले जन्ममें ज्यादा अच्छा भाग्य मिले।

मैं थक गया हूं, हर चीजसे ऊब गया हूं। अगर मुझे बदलना आपके लिये असंभव हो तो मुझे चले जाने दीजिये। मैं गहरी और लंबी नींद लेना चाहता हूं।

मां मुझसे अपने-आपको दूर न करो, एक बार तुमने मुझे अपना लिया है। अगर मैं एक क्षणके लिये भी उपयोगी रहा हूं तो मुझे छोड़ न दो।

तुम्हें छोड़ देनेका कोई प्रश्न या संभावना ही नहीं है। तुम्हारे प्रति मेरी वृत्ति नहीं बदली है, तुम्हारी बीमारी और इस वर्तमान स्थितिका एक ही कारण है। मैं भावी उपलब्धिकी ओर तेजीसे बढ़नेकी कोशिश कर रही हूं। प्रगति तेज है और मेरे नजदीक रहनेके लिये तुम्हें भी तेजीसे बढ़ना होगा। तुम्हारे अंदर कोई चीज बदलनेसे इंकार कर रही थी। यह वही बाहरी चीज थी जो यह गर्व करती थी कि तुम्हें साधनामें रस नहीं है, वह केवल काममें रस लेती है इत्यादि। उसके परिणामस्वरूप तुम मेरे संरक्षणसे बाहर निकल गये और बीमार पड़ गये। तुम्हारी बीमारीके शुरूमें मैंने जो लिख भेजा था उसका यही अर्थ था। लेकिन उसने वह काम नहीं किया जिसकी मैंने आशा की थी।

अब करने लायक केवल एक चीज है, दृढ़ताके साथ अपनी प्रकृति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के किसी भागमें परिवर्तनकी आवश्यकताका सामना करो और मेरी सहायताके साथ बदलो।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

१० जून १९५२

२७—क्रीड़ांगणमें बातचीत

क्रीड़ांगणमें काफी शोर हुआ करता था। माताजीकी ओरसे सूचना दी गयी कि सब लोग चुपचाप रहें। प. ले. खेल कूदमें तो भाग न लिया करता था परंतु खेल-कूदके बाद माताजी सबको मूंगफली या मिठाई दिया करती थीं, उसकी व्यवस्था इसके हाथमें थी। फाटकके पास घुसते ही इसके बैठनेका स्थान था और लोग उसके पास अपनी-अपनी समस्या लेकर आ जाते थे। उसे लगा कि इस तरह वह क्रीड़ांगणकी शांतिमें बाधक होगा। उसने प्रस्ताव किया कि वह क्रीड़ांगणमें बैठना ही बंद कर देगा। माताजीका उत्तर था:

और अगर मुझे तुम्हारी जरूरत पड़े तो? सबसे अच्छी बात यह है कि तुम यह नियम बना लो कि तुम वितरणके सारे समय न तो **किसीकी सुनोगे न कुछ कहोगे।** वितरण समाप्त होते ही सुनना और उत्तर देना शुरू हो सकता है।

९ सितंबर १९५४

२८—बच्चेकी तरह सहज और सरल

माताजीका समय बचानेकी दृष्टिसे प. ले. उनके साथ मिलनेसे बचता था। माताजीने लिखा:

तुमसे एक बात और कह दूं। तुम्हें मेरे साथ मिलनेसे **बचना** न चाहिये। यह तुम्हारी सत्ताके उन भागोंको समर्थन देता है जो मेरे प्रभावके प्रति खुलनेके लिये कुछ अनिच्छुक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

मेरे साथ संबंधमें बच्चेकी तरह सरल और सहज होनेकी कोशिश करो—यह तुम्हें बहुत-सी कठिनाइयोंसे बचा देगा।

२५ अक्तूबर १९५४

२९—एक वाक्यके ठीक अनुवादके बारेमें

प. ले. को एक वाक्यका अनुवाद करना था। उसने माताजीको लिखा :

आपने कहा है, "और सब प्रभावोंको छोड़कर हम पूरी तरह आपके प्रभावमें रहना चाहेंगे।" मैंने इसे हिंदीमें यूं कहा है, 'हम आपके रंगमें रंग जाना चाहेंगे और किसी रंगमें नहीं।' यह मुहावरेदार तो है पर ठीक है क्या?

यह सच्चा अर्थ नहीं है। हर शक्ति या सामर्थ्यका अन्य शक्तियों और सामर्थ्योंपर कुछ प्रभाव होता है और यह क्रिया पारस्परिक होती है। प्रभावोंकी इस सतत और व्यापक अस्तव्यस्ततासे बचनेके लिये एक ही रास्ता है, ऐकांतिक रूपसे भागवत चेतनापर एकाग्र होओ और अपने-आपको केवल भागवत चेतनाकी ओर खोलो।

१९५४

३०—आश्रममें काम देना

आश्रमवासियोंको काम देनेका काम था प. ले. का। स्वभावतः इससे काफी लोग असंतुष्ट थे और तरह-तरह की बातें करते थे। प. ले. ने इस तरह की बातें लिख कर माताजीसे पूछा कि क्या वे इनसे सहमत हैं?

नहीं, भगवान् जानते हैं और वे किसी बेवकूफीमें भाग नहीं लेते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१—संसारकी शोचनीय स्थितिपर माताजीका आश्वासन

सारे संसारकी स्थिति गड़बड़ा रही थी। आश्रम भी उसके प्रभाव-से अछूता न था। प. ले. ने माताजीको लिखा, "जब प्रदर्शन और सभी चीजोंकी अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण मालूम होता है, जब जीवनको आरामदेह बनानेके लिये सभी सुविधाएं दी जा रही हैं, जब बदलेकी किसी भी आशाके विना सब कुछ दिया जा रहा है तो फिर भीतरी परिवर्तनके विना लोग काम क्यों और कैसे कर सकते हैं? मुझे दुःख है कि जहांतक मेरी दृष्टि जाती है, मैं ऐसी कोई चीज नहीं देख पाता। जीवन अधिकाधिक अस्त-व्यस्त होता जा रहा है। भगवान् निकटतर आते नहीं दीखते, हर चीज तितर-बितर होती जा रही है। सभी उज्ज्वल प्रतिज्ञाओंके बावजूद, भगवान् जाने भविष्यके गर्भमें क्या है।

यह वस्तुओंके बारेमें एक निराशाजनक दृष्टि है। इससे उल्टी बात भी सच है। ऊपरसे दीखनेवाली इस अस्त-व्यस्ततामेंसे होकर ज्यादा अच्छी व्यवस्थाकी रचना हो रही है लेकिन उसे देख सकनेके लिये तुम्हारे अंदर **भागवत कृपापर श्रद्धा होनी चाहिये।**

प्रसन्न हो उठो! चीजें इतनी खराब नहीं हैं जितना कि तुम सोचते हो।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

७ अक्तूबर १९५६

३२—क्षमाके साथ आशीर्वाद

प. ले. का जन्मदिन था। माताजीने उसे प्रणामके लिये शामको क्रीड़ांगणमें बुलाया। वह इतने लोगोंके बीचमें जाते हुए सकुचाता था इसलिये नहीं गया। इसके लिये रातको माताजीसे करारी डांट पड़ी। उसने यह क्षमा पत्र लिखा, "मैं अपने कलके व्यवहारके लिये दुःखी हूं और क्षमा चाहता हूं। मैं आशा करता हूं कि मैंने कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो अवसर खोया है वह खोया हुआ अवसर न बन कर रह जाय। मैं प्रार्थना करता हूं कि यह इस तरहकी आखिरी भूल हो।

"मैं चाहता हूं कि मैं आपका सच्चा सेवक बन सकूं।"

मेरे प्यारे बालक, कल रात मैं तुम्हारे साथ जरा सख्तीसे बोली थी ताकि ऐसी भूल फिर न होने पाये। सच तो यह है कि उसके परिणाम मिटाये जा चुके हैं। मैं तुम्हें जो कुछ देना चाहती थी वह **दे चुकी** हूं, उसका उचित उपयोग करना तुम्हारे हाथमें है।

"मैं पहले ही तुम्हें **सच्चा सेवक** मानती हूं लेकिन मैं चाहती हूं कि तुम **सच्चे बालक** भी बन जाओ ताकि तुम उसका पूरा आनंद ले सको।"

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

२७ जनवरी १९५७

३३—काम ही एकमात्र साधना

प. ले. ने माताजीसे कहा कि वह केवल काम करते समय ही उनकी उपस्थितिका अनुभव कर सकता है इसलिये काम ही उसकी एकमात्र साधना है।

पूर्णयोगमें साधना और बाहरी जीवनमें कोई फर्क नहीं है, दैनिक जीवनकी एक-एक गतिविधिमें सत्य खोजना और क्रियान्वित करना चाहिये।

१६ मार्च १९५८

३४—स्थिर शांति

काममें कुछ कठिनाई पैदा हो रही थी। प. ले. सोचता था कि कठिनाइयां माताजीकी कृपासे अपने-आप ठीक हो जाएंगी और निकट भविष्यमें सब कुछ माताजीके अधिकारमें आकर ठीक हो जायगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये वह कठिनाइयोंके बारेमें शांत रहता और माताजीको कोई सूचना न देता था। जब उसने पूछा कि क्या यह मनोवृत्ति ठीक है या तमस् ही मुखौटा पहने हुए है?

निश्चय ही स्थिर शांत रहना तमस् नहीं है। वस्तुतः स्थिर शांतिमें ही ठीक चीज की जा सकती है। जिसे मैं स्थिर शांति कहती हूं वह है किसी भी चीजसे विक्षुब्ध हुए बिना काम करना और हर चीजको किसी भी चीजसे विक्षुब्ध हुए बिना देखना।

फिर भी, अगर तुम्हें कोई चीज बिल्कुल गलत मालूम होती है तो तुम हमेशा मुझे सूचित कर सकते हो––लेकिन जरा भी विक्षुब्ध हुए बिना—और मैं देखूंगी कि क्या किया जा सकता है।

मेरी उपस्थिति और मेरे आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ हैं।

१९ सितंबर १९५९

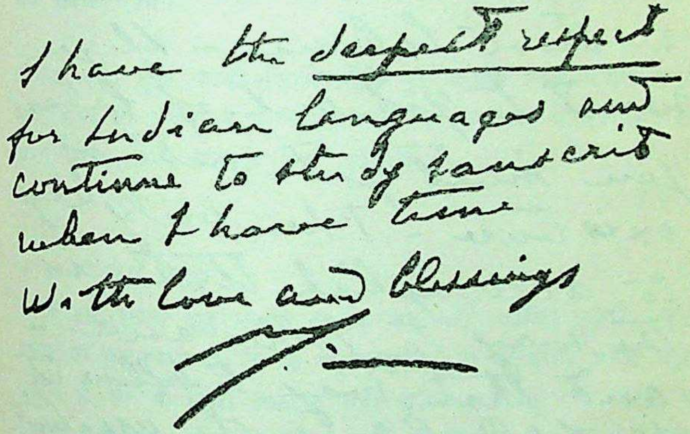
I have the deepest respect for Indian languages and continue to study Sanskrit when I have time
With love and blessings

३५—भारतीय भाषाएं

प. ले. हिंदी अध्यापक भी है। उसने माताजीको बताया कि उसके विद्यार्थी हिंदीमें रस नहीं लेते इसलिये वह हिंदी पढ़ाना छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना चाहता हूं। साथ ही उसने यह भी पूछा कि क्या माताजी भारतीय भाषाओंको महत्त्व देती हैं?

निःसंकोच होकर पढ़ाना जारी रखो।

मुझे भारतीय भाषाओंके लिये बहुत गहरा मान हैं और जब समय मिल जाय तो संस्कृतका अध्ययन किया करती हूं।

अमृत[1] कहता है कि उसकी तमिल कक्षाकी हालत तुम्हारी कक्षासे भी खराब है। लेकिन वह कहता है कि अगर उसके सभी विद्यार्थी आना बंद कर दें तो भी वह पढ़ाना जारी रखेगा—वह अपने-आपको पढ़ायेगा!

प्रेम और आशीर्वादके साथ।

३० सितंबर १९५१

There is no existence without labour – If you want to get out of labour you must get out of existence – The only way to accomplish that, is the way to Nirvana – and that way, to follow it, is of all labours the greatest.

---

[1]अमृत सबसे पुराने आश्रमवासियोंमेंसे थे। वे तमिल अध्यापनका काम भी करते थे। वे मजाक करनेमें बहुत पटु थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६—कामसे कतराना

एक आश्रमवासी कामसे बहुत कतराता था, माताजीने उसके नाम एक पत्र भेजा।

परिश्रमके बिना जीवन नहीं होता। अगर तुम परिश्रमसे बचना चाहो तो तुम्हें अस्तित्वसे बाहर निकलना होगा। उसे प्राप्त करनेका एकमात्र उपाय है निर्वाण——और वह उपाय, उसका अनुसरण, सभी परिश्रमोंमें सबसे कठिन है।

६ नवंबर १९६०

३७—कम काम करना

एक आश्रमवासी बहुत कम काम करता था और नये कार्य-कर्ताओं-को सलाह देता था कि वे मजदूरोंकी तरह मेहनत न करें। माताजीने उसे संदेश भेजा।

जब स्वयं तुम अपनी जिम्मेदारीके पूरे भावके साथ अपना काम नहीं करते तो इसका कोई कारण नहीं कि तुम नये व्यक्तियोंको भी अपनी तरह काम करनेके लिए उकसाओ।

१९६०

३८—आश्रममें प्रवेश

मैं बस इतना कह सकती हूं कि जब कोई व्यक्ति मुझसे कहल-वाता या कहलवाते हैं कि वे यहां ठहरना या आश्रममें प्रवेश पाना चाहते हैं तो मैं **बिना अपवाद** यही **उत्तर देती** हूं कि उसे या उन्हें . . . **के पास भेज दो** और अगर मैं स्वयं बात कर रही होऊं तो कहती हूं कि उससे जाकर मिलो। यह चीज किसी और रूपमें कैसे बदल जाती है और तुम्हें खबर नहीं की जाती यह मैं नहीं कह सकती——यह मानव स्वभावकी ऐसी पहेलियोंमेंसे एक है, मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास है कि ऐसी बहुत-सी बातें होती रहती हैं जिनके बारेमें मुझे कोई खबर नहीं होती।

लेकिन यह क्षुब्ध होनेका कोई कारण नहीं है। केवल स्थिर और शांत बने रहो और मानव स्वभाव तुमपर जो सीमाएं आरोपित करता है उनमें रहते हुए **अपना** अच्छे-से-अच्छा करो।

आखिर **पूरी-की-पूरी, सारी जिम्मेदारी** प्रभुकी है और किसीकी नहीं, इसलिये चिन्ताकी कोई बात नहीं है।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

२६ फरवरी १९६१

३९—'सफेद गुलाब'में 'क'की भूमिकाके बारेमें

माताजी; हमने घोषणा की है कि प्रस्तावित अदिति पुस्तक-मालामें लगभग १०० पृष्ठोंकी पहली पुस्तक होगी 'सफेद गुलाब'। क्या यह जरूरी है कि उसमें 'क'की भूमिकाको भी रखा जाय?

हां, मैंने ये पत्र 'क'को लिखे थे, औरोंको नहीं। हर एकसे जो बात कही जाती है अलग ढंगसे कही जाती है—सबको मिला देनेसे उलझन पैदा होती है।

१९६१

४०—अनुद्वारा हिंदीमें लिखा 'राजकुमार' नाटक

अनुने हिंदीमें राजकुमार नामक जो नाटक लिखा है उसका संक्षिप्त रूप, उसीके शब्दोंमें, आपके पास भेज रहा हूं। आप जब देख सकें, इसे देख जाइये। मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि इसमें कोई सुधार बतलाएं ताकि नाटकका स्तर ऊंचा हो जाय और इसमें भाग लेने-वालोंकी चेतनाकी सहायता करे। मुझे कुछ परिवर्तनकी जरूरत मालूम होती है लेकिन समझमें नहीं आता कि क्या बदला जाय।

(इस नाटकमें अंधकार और प्रकाशकी शक्तियोंके युद्धकी कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। अनुबेनके नाटकके पहले रूपमें प्रकाशकी शक्तिकी प्रार्थनापर दिव्य जननी प्रकट होती और अंधकारकी शक्तिको नष्ट कर देती हैं)

क्या नाटककी परिस्थितियां ऐतिहासिक हैं या उनमें हेर-फेर किया जा सकता है? ज्यादा अच्छी बात तो यह होगी कि विरोधी शक्तियोंका यंत्र, विष देते समय राजकुमारके प्रेमके कारण बदल जाय, अपने अपराधको स्वीकार कर ले और क्षमा पा जाये।

यह पुराना विचार कि शक्तिको प्रभावकारी बनानेके लिये किसी बड़े संकटकी जरूरत होती है, एक सीमाबंधन है जिसपर विजय पाना जरूरी है।

हां, अगर यह ऐतिहासिक घटना है तब तो उसके रूपको ऐसा ही रखना होगा और उच्चतर सत्यको भाषणद्वारा व्यक्त करना होगा।

२५ फरवरी १९६२

४१—कामकी व्यवस्था

माताजी; मुझे अभीतक यह भ्रम था कि लोगोंके कामकी व्यवस्था मुझे करनी है। 'क'की अवस्था बहुत खराब है, 'घ' भी बीमार है इसलिये मैंने सोचा था कि 'ग'को आनेस्टी सोसायटीमें काम दिया जा सकता है। वह व्यापारी रहा है। लेकिन जैसा कि बहुत बार होता है मामला मेरे पासतक आया भी नहीं और मैंने सुना है कि उसे किसी और स्थानपर दे दिया गया है, जहां अभी कुछ ही दिन पहले मैं किसी औरको अस्थायी रूपमें दे चुका हूं। मुझे लगता है कि 'क'की आवश्यकता बहुत अधिक है लेकिन अगर यह आपका फैसला है तो मैं उसके आगे सिर झुकाता हूं।

हर बार जब कोई अप्रिय स्थिति पैदा होती है या किसी अवांछनीय व्यक्तिसे पाला पड़ता है तो उसे धार्मिक भावसे मेरे पास भेज दिया जाता है अन्यथा . . . और आप कहती हैं कि काम देनेकी जिम्मेदारी मेरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इस झल्लाहटका मधुर कोमल, विनम्रतापूर्ण उत्तर देते हुए माताजी कहती हैं)

मेरे प्रिय बालक :

क्या मैं यह मानूं कि तुम बदमिजाज हो उठे हो या तुम्हारे अहंकारको गलत जगह छेड़ दिया गया है? तुम बहुत ही कटु मालूम होते हो लेकिन **मेरी ओरसे** तो कभी कुछ भी **निश्चय** नहीं हुआ करता जबतक कि तुम्हारी सलाह न ले ली जाय कि सबसे ज्यादा ठीक चीज क्या होगी। लेकिन परवाह न करो—अगर तुम्हें लगता है कि चीजें ठीक तरह नहीं चल रहीं और उनके लिये मैं जिम्मेदार हूं तो मैं जिम्मेदारी स्वीकार करती हूं।

इस मामलेमें मुझे यह जानकर खुशी हुई कि 'घ' आनेस्टी सोसायटीमें उपयोगी हो सकता है, तो हम उसे वहीं भेजेंगे और आशा करेंगे कि सब कुछ ठीक हो जायगा। लेकिन यह बात बिल्कुल सच्ची है कि मैं अधिकतर किसी ऐसे काममें व्यस्त रहती हूं जिसे मैं, अभीके लिये, बाहरी व्यवस्था और संगठनसे अधिक जरूरी समझती हूं और मैं आशा करती हूं कि हर एक अपना काम अपनी अधिक-से-अधिक क्षमताके साथ करे और उसकी आंखें भागवत कार्यकी महानतापर लगी रहें, इससे हर एकको अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयोंमें भी निश्चित रूपसे मदद मिलेगी।

आजकल समय बुरा है, हर एकके लिये और हर चीजके लिये—लेकिन निश्चय ही यह हमें अपनी सीमाओंपर विजय पाना सिखानेके लिये है।

मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा विश्वास है, मैं तुमपर भरोसा करती हूं, मुझे तुम्हारे कामकी जरूरत है और मुझे विश्वास है कि तुम इन वर्तमान कठिनाइयोंको पार कर लोगे।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

६ अगस्त १९६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४२—एक स्वप्न

माताजी; कल दोपहरको मैं सो रहा था और आप मेरे स्वप्नमें आयीं और आपने मुझसे कुछ कहना शुरू किया। उसी समय किसी-ने मेरा दरवाजा खटखटाया और मैं जाग पड़ा। यह तीन बार हुआ और तीनों बार किसीने मुझे जगा दिया, मैं उठा तो मेरे सिर-में सख्त दर्द था। मुझे अपने स्वप्न मुश्किलसे ही याद रहते हैं, लेकिन यह बहुत ही स्पष्ट था। क्या आप सचमुच मुझसे कुछ कहना चाहती थीं?

हां निश्चय ही मैं तुम्हारे पास आयी थी—और केवल इसी बार नहीं—आग्रहके साथ तुमसे सामान्य काम-काज, आश्रमके मामले और तुम्हारी साधनाके बारेमें कुछ कहना था, मुझे तुम्हारी प्रगतिकी बात कहनी थी।

क्या लोगोंको द्वार खटखटानेसे रोकनेका कोई तरीका नहीं है?

तुम्हारे दरवाजेपर सूचना लिख दी जाय: "कृपया इस समय न खटखटाएं?"

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

२५ अक्तूबर १९६२

४३—चीनका हमला

चीन और भारतके बीच मधुर संबंध था। देशमें हिंदी चीनी भाई-भाईके नारे लग रहे थे और अचानक २० अक्तूबर १९६२को चीनने उत्तरी सीमापर दो जगह आक्रमण कर दिया और काफी आगे बढ़ आया। बादमें किसी प्रत्यक्ष कारणके बिना चीनी वापिस लौट गये। इसपर प. ले. माताजीको लिखता है, राष्ट्रपतिने सारे भारतमें आपातकालकी घोषणा कर दी है और भारत सरकार बड़े कड़े कदम उठा रही है। ऐसे समय हमारे कुछ लोग बड़ी कटु भाषामें नेहरू और उनकी सरकारके विरुद्ध बोल रहे हैं और आश्रमके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाटकपर, सड़कोंपर, भोजनालयमें सब जगह नेहरू और सरकारकी कड़ी आलोचना कर रहे हैं। कुछ लोग तो इस मामलेमें आपका और श्रीअरविंदका नाम भी लगा देते हैं। इससे आश्रमके लिये व्यर्थकी तकलीफ पैदा हो सकती है, मैं इस ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूं।

मैं इस विषयमें तुम्हें एक सूचना भेज रही हूं, इसे भोजनालयके सूचना पट्टपर लगा दो। इसे आश्रममें भी लगाया जायगा।

Silence! Silence!

This is a time for gathering energies, and not for wasting them away in useless and meaningless words.

Anyone who proclaims loudly his opinions on the present situation of the country, must understand that his opinions are of no value and cannot, in the least, help Mother India to come out of her difficulties.

If you want to be useful, first control yourself and keep silent.

Silence! Silence! Silence!

It is only in silence that anything great can be done.

28-10-62

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीरवता नीरवता

यह ऊर्जाएं इकट्ठी करनेका समय है, व्यर्थ और निरर्थक शब्दोंमें उन्हें इधर उधर बिखेरनेका नहीं।

जो भी देशकी वर्तमान स्थितिके बारेमें अपनी रायकी जोरसे घोषणा करता है उसे यह समझ लेना चाहिये कि उसकी रायोंका कोई मूल्य नहीं है और उनसे भारत-माताको अपनी कठिनाइयोंमेंसे निकलनेमें जरा भी सहायता नहीं मिल सकती। अगर तुम उपयोगी होना चाहते हो तो पहले अपने-आपपर संयम करो और चुप रहो।

नीरवता, नीरवता, नीरवता।

केवल नीरवतामें ही कोई महान् कार्य किया जा सकता है।

२८ अक्तूबर १९६२

a good advice to all the ashramites in their dealings with visitors and foreigners (and even among themselves)

"When you have nothing pleasant to say about something or somebody in the Ashram, <u>keep silent</u>.

You must know that this silence is faithfulness to the Divine's work."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४४—अच्छी सलाह

सभी आश्रमवासियोंको दर्शकों और विदेशियोंके साथ व्यवहार करते समय याद रखने लायक एक अच्छी सलाह : (आपसमें एक दूसरेके साथ भी)

"अगर तुम्हारे पास आश्रमके किसी व्यक्ति या किसी चीजके बारेमें कहनेके लिये कोई अच्छी बात न हो तो चुप रहो।

"तुम्हें यह जानना चाहिये कि चुपचाप रहना भगवान्के कार्यके प्रति निष्ठा और ईमानदारी है।"

अक्तूबर १९६२

४५—अदृश्य आगमन

माताजी; आपने मुझे लिखा था कि आप रातको मेरे पास आया करती हैं। मैं भी आपतक पहुंचनेकी कोशिश करता हूं...

लेकिन हाय !

प्रयास किये चलो, एक दिन सफल हो जाओगे। मैं अब भी आती हूं।

आशीर्वाद

९ नवंबर १९६२

४६—महत्त्वाकांक्षा

प. ले. बचपनमें लेख, कहानी आदि लिखनेका शौकीन था, उसमें लेखक बननेकी महत्त्वाकांक्षा थी। आश्रममें आकर उसे जो-जो काम मिले उनका लेखनके साथ दूरका भी संबंध न था। बहुत वर्षोंके बाद उसे पुरोधाके संपादनका भार सौंपा गया। उसे डर लगा कि कहीं उसका सिर फूल न जाय और महत्त्वाकांक्षा फिरसे न जाग उठे। यह समस्या उसने माताजीके आगे रखी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी महत्त्वाकांक्षाओंके पीछे एक सत्य होता है जो अभिव्यक्त होनेके लिये उचित समयकी प्रतीक्षा करता है। अब तुम्हारी महत्त्वाकांक्षा जा चुकी है तो अब सत्य (योग्यता और क्षमता)के अभिव्यक्त होनेका समय है।

पूरी सावधानी रखो कि सिर 'फूलने' न पाये, लेकिन मैं तुम्हारे साथ हूं। कुछ रुचिकर चीज करनेके लिये तुम्हारी सहायता कर रही हूं।

मेरा प्रेम और आशीर्वाद।

१९६२

४७—इंफ्लुएंजा

मैंने सुना है कि तुम्हें इंफ्लुएंजा हो गया है—यह नहीं चलेगा। तुम्हें **विश्राम** करना चाहिये—लेकिन हो यह **एकाग्र शक्तिका विश्राम**, विरोधी शक्तियोंके प्रति अप्रतिरोधका हल्का निस्तेज आराम नहीं।

ऐसा विश्राम जो **शक्ति** है, दुर्बलताका विश्राम नहीं।

उठो, खुश हो जाओ मेरे बालक, और कुप्रभावोंको झाड़ फेंको।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

७ जनवरी १९६३

४८—माताजीका नया शरीर

माताजी; आपको आपके नये शरीरमें देखनेकी बहुत इच्छा है। वर दीजिये कि तबतक आप जो कुछ दें उसे ग्रहण और आत्मसात् करनेकी शक्ति आये मेरे अंदर।

मेरा ख्याल है, तुम्हारा मतलब है मेरे **नये रूप** या **रूपांतरित शरीरसे**। क्योंकि **नये** शरीरके लिये मैं ऐसे किसी व्यक्तिको नहीं जानती जो ऐसा पूर्ण जीता जागता शरीर बन सके जिसमें मैं अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान चेतनाको किसी अंशमें भी खोये बिना पदार्पण कर सकूं। निश्चय ही यह अपेक्षाकृत ज्यादा तेज प्रक्रिया होती लेकिन इस शरीरके उन कोषाणुओंके प्रति उचित और संतोषजनक न होती जो उत्साहसे मेरी ओर पूर्ण स्वेच्छाके साथ अपने-आपको रूपांतरके कठोर कार्यके लिये अर्पित कर रहे हैं।

बहरहाल, जैसा कि मैं पहले भी कह चुकी हूं, इसके लिये तुम्हें लंबे समयतक प्रतीक्षा करनेके लिये तैयार रहना चाहिये, और उससे पहले बहुत-से जन्मदिन गुजरते हुए देखनेके लिये तैयार रहना चाहिये। और यह बहुत अच्छी बात है और मैं पूरी तरह स्वीकार करती हूं।

सप्रेम।

२५ जनवरी १९६३

४९—भौतिक ग्रहणशीलता

प. ले. की दाहिनी टांगमें स्नायु सुन्नसे पड़ जाते थे और वह लंगड़ाने लगता था। कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह कहीं गिर न पड़े। उसने माताजीको सारा हाल बतलाते हुए लिखा, कभी-कभी आपको भौतिक रूपसे सूचना दिये बिना कोई लाभ नहीं होता और कई बार चुपचाप अंदर ही अंदर आपसे कह देनेसे कष्ट चला जाता है। क्या आप बतला सकेंगी कि ऐसा क्यों होता है?

यह हर एककी भौतिक ग्रहणशीलतापर निर्भर है और वह ग्रहणशीलता अपने-आप कम या अधिक **प्रभुत्व** जतानेवाले मनपर निर्भर होती है।

३ मार्च १९६३

५०—रामायणमें पाठभेद

माताजीकी पुस्तक 'सुन्दर कहानियां'में ऐसा मालूम होता है कि रामको वनवास देनेकी जिम्मेदारी पूरी तरह से कैकेयीकी थी। तुलसी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दासजीके अनुसार मंथराको अपना यंत्र बनाकर 'गयी गिरा मति फेर' देवताओंके आदेशके अनुसार सरस्वतीने भगवान्‌का काम पूरा करनेके लिये यह सब किया था। लेखक उसका हिंदी अनुवाद छापनेसे पहले माताजीसे पूछता है कि आखिर सच्ची बात क्या है?

मैंने जो लिखा है वह मेरा प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है। ६० वर्ष पहले लिखी गयी एक अंग्रेजी पुस्तकका अनुवाद है। तुम उसमें आवश्यक परिवर्तन कर सकते हो।

आशीर्वाद।

६ मार्च १९६३

५१—माताजीके अतीतके बारेमें

माताजी नहीं चाहती थीं कि उनका नाम पाल रिशारके साथ किसी भी तरह जोड़ा जाये। 'क'का एक लेख छपा जिसमें उन्होंने लिखा था कि माताजीके पांडिचेरी आगमनके समय उनके साथ रिशार भी चुनावके सिलसिलेमें आये थे। यह लेख पुरोधाके लिये भी भेजा गया। लेखक माताजीसे उनकी राय मांगता है।

मुझे इसके लिये खेद है, मुझे इसके बारेमें कुछ बताया नहीं गया था। **इसे यहीं समाप्त कर दो।**

यह आखिरी बार हो कि मेरे अतीतके बारेमें सार्वजनिक रूपसे कुछ कहा जाये। यह शरीर नहीं चाहता कि उसके बारेमें कुछ कहा जाय। वह चुपचाप रहना चाहता है और चाहता है कि जहांतक हो सके उसकी अवहेलना की जाये।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

९ अप्रैल १९६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५२—चीजोंकी अव्यवस्था

माताजी; एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। आपने एक बार काफी कठोर भाषामें मुझे लिखा था कि आश्रमके काम-काजके छोटे-मोटे ब्योरोंमें आप नहीं पड़ना चाहतीं क्योंकि आपके पास बहुत जरूरी आंतरिक कार्य हैं लेकिन आजकल आप विस्तृत जानकारी मांग रही हैं। क्या इसका यह मतलब है कि आप उस लकीरको पार कर चुकी हैं जहां आपके ध्यान देनेकी बहुत ज्यादा जरूरत थी और अब भविष्य आपके हाथमें आ गया है या हम लोगोंने काफी गड़बड़ की है जिसकी वजहसे आपको इन बातोंपर ध्यान देना पड़ रहा है। मैं आशा करता हूं कि पहली बात है, आप मुझे रहस्य बता सकेंगी?

इसमें कोई रहस्यकी बात नहीं है। दूसरी बात ठीक है। चीजें इतनी अव्यवस्थामें हैं कि मैं उनपर नजर रखनेके लिये बाधित हूं।

१९ अप्रैल १९६३

५३—माताजीकी दयालुता

माताजीकी दयालुताका एक नमूना देखिये। आश्रममें जो नये लोग लिये जाते थे उनकी देख-भाल और उनकी व्यवस्था प. ले. किया करता था, यह तो पहले पत्रोंमें आ ही चुका है। यहां एक ऐसे ही नये व्यक्तिके बारेमें वह अपनी सूचना दे रहा है:

इसके लिए मैं केवल दो विकल्प देखता हूं, या तो आप उसे भिक्षादानके रूपमें रख लीजिये या मुझे जरा सख्त होनेकी स्वीकृति दीजिये ताकि मैं उसे रेलके किरायेके रुपये देकर विदा कर दूं। डाक्टरका कहना है कि उसके अवयवोंपर क्षयका असर है।

शुरूसे ही मैंने उसे भिक्षादानका याचक ही समझा है और उससे कामकी आशा नहीं की। यह उस जातिका व्यक्ति नहीं है जो उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगी होना चाहे। इसे कहीं दूर रख दो और कुछ ऐसा काम दे दो जिससे वह चुप रह सके।

आशीर्वाद।

२० अप्रैल १९६३

५४—बनारसी मां, इसी विषयमें विज्ञप्ति

उत्तर प्रदेशसे बनारसी मां नामक एक महिला आयीं थीं जिनके हजारों शिष्य थे। उनका कहना था कि वे माताजी और श्रीअरविंद-के कामको आगे बढ़ा रही हैं, उन्होंने बहुत-सी भविष्यवाणियां कीं जिनमसे एक यह थी कि श्रीअरविंद १५ अगस्त १९६४को फिरसे मानव शरीरमें आयेंगे। अपनी बातको पुष्ट करनेके लिये उन्होंने माताजीके हाथके लिखे जाली पत्र भी प्रदर्शित किये थे। उनके बारेमें माताजीको सूचना देते हुए प. ले. कहता है: उस प्रदेशके लगभग चार हजार आदमी इस गुटमें शामिल हैं। बहुत-से हैं जिन्होंने घर-बार और काम-काज छोड़कर उनके साथ रहना शुरू किया है और यह सब आपके और श्रीअरविंदके नामके आधारपर। उस इलाकेके आश्रमसे संबंध रखनेवाले लोग जानना चाहते हैं कि इस मिथ्यात्वके बगूलेके सामने उन्हें क्या वृत्ति अपनानी चाहिये। एक आदमी खास इसीके लिये आया है। उसे क्या उत्तर दिया जाय?

यह सब एकदम और हमेशाके लिये बंद होना चाहिये। यह एकदम जालसाजी है और जो लोग जालसाजी करते हैं उन्हें जेल भेज देना चाहिये।[1] या कम-से-कम उन्हें ऐसे मिथ्यात्वका प्रचार करनेके लिये खुली छूट नहीं मिलनी चाहिये। उसकी पहली भविष्यवाणियां

---

[1](इस वाक्यके साथ माताजीने लिख दिया 'मजाक' यानी वे सच-मुच जेलमें जानेकी बात नहीं कह रही थीं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असफल रही हैं और ये भी उसी तरह असफल रहेंगी और जो उनपर विश्वास करते हैं केवल बुद्धु बनते हैं।

२७ अप्रैल १९६३

और इसके साथ ही माताजीकी अनुमतिके साथ आश्रमके सचिव श्री नलिनीकांत गुप्तके हस्ताक्षरके साथ यह विज्ञप्ति संबद्ध लोगोंके पास भेजी गयी,

"श्रीअरविंदाश्रमके अधिकारियोंका ध्यान इस बातकी ओर खींचा गया है कि बनारसी मां नामसे ख्यात एक महिला उत्तर प्रदेशमें यह प्रचार करती फिर रही है कि वह माताजी और श्रीअरविंदका प्रतिनिधित्व करती है, कि माताजीने उसे कुछ पत्र लिखे हैं, उसका दावा है कि उसे बतलाया गया है कि श्रीअरविंद सभी प्राचीन ऋषियोंके साथ १५ अगस्त १९६४को मानव शरीरमें प्रकट होने वाले हैं। वह माताजी और श्रीअरविंदके नामसे और भी बहुत-सी बातें कहती फिरती है।

मुझे यह घोषणा करनेका अधिकार दिया गया है कि इस महिला-का माताजी और श्रीअरविंदके साथ कोई किसी प्रकारका संबंध नहीं है, माताजीने उसे कभी कोई पत्र नहीं लिखा और उसके सारे काम-का माताजी और श्रीअरविंदके साथ कोई संबंध नहीं है।

सचिव, श्रीअरविंदाश्रम

२६ अप्रैल १९६३

५५—एक पागल स्त्री

एक स्त्री पागल हो गयी थी। उसे अपने पतिके पास भेज देनेका हुकुम मिलनेपर प. ले. एक और साथीको लेकर उसके घर पहुंचा। वह लिखता है, हम 'क'के घर गये थे। वह कुछ भी सुननेसे इंकार करती है। वह कहती है कि उसका पति लेने आये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो भी वह न जायेगी। मेरा साथी उसे बलसे निकाल देनेके लिये तैयार है। वह आपके साथ मिलना चाहती है। वह तरह-तरहकी ऊलजलूल बातें कर रही है।

क्या आज्ञा है ?

उसे जोर करके निकालना एकदम असंभव है। मेरे साथ मिलने-का कोई प्रश्न नहीं उठता, वह जबतक रहना चाहे पड़ी रहे। उसे किसी ऐसे घरमें रखनेकी कोशिश करो जहां वह कम-से-कम हानि पहुंचा सके। उसे एकदम आवश्यक चीजें देते रहो, बाकी उसकी उपस्थितिकी अवहेलना करो। (अगर वह करने दे!)

मैं देखूंगी।

आशीर्वाद।

२७ अप्रैल १९६३

५६—विद्यार्थियोंका शुद्ध भाषा बोलनेसे कतराना

हिन्दी भाषी जहां भी जाते हैं वहींकी गलत सलत हिंदी बोलने लगते हैं और कई बार तो शुद्ध हिंदी उनके लिये अजूबा बन जाती है। आश्रममें भी इस प्रकारकी हिंदी चलती है। हिंदी अध्यापक होनेके नाते प. ले. के लिये एक समस्या खड़ी हो गयी। वह लिखता है: "साहित्यिक हिंदी जरा कठिन है लेकिन उसीमें हिंदी साहित्यका नवनीत भरा है। श्रीअरविंदने भी प्राचीन कवियोंकी बड़ी प्रशंसा की है। कुछ विद्यार्थी उपयोगिताकी दृष्टिसे उसे नहीं पढ़ना चाहते। वे केवल आधुनिक भाषा सीखना चाहते हैं जो उनके रोजमर्राके काममें उपयोगी हो। उसमें भी वे शुद्ध भाषा बोलनेसे कतराते हैं..."

मैं पहले ही उत्तर देना चाहती थी लेकिन जल्दीमें न दे पायी। उत्तर यह है: दोनों सिखाओ—सच्ची साहित्यिक भाषा और अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने जो रूप ले लिया है---यह वस्तुतः बहुत रुचिकर होगा और उन्हें बुरी हिन्दी बोलनेके रोगसे मुक्त कर सकता है।

मैं आपको एक मजेदार बात सुनाऊं। मुझे अपने लेखोंसे ६७ रुपये मिले और मैं कुछ किताबें खरीदना चाहता था। एक दिन मैंने अचानक वह रुपये आपको दे दिये और एकदम किसीने मुझे वही किताबें भेजीं जो मैं लेना चाहता था और साथमें लगभग २०० की किताबें भेंट स्वरूप !!

इस तरहकी चीज सैकड़ों बार हो चुकी है और अधिकाधिक होती रहती है। मेरे लिये यह "बिल्कुल स्वाभाविक" है, यद्यपि मैं इसे समझानेके लिये तैयार नहीं हूं।

९ मई १९६३

५७---विद्यार्थियोंमें लोकप्रियता

माताजी; मैं अपने विद्यार्थियोंमें काफी लोकप्रिय था लेकिन अब मैं लोकप्रियता खोता जा रहा हूं, मैं चाहता हूं कि वे गंभीरतासे काम करें। बतलाइये रास्ता क्या है ?

रास्ता---चीजको शांतिसे लो, इसपर ध्यान न दो और शांतिसे अपना काम करते चलो। यह आशा रखो कि अच्छे दिन आयेंगे। आशीर्वाद।

२२ मई १९६३

५८---दासतासे बचना

माताजी; एक मित्र भोजनालयके लिये चार पांच पंखे देना चाहता है, क्या आप स्वीकार करेंगी ?

हां।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी स्त्रीसे मैंने सुना है कि वह मेरे कमरेमें भी एक पंखा लगवाना चाहता है। मेरी पहली प्रतिक्रिया है, 'नहीं मुझे ऐशकी चीजें नहीं चाहियें।' लेकिन लगता है कि मेरे अंदर कहींपर लोभ छिपा हुआ है। आपकी क्या सलाह है--मैं स्वीकृति नहीं मांग रहा।

What is bad is <u>slavery</u>
slavery to abstinence as
well as slavery to needs.
What comes, we take
but always ready to let
it go; if it goes ---

blessings

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरा छोटा है और पंखा अच्छा रहेगा। तुम लेकर देखो शायद उससे सहायता मिले।

बुरी चीज है दासता। परहेजकी दासता और आवश्यकताओंकी दासता। जो आये उसे स्वीकार कर लो लेकिन अगर वह जाये तो सदा छोड़नेके लिये तैयार रहो।

आशीर्वाद।

२४ जून १९६३

५९—मारपीट

प. ले. ने भोजनालयके दो कार्यकर्ताओंके बारेमें लिखा जिनमें झगड़ा भी हुआ और मार-पीट भी। उसने पत्रके अंतमें लिखा " 'क'ने मार लगायी 'ख'ने भी जवाब दिया, यह ११.२५ मिनटकी बात है जब भोजनालयमें लोगोंकी भीड़ लगी थी।"

'क'ने मुझे लिखा है और मैंने उसे बतला दिया है कि मैं इस घटनाके बारेमें क्या सोचती हूं।

मैं 'ख'को उत्तर नहीं दे रही। मुझे तो यह लगता है कि यह सब आदिम मानव और उसकी गुफाकी ओर वापिस जानेके जैसा है . . .

हम सभ्य समाजका कृत्रिम जीवन नहीं जीना चाहते लेकिन ज्यादा अच्छा यह होगा कि नीचे गिर कर मार-पीटके विधानको अपनानेकी जगह हम महानतर सभ्यताकी ओर सीढ़ीपर ऊपर चढ़ें।

आशीर्वाद।

६ जुलाई १९६३

६०—एकमात्र सहायता

माताजी; चारों ओर कार्यकर्ताओं और कार्यमें ह्रास होता जा रहा है और मांगें बढ़ती जा रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां, अव्यवस्था व्यापक है, एकमात्र सहायता है श्रद्धा।

आशीर्वाद।

६ अगस्त १९६३

६१—डाक्टरके यहां जाना

प. ले. को कुछ शारीरिक कष्ट था। माताजीने उसे डाक्टरके पास जानेकी सलाह दी तो उसने लिखा कि मैं चाहता हूं कि मेरा शरीर औरोंकी सहायता न ले, आपकी सहायतापर निर्भर रहना सीखे। मेरे अंदर भय भी है और श्रद्धाकी कमी भी फिर भी मैं आशा करता हूं कि आप इसके लिये जो जरूरी है वह कर सकती हैं।

(डाक्टरके यहां जाना) उससे शरीरको एक विश्वास प्राप्त होता है और इस रूपमें वह सहायक है। मैं इसे तुम्हारे फैसलेपर छोड़ती हूं।

आशीर्वाद।

२६ अगस्त १९६३

६२—माताजीकी आज्ञा

प. ले. ने किसी प्रसंगमें माताजीको एक कहानी लिख भेजी कि एक गुरुके दो शिष्य थे। दोनों गुरुकी सेवा करना चाहते थे और उन्होंने अपना अपना काम बांट लिया था। एक दाहिना पांव दबायेगा दूसरा बायां। एक दिन सोते सोते दायां पांव बायेंपर आ गया। झट बाएं पांवका मालिक शिष्य लाठी लेकर दांयेको मारनेके लिए तैयार हो गया।

मुझे तुम्हारे पत्र और तुम्हारी कहानीमें बड़ा मजा आया। यह रहा मेरा उत्तर। यह उत्तर है क्या? बहरहाल यह एक तथ्य है और इससे कुछ बातें समझमें आ सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं केवल उन्हींको आज्ञा देती हूं जो पूरी तरह, पूरे-पूरे समर्पित हों क्योंकि इन आज्ञाओंपर ननुनच नहीं की जा सकती, उनकी अवज्ञा नहीं की जा सकती"

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

२५ अक्तूबर १९६३

६३—श्रेय मुझे मिले

माताजी; ऐसा मालूम होता है कि मुझे श्रीअरविंद सोसायटी और ओड़िया दलके बीच सेतुका काम करना होगा। कृपया हमारा पुराना अनुबंध याद कर लीजिये कि काम आप करें और श्रेय मुझे मिले। मुझे आज उनसे मिलना है।

बहुत अच्छा। 'क'से कहो कि मुझसे चमत्कारोंकी आशा की जाती है। तुममेंसे हर एकको भी कुछ थोड़े-से चमत्कार तो करने ही चाहियें।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

१४ नवंबर १९६३

६४—कम खर्च इमारतें

कुछ पूंजी लगानेवाले आश्रमकी एक इमारतपर खर्च कम करनेकी तरकीब सुझा रहे थे। प. ले. ने उनकी बातें माताजीको लिख भेजीं।

इमारतके मामलेमें तुम जितना खर्च करोगे उतना पाओगे। वे अपने-आपको बहुत चालाक समझते हैं लेकिन अगर वे कम खर्च करेंगे तो उनका मकान कम दिन चलेगा और हो सकता है कि प्रकृतिके आघातोंको सहनेके लिये काफी मजबूत भी न हो। अप्रशिक्षित आंखके लिये दोनों एक जैसे होंगे लेकिन उनमें ठोसपन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रतिरोध शक्तिमें अंतर होगा। यह सब कहनेके बाद मेरा निष्कर्ष है 'वे जैसा चाहें बनाएं।'

आखिर हर एकको अपना पाठ सीखना होता है। फिर भी मैं चेतावनीके दो शब्द जोड़ दूं। बुरी तरहसे बने मकानकी मरम्मत नहीं की जा सकती क्योंकि अधिकतर नींव कमजोर होती है।

आशीर्वाद।

१८ नवंबर १९६३

६५—क्या तुम तैयार हो

१९६३में श्रीअरविंद सोसायटीके वार्षिक अधिवेशनके अवसरपर सोसायटीकी अध्यक्ष (माताजी)की ओरसे सब सोसायटीवालोंको एक संदेश मिला था : "क्या तुम तैयार हो ?" यही संदेश १९६४ के वार्षिक संदेशके रूपमें भी दिया गया था। इसीके संदर्भमें प. ले. ने लिखा : मुझे अभी-अभी सोसायटीके सचिव द्वारा उसके अध्यक्षका एक प्रश्न मिला है, "क्या तुम तैयार हो ?" कृपया बतलाइये कि मैं क्या उत्तर दूं।

इस प्रश्नका उत्तर है, क्या तुम भागवत मुहूर्तके लिये तैयार हो ? तुम उत्तर दे सकते हो 'हां'।

आशीर्वाद।

१० दिसंबर १९६३

६६—लोगोंके इरादे

प. ले. का आश्रमके प्रशासन-कार्यके साथ गहरा संबंध था और उसे तरह-तरहकी मानव दुर्बलताओंका पता लगता रहता था। एक बार वह किसी मामलेमें अनखा कर माताजीको लिखता है, "ऐसा लगता है कि भगवान्को धोखा खानेमें मजा आता है। अभी मेरे पास 'क'की पुर्जी आयी है कि आपने अमुक दो बच्चोंको सिर्फ नाश्तेके लिये स्वीकृति दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी भूल इस बातमें है कि तुम समझते हो कि मैं धोखेमें आ गयी। यह असंभव है क्योंकि मेरे लिये लोगोंके शब्दोंकी अपेक्षा उनके "इरादे" ज्यादा स्पष्ट होते हैं।

६७—डांटकी जरूरत

माताजी; ३ जुलाईको मुझे आये २५ वर्ष पूरे हो गये। पहले इस दिन मुझे एक डांट मिला करती थी, इस वर्ष मैं उससे वंचित रह गया।

क्योंकि इस वर्ष तुम्हें डांटकी जरूरत न थी।

६८—भय

आश्रमके एक बड़े अच्छे कार्यकर्ताको क्षय रोग हो गया। उसने तीन चार बार स्वप्न देखा कि कोई बहुत काला आकार उसका गला घोंट रहा है, प. ले. पूछता है कि यह क्या चीज है और इसके लिये क्या करना चाहिये।

यह अवचेतनमें कोई गलत रूपायन है, लेकिन अगर यह आदमी डरता नहीं तो वह दोबारा न आ पाता। यह तो न्यूनाधिक रूपसे सचेतन भय ही है जो प्राय: सारी गड़बड़ करता है।

भयके बिना कुछ नहीं हो सकता, तुम उससे यह कह सकते हो।

१९६३

६९—अच्छे-से-अच्छा करो

प. ले. ने एक आदमीके कई चमत्कारोंकी बात लिखी और अंतमें लिखा, उसका कहना है कि ये सब चमत्कार आपकी कृपासे हैं।' मुझे नहीं लगता कि इस तरह चमत्कारोंके पीछे दौड़ना खतरेसे खाली है। यह तो पुरानी बातोंको ही नये-नये रूपमें ला रखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। हम बहुधा आपके चमत्कार देखा करते हैं लेकिन वे कभी अपना विज्ञापन देने और परचे बांटने नहीं आते।

मुझे इस तरहके दिखावटी चमत्कार पसंद नहीं हैं। अधिकतर उनका दयनीय अंत होता है। शक्तिके दबावमें आकर पहली प्रतिक्रिया होती है अहंकारका फूलना।

इन सब चीजोंके सामने बस एक ही वृत्ति अपनानी चाहिये। अपना अच्छे-से-अच्छा करो और परिणाम प्रभुके हाथोंमें छोड़ दो। आशीर्वाद।

१९६३

७०—तहरी हिंदी

प. ले. हिंदी अध्यापक भी है। हिंदी भाषियोंके बारेमें यह आम शिकायत है कि वे जहां जाते हैं अपनी हिंदीको प्रचलित बोलीके रंगमें रंग लेते हैं। इसी भांति आश्रममें भी एक तरहकी खिचड़ी, बल्कि तहरी हिंदीका चलन है। इसपर प. ले. माताजीको लिखता है: "मेरे विद्यार्थियोंने कुछ हिंदी सीख तो ली है लेकिन वे गलत भाषा बोलनेमें ही अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं! मैं पांच वर्षसे उनकी भाषा ठीक करनेकी कोशिश कर रहा हूं लेकिन कोई लाभ नहीं। मेरे अच्छे-से-अच्छे विद्यार्थी भी मेरी पीठके पीछे जान कर गलत भाषा बोलते हैं। मेरी इच्छा होती है कि अगले वर्षसे हिंदी पढ़ाना छोड़ दूं।

दो वर्ष और कोशिश करो, शायद सात वर्ष बाद उनकी 'प्रतिष्ठा' बह जाय . . .।

७१—महत्त्वाकांक्षाका उपयोग

प. ले. को बहुत-से लोगोंको काम देना होता था। कभी-कभी वह उनके बारेमें माताजीकी राय मांगता था। 'क्ष' माताजीके पास प्रणामके लिये गया तो उसके बारेमें उन्होंने लिखा:

4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने 'क्ष'को देख लिया है। वह और कुछ नहीं, अपरिपक्व अधिक है और जैसा कि सभी आदिम प्रकृतियोंमें होता है उसका अहंकार बहुत प्रमुख और स्वार्थपूर्ण है, हां, उसकी महत्त्वाकांक्षाका कुछ उपयोग किया जा सकता है अगर उसकी उचित देखभाल की जाय और उसे कठोरताके साथ ठीक कार्यपर रखा जाय और उसके दर्पकी नाकपर चपत लगाये जाएं।

आशीर्वाद।

१९६३

७२—आश्रममें आर्थिक कठिनाई

१९६४में आर्थिक कठिनाइयोंके कारण आश्रममें कुछ कटौतियां की गयीं जिनके कारण कुछ लोगोंमें असंतोष पैदा हो गया। इस बारेमें प. ले. माताजीको लिखता है, "विद्यार्थी अवस्थामें हम लोग अपने रहने-सहनेका पूरा खर्चा दिया करते थे लेकिन जब कभी भूकंप, सूखा या बाढ़ आदिका समाचार आता था तो हम अपनी ओरसे अपने घी, दूध, कपड़े आदिपर कटौती लगा कर, पैसा बचा कर राहत कार्योंके लिए भेजा करते थे। मेरी समझमें नहीं आता कि आश्रमके कुछ लोगोंमें इस कटौतीके बारेमें यह असंतोष कैसे हो सकता है?

दुर्भाग्यवश (?) वर्तमान कठिनाई बाढ़, सूखा, युद्ध या भूकंप आदिके कारण नहीं है, न ही आगजनी है। ये चीजें ऐसी हैं जो कुछ समयके लिये मानव भावनाओंको जगातीं और उनकी 'आवश्यकता' कहलानेवाली भौतिक कामनाओंपर प्रभुता पा लेती हैं।

आर्थिक कठिनाइयां साधारणतः लोगोंको शुष्क, यहांतक कि अगर विद्रोही नहीं तो कटु तो बना ही देती हैं। मैं ऐसे कुछ लोगोंको जानती हूं जो श्रद्धा खोने खोनेको हैं क्योंकि मेरे पास उतना पैसा नहीं है जितनेकी मुझे जरूरत है।

६ फरवरी १९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७३—हम कहां खड़े हैं

माताजी; २६ वर्ष प्रयास करनेके बाद भी मैं देखता हूं कि मैं निष्ठावान् होनेसे बहुत दूर हूं। छोटी-छोटी बातें मुझे असंतुलित कर देती हैं। मुझे शंका है कि आप कभी मुझे बदलनेमें सफल हो भी सकेंगी।

मुझे विश्वास है कि मैं एक दिन सफल होऊंगी।

माताजी; ऐसा लगता है कि भीतरसे तो चीजें सुधर रही हैं पर बाहरसे तो मालूम होता है कि विघटन हमारे द्वारपर खड़ा है। आखिर हम कहां हैं?

एक सुन्दर उपलब्धिके सामने।
प्रेम और आशीर्वाद।

१६ मार्च १९६४

७४—पूजापाठ

प. ले. से आश्रममें आये हुए ओड़िया लोगोंकी सभामें कुछ प्रश्न किये गये। उसने प्रश्नोत्तरका हाल माताजीको लिख भेजा। वह कहता है कि मुझसे पूछा गया है कि क्या माताजी और श्रीअरविंदके अनुयायी राम, कृष्ण तथा अन्य देवी-देवताओंकी पूजा कर सकते हैं या नहीं। मैंने कहा, हमारे यहां कोई बंधे हुए नियम नहीं हैं जिनका सभीको अनुसरण करना पड़े, हर एकको वही करना चाहिये जो उसे अंदरसे ठीक लगे। मैंने कहा कि अगर कोई सच्चा है और भगवान्का सेवक बनना चाहता है तो वह माताजी और श्रीअरविंदका नाम जाने बिना भी उनकी सेवा कर सकता है। वह माताजीको चाहे जिस नामसे पुकारे—राधा, कुमारी मरियम या हनुमान—उसे प्रत्युत्तर अवश्य मिलेगा। सब कुछ उसकी सचाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और श्रद्धापर निर्भर है। हम न तो किसीसे पूजा-पाठ करनेके लिये कहते हैं न बंद करनेके लिये। आपका क्या आदेश है?

बिल्कुल ठीक।
प्रेम और आशीर्वाद।

२३ मार्च १९६४

७५––उग्र स्थितिका सामना करना

प. ले. को कई बार उग्र स्थितियोंका सामना करना पड़ता था। ऐसी ही एक स्थितिमें वह लिखता है, सामान्यतः जब मुझे किसी उग्र व्यक्तिका सामना करना पड़ता है तो मैं आपकी शांतिको पुकारता हूं और सामनेवाला आदमी चुप हो जाता है। कल मैंने उस पंजाबी युवकके साथ इसी तरकीबका उपयोग किया। कुछ देरके लिये तो इसका असर हुआ, फिर उसमें बड़ी ही उग्र प्रतिक्रिया हुई जिससे मैं घबरा गया। ऐसी स्थितिमें क्या करना चाहिये?

हो सके तो संबंध एकदम काट लो ताकि आक्रामक स्पंदन गिर पड़ें।

माताजी; कभी-कभी जब मुझे किसी बीमारसे सहानुभूति होती है तो मेरा शरीर भी उसीके लक्षण दिखाने लगता है। आयुर्वेदका विद्यार्थी होनेके नाते मेरी कल्पना भी सक्रिय हो उठती है। मेरे पूरे प्रयासके बावजूद यह स्थिति जाती नहीं लेकिन आपकी ओरसे एक-दो कठोर शब्द मिल जायें तो मैं बिल्कुल ठीक हो जाता हूं। इसलिये मुझे बार-बार आपको तंग करना पड़ता है। इसीलिये मैं लिखने बैठा हूं। 'क'को मधुमेह है और वह मेरे शरीरमें अपने दोस्त पा रहा है। काश! मैं आपके रक्षणसे बाहर न जा पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukuļ Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे अच्छी तरकीब है अव्यवस्था और विक्षोभके स्पंदनोंको हटाकर उनके स्थानपर भागवत उपस्थिति, सत्य और सामंजस्यको प्रतिष्ठित करो।

आशीर्वाद।

२५ मार्च १९६४

७६—श्रीअरविंदके नामका उपयोग

माताजी 'क' बंबईमें अपना व्यापार शुरू करना चाहता है, वह अपनी दुकानके नामके साथ श्रीअरविंदका नाम भी जोड़ना चाहता है। मैंने उससे कहा है कि ऐसी चीजोंके साथ श्रीअरविंदका नाम जोड़ना वांछनीय नहीं है।

वह श्रीअरविंदके नामका उपयोग नहीं कर सकता।

५ मई १९६४

७७—जुर्माना

माताजी हंसी-मजाकमें भी पीछे नहीं रहती थीं, हां वह कभी निचले स्तरका या भद्दा न होता था। एक नमूना देखिये: "मैं पुरोधामें आपके और श्रीअरविंदके उद्धरण छापा करता हूं जिनमें कई बार यह नहीं दिया जाता कि वे कहांसे लिये गये हैं। इसपर एक मित्रने मुझे एक चेतावनी दी है कि ऐसी हालतमें लेखक मेरे ऊपर अदालतमें मुकद्दमा चला सकते हैं। मैं जानना चाहूंगा कि आप मेरे विरुद्ध कौन-सी अदालतमें जायेंगी। और अगर मेरे ऊपर जुर्माना हुआ तो आप चुका देंगी न।"

मुझे लगता है कि तुम्हें चिंता करनेकी जरूरत नहीं। मुझे ऐसी किसी अदालतका पता नहीं। अतः तुम्हारे ऊपर जुर्माना होनेका कोई भय नहीं है।

आशीर्वाद।

२३ मई १९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७८—घनिष्ठ शत्रुता

माताजी; हमारे भोजनालयमें काम करनेवाले तीन-चार व्यक्तियों-में घनिष्ठ शत्रुता हो गयी है। मैं उनकी शिकायतें सुनते-सुनते थक जाता हूं। कल तो इसने बहुत ही गंभीर रूप धारण कर लिया था। मैं बहुत कोशिश करनेपर भी कोई कारण नहीं खोज पाया। कृपया सहायता कीजिये।

यह गरमीके कारण है! मेरी सलाह है **ठंडे पानीका फव्वारा**'! आशीर्वाद।

२७ मई १९६४

७९—भारतका भविष्य, एक स्वप्न

२७ मई १९६४को पं. जवाहर लाल नेहरूका देहावसान हो गया। इसपर माताजीने संदेश दिया, "नेहरू अपना शरीर छोड़ गये हैं लेकिन उनकी आत्मा भारतकी आत्माके साथ एक है जो शाश्वत कालतक बनी रहेगी।" प. ले. ने माताजीसे सलाह मांगी कि क्या वह नेहरूके बारेमें पुरोधामें संपादकीय टिप्पणी लिख सकता है, अगर हां, तो वह क्या कहे?

यह ठीक है। इसके सिवाय कोई और सुझाव नहीं कि वर्तमान दुःख और अंधेरेके बावजूद भारतका भविष्य उज्ज्वल है।

माताजी; उस दिन मैंने स्वप्न देखा कि हमारे भोजनालयमें बहुत-से छोटे-बड़े सूअर पाले गये हैं, उन्हें मारा जायगा। मैं वहांसे भाग जाना चाहता था, फिर मैंने सोचा, अगर माताजी यह चाहती हैं तो यही सही। इसका मेरे ऊपर बहुत असर पड़ा।

यह स्वप्न तुम्हारे पुराने संस्कारोंका परिणाम है, ये अभीतक तुम्हारी अवचेतनामें जीवित हैं। सूअरोंको मारनेका कोई इरादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है जबतक कि वे लोभ और भोजन लोलुपताके प्रतीक न हों।
आशीर्वाद।

१० जून १९६४

८०—धन

माताजी; कभी-कभी मैं अपने विद्यार्थियोंके साथ व्यक्तिगत बातचीत किया करता हूं। मुझे यह देखकर धक्का लगता है कि कुछ अच्छे विद्यार्थी धनको इतना अधिक महत्त्व देते हैं। वे डाक्टर भी बनना चाहते हैं तो अधिक पैसा कमानेके लिये! मैं सोच रहा हूं कि अपने हिंदीके विद्यार्थियोंको वाद-विवादका विषय दूं, 'धन ही जीवनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है या नहीं,' क्या इससे उन्हें इस विषयपर गंभीरतासे सोचनेका अवसर मिलेगा? पता नहीं!

हां, प्रयास करो। इसकी बहुत अधिक जरूरत है। ऐसा लगता है कि इन दिनों धन ही परम प्रभु बन गया है। सत्य पीछे पृष्ठभूमिमें हट रहा है, रही बात प्रेमकी तो वह दृष्टिसे बिल्कुल ओझल है।

मेरा मतलब दिव्य प्रेमसे है क्योंकि जिसे मनुष्य प्रेम कहते हैं वह तो धनका बहुत अच्छा मित्र है।

आशीर्वाद।

१३ जून १९६४

८१—मानव जीवन—स्पंदनोंकी राशि

माताजी; एक प्रश्न है, अगर आप उत्तर देना चाहें तो दीजिये। हर बार जब 'क' या उसके लोग मुझसे नाराज होते हैं या भोजनालयसे नाराज होते हैं तो आप मेरी ही भूल निकालती हैं। क्यों? और मामलोंमें तो ऐसा नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान्‌के लिये तुम भी औरोंकी तरह बेवकूफ न बनो।

मैं न तो किसीको दोष देती हूं, न कभी किसीका पक्ष लेती हूं। मेरे देखनेका तरीका कुछ अलग है। मेरी चेतनाके लिये धरतीपर समस्त जीवन, जिसमें मानव और समस्त मानसिकता भी शामिल है, स्पन्दनोंकी राशि है और ये मिथ्यात्व, अज्ञान और अव्यवस्थाके स्पन्दन हैं जिनके अंदर उच्चतर लोकोंसे आनेवाले सत्य और सामंजस्य-के स्पन्दन अधिकाधिक कार्यमें लगे हैं और वे उनके प्रतिरोधमेंसे रास्ता बना रहे हैं।

इस दृष्टिमें अहंभाव, व्यष्टिगत हठधर्मी और पार्थक्य बिल्कुल अवास्तविक और भ्रामक ठहरते हैं।

जब वर्तमान अस्तव्यस्ततामें कोई **अतिरिक्त** गड़बड़ पैदा हो जाती है तो मैं जितना संभव हो उतना सामंजस्य लानेके लिये उसपर कुछ विशेष स्पन्दन भेजती हूं। इसमें स्वयं व्यक्तिको उस 'प्रहार'-का इतना अनुभव नहीं होता जितना उस चीजको जो असामंजस्यके साथ चिपकी होती या उसका पक्ष लेती है।

सच बात तो यह है कि मुझे विश्वास था कि तुम सहज भावसे सत्यका पक्ष लोगे और समझ जाओगे कि ऐसे मामलोंमें कभी एक पक्ष पूरी तरह ठीक और दूसरा पक्ष पूरी तरह गलत नहीं होता। मिथ्यात्व और अस्तव्यस्तताके साथ जो जितना चिपका है वह उतना दोषी है।

१५ जुलाई १९६४

८२—आमूल परिवर्तन

माताजीका ऊपर दिया हुआ पत्र पढ़कर प. ले. चकरा-सा गया। उसका मतलब यह बिल्कुल न था कि माताजी पक्षपात करती हैं। उसने नाराज होकर भी माताजीको पत्र न लिखा था। उसने 'क' के साथ हिल-मिल कर काम करनेकी पूरी कोशिश की थी, इतनी कोशिश शायद और किसीके लिये न की होगी, वह भी इतने लंबे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समयतक लगातार, लेकिन परिणाम क्या हुआ ? एकदम असफलता। वह यह सब रोना रोकर माताजीसे पूछता है कि इसके पीछे क्या कारण है।

कुछ लोगोंका प्राण हमेशा अस्तव्यस्तता और असामंजस्य, छोटे-मोटे लड़ाई-झगड़ों और गड़बड़ोंको पुकारता है। उनके अंदर एक उत्पीड़नका पागलपन भी होता है। वे समझते हैं कि हर एक उनके विरुद्ध है। इसे ठीक करना बहुत अधिक कठिन है और उसके लिये प्रकृतिके आमूल परिवर्तनकी जरूरत है।

ऐसे लोगोंके साथ व्यवहार करते हुए सबसे अच्छा यह है कि प्रतिक्रियाओंकी परवाह न करो और तुम्हें जो करना है वह सरलता और सचाईके साथ करते चलो। इस मामलेमें 'क'को मुझसे अपने जीवन भरकी सबसे कड़ी डांट मिली है। शायद उसका कुछ असर हो।

आशीर्वाद।

१५ जुलाई १९६४

८३—समयकी गति, राधाकृष्ण

माताजी; एक विद्यार्थीने मुझसे पूछा है कि समय इतनी तेजीसे क्यों चलता हुआ मालूम होता है। मेरा ख्याल है कि इसका संबंध हमारे अंदर स्थित शाश्वततासे है। लेकिन बात मुझे भी स्पष्ट नहीं है।

जब तुम वैश्व सामंजस्यके साथ संपर्कमें रहते हो तो समय कोई निशानी छोड़े बिना चलता चला जाता है।

संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओंके कई सर्वोत्कृष्ट कवियोंने राधा और कृष्णके बारेमें इस तरह गाया है मानों वे शारीरिक क्षुधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सेक्सकी लालसाओंकी बात कर रहे हों। कुछ चीजें यह मानने को तैयार नहीं होतीं और कहती हैं कि यह केवल वासना नहीं हो सकती। शायद उन्हें प्राणमय और शारीरिक भूमिकापर भगवान्के साथ संबंध व्यक्त करने और शरीर और भावनाओंका सर्वभावेन समर्पण व्यक्त करनेके लिये और शब्द नहीं मिले। यह प्रश्न बहुधा सामने आता है।

मैंने हमेशा यही माना है कि यह सच्चे शब्द और उचित भाषा पानेकी आयोग्यताके कारण है।

१७ जुलाई १९६४

८४—प्रयासकी मांग

१९६४ आर्थिक दृष्टिसे आश्रमके लिये संकटका समय था। भोजनाच्छादनपर भी इसका असर पड़े बिना न रहा। इस सिल-सिलेमें काफी गप्पें भी फैलने लगीं। प. ले. ने इनका व्यौरा दिया तो:

...मैं आशा करती हूं कि जो निष्ठावाले हैं वे इस प्रकारकी बातें सुननेमें अपना समय नष्ट न करेंगे।

तुमने भोजनके बारेमें जो कुछ लिखा है वह मुझे मालूम है—लेकिन तुम स्वीकार करोगे कि अपने कामोंको ज्यादा अच्छा बनाने और उन्हें ज्योतिर्मय और बोधगम्य बनाना संभव है।

...जब धनका अभाव हो तो उसके स्थानपर सद्भावना और संगठन तथा सुव्यवस्थाके असीम प्रयासको लाना चाहिये। मैं उसी प्रयासकी मांग कर रही हूं, वह तमस् और प्रमादपूर्ण लापरवाहीपर विजय होगी।

मैं नहीं चाहती कि कोई भी हथियार डाल दे, मैं चाहती हूं कि हर एक अपना अतिक्रमण करे।

प्रेम और आशीर्वादके साथ।

१८ जुलाई १९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८५—भागवत कृपा अपार है

लुधियानेके एक वृद्ध सज्जनकी हालत बहुत खराब थी। डाक्टरोंने शल्यक्रियाकी सलाह दी।

बहुत संभव है कि अंत आ रहा है। सब कुछ उसके स्वभाव और इच्छा-शक्तिपर निर्भर है, अगर वह संघर्ष किये बिना चुपचाप चला जाना चाहता है तो उसे शांत रह कर जबतक खिंचे, खींचने दो, अगर वह युद्ध करना पसंद करता है तो शल्य-चिकित्सा होने दो और देखो क्या होता है। हर हालतमें मेरे आशीर्वाद उसके साथ हैं।

जहांतक आश्रमकी अवस्थाका सवाल है, हालत वैसी ही है जैसा तुमने वर्णन किया है, शायद उससे भी खराब, मैं भी श्रीअरविंदकी तरह कहूंगी, 'जबतक **चेतना** नहीं बदलती तबतक वास्तवमें कुछ नहीं किया जा सकता।'

तुम हस्तक्षेप करोगे—और यह एक उदाहरण और प्रदर्शनके रूपमें अच्छा है लेकिन दूसरे ही दिन स्थिति पहलेसे भी बिगड़ जायगी।

हम सत्यको अभिव्यक्त होनेके लिये नहीं बुला सकते क्योंकि मिथ्यात्व इतने व्यापक रूपमें और गहराईमें फैला हुआ है कि उसके आनेका परिणाम होगा पूरा-पूरा विनाश।

फिर भी, भागवत कृपा अपार है—वह कोई रास्ता ढूंढ़ निकालेगी। आशीर्वाद।

१९६४

८६—सतर्क श्रद्धा

प. ले. कामके बारेमें अनेक समस्याएं गिनानेके बाद कहता है, "इस मुश्किल समयमें अपना काम निर्विघ्न रूपसे चलानेके लिये जिस चीजकी जरूरत हो वह प्रदान कीजिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतर्क श्रद्धा स्थितिकी रक्षा करेगी।
मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

६ अगस्त १९६४

८७—किसी संगठनका संचालन

माताजी; 'क' मुझसे कहता है कि उसके विभागमें काम करनेवाले 'ख' और 'ग' अपने कामकी पूरी तरहसे उपेक्षा कर रहे हैं। उनकी मशीनें धूलसे अटी पड़ी हैं, 'घ' उन्हें तरह-तरहकी बुरी आदतें सिखाता रहता है, मेरी समझमें नहीं आता मैं क्या करूं।

बुरा काम तभी होता है जब शीर्षस्थ व्यक्तिमें उचित चेतनाका अभाव हो।

कोई संगठन ठीक तरहसे चले इसके लिये आवश्यक शर्तें हैं कि स्पष्ट, यथार्थ दृष्टि हो कि क्या करना है, और उसे कार्यान्वित करनेके लिये **स्थिर, शांत** और **दृढ़** इच्छा शक्ति हो। और एक सामान्य नियमके अनुसार औरोंसे उन गुणोंकी मांग न करो जो स्वयं तुम्हारे अंदर नहीं हैं।

मुझे बहुत जोरसे यह लगता है कि इस विभागमें निरीक्षण वैसा नहीं है जैसा होना चाहिये।

२५ अगस्त १९६४

८८—किसीके आश्रममें रहनेके बारेमें

माताजी, मैं व्यक्तिगत रूपसे अपनी जानकारीके लिये, यह जानना चाहूंगा कि 'क' का यहां रहना क्यों अवांछनीय है। पिछली फरवरीमें उसने हमारे साथ काम किया था और वह रोज बारह घंटे काम करती थी। पिछले छह सप्ताहसे वह दस घंटे रोज तो काम करती ही है फिर भी मेरे अंदर कोई चीज उसके रहनेकी सिफारिश करनेसे रोकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभवतः तुम्हारा मूल्यांकन इस तथ्यके आधारपर है कि उसने यहां रहने या यहां लौट आनेके लिये सब प्रकारके उपायोंका प्रयोग किया है--जिनमेंसे कुछ सीधे सादे नहीं हैं--जब कि उसे स्पष्ट रूपसे कह दिया गया था कि मैं चाहती हूं कि वह चली जाय। इस कारण हम नहीं जानते कि अगर उसे स्थिर रूपसे रहनेकी स्वीकृति दे दी जाय तो वह क्या रूप दिखायेगी।

आशीर्वाद।

२६ अगस्त १९६४

८९—जब चीजें गलत होती जा रही हों

एक स्त्रीको आश्रममें रहनेकी स्वीकृति नहीं मिली। फिर भी वह डटी हुई थी। ऐसे लोगोंको भगानेका काम साधारणतः प. ले. का हुआ करता था परंतु इस बार 'क', 'ख', 'ग' इस मामलेमें पड़े हुए थे और प. ले. इस बातसे कुढ़ रहा था कि माताजीकी आज्ञाका पालन क्यों नहीं हो रहा। उसने माताजीको लिखा कि आखिर यह अराजकता क्यों है?

हां, सबसे अच्छा तरीका तो यह है कि सारी बातको एक मुस्कान-के साथ लो क्योंकि ऐसा लगता है कि कम-से-कम अभी तो इससे बचना संभव नहीं है।

जब चीजें गलत होती जा रही हों तो अपनी सर्वोत्तम सद्भावना और सच्चे सहयोगको दिखानेका सबसे अच्छा अवसर होता है।

प्रेम और आशीर्वाद।

३१ अगस्त १९६४

९०—आर्थिक बरबादी

माताजीने आश्रमके एक ऐसे लड़केको अमुक काम देनेका सुझाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया तो प. ले. ने बतलाया कि वह तो अपने नातेदारोंके साथ मिलकर निजी कमाई करनेमें लगा है।

ऐसी ही चीजें आश्रमको आर्थिक बरबादीकी ओर लिये जा रही हैं।

१४ सितंबर १९६४

९१—पशु-पक्षी और भोजनका स्वाद

माताजी एक बचकाना प्रश्न है। क्या पशु-पक्षी भी हमारी तरह भोजनका स्वाद पाते हैं?

हां, पाते तो हैं पर वे हमारी तरह उसके बारेमें **सोचते** नहीं। आशीर्वाद।

२२ सितंबर १९६४

९२—विद्यालय खोलना

लुधियानामें श्रीअरविंद सोसायटीकी ओरसे एक प्राथमिक विद्यालय शुरू करनेका प्रस्ताव था। स्थानीय लोगोंकी इच्छा थी कि उसे उच्चतर विद्यालय बनाया जाय। पैसेका सवाल न था परंतु प. ले. को यह शंका थी कि उचित अध्यापक जुटाये बिना, जो माताजी और श्रीअरविंदके प्रभावमें न हों, इतना बड़ा कदम उठाना ठीक होगा क्या? क्या वह माताजीकी इच्छाके अनुकूल चल सकेगा?

पहले अध्यापकोंको जुटाओ, बादमें विद्यालय खोला जा सकता है।

२३ अक्तूबर १९६४

९३—ध्यानमें कठिनाइयां

माताजी, एक संन्यासी यहां रहनेके लिये आया था। कुछ ही महीनोंमें उसने अपना गेरुआ चोला छोड़ दिया और साधारण आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन गया। उसे ध्यान करनेका बहुत शौक है, आंखें बंद करते ही उसका शरीर हिलने-डोलने लगता है और उसे बहुत आनंद होता है लेकिन कभी-कभी उसे अपने चारों ओर सांप ही सांप दिखायी देते हैं और कभी-कभी वह अपने-आपको जंगली जानवरोंके बीचमें पाता है। कुछ दिन पहले उसने ध्यान कक्षमें बाकायदा एक दृश्य उपस्थित कर दिया। मैंने उसे सलाह दी है कि जबतक आपका उत्तर न आ जाय वह ध्यान न करे।

हो सकता है कि संन्यासी चोला छोड़नेका भय (शायद अव-मानसिक) उसके अंदर सांप आदिके आक्रमणके रूपमें अनूदित होता है। तुम उससे कह दो कि वह डरे नहीं, कि मुझे सूचना दे दी गयी है और कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

उसे फिरसे ध्यान करनेकी कोशिश करने दो—वह यह विश्वास रखे कि उसकी रक्षा की जा रही है। लेकिन पहले वह औरोंके बीचमें प्रयास न करे। अगर उसका ध्यान शांतिके साथ होने लगे तो वह फिरसे औरोंके साथ ध्यान कर सकता है।

आशीर्वाद।

७ दिसंबर १९६४

१४—खानेके सोडेका उपयोग

माताजी; हमारे रसोई घरके काम करनेवाले कभी-कभी सोडेका उपयोग करना चाहते हैं, क्या आपकी स्वीकृति है?

पेटके लिये यह बहुत अच्छा नहीं होता।

और इमली?

अच्छा।

आशीर्वाद।

१९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९५—इमलीका प्रयोग

माताजी; एक व्यक्तिगत प्रश्न है। अब आपने इमलीके उपयोग-की स्वीकृति दे दी है लेकिन लगभग बीस वर्ष पहले आपने मुझे करारी डांट पिलायी थी क्योंकि मैंने 'क' के कहनेपर उसके लिए इमलीका शरबत बना दिया था। आपने कहा था कि इमली स्वास्थ्यके लिये हानिकर है और भारतीय लोगोंके प्रमादी होनेमें एक बड़ा कारण यह भी है। हमारे प्राचीन मुनियोंने भी लगभग यही बात कही है और उसे तामसिक भोजन बताया है। मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या अब मूल्य बदल गये हैं या आप मानव लालसाओंको सुविधा दे रही हैं।

मैंने भोजन, मसाले आदिके प्रभावके बारेमें इतनी परस्पर विरोधी बातें सुनी हैं कि अब मैं तर्क-संगत रूपमें इस निष्कर्षपर पहुंची हूं कि और चीजोंकी तरह यह भी व्यक्तिगत मामला है और परिणामतः कोई सामान्य नियम नहीं बनाया जा सकता और आरोपित तो किया ही नहीं जा सकता।

मेरी सदयताका यही कारण है।

आशीर्वाद

१९६४

९६—ईमानदारीके साथ व्यापार, दिव्य जीवनकी तैयारी

माताजी; 'क' पहली तारीखको जा रहा है। उसे अपने व्यापारमें अच्छा लाभ हो रहा है लेकिन उसका कहना है कि यह आपकी कृपासे है। वह जानना चाहता है कि क्या वह इस कामको जारी रखे ?

ईमानदारीके साथ व्यापार ज्यादा खतरनाक होता जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

honest business is getting more and more risky -

'क'को अमुक विभागमें काम दिया गया था लेकिन बीमारीके कारण उसे वह काम छोड़ देना पड़ा। उसके पेटमें बहुत तकलीफ रहती है और आंखोंमें भी रोहे हो गये हैं। वह यहां हतोत्साह और कुंठाकी अवस्थामें आयी थी। जब वह काम करती है तो अच्छा करती है पर अधिक समय तो बिस्तरपर ही बीतता है! अब वह मरना चाहती है।

जो यहां दुःखी रहते हैं या यह अनुभव करते हैं कि उन्हें आवश्यक सुविधाएं प्राप्त नहीं हैं उन्हें यहां न रहना चाहिये। हम जितना कर रहे हैं उससे ज्यादा करनेकी स्थितिमें नहीं हैं और आखिर हमारा उद्देश्य लोगोंको आरामदेह जीवन देना तो नहीं है। हमारा उद्देश्य है उन्हें दिव्य जीवनके लिये तैयार करना और वह बात ही अलग है।

१९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

people who feel miserable here and find that they have not the comfort they require ought not to stay.

We are not in a position to do more than we do, and, after all, our aim is not to give to people a comfortable life but to prepare them for a Divine life which is quite a different affair -

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७—सच्ची आवश्यकता पूरी होगी

प. ले. फल और मेवेके उपयोग तथा वितरणका काम करता था। वह हर वर्ष अक्तूबर नवंबरमें ये चीजें उत्तर भारतसे मंगाया करता था। १९६४ में देशकी स्थितिको देखते हुए इनका आना मुश्किल मालूम होता था। उसने माताजीसे प्रार्थना की तो उत्तर मिला:

What is truly needed, will surely come

blessings M.

जिसकी सचमुच जरूरत होगी, वह चीज अवश्य आयेगी।
आशीर्वाद।

१९६४

१८—जो ठीक और उचित है वह किये जाओ

माताजी; जहांतक कामका संबंध है मुझे कुछ-कुछ इच्छुक कार्यकर्ताओंका स्वागत करके खुशी होगी लेकिन जब पैसेकी बात आती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तो मैं घबरा जाता हूं। दाल, तेल, मसाले आदिकी अधिक मात्रा देना उस श्रेणीमें आता है।

यह इतना पैसेका सवाल नहीं है जितना नियंत्रित वितरणका। (खाद्यान्न आदिकी कमीका)

मेरा प्रस्ताव है कि जो ठीक और उचित है वह किये जाओ और भविष्यकी बहुत ज्यादा चिंता न करो। उसे (भविष्यको) भागवत कृपाके भरोसे छोड़ दो।

१९६४

९९—काम करते जाओ

प. ले. की किसीके साथ यह विषय लेकर बहस हो गयी कि काम क्या है। उसके बारेमें लिखते हुए वह कहता है, आखिर मेरा कहना था, "माताजी जिस किसी चीजको कामके रूपमें स्वीकार कर लें वही काम है।"

मैं निराश नहीं हूं लेकिन मुझे इस बातमें मजा आता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूं वह यद्यपि मेरी दृष्टिमें कामका 'क' भी नहीं है फिर भी मुझे उसे करते जाना चाहिये क्योंकि आपकी करुणा उसे स्वीकार करती है!

आह! तुम बहुत होशियार होते जा रहे हो और इस सिद्धितक पहुंच रहे हो कि हम कुछ भी नहीं हैं, हम कुछ नहीं जानते। हम कुछ नहीं कर सकते। केवल परम प्रभु जानते हैं। करते हैं और हैं।

सप्रेम

१९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१००—लक्ष्यके प्रति सच्चा बनना

किसी विभागमें कामके बारेमें असंतोष फैला हुआ था, प. ले. ने इस विषयमें माताजीको लिखा :

People are here
to change their
consciousness
unless they become,
all of them, true
to their aim; nothing
true can be done

लोग यहां अपनी चेतना बदलनेके लिये हैं। जबतक **सब-के-सब** अपने **लक्ष्यके प्रति सच्चे** नहीं बन जाते तबतक कोई **सच्चा** काम नहीं किया जा सकता।

१९६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०१—कमजोरीका डर

'क' प. ले. के साथ काम किया करता था, उसमें यह डर भरा हुआ था कि वह दिन पर दिन कमजोर होता जा रहा है। वह टमाटर, मक्खन, रोटी, तरकारी कुछ भी हजम नहीं कर पाता। उसे श्लीपद भी है और पेटमें वायु भी। वह चाहता है कि मैं उसका काम बदल दूं। वह स्वीकार करता है कि उसका काम न तो भारी है न अधिक फिर भी उसका स्वास्थ्य इतना करनेकी स्वीकृति नहीं देता। मैं उससे कुछ कहता हूं तो वह यही मान बैठता है कि मैं उससे काम हासिल करना चाहता हूं, उसके शरीरकी परवाह नहीं करता। वह बस कुरसीपर बैठा-बैठा कुछ करना चाहता है।

उसमें प्राणिक शक्ति **बहुत ही कम** है और मानसिक सुझाव बहुत जोरदार। कुछ समयके लिये जैसा वह चाहता है वैसा ही कर दो। शायद वह जान पाये कि यह सब **कल्पना** है क्योंकि उसकी कल्पना ही उसे दुर्बल बनाती है, बल्कि उसे रुग्ण होनेका **आभास** देती है।

१९६४

१०२—साहस बनाये रखो

प. ले. ने जीवनकी बहुत-सी कठिनाइयोंके बारेमें लिखा तो माताजीका उत्तर था।

यह कहनेकी जरूरत नहीं कि मेरी सहायता और शक्ति तीव्रताके साथ उन लोगोंके साथ है जो मेरे साथ मिलकर इस वस्तु-स्थितिके साथ जूझ रहे हैं। मैं बस उनसे इतना ही चाहती हूं कि वे विश्वास बनाये रखें और सहन करें।

सत्यकी विजय अवश्य होगी। साहस बनाये रखो।

प्रेम और आशीर्वादके साथ।

११ फरवरी १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०३—सच्ची स्थिति

फरवरी १९६५में हिंदी विरोधी आंदोलनके बहाने आश्रमके बहुतसे मकानोंपर पथराव किया गया, कुछको लूटा और जलाया गया। जब आश्रमके मुख्य भवनपर आक्रमण हुआ तो आश्रमके बहुतसे लोग बाहर निकल पड़े और उन्होंने आततायियोंका सामना किया। उस समय प. ले. को बहुत स्पष्ट और जोरदार अनुभूति हुई मानों उसके शरीरमें बिजली दौड़ रही है। आततायियोंका भौतिक रूपसे सामना करनेकी उसके अंदर जरा भी इच्छा न पैदा हुई। वह भीतर ही भीतर माताजीको पुकारने और उनकी उपस्थितिका अनुभव करनेकी कोशिश करता रहा। अपनी अनुभूतिका वर्णन करते हुए वह लिखता है: मुझे लगा कि अगर मैं पूरा विश्वस्त और शांत रह सकूं और आपकी सहायताका आह्वान करूं तो कोई विरोधी आश्रम-को छू तक न सकेगा। ऐसी भावना लिये मैं आश्रमके अंदर घूमता भी रहा। यह स्थिति रातके ग्यारह के बाद तक बनी रही।

मुझे इस तरहकी अनुभूतिका पहले भी स्वाद मिल चुका है पर वह कभी कुछ क्षणों से ज्यादा नहीं रही। अब मेरे अंदर यह शंका पैदा हो रही है कि यह अनुभूति कहीं मेरी भीरुताको छिपानेके लिये एक लबादा तो न था।

इस प्रकारकी अनुभूतिपर कभी संदेह न करो।

सभी लोगोंको ठीक इसी स्थितिमें होना चाहिये था। मैं इस स्थितिको आश्रममें उतारनेकी कोशिश कर रही थी और अगर सभीने इसमें हिस्सा लिया होता तो कुछ भी गड़बड़ न हो पाती, अधिक-से-अधिक उग्र आक्रमण भी व्यर्थ चले जाते।

आशीर्वाद

१८ फरवरी १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०४—भारतकी रक्षा

माताजी; मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि भारतकी भारतीयोंसे रक्षा कीजिये।

हां, यह जरूरी मालूम होता है!
प्रेम और आशीर्वाद।

२५ फरवरी १९६५

१०५—आश्रमपर आक्रमण (माताजीका वक्तव्य)

प. ले. पुरोधाके संपादकके नाते आश्रमपर आक्रमणका विवरण अपनी पत्रिकामें छापना चाहता था, उसने माताजीको इसकी सूचना दी।

मैं तुम्हारे पास यह वक्तव्य भेज रही हूं जो बुलेटिनमें छपेगा और आश्रमके साथ संबंध रखनेवाली सभी पत्रिकाओंमें—जो इस बारेमें कुछ कहना चाहें—छपना चाहिये। तुम देखोगे कि मैंने केवल रचनात्मक भाग ही रखा है। बाकी भाग अपना काम कर चुका और अब उसकी जरूरत नहीं रही।

९ मार्च १९६५

माताजीका वक्तव्य

कुछ लोग ऊपरी दृष्टिसे देखते हुए यह प्रश्न करते हैं कि यह क्या बात है कि आश्रम इस नगरमें इतने जमानेसे है फिर भी यहांके लोग उसे पसंद नहीं करते।

इसका पहला और तात्कालिक उत्तर तो यह है कि यहांकी जनतामें वे सब लोग जो संस्कृति, बुद्धि, सद्भावना और शिक्षाकी दृष्टिसे उच्चतर स्तरके हैं, उन्होंने आश्रमका स्वागत किया है और इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये अपनी सहानुभूति, प्रशंसा और सद्भावना प्रकट की है। पांडिचेरीमें श्रीअरविंदाश्रमके बहुत-से निष्ठावान् अनुयायी और मित्र हैं।

यह सब कह चुकनेके बाद हमारी स्थिति स्पष्ट है।

हम किसी भी मत या धर्मके विरुद्ध नहीं लड़ते।

हम किसी प्रकारके शासन-तंत्रके विरुद्ध नहीं लड़ते।

हम किसी सामाजिक वर्गके विरुद्ध नहीं लड़ते।

हम किसी राष्ट्र या सभ्यताके विरुद्ध नहीं लड़ते।

हम लड़ रहे हैं विभाजन, निश्चेतना, अज्ञान, तमस् और मिथ्यात्वके विरुद्ध।

हम धरतीपर एकता, ज्ञान, चेतना, सत्यको स्थापित करना चाहते हैं और हम उस चीजसे लड़ते हैं जो प्रकाश, शांति, सत्य और प्रेम-की नयी सृष्टिके आगमनका विरोध करती है।

१६ फरवरी १९६५

१०६—महाकालीका कार्य

माताजी; मैंने सुना है कि आश्रमपर जो आक्रमण हुआ था वह महाकालीके क्रोधका परिणाम था। कहा जाता है कि आपने कहा है कि यह अंतिम नहीं था। मेरा ख्याल था कि यह विरोधी शक्तियोंका काम था। अगर सचमुच यह महाकालीका काम था तब तो हमें इसका स्वागत करना चाहिये न?

मैं जो कुछ कहती हूं लोग उसे हमेशा तोड़-मरोड़ लेते हैं। ज्यादा अच्छा यह है कि उनकी बातपर कान न दो। हां, मैंने इस विषय-पर कुछ लिखा जरूर है और जल्दी ही तुम्हें उसकी एक प्रति भेजूंगी।

विनाशका स्वागत करनेका तो कोई सवाल ही नहीं। वह जो पाठ पढ़ाता है उसे सीखना चाहिये।

९ मार्च १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०७--महाकालीका कार्य (२)

(महाकालीके कार्यके बारेमें माताजीका वक्तव्य)

समस्त विनाशके पीछे, चाहे वे प्रकृतिके भूकंप, ज्वालामुखी, तूफान, बाढ़ आदि विकट, असीम विनाश हों या मानव उग्रता और हिंसा द्वारा लाये गये युद्ध, क्रांति, विद्रोह आदि, उनमें मैं कालीकी शक्ति देखती हूं जो पार्थिव वातावरणमें रूपांतरकी गतिको तेज करनेके लिये कार्य कर रही है।

वह सब, जो केवल तत्वत: ही नहीं बल्कि चरितार्थतामें भी दिव्य है, वह इन विनाशोंसे ऊपर और उनसे अछूता रहता है। इस तरह विनाशका परिमाण अपूर्णताका परिमाण बताता है।

इन विनाशोंका बार-बार दोहराये जानेसे रोकनेके लिये सबसे अच्छा तरीका है उनसे पाठ सीखना और आवश्यक प्रगति करना।

१० मार्च १९६५

१०८--महाकालीका कार्य (३)

माताजी; आपके संदेशके लिये कृतज्ञ हूं, क्या यह सिर्फ मेरे लिये है या पत्रिकामें भी छापा जा सकता है? मैं यह जानना चाहूंगा कि जब महाकाली आपके काममें तेजी लाती है तो हम उसके हस्तक्षेपके लिए प्रार्थना क्यों न करें? मैंने देखा है कि जब आप डांटती हैं तो हमें यह अनुभव होता है कि आपका हाथ हमें पीछेसे सहारा दे रहा है ताकि हम गिर न पड़ें। अगर महाकालीके कुछ प्रहार हमें आपके मार्गपर सीधा चला सकें तो उनका स्वागत क्यों न किया जाय?

वह संदेश बुलेटिनमें छपेगा और उसे वहीं तक रहने दो। लोग आसानीसे उसका आंशिक मानसिक अर्थ लगा सकते हैं जिसके भयंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम हो सकते हैं। महाकाली एकमात्र शक्ति नहीं है जो संसारमें काम कर रही है। प्रेम और कृपा भी तो हैं।

आशीर्वाद।

१६ मार्च १९६५

१०९—निराशाका उत्तर

प. ले. को आश्रम, देश और मानव जातिकी बहुत-सी चीजें देख कर निराशा हो रही थी। वह उनका रोना रोकर माताजीसे कहता है, "बाहरसे देखनेमें सारा दृश्य निराशाजनक दीख रहा है लेकिन आप मौजूद हैं। मैं आशा करता हूं कि आप काफी शक्तिशाली हैं।"

मुझे पता नहीं कि मैं शक्तिशाली हूं या नहीं (मैं है कहां?) लेकिन परम प्रभु सर्वशक्तिमान हैं—इसके बारेमें कोई शंका नहीं और वे सारी चीजपर नजर रखे हुए हैं।

प्रेम।

२० अप्रैल १९६५

११०—नारियल

माताजीका कहना था कि भोजनके लिये उपयोगमें आनेवाले तेलोंमें जैतूनका तेल सबसे अच्छा है और दूसरे नंबरपर आता है नारियलका तेल। आश्रमके बगीचोंमें नारियलके पेड़ोंकी कमी नहीं है। भोजनालयमें नारियलके तेलका उपयोग किया गया पर अधिकतर लोगोंको वह पसंद नहीं है। विशेष रूपसे उसकी गंध लोगोंको रास न आयी। प. ले. ने यह सारी कहानी माताजीके सामने रखी।

यह नारियलका मामला आश्रमकी सबसे अधिक बेतुकी बातोंमेंसे एक है। एक समय मेरी इच्छा थी कि इस मूढ़ताके विरुद्ध आवाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठाऊं। अब मैं मुस्करा देती हूं और उन्हें अपनी इच्छाके अनुसार करने देती हूं। एक चीजपर मैं अब भी आग्रह करूंगी, पीनेके लिये पानीवाले नारियल मिलते रहें क्योंकि यह पानी शरीरके लिए बहुत लाभदायी है। उसके अतिरिक्त सूखे नारियल बेचे जा सकते हैं और रसोईमें उपयोगके लिये मूंगफलीका तेल खरीदा जा सकता है।

प्रेम और आशीर्वादके साथ

५ जून १९६५

१११—शब्दातीत क्रिया

माताजी; बाहरसे आनेवाले एक मित्रका कहना है कि कुछ समय पहले जब वह आश्रममें आया करते थे तो देखते थे कि यहां बहुत कठोर जीवन है और हर चीजमें मितव्ययता बरती जा रही है, आजकल देशमें अवस्था वैसी ही है पर आश्रमसे वह कठोरता चली गयी है। इसका अर्थ मैं यह समझता हूं कि माताजीने सारे देशकी कठिनाई आश्रमके ऊपर ले ली थी और अब यहांपर समस्या सुलझ गयी है। बाहर उसके बचे-खुचे असर दिखायी दे रहे हैं परंतु जिस तरह आश्रममें स्थिति सुधर गयी है इसी तरह देशमें भी सुधरनेकी तैयारी मालूम होती है। मैं इसके जवाबमें केवल हंस दिया क्योंकि मेरे पास कोई जवाब न था।

यह कुछ कहनेका तरीका है। एक बहुत बड़े पैमानेपर कोई क्रिया हो रही है जिसे शब्दोंमें रखना मुश्किल है।

१३ जून १९६५

११२—भागवत कृपाका फैसला

प. ले. के पास एक बूढ़े सज्जनको लाया गया और उसे बताया गया कि यह वृद्ध होते हुए भी कर्मठ हैं, इन्हें आश्रममें रहनेका अवसर दिया जाय तो यह अपने-आपको उपयोगी सिद्ध करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमुक बगीचे वाले इन्हें लेनेको तैयार हैं। यह गाथा माताजीके आगे पेश करते हुए प. ले. ने लिखा, यह आदमी ७०से ऊपर है और बहुत बूढ़ा लगता है। माताजी रखना चाहें तो अमुक स्थानपर रखा जा सकता है।

मेरा अंतर्दर्शन कहता है नहीं।
मेरी दयाकी भावना कहती है, उसे एक अवसर दे दिया जाय।
मेरी बुद्धि कहती है, इस तरीकेसे हम पकड़े जाएंगे।
आशीर्वाद।

१९ जून १९६५

आखिर फैसला किया भागवत कृपाने और उसे रख लिया गया। आश्रमको उसकी सेवा-टहल और दवा-दारूपर बहुत खर्च करना पड़ा और उसके परिवारसे गालियां सुननी पड़ीं कि उसकी उचित देख-रेख नहीं की गयी क्योंकि वह कैंसरसे मर गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

गुजरात, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगालके सोसायटी केंद्रोंके वार्षिक अधिवेशन बडोदरा, मेरठ, और आसनसोलमें सितंबर अक्तूबरमें हुए थे। श्री किशोरी लाल ढांढणियाने तीनोंमें भाग लिया।

सितंबर अक्तूबरमें श्री गोपाल भट्टाचार्यने इंग्लैंड और अमरीकाके सोसायटी केंद्रोंके अधिवेशनोंमें भाग लिया।

हैदराबादमें सोसायटीकी शाखा हर शामको 'श्रीअरविंदकी दृष्टि' पर वक्तृताओंका कार्य-क्रम रखती है और श्री पूर्ण चंद्र हर रविवार और बुधवारको 'दिव्य जीवन'के बारेमें तेलुगुमें भाषण देते हैं। समय-समयपर अन्य कार्यक्रम भी होते रहते हैं।

घोषणाएं : जो लोग माताजीके चित्रवाले केलेंडर लेना चाहते हैं वे 'शब्द', श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरी--६०५००२-के पतेपर दामके ३.५० और डाक व्यय अलग (रजिस्ट्रीसे) भेज कर मंगा सकते हैं।

अपनी सोसायटीकी सदस्यता राशि दिसंबरमें ही भेजनेकी कोशिश कीजिये। हर वर्ष शुल्क भेजनेके झंझटसे बचनेके लिये आप पांच वर्षका चंदा १३० या दस वर्षका चंदा २५१ एक साथ दे सकते हैं। आशा है आपने अपने सदस्यताके फार्म भेज दिये होंगे।

नवंबर १९८६में नारी परिषद्की ओरसे एक सेमिनार हुआ, विषय था 'चेतनाका विकास'। इसकी ओरसे एक अंग्रेजी मासिक 'अवेकनिंग' शुरू हुई है, विशेष जानकारीके लिये 'कोआर्डिनेटर' वीमेन्स काउंसिल, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२से पत्र-व्यवहार करें।

उत्तर प्रदेशकी प्रादेशिक सोसायटी मुजफ्फरनगरने स्नातकोत्तर विद्यार्थियोंके लिए 'अपने भारत के लिये श्रीअरविंदकी शिक्षा' विषयपर

(शेष आवरण ४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है। तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Selfishness kills the soul; destroy it. But take care that your altruism does not kill the souls of others.

Sri Aurobindo

ASSAM TEA WAREHOUSING CORPORATION

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

११३—सारी दुनियाको "शरण" ५
११४—नारियलका तेल ६
११५—पकानेके बर्तन ६
११६—वही (२) ७
११७—अवश्य पसंद आयेगा ८
११८—श्रद्धाकी कमी ८
११९—आश्रमके भोजनमें परिवर्तन, कठिनाईका उपाय, उपयोगी बननेकी इच्छा, कश्मीरका झमेला ९
१२०—निर्भीकता १३
१२१—भारतकी एकताके बारेमें १३
१२२—आश्रमकी आर्थिक स्थिति १४
१२३—कश्मीरका युद्ध-विराम १४
१२४—कालीकी शक्ति, कार्यसे छुट्टी १५
१२५—आटेकी चक्की १६
१२६—विद्यार्थियोंको डांटना १६
१२७—वही (२) १७
१२८—सच्ची शिक्षा १८
१२९—अन्नका अपव्यय १८
१३०—कृपाके मार्गमें अड़ंगा १९
१३१—पढ़ाना—साधनाका अंग २०
१३२—असामंजस्य और अस्त-व्यस्तता २२
१३३—परम उपलब्धिकर्ता २२
१३४—इच्छाकी विजय या सामंजस्य, प्रेम २३
१३५—भगवान्‌को जीत लेनेका अर्थ २४
१३६—प्रगतिके लिये प्रयास २५
१३७—संतति-निग्रह २५
*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३८—आश्रममें दूधकी कमी २६

१३९—गायकी पवित्रता २६

१४०—परम प्रभुका विनोद २६

१४१—फ्रेंच सिखाना २७

१४२—कुछ फ्रेंच वाक्योंका अर्थ २७

१४३—एक और फ्रेंच वाक्यका अर्थ २८

१४४—नयी सृष्टि और अतिमानसका आगमन २८

१४५—कर्मचारियोंकी शिकायतें २९

१४६—स्वप्न, भागवत कृपापर निर्भरता २९

१४७—कूटनीति नहीं ३०

१४८—एक कार्यकर्ताके बारेमें ३१

१४९—श्रीअरविंदकी कहानियोंका अनुवाद ३१

१५०—वही (२) ३२

१५१—वही (३), राधा जीवित थीं और अब भी हैं ३२

१५२—प्रभुके कार्य करनेके तरीके ३३

१५३—झूठे आंकड़े नहीं ३३

१५४—सामंजस्यपूर्ण काम ३४

१५५—भोजनकी शिकायतें ३५

१५६—सामंजस्यपूर्ण समाधान ३६

१५७—माताजीके साथ भौतिक संपर्क ३६

१५८—कामके लिये वृत्ति ३७

१५९—आश्रममें दूधकी व्यवस्था ३८

१६०—तूफानके पीछेकी शक्तियां ३८

१६१—एक कामकी व्यवस्था ३९

१६२—पुरोधाके बारेमें ३९

१६३—अव्यवस्थापर व्यवस्थाकी विजय ४०

१६४—भगवान्‌का आविर्भाव ४१

१६५—प्राणिक जगत् ४१

१६६—दो विद्यार्थी ४२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६७—मृत्युके बाद पशु और वनस्पति ४२
१६८—एक विभागके कामके बारेमें ४३
१६९—प्रकृतिका सहयोग ४३
१७०—एक सच्ची कहानी ४४
१७१—बुद्धिमत्ताका आगमन ४४
१७२—भागवत कृपा ४५
१७३—एकमात्र आशा ४५
१७४—शुद्ध मजाक या मनका मरोड़ ४६
१७५—कम पाना और बहुत अधिक खर्च करना ४६
१७६—शरीरकी ग्रहणशीलता ४७
१७७—धीरे-धीरे स्थिरतासे ४७
१७८—भगवान्‌पर अविश्वास ४८
१७९—रामका शरीर-त्याग ४८
१८०—बीमारीके बहाने बुलाना ४९
१८१—सत्य या रसातल ४९
१८२—ध्यानपर लेख ४९
१८३—वही (१) ५०
१८४—लेख लिखनेमें कठिनाई ५०
१८५—कटुताका चेप ५१
१८६—सावधान रहा करो ५१
१८७—जीवन एक चमत्कार ५१
१८८—अपना अच्छे-से-अच्छा करो ५३
१८९—असाधारण बात ५३
१९०—भविष्यके लिये तैयारी ५४
१९१—अच्छे-से-अच्छेकी आशा रखो ५५
१९२—सच्ची ग्रहणशीलता ५६
१९३—भोजनालयकी चटाइयां ५७
१९४—सृष्टिकी कहानी ५७
१९५—भारतका भविष्य ५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
१९६—अभीप्सा ५७
१९७—शांत श्रद्धा ५८
१९८—आश्रममें एक और भोजनालय ५९
१९९—शरीरमें योग ५९
२००—सच्ची श्रद्धा, दलाई लामाके बारेमें ६०
२०१—विद्यालयमें परीक्षाएं, विद्यार्थियोंके साथ संबंध ६१
२०२—समय आ गया है ६३
२०३—नयी शिक्षा-पद्धति ६४
२०४—कठिनाइयोंपर विजय ६४
२०५—श्रद्धाका परम कार्य ६५
२०६—आंतरिक प्रतिक्रिया ६५
२०७—ठीक प्रेरणा ६६
२०८—विद्यार्थियोंका गृहकार्य ६६
२०९—महान् सत्ताएं ६७
२१०—एक विद्यार्थीके बारेमें ६८
२११—चुने हुए लोग ६८
२१२—मनकी जिम्नास्टिक्स ६९
२१३—सामान्य ज्ञानका महत्त्व ६९
२१४—अनुवाद-कार्य ७०
२१५—परम प्रज्ञाका यंत्र ७२
२१६—अस्वस्थता ७२
२१७—वही (२) ७२
२१८—भागवत सहायता ७३
२१९—शक्तिकी प्रबल और सतत एकाग्रता ७३
२२०—भीतरी आदेश ७४
२२१—भारतकी राष्ट्रीय भाषा ७५
२२२—एक ही उपाय ७५
२२३—कार्यके बारेमें ७५
२२४—झिझक और कामना ७६
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीका पत्र-व्यवहार

एक कार्यकर्तासे

इन पृष्ठोंमें हम माताजीके साथ एक आश्रमवासीका पत्र-व्यवहार दे रहे हैं। उसने गुरुकुल कांगड़ीसे शिक्षा समाप्त करके श्रीअरविंदके बड़े गुरुकुलमें सन् १९३८ में प्रवेश पाया था। शुरूके कुछ पत्रोंका उत्तर श्रीअरविंदने दिया है और बाकी सबका माताजीने।

इस आश्रमवासीने, जो अपने-आपको कार्यकर्ता कहना पसंद करता है, आश्रममें सब प्रकारके पापड़ बेले हैं, पीर, बावर्ची, भिश्ती, खर सब तरहके काम किये हैं अतः उसके पत्र-व्यवहारमें रसोई घरसे लेकर प्रशासन और पठन-पाठन आदि अनेक विषयोंकी बातें आ जाती हैं। इसमें माताजीके अनेक रूपोंका परिचय मिलता है, जहां उच्चतर और गुह्य जीवनकी बातें हैं वहीं नौकरोंके साथ व्यवहार, खाना पकाने, तेल, इमलीके व्यवहार आदिके बारेमें भी प्रमाणिक मार्ग-दर्शन मिलता है। आशा है पाठकोंको अपने-अपने रसकी चीज, अपने-अपने क्षेत्रमें पथ-प्रदर्शन मिल सकेगा।

११३—सारी दुनियाको "शरण"

भोजनालयके एक कार्यकर्ताने माताजीको लिखा कि मैं छह वर्षसे यहां काम कर रहा हूं। मेरी स्त्रीको शरीर छोड़े काफी समय हो गया है और मैं अपने मातृहीन तीन बच्चोंको उनकी ननिहालमें छोड़ आया हूं। मेरी ससुरालमें भी साधनोंकी कमी है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि इन बच्चोंको यहां लानेकी स्वीकृति प्रदान करें ताकि वे आपकी छत्रछायामें बड़े हो सकें। माताजीने प. ले. को जवाब दिया।

यह बड़ी अच्छी बात है। मैं तो सारी दुनियाको "शरण" देना चाहूंगी, या कम-से-कम उन सबको जो ज्यादा अच्छे जीवनके लिये अभीप्सा करते हैं। लेकिन हमारे पास स्थान और साधनोंकी कमी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम उसे बतला सकते हो कि अभी कुछ ही दिन पहले मैंने 'म' को अपनी स्त्री और बेटीको लानेकी स्वीकृति देनेसे इंकार किया है...

इसे इंकारकी अपेक्षा स्थगित करना कहा जा सकता है, नगर और साधनोंको बढ़ने दो और हमारा आतिथ्य भी बढ़ता जायेगा।

आशीर्वाद।

२० जून १९६५

११४—नारियलका तेल

(कुछ लोग घरपर पकाते हैं। उन्हें आश्रमसे तेल मसाला आदि मिलता है। इसमें भी नारियलका तेल दिया जाता था।)

माताजी, लोगोंको नारियलका तेल पसंद नहीं है। उसकी जगह मूंगफलीका तेल चाहते हैं।

उन्हें नारियलका तेल दिया जाता है इसलिये वे मूंगफलीका तेल चाहते हैं। लेकिन सब जगह (यूरोपमें भी) नारियलके तेलको ज्यादा गुणकारक और सुपाच्य मानते हैं।

फिर भी ये बहुत मामूली बातें हैं जिन्हें लोगोंकी इच्छाके अनुसार किया जा सकता है।

२४ जून १९६५

११५—पकानेके बर्तन

भोजनालयके लिये कुछ बड़े-बड़े पकानेके बरतनोंकी बात चल रही थी। प. ले. ने केवल सूचना देनेके निमित्त माताजीको लिखा कि कुछ अकलुष इस्पात (स्टेनलेस स्टील) के बरतन तैयार हो रहे हैं और कुछ अल्यूमीनियम के बरतन भी आनेवाले हैं। इसपर:—

एक ही चीजके लिये मुझे दो स्थानोंपर पैसा खर्च करना होगा। तुमने अपने पत्रका उत्तर नहीं मांगा फिर भी मैं लिख रही हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने अकलुष इस्पातके बरतनोंके लिये स्वीकृति दे दी है लेकिन मुझे अल्यूमीनियमके बरतनोंके बारेमें कुछ नहीं मालूम और मैं इन्हें पसंद भी नहीं करती क्योंकि अल्यूमीनियम पकानेके लिये ठीक नहीं है। यह बात मैं स्वयं अपने अनुभवसे कहती हूं।

आशीर्वाद।

२६ जून १९६५

११६—पकानेके बर्तन (२)

माताजी; मुझे खेद है कि मुझे आपको बार-बार तंग करना पड़ रहा है, मैं आपको फिरसे उसी विषयपर लिखनेके लिये बाधित हूं। अल्यूमीनियमके बरतन भात पकानेके लिये होंगे। मेरा ख्याल था कि अल्यूमीनियम केवल नमक या खटाई वाली चीजोंके लिये खराब है। अगर आपको यह पसंद नहीं है तो हम इन्हें नहीं लेंगे और इनके लिये जो पत्र लिखा गया है उसे रद्द कर दिया जायगा।

साथ ही आपको यह भी बतलाता चलूं कि जब हमारे दही जमानेके लिये फ्रेंच तामचीनीके बरतन पुराने पड़ गये तो हमने भारतीय तामचीनीके बरतन मंगवाये लेकिन वे दो ही दिनमें बिगड़ गये और गंधे देने लगे। आखिर और उपाय न देख कर हमने इसके लिये अल्यूमीनियमके बरतनोंको ही अपनाया जो अभीतक चल रहे हैं। गांवोंमें इसके लिये मिट्टीके बरतनोंका उपयोग होता है लेकिन यहां उनके कारण बहुत-सी व्यावहारिक समस्याएं आ जाएंगी। आप चाहें तो हम फिरसे ज्यादा अच्छे तामचीनीके बरतनों के लिये कोशिश कर सकते हैं।

अल्यूमीनियमसे मेरी शिकायत यह है कि वह भोजनको कलछौंहा बना देता है और कुछ अप्रिय-सा स्वाद दे देता है। अगर भातपर यह असर न हो तो ठीक है।

दहीके लिये यह निश्चित रूपसे अवांछनीय है। मिट्टीके बरतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चित रूपसे ज्यादा अच्छे होंगे और ज्यादा अच्छा तो यह हो कि वे ठीक तरहसे काचित (ग्लेज़्ड) हों।

आशीर्वाद।

२७ जून १९६५

(बादमें भारतमें बने तामचीनीके बरतन भी मिल गये और अब तो इन सब कामोंके लिये अकलुष इस्पातका ही उपयोग होता है।)

११७—अवश्य पसंद आयेगा

प. ले. को कोई अप्रिय काम करनेके लिये कहा गया लेकिन बात इस तरहसे कही गयी कि उसे कुछ खटकी। उसने माताजीको लिखा: मैं आशा करता हूं कि मेरा आपके साथ ऐसा संबंध नहीं है कि आपको मुझसे पूछना पड़े कि मैं यह करूंगा या वह। मैं आशा करता हूं कि मुझसे कुछ करनेके लिये कहनेसे पहले आपको संकोच नहीं होता—काम चाहे कैसा भी क्यों न हो प्रिय या अप्रिय।

नहीं, जब मैं तुमसे कुछ चाहती हूं तो मैं सीधा तुमसे कहती हूं, किसी औरके द्वारा नहीं और न यह पूछती हूं कि क्या तुम्हें यह पसंद आयेगा क्योंकि मुझे विश्वास है कि वह तुम्हें **अवश्य पसंद आयेगा।**

प्रेम सहित।

२७ जुलाई १९६५

११८—श्रद्धाकी कमी

माताजी; हर रोज 'क' मुझे अपनी विपदाकी कहानियां सुनाया करता है, मेरी राय तो यह है कि जो कुछ आपकी तरफसे आये उसे बिना सोचे स्वीकार कर लेना चाहिये। मैं जानता हूं कि यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसान नहीं है। इस हालतमें हमें सारी बात आपके आगे रखनी चाहिये और आपके साथ झगड़ भी लेना चाहिये। इससे सारी चीज साफ हो जाती है। आखिर आपको छोड़कर कौन है जो हमारी मुश्किलोंमें सहायता कर सके? उसे यह विचार पसंद नहीं है। पता नहीं, मैं किस तरह उसकी मदद कर सकता हूं। क्या आप बतला सकेंगी कि वह इस मामलेमें इतना कठोर क्यों है और क्यों हमेशा ही मुसीबतोंके सागरमें पड़ता रहता है?

फिर वही बात। मानव मनमें श्रद्धाकी कमी जटिलताएं और पीड़ा लाती रहती है जब कि भागवत पथ-प्रदर्शनपर शांत श्रद्धा हो तो सब कुछ बहुत सीधा और सरल हो सकता है।

इस श्रद्धा और विश्वासके विकासके लिये ही मैं इतने वर्षोंसे लगी हूं। स्पष्ट रूपसे प्रतिरोध हठीला है।

आशीर्वाद।

११ अगस्त १९६५

११९--आश्रमके भोजनमें परिवर्तन, कठिनाईका उपाय, उपयोगी बननेकी इच्छा, कश्मीरका झमेला

१९६५ से पहले आश्रमके भोजनालयमें मिर्च मसाला आदि एकदम नहीं होता था। १९६५में भोजनमें कुछ परिवर्तन किया गया जो यूं तो बहुत लोकप्रिय हुआ क्योंकि उसमें मिर्च मसाले आदिका प्रवेश मिल गया परंतु प. ले. का शरीर इसे सह न सका। वह लिखता है, "जब लोग कहते थे कि उन्हें भोजनालयका खाना हजम नहीं होता तो मैं उनपर हंसा करता था। व्यंगकी बात यह है कि अब मुझे भोजनके इस सुधारके बाद इसी कठिनाईका सामना करना पड़ रहा है और मुझे बवासीर हो गयी है। कृपया मेरे शरीरको इस योग्य बना दीजिये कि वह इस परिवर्तनको सह सके।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भौतिककी अपेक्षा मानसिक ज्यादा है।

(इस पत्रके आते ही तकलीफ़ दूर हो गयी)

जब बेकरी या ब्लांशिसरी[1] की कोई कठिनाई मेरे सामने रखी जाती है तो मैंने उसका हल करनेके लिये एक चालाकी पा ली है। मैं फैसला स्थगित कर देता हूं और भीतरसे सारा मामला आपके हाथोंमें छोड़ देता हूं। स्वचालित रूपसे समाधान हो जाता है और श्रेय मुझे मिलता है।

यही वस्तुतः सच्चा तरीका है और सब मामलोंमें इसीका उपयोग होना चाहिये।

लेकिन रसोईघरके बारेमें मैं ऐसा कर सकनेमें असमर्थ रहता हूं। इसलिये मैं उसे टाल जाता हूं।

क्योंकि अभीतक रसोईके मामलेमें बहुत ज्यादा अहंकार मिला हुआ है।

मैंने हमेशा मुझे आपकी सेवाके लिये अधिकाधिक उपयोगी बनानेके लिये आपसे प्रार्थना की है। पिछले कुछ दिनोंसे मुझे यह ख्याल आ रहा है कि यह भी एक तरहकी महत्त्वाकांक्षा और व्यक्तिगत मांग है और अन्य मांगोंकी तरह इस मांगको भी दूर रखना चाहिये। मुझे यह आपके हाथोंमें छोड़ देना चाहिये कि ज्यादा उपयोगी बनूं या...। ऊपरसे तो बात बड़ी अच्छी लगती है परंतु मुझे भय है कि इसके पीछे छिपी हुई जड़ता, तमस् या अवसादकी मांग न हो, मैं स्पष्ट रूपसे इन चीजोंको बाहरसे संक्रमणके रूपमें आते हुए देखता हूं।

---

[1]आश्रमका कपड़े धोनेका विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीप्सा हमेशा अच्छी होती है। अगर कोई मांग उसके साथ मिल भी जाय तो तुम विश्वास रखो, वह स्वीकृत न होगी।

मैं आशा करता हूं कि कश्मीरका झमेला भारत और पाकिस्तानके एक होनेके बारेमें पहला चरण है।[1]

Aspiration is always good, and if some demand is mixed up with it, you can be sure that it will not be granted.

Of one thing we must be convinced — all that happens is exactly what must happen in order to lead us and the world as quick as possible to

---

[1]पाकिस्तानने भारतकी पश्चिमी सीमापर जम्मू कश्मीरपर, १ सितंबर ६५ को आक्रमण किया। तीन सप्ताह बाद २२ सितंबरको युद्ध विराम हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

the goal — the
union with the
the Divine and
ultimately the
manifestation
of the Divine

And this faith
sincere and constant -
is at once our
help and protection.
Love

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम प्रज्ञा सब कुछ देख रही है।

एक बातके बारेमें हमें विश्वास होना चाहिये--जो कुछ होता है वह ठीक वही होता है जो होना चाहिये ताकि हमें और जगत्को जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी लक्ष्यतक पहुंचा सके--लक्ष्य है भगवान्के साथ ऐक्य और अंतमें भगवान्की अभिव्यक्ति।

और यह श्रद्धा--सच्ची और सतत--एक साथ हमारी सहायता और सुरक्षा है।

प्रेम।

२ सितंबर १९६५

१२०—निर्भीकता

माताजी; 'क' यहांसे पंजाब जा रहा है (जानेसे पहले उसने माताजीका आशीर्वाद लिया था) मद्राससे उसका तार आया है, "परिस्थिति बदल गयी है। आदेश भेजें।" शायद वह लड़ाईसे डर गया है। क्या मैं उसे तार दे दूं, "आशीर्वाद नहीं बदले, चले जाओ।"

वहां सचमुच लड़ाई चल रही है। अगर वह बिल्कुल निर्भीक हो तो जा सकता है।

आशीर्वाद।

७ सितंबर १९६५

१२१—भारतकी एकताके बारेमें

(भारतके प्रधान मंत्रीके नाम माताजीका संदेश)

सत्य और सत्यकी विजयके लिये भारत लड़ रहा है और उसे तबतक लड़ते जाना चाहिये जबतक कि भारत और पाकिस्तान फिर-से एक न हो जाएं क्योंकि यही उनकी सत्ताका सत्य है।

१६ सितंबर १९६५ --माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह रहा मेरा संदेश (जिसे जगत्‌की मन और भावनाकी स्थिति-के कारण बदल दिया गया है) तथा उसके साथ संबंध रखनेवाले उद्धरण।

तुम्हारे पत्रका स्वागत है।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१६ सितंबर १९६५

१२२—आश्रमकी आर्थिक स्थिति

माताजी; युद्ध और संभाव्य आक्रमणके कारण आपको आर्थिक कठिनाई हो रही होगी। आश्रमके कोषाध्यक्षके पास हमारी ब्लांशिसरीके हिसाबमें ४००० जमा हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि इस रकमको अपना मानकर जब चाहें वहांसे ले लें। आपकी कृपासे हमारा काम चलता रहेगा। मैंने अपने पास १०० रख लिये हैं।

कृपया वर दीजिये, कड़ी परीक्षाके इन दिनोंमें हम आपके प्रति वफादार रहें। हम कुछ सकारात्मक न कर सकें तो भी कम-से-कम कोई समस्याएं न खड़ी करें। मैं प्रार्थना करता हूं कि भारत सचमुच आपका बन जाय।

यह बहुत सान्त्वनादायक पत्र है, ऐसे बहुत नहीं आते। यह बहुत सराहनीय है। अभी ब्लांशिसरीका पैसा कोषाध्यक्षके पास ही रहेगा।

बादमें देखेंगे कि आर्थिक स्थिति क्या रंग लाती है।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१७ सितंबर १९६५

१२३—कश्मीरका युद्ध विराम

युद्ध-विरामसे प. ले. की आशाको धक्का लगा। उसने माताजीकी एक फ्रेंच प्रार्थनामेंसे कुछ उद्धरण माताजीको लिख भेजे—गंगाजल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से गंगा पूजा। इस अस्थायी बाधाके समय में आपसे प्रार्थना करता हूं, "सभी विघ्न-बाधाओंपर विजय पानेवाले प्रभो, तेरी जय हो... हमें अपनी विजयमें सक्रिय, तीव्र, संपूर्ण, और अडिग श्रद्धा प्रदान कर।"

शांत रहो और देखो। परिणाम निश्चित है—उपाय और समय निश्चित नहीं हैं।

आशीर्वाद।

२३ सितंबर १९६५

१२४—कालीकी शक्ति, कार्यसे छुट्टी

मातांजी; जब क्ष जैसे लोग आकर मेरे सामने आपके विरोधमें बोलते हैं तो मुझे लगता है कि मेरे अंदरकी अग्नि जिह्वाएं लपक रही हैं। अगर यह चीज आगे बढ़े तो मुझे महाकालीकी अनुभूतिका सा अनुभव होता है। उसके आते ही सामनेका आदमी गौ बन जाता है। यह क्या है?

शायद तुम कालीकी शक्तिका आह्वान करते हो।

लुधियानामें जिस विद्यालयकी बात चल रही है उसका नाम वहांके लोग श्रीअरविंद विद्यालय रखना चाहते हैं। मेरा ख्याल है कि किसी संस्थाको आपके या श्रीअरविंदके नामका उपयोग करनेका अवसर तभी प्रदान किया जाना चाहिये जब आप उसके कामसे संतुष्ट हों, कम-से-कम कुछ वर्षतक काम देखनेके बाद।

बिल्कुल ठीक।

मेरे साथ 'क' कई वर्षोंसे काम करता है। उसका कहना है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और उसे अधिकतर कामसे छुट्टी मिल जानी चाहिये। पहले वह नौ घंटे रोज काम करता था। ९ से ५ तक आ गया। अब घंटे डेढ़ घंटेका ही काम करना चाहता है।

यह एकदमसे बेतुकी बात है। अगर वह अपने खर्चपर नहीं रह रहा है, अगर वह अपना काम इतना कम कर देना चाहता है तो हम उसका भोजन भी उसी अनुपातमें कम कर देनेके लिये बाधित होंगे और तब उसका स्वास्थ्य और भी बिगड़ जायगा!

आशीर्वाद।

२५ सितंबर १९६५

१२५——आटेकी चक्की

माताजी; जब हमारा गेहूं पत्थरकी चक्कीसे पीसा जाता है तो खमीर अच्छी तरह नहीं उठता और रोटी छोटी मालूम होती है और लोग ज्यादा रोटी लेते हैं। इससे खर्च बढ़ जाता है। लोहेकी चक्कीसे पीसनेपर यह रोटी खूब फूलती है और ज्यादा संतोषप्रद होती है।

लेकिन अधिक गरमीके कारण विटामिन नष्ट हो जाते हैं और पोषणका एक महत्त्वपूर्ण अंश निकल जाता है।

३ अक्तूबर १९६५

१२६——विद्यार्थियोंको डांटना

माताजी——क्या तुम हिंदी कक्षामें अपने विद्यार्थियोंको डांटते हो। इस प्रश्नका स्पष्ट उत्तर पानेपर मैं तुम्हें बतलाऊंगी कि मैंने यह विचित्र प्रश्न क्यों किया है।

२१ अक्तूबर १९६५

प. ले. ने उत्तरमें बतलाया कि वह अपने विद्यार्थियोंके साथ मैत्री-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण व्यवहार रखता हूं, "परंतु कई लोगोंका कहना है कि जब मैं गंभीर होता हूं तो ऐसा लगता है कि किसीको डांट रहा हूं। मुझे डांटनेकी जगह मजाक करनेकी आदत है और उसके उत्तरमें हमेशा हंसी सुनायी देती हैं, हां, दो विद्यार्थी बहुत कमजोर हैं। वे न तो काम करते हैं, न नियमित रूपसे आते हैं। मैंने उनसे कहा है कि अगर वे काम नहीं करना चाहते तो उन्हें मेरी कक्षा छोड़ देनी चाहिये। शायद ये ही दो मेरे अत्याचारी होनेकी शिकायत कर रहे हैं।"

मैंने ठीक यही आशा की थी। एक छोटी लड़कीने मुझसे शिकायत की है कि तुम उसे रुलाते हो। मैंने झट यही सोचा कि वह उनमेंसे होगी जो प्रगति करनेसे इंकार करते हैं। मैं उससे यह कहनेसे पहले कि तुम कक्षा छोड़ दो, तुम्हारी ओरसे ज्यादा निश्चित होना चाहती थी।

शायद तुम जानते हो कि वह कौन है।

प्रेम और आशीर्वाद।

२२ अक्तूबर १९६५

१२७--विद्यार्थियोंको डांटना (२)

माताजी; मुझे यह जानकर बहुत जोरका धक्का लगा कि और कोई नहीं 'क' ने मेरे व्यवहारके बारेमें शिकायत की है। वह जबसे आश्रममें आयी है तभीसे उसका मेरे साथ बहुत अच्छा संबंध रहा है, वह हिन्दी छोड़ना चाहती है यह जानकर मुझे दुःख हुआ। कुछ दिन पहले ही उसने मेरे साथ मिलकर योजना बनायी थी कि वह लगकर मेहनत करेगी और अपनी पिछली लापरवाहीकी क्षति-पूर्ति कर लेगी। उसने मुझसे कहा है कि उसे मेरी कक्षा बहुत अच्छी लगती है और वह बहुतोंसे अधिक रस लेती थी। यह घटना मेरे सामने फिरसे वही प्रश्न लाती है, क्या किसीपर भी विश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा सकता है और अगर उनकी ऐसी प्रतिक्रिया है तो इन बच्चोंके साथ काम करनेसे फायदा ही क्या? मेरे अंदर कोई बहुत बड़ी गड़बड़ होगी जो ऐसे अभियोगोंको निमंत्रित करती है।

भगवान्‌को जगत्‌से ठीक ऐसा ही व्यवहार मिलता है। श्रीअरविंद भी इससे नहीं बच सके। तो देखो कि तुम अच्छी संगतमें हो और निराश होनेका कोई कारण नहीं।

२३ अक्तूबर १९६५

१२८—सच्ची शिक्षा

माताजी; आपने कहा है कि सच्ची शिक्षा देनेके लिये "तुम्हें रूढ़ियोंसे बाहर निकलकर अंतरात्माकी प्रगतिपर जोर देना चाहिये।" मैं इस विषयपर दो पृष्ठका लेख लिख सकता हूं लेकिन इसका ठीक-ठीक अर्थ क्या है यह मैं नहीं समझ पाता। रामायण पढ़ाते समय मैं भगवान्‌के प्रति समर्पण आदि विषयोंपर जोर दे सकता हूं, लेकिन जब मैं व्याकरण या साहित्यकी किसी और विधाकी बात करूं तो मुझे क्या करना चाहिये?

विरोध इस कारण आता है कि तुम सारी चीजको मानसिक रूप देना चाहते हो और यह असंभव है। यह तो वृत्तिकी बात है, अधिकतर आंतरिक वृत्तिकी जो 'बाहर' पर भी उतना ही शासन करती है जितना 'भीतर' पर।

यह एक ऐसी चीज है जिसे पढ़ानेकी अपेक्षा कहीं अधिक जीना चाहिये।

आशीर्वाद।

२८ अक्तूबर १९६५

१२९—अन्नका अपव्यय

माताजी; भारतके प्रधानमंत्री (लाल बहादुर शास्त्री) ने देश-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासियोंसे अपील की है कि खाद्यान्नकी कठिनाईको नजरमें रखते हुए सोमवारकी शामको भोजन न किया जाय। होटलों आदिसे भी सहयोग मांगा गया है। क्या इस दिशामें हमें भी कुछ करना चाहिये ?

दिखानेके लिये एक समयका खाना बंद करके उसके पहले और पीछे अधिक खानेकी अपेक्षा कई गुना अधिक प्रभावकारी यह होगा कि अन्नका **कभी अपव्यय** न किया जाय। भोजनके अपव्यय-के विरुद्ध प्रबल, तीव्र और सच्चा आन्दोलन आवश्यक है और मैं पूरे हृदयसे उसका समर्थन करती हूं।

आश्रमवाले अपनी सद्भावना और अपना सहयोग इस तरह दिखा सकते हैं कि वे जितना हजम कर सकते हैं उससे अधिक कभी न खाएं और जितना खा सकते हैं उससे अधिक **कभी न मांगें**।

३ नवंबर १९६५

इस बारेमें भोजनालयमें एक विज्ञप्ति लगा दी गयी।

सारा भारत खाद्यान्नकी कठिनाईमें है।

सभी अनाजोंपर राशन लगा है।

मैं हर एककी सद्भावनासे यह अपील करती हूं कि जितना अत्यंत आवश्यक हो उससे अधिक न मांगे।

—माताजी

नवंबर १९६५

१३०—कृपाके मार्गमें अड़ंगा

माताजी; मुझे ब्लांशिसरीके कुछ बिलोंका पैसा चुकाना है लेकिन बिल आनेमें अभी देर लगेगी। मेरी बुद्धि कहती है कि चूंकि मुझे मालूम है कि ये बिल आनेवाले हैं इसलिये मुझे आवश्यक रकम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखनी चाहिये। एक और भाग कहता है कि पैसा माताजीको दे दो। जब जरूरत होगी तो पैसा आ ही जायगा। दोनोंमेंसे कोई भी विचार ज्यादा मजबूत नहीं है। निश्चय करनेका उचित ढंग क्या है ?

एक बार मन काम करना शुरू कर दे तो वह कृपाके मार्गमें अड़ंगा लगाता है इसलिये ज्यादा अच्छा यही है कि पैसा अपने पास रखो।

१० नवंबर १९६५

१३१—पढ़ाना—साधनाका अंग

माताजी; एक समय था जब मैं अपने विद्यालयके कामसे बहुत निराश था और मैं उसे छोड़ देना चाहता था। आपने कहा, सात वर्ष काम करो, फिर मेरी सलाह मांगना। इस वर्ष सात वर्ष पूरे हो गये हैं। विद्यार्थियोंको मेरी कक्षामें मजा आता है लेकिन वे काम नहीं करना चाहते, यह नहीं चाहते कि मैं उनसे काम करवाऊं। मैं अच्छे-से-अच्छा प्रयास करता हूं लेकिन उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाता। कृपया बताइये क्या मुझे अब भी पढ़ाना जारी रखना होगा ? हमारे यहां अध्यापकोंकी कमी नहीं है। कई हैं जो मेरा स्थान लेना चाहेंगे। उनका ख्याल है कि यह प्रतिष्ठाका पद है!!

अभी और सात वर्ष कोशिश करो, उसके बाद देखा जायेगा! मैं यह भी कह दूं कि पढ़ाना अपने सभी नैतिक परिणामोंके साथ तुम्हारी साधनाका अंग है।

प्रेम और आशीर्वादके साथ।

११ नवंबर १९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Do not take it as a personal affair — Desharmony and confusion are spread all over the world because of the resistance of the falsehood to the action of the Truth. Here as the action of the Truth is more conscious and concentrated the resistance is exasperated. And in this great turmoil most of the

in their deeds are moved about like puppets by the forces in their conflict

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३२—असामंजस्य और अस्त-व्यस्तता

माताजी; अब एक व्यक्तिगत प्रश्न। मैं जानता हूं कि आजकल आश्रमके लिये सहयोग और समन्वय अत्यंत आवश्यक हैं। मैं अपना अधिक-से-अधिक प्रयास करता हूं और मेरा ख्याल है कि करता भी हूं पूरी सचाईके साथ, लेकिन मैं असफल रहता हूं। मैंने अपने बारेमें लोगोंको कहते सुना है कि यह बोलता तो बहुत मीठा है पर इसके काम एकदम उल्टे होते हैं। मेरा ख्याल है कि मैं हर एकके साथ ताल-मेल बैठानेकी कोशिश करता हूं। मैं इतना मूर्ख नहीं हूं कि यह मान लूं कि सारे आश्रममें बस मैं ही एक सच्चा और निष्कपट आदमी हूं। शायद मेरे अंदर कोई विशेष अड़चन होगी जो इस तरह बाधा देती है। क्या आप मुझे बता सकेंगी कि यह कौन-सी चीज है जो मेरे मार्गमें बाधा देती और मुझे रोकती है और मुझे मेरे काममें सहयोग नहीं मिलता।

इसे एक व्यक्तिगत चीजके रूपमें न लो, असामंजस्य और अस्त-व्यस्तता सारे संसारमें फैली हैं और इनका कारण है सत्यकी क्रियाके विरुद्ध मिथ्यात्वका प्रतिरोध। चूंकि यहां सत्यकी क्रिया ज्यादा सचेतन और एकाग्र है इसलिये प्रतिरोध ज्यादा उत्तेजित और क्रुद्ध है। इस खलबलीमें अधिकतर व्यक्ति शक्तियोंके द्वारा अपने संघर्ष-में कठपुतलियोंकी तरह नचाये जाते हैं।

२५ नवंबर १९६५

१३३—परम उपलब्धिकर्ता

माताजी; आपकी प्रार्थना, 'हे प्रभु तेरी जय हो'के अंतमें 'परम उपलब्धिकर्ता'से आपका क्या मतलब है। आपने सात-आठ वर्ष पहले मुझे यह समझाया था लेकिन अब वह बिल्कुल धुल गया है। उसके बाद मैंने आपसे दो-तीन बार मौखिक या लिखित रूपसे यह पूछा लेकिन हर बार आप टाल गयीं। कृपया एक बार और समझा दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने जान-बूझकर उत्तर नहीं टाला। शायद मैंने तुम्हें वह मानसिक उत्तर नहीं दिया जिसकी तुम्हें चाह थी।

तुम्हें यह ठीक तरहसे समझानेके लिये बहुत लंबी व्याख्या करनी होगी और मेरे पास समय बहुत कम है।

मैं संक्षेपमें कह सकती हूं कि 'परम उपलब्धिकर्ताका व्यक्तिके लिये अर्थ है भगवान्‌के साथ तादात्म्य और धरतीपर समुदायके लिये इसका अर्थ है अतिमानसिक नवीन सृष्टिका आगमन।'

इसे एक अंध सिद्धांत न बना लो, यह केवल एक व्याख्या है।

और उपलब्धिकर्ता उपलब्धिकी परम शक्ति, कर्ता और कला है।

आशीर्वाद।

२० दिसंबर १९६५

१३४—इच्छाकी विजय या सामंजस्य, प्रेम

माताजी; अमृतने मुझे बताया है कि आपने आटेकी चक्कीके बारेमें क्या व्यवस्था की है। मैं उसके बारेमें खुश हूं। मैं आशा करता हूं कि यह ठीक परिणाम देगी।

यह इसपर निर्भर है कि लोग अपनी इच्छाकी विजयकी अपेक्षा सामंजस्यके लिये कितनी परवाह करते हैं!

*

प्रेम सबके साथ है, प्रत्येककी प्रगतिके लिये समान रूपसे कार्य कर रहा है—लेकिन विजय उन्हींमें पाता है जो उसकी परवाह करते हैं।

प्रेम।

१९६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Love is with all, working for the progress of each one equally — but it triumphs in those who care for it.

Love

१३५—भगवान्‌को जीत लेनेका अर्थ

प. ले. ने माताजीसे पूछा कि निम्नलिखित अनुच्छेदमें भगवान्‌को जीत लेनेका क्या अर्थ है, "निश्चय ही पूर्ण योगका मार्ग सरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। भगवान्‌को जीतना कठिन काम है लेकिन सचाई और अध्यवसायके साथ विजय निश्चित है।"

जीत लेनेका अर्थ प्राप्त करना, पा लेना समझो।

तुम कह सकते हो कि दिव्य चेतनाको जीत लेना कठिन काम है।

भाष्य : मनुष्यके लिये भागवत चेतनाके बारेमें सचेतन होना और उनकी प्रकृतिको पा लेना कठिन काम है।

१९६५

१३६––प्रगतिके लिये प्रयास

माताजी; हर बार जब मैं अपनी चेतनामें जरा उठनेकी कोशिश करता हूं तो एक धक्का-सा लगता है और ऐसा मालूम होता है कि मैं उठनेकी जगह गिर रहा हूं। जब मैं प्रयास छोड़ देता हूं तो सब स्वाभाविक हो जाता है।

जहांतक प्रगतिका संबंध है, ऐसा इसलिये होता है कि तुम मानसिक रूपसे प्रयास कर रहे हो और मन हमेशा चेतनाके लिये सीमा-बंधन होता है। केवल हृदय और चैत्यसे उठनेवाली अभीप्सा ही प्रभावकारी हो सकती है। (और जब तुम प्रयास करना छोड़ देते हो तो तुम मुझे अपने अंदर काम करने देते हो और मैं उचित मार्ग जानती हूं!)

१९६५

१३७––संतति-निग्रह

माताजी; 'क' के कुछ ही समयमें कई बच्चे हो चुके हैं। मैंने उसे संयमकी सलाह दी थी। उसकी जगह उसने गर्भपातका रास्ता अपनाया और असफलता पायी। अब उसकी पत्नी बीमार है। वह जानना चाहता है कि उचित मार्ग क्या है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयम और अगर वह न कर सके (?) तो स्वयं उसका आपरेशन। आजकल इसका बहुत रिवाज है।

१९६५

१३८—आश्रममें दूधकी कमी

माताजी; छोटी-से-छोटी चीजोंका कितना ख्याल रखती थीं। भोजनालयमें दूधकी कमी हुई तो उन्होंने प. ले. को लिखा:

मैं दो आंकड़े चाहती हूं। अगर तुम दे सको या प्राप्त कर सको:

१—अगर हम लोगोंको दूधकी पूरी मात्रा दें तो हमें कितने लीटर दूधकी जरूरत होगी?

२—अभी हमारे पास, सब मिलाकर, अधिक-से-अधिक कितना दूध आता है?

ठीक ढंगसे व्यवस्था और सावधानीके साथ प्रयास किया जाय तो ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान न हो सके।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१९६५

१३९—गायकी पवित्रता

माताजी; क्या गायकी कोई विशेष पवित्रता है या यह केवल आर्थिक कारणोंपर आधारित प्रथा है?

प्राचीन प्रतीकोंपर आधारित परंपरा।

आशीर्वाद।

१९६५

१४०—परम प्रभुका विनोद

माताजी; मैंने हास्य और विनोदके बारेमें प्राचीन और अर्वाचीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिसे लिखा हुआ बहुत कुछ पढ़ा है। आपका विनोद उनमेंसे किसी श्रेणीमें नहीं बैठता परंतु मुझे आपका मजाक सबसे ज्यादा विनोद लगता है, क्या आप मुझे बता सकेंगी कि सच्चा विनोद क्या है?

परम प्रभुका विनोद।

१९६५

१४१—फ्रेंच सिखाना

माताजी १९४२में प. ले. को फ्रेंच सिखाना चाहती थीं लेकिन उसे लगा कि माताजीका इतना समय लेना ठीक न होगा इसलिये उसने स्वीकार न किया। अब जब उसे माताजीकी पुस्तक 'केल्क रेपौंस' का हिन्दी अनुवाद करना पड़ा तो बार-बार माताजीसे अर्थ पूछने पड़े थे। इसपर व्यंग्य करते हुए वह कुछ वाक्योंका अर्थ पूछता है। माताजीने लिखा है, 'जिन लोगोंमें साहस है उनके अंदर उनके लिये भी साहस होना चाहिये जिनके अंदर यह बिल्कुल नहीं है।' माताजी समझाती हैं।

(व्यंग्य) यह बहुत जरूरी है कि जिनके अंदर साहस है उनमें कुछ साहस उनके लिये भी होना चाहिये जिनके अंदर साहस नहीं है। दूसरे वाक्यका अर्थ माताजी बतलाती हैं, "खोजमें बड़ा आनंद है लेकिन यह सच है कि मेरा हृदय हमेशा (ज्ञानके लिए) प्यासा रहेगा।"

१९६५

१४२—कुछ फ्रेंच वाक्योंका अर्थ

कुछ और फ्रेंच वाक्योंका अर्थ बतलाते हुए माताजी कहती हैं:

१—उसके बारेमें चिंता न करो या अपने-आपको व्यथित न करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२——ऐसा कोई कार्य नहीं है जो स्वार्थसे बच सके या सभी कार्य निरपवाद रूपसे निःस्वार्थ हों।

३——अच्छा स्वास्थ्य भीतरी सामंजस्यकी अभिव्यक्ति है। अगर हम स्वस्थ हों तो हमें इसपर गर्व करना चाहिये। (इसकी सराहना करें) उससे घृणा न करें। (अच्छे स्वास्थ्यको घृणासे न देखें)

१९६५

१४३——एक और फ्रेंच वाक्यका अर्थ

एक और फ्रेंच वाक्यका अर्थ——

हो सकता है कि वह (प्रेम) अपने-आपको किसी बाहरी क्रियामें अभिव्यक्त न करे (चिह्नों या रूपोंमें) भावुकतापूर्ण या प्रेम भरे रूपोंमें।

एफ्यूज़िओं शब्दका प्रयोग व्यंग्यमें होता है जिसका अर्थ है प्रेमका दिखावा।

१९६५

१४४——नयी सृष्टि और अतिमानसका आगमन

माताजी; पुरानी परंपराके अनुसार चार युगोंके चक्र चला करते हैं——सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि। ऐसा लगता है कि 'हमारा योग और उसके उद्देश्य' नामक पुस्तकमें श्रीअरविंद भी इसका समर्थन करते हैं। अन्य स्थानोंपर मैंने इसका कोई स्पष्ट वर्णन नहीं पाया। कृपया बतलाइये कि क्या आप जिस सत्य युगको ला रही हैं क्या उसके बाद फिरसे त्रेता, द्वापर आदि आयेंगे और जगत्को फिरसे अंधकारमें गिरना होगा ?

मैं नहीं जानती कि मैं जिसे ला रही हूं उसे क्या कहा जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदके अनुसार इसके बाद नयी सृष्टि आयेगी और अतिमानसका आगमन होगा। मैं बस इतना ही जानती हूं।

आशीर्वाद।

१९६५

१४५—कर्मचारियोंकी शिकायतें

प. ले. के पास कुछ कर्मचारियोंकी शिकायतें आयीं। उनके बारेमें माताजी कहती हैं :

कर्मचारियोंकी विभिन्न शिकायतोंके बारेमें सावधान रहना, वे हमेशा पक्षपातपूर्ण और एकांगी होती हैं। हर एक अपनी पसंद नापसंदसे बोलता है और बातोंको तोड़ता-मरोड़ता है।

आशीर्वाद।

१९६५

१४६—स्वप्न, भागवत कृपापर निर्भरता

माताजी; मुझे एक अजीब-सा स्वप्न दिखायी दिया। कम्यूनिस्टोंने मेरे कमरेपर हमला किया है। वे बाहरसे मेरी खिड़कियोंतक चढ़ आये हैं। वे गाली-गलौज कर रहे और चीख-चिल्ला रहे थे। लेकिन कोई चीज उन्हें अंदर आनेसे रोक रही थी। मैं कमरेमें चुपचाप शांत खड़ा था मानों इसके साथ मेरा कोई संबंध नहीं।

यह देशके बारेमें है, स्वयं तुम्हारे अपने बारेमें नहीं।

कल मेरी दाहिनी बांहमें जरा-सी चोट आ गयी थी। न जाने क्यों मैं मिनट भरके लिये मूर्च्छित हो गया, मुझे इसका कोई कारण नहीं दिखलायी देता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा निरंतर रूपसे भागवत उपस्थितिपर एकाग्र रहो। भागवत कृपा ज्यादा सहज होगी।

प्रेम और आशीर्वाद।

१९६५

१४७—कूटनीति नहीं

एक सज्जन अपना ~~काम~~ बदलना चाहते थे, उन्होंने कई बार प. ले. से इसके लिये कहा। जब उसने माताजीकी स्वीकृति ले ली तो वह कहने लगे कि मेरे ~~विभागाध्यक्ष~~से तुम न कहना कि मैं बदलना चाहता था, उनसे कह देना कि यह माताजीकी इच्छा है। इस दोरंगीपर प. ले. बहुत नाराज हुआ और उसने माताजीको खबर दी। माताजीने उत्तर दिया।

मैं इस तरहकी कमजोरी पसंद नहीं करती। यह तो ढोंगकी हदतक जाती है। क्या इस कामके लिये तुम्हारी नजरमें और कोई नहीं है?

'क' यदि 'ख'के स्थानपर आना चाहे तो उसे अपने विभागाध्यक्षसे कहना होगा कि वह उस कामके लिये जाना चाहता है, मैं उसे नहीं रखना चाहती क्योंकि मेरे शब्द कूटनीतिपूर्ण नहीं होते। मैं सच्ची बात ही कहूंगी, परिणाम कुछ क्यों न हो।

वस्तुत: इस कामके लिये किसी और को ढूंढना ज्यादा अच्छा होगा जो जरा अधिक साहसी है।

यह सब बात 'ग'को बतला दो जो तुम्हारे पास यह पत्र लेकर आ रहा है।

आशीर्वाद।

१५ जनवरी १९६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४८—एक कार्यकर्ताके बारेमें

माताजी; 'क' नामक एक व्यक्ति जो मेरे साथ काम करता है, उसने आपके लिये यह बंद लिफाफा दिया है। शायद वह अपने बच्चोंको लाना चाहता है। पिछले वर्ष आपने कहा था कि स्थिति सुधरनेपर आप देखेंगी।

स्थिति सुधरी नहीं है लेकिन अगर वह अच्छा कार्यकर्ता है तो उसे अपने परिवारको ले आने दो।

मैं कठिनाई जानती हूं, मैं कोशिश कर रही हूं, लेकिन आजकल बहुत ही कम लोग हैं जो सचाईके साथ काम करना चाहते हैं। मैं जब कभी किसीके बारेमें सुनती हूं तो मैं तुरंत उसे तुम्हारे पास भेज देती हूं। लेकिन यह बहुत प्रभावकारी नहीं मालूम होता!

आशीर्वाद।

१९६६

१४९—श्रीअरविंदकी कहानियोंका अनुवाद

माताजी; मैंने हिन्दी पुरोधामें श्रीअरविंदकी कहानियां अपने शब्दोंमें देनेके लिये छापनेकी स्वीकृति मांगी थी, अनुवादके लिये नहीं।

मुझे लगता है कि केवल अनुवाद ज्यादा अच्छा रहेगा। अनुवाद करनेकी जगह **अपने शब्दोंमें कहनेके लिये** तुम्हारे पास क्या कारण है?

४ फरवरी १९६६

१५०—श्रीअरविंदकी कहानियोंका अनुवाद (२)

माताजी; श्रीअरविंदकी कहानियां अपने शब्दोंमें कहनेके लिये मेरा कारण बहुत सीधा-सा है। वह है ईमानदारी। हम उनके 'बाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु' या 'मुक्तिदाता परसियस' का अनुवाद कैसे कर सकते हैं। हम मूलके नजदीक कहीं भी नहीं पहुंच सकते। आपने एक बार मुझसे कहा था कि हमें अच्छे अनुवादके लिये उस चेतनामें जा पहुंचना होगा जहांसे वह चीज लिखी गयी थी और यह तो हमारे 'स्वप्नों'के भी परेकी बात है। कहानियां बहुत अच्छी हैं। हम उन्हें अपने शब्दोंमें कहेंगे और साथ ही यह लिख देंगे कि जो पढ़ सकते हैं वे मूल अवश्य पढ़ें। इसी आधारपर आपने स्वीकृति दी थी। जो अनुवाद मूलके बहुत नजदीक रहना चाहता है वह बहुत पंडिताऊ बन जाता है। सभी अनुवाद इस बातको प्रमाणित करते हैं।

इसे ध्यानमें रखते हुए एवमस्तु।
प्रेम और आशीर्वादके साथ।

४ फरवरी १९६६

१५१—श्रीअरविंदकी कहानियोंका अनुवाद (३), राधा जीवित थी और अब भी है

माताजी; मैंने योजना बनायी थी, जैसे उपनिषदोंकी कहानियां हैं या रामायण महाभारतकी कहानियां हैं, उसी तरह पुरोधामें श्रीअरविंदकी कहानियां छापी जाएंगी। अनु मूलका अध्ययन करके उसे हिंदीमें लिखती है और मैं सारी चीजको दोबारा देखता और ठीक-ठाक करता हूं। मैंने यही समझा था कि इसके लिये आपकी पूर्ण अनुमति है परंतु अब मुझे शंका है कि यह योजना आपको बहुत पसंद नहीं आयी। अब उसे रद्द करना भी मुश्किल है क्योंकि मैं इसकी घोषणा कर चुका हूं। अब क्या किया जाय। मैं इस मामलेसे जरा भी खुश नहीं हूं।

यह बिल्कुल ठीक है। तुम खुशीसे काम आगे बढ़ाओ। तुमने जिस तरहसे इसे रखा है वह मुझे पसंद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कुछ इसपर निर्भर है कि काम किस भावसे किया जाता है। तुम्हारी वृत्ति ठीक है इसलिये सब कुछ ठीक है।

मैं राधा और कृष्णके बारेमें कुछ सुन्दर कविताएं पढ़ा रहा हूं। राधा जीवित-जाग्रत् मालूम होती है परंतु कई आधुनिक विद्वान् कहते हैं कि राधा अपेक्षाकृत आधुनिक कल्पना है जिसे कृष्ण-भक्तिके संप्रदायमें जोड़ा गया है। क्या आप बतला सकती हैं कि सचमुच राधाका अस्तित्व था या नहीं?

निश्चय ही वे जीवित थीं और अब भी हैं।
प्रेम और आशीर्वाद।

८ फरवरी १९६६

१५२—प्रभुके कार्य करनेके तरीके

माताजी; भारतकी राजनीतिक और आर्थिक अवस्था दिन-पर-दिन बेतुकी होती जा रही है। कृपया भारतकी भारतीयोंसे रक्षा कीजिये और हमें अपनी कृपाका योग्य पात्र बनाइये।

भागवत कृपा अद्भुत और सर्वशक्तिमान् है।
और प्रभुके कार्य करनेके तरीके आनंदमय और विनोदपूर्ण होते हैं...
प्रेम और आशीर्वाद।

६ मार्च १९६६

१५३—झूठे आंकड़े नहीं

माताजी; आज साढ़े आठ बजे लेबर इंस्पेक्टर हमारी ब्लांशिसरी देखने आ रहा है, अगर हम २० कर्मचारी रखें तो हमपर कारखानों-के कानून लागू हो जाते हैं। हमारे यहां २३ आदमी हैं, कुछ

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धिमान् लोग मुझे सलाह दे रहे हैं कि मैं यह कह दूं कि हमारे यहां कुल १९ आदमी ही हैं, मेरा ख्याल है कि आश्रमका विभाग इस तरहकी चीजें नहीं कर सकता। मैं २३ ही कहूंगा और इस कारण आपको प्रविडेंट फंड आदिका अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ेगा।

निश्चय ही तुम झूठे आंकड़े नहीं दे सकते। लेकिन क्या यह संभव नहीं है कि कर्मचारियोंकी संख्या सचमुच १९ कर दी जाय?

२१ मार्च १९६६

१५४—सामंजस्यपूर्ण काम

प. ले. के सामने कोई समस्या थी जिसमें उसकी सत्ताके अलग-अलग भाग अलग-अलग समाधान सुझा रहे थे और उनके पक्षमें परस्पर विरोधी तर्क दे रहे थे। उसने माताजीको लिखा।

मैं उत्तर देनेके लिये पूरी तरह तैयार हूं लेकिन उत्तर संभवतः चकरानेवाले होंगे . . .

वस्तुतः तुम्हारे सभी भाग अपनी-अपनी युक्ति देनेमें ठीक हैं। बुद्धिमत्ता इसमें है कि अपनी चेतनाकी गहराईमें जाओ और उस जगहको खोजो जहां वे सब मिलते और सहमत हो जाते हैं, एक दूसरेका विरोध करनेकी जगह एक दूसरेकी पूर्ति करते हैं।

रही बात वास्तविक कार्यकी तो कठोर नियमोंके कारण पैदा हुई कठिनाइयोंकी अपेक्षा, निर्विघ्न, सामंजस्यपूर्ण काम ज्यादा अच्छा होता है—लेकिन यह भी कोई निरपेक्ष नियम नहीं है—आदर्श स्थिति तो यह है कि, हर अवसरपर आंतरिक नीरवतामें ऊपरसे प्रथ-प्रदर्शन लिया जाय।

सतत अभ्यास और सद्भावनाके साथ यह संभव हो जाता है।
प्रेम और आशीर्वाद सहित।

२४ मार्च १९६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५५—भोजनकी शिकायतें

भोजनके बारेमें बहुत शिकायतें थीं। रसोई पकानेवालोंका कहना था कि उन्हें आवश्यक चीजें नहीं मिलतीं इसलिये वे मजबूर हैं। प. ले. ने उनकी शिकायतोंको लेकर एक पत्र लिखा।

तुम्हें हुआ क्या है? मैं हमेशा तुम्हें उन विरले लोगोंमें गिना करती थी जो मेरे मजाक समझ सकते हैं! और यह लो तुम भी एक स्पष्ट मजाकको गंभीरतासे ले बैठे... मुझे तुम्हारे कार्यकर्ताओं-से कोई शिकायत नहीं है। इसके विपरीत: मेरी योजना यह थी कि उनके अंदर कामके लिये एक नया रस जगाऊं और अनुभवके ठोस आधारपर उन्हें कह दूं जो खाने लायक भोजनके लिये जरूरी है। मुझे खेद है कि मुझे सारी चीज पहलेसे समझानी पड़ती है ताकि गलतफहमी न हो।

जिस कार्यकर्ताने तुमसे बात की है उससे कहो कि पकानेके लिये जो कुछ जरूरी है वह सब उसे मिलेगा लेकिन सारी चीजकी पुनर्व्यवस्था करना जरूरी है। जल्दबाजीमें कोई स्थायी काम नहीं हो सकता।

अगर मैंने कोई ऐसी बात की या कही है जिससे तुम्हें लगा हो कि मैं तुम्हारे कामसे असंतुष्ट हूं तो इसके लिये मुझे दुःख है क्योंकि इस तरहकी कोई चीज मेरी चेतनामें नहीं है। मैं जानती हूं कि परिस्थितियां कठिन हैं और जो किया जा सकता है तुम उसमें अच्छे-से-अच्छा कर रहे हो—लेकिन हर व्यक्ति और हर वस्तुमें प्रगति हो सकती है और मैं हमेशा उस संभव सुधारके लिये काम करती रहती हूं। यह जानते हुए कि बड़ी-से-बड़ी कठिनाई हमेशा बड़ी-से-बड़ी विजय लाती है।

और मुझे विश्वास है कि इसके लिये तुम मेरे साथ हो।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

२६ मार्च १९६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५६—सामंजस्यपूर्ण समाधान

प. ले. ने भोजनालयके एक कार्यकर्ताके किसी मामलेके बारेमें लिखते हुए कहा, "मुझे दुःख है कि मैं गुस्सेमें लिख रहा हूं लेकिन इस तरहका अविश्वास चोट पहुंचाता ही है और मैं उसे छिपा नहीं सकता।"

इसमें कोई अविश्वास न था और मुझे दुःख है कि तुमने इसे इस तरहसे लिया है। लेकिन अब मैं तुमसे गंभीरताके साथ कहती हूं (क्योंकि ऐसा लगता है कि तुम मेरे मजाकको नहीं समझ पाये) कि सबसे अच्छी चीज है कि तुम 'क' के साथ खुले दिलसे, स्पष्ट, मैत्रीपूर्ण बात-चीत करो और स्पष्ट रूपसे उसे बतलाओ कि तुम समस्याका क्या हल देखते हो।

अगर तुम दोनों एक सामंजस्यपूर्ण और प्रभावकारी समाधानपर आ जाओ तो मैं उसे अपने लिये एक बड़ी विजय मानूंगी।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

२९ अप्रैल १९६६

१५७—माताजीके साथ भौतिक संपर्क

माताजी; आपने पूछा है कि मेरा हाथ कैसा है, पता नहीं, क्या कहूं। आपको सूचना देनेसे पहले मुझे एक टमाटर उठानेके लिए भी आपकी सहायताका आह्वान करना पड़ता था, आपको याद करते और पुकारते हुए किसी तरह मैंने अपना काम पूरा किया। आपका आशीर्वाद पानेके बाद मैंने तीस-तीस किलोग्रामके बक्से उठाये और आपको बुलाना तक भूल गया। अब आप ही निश्चय कीजिये कि कौन-सी अवस्था ज्यादा अच्छी है!

तुम्हारे बारेमें यह एक और प्रमाण है कि भौतिक संपर्क (इस बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखन द्वारा) शुद्ध मानसिक संपर्ककी अपेक्षा अधिक प्रभावकारी है।

प्रेम और आशीर्वाद।

७ अप्रैल १९६६

१५८—कामके लिये वृत्ति

माताजी; जब मैं यहां आया था तो आपने मुझे भोजनालयमें काम दिया था। दर्शनका दिन था (आखिरी दर्शन जब श्रीअरविंदको प्रणाम किया जा सकता था) मेरा काम साढ़े नौ तक चलता रहा। मेरे दलको दर्शनके लिये नौ बजे बुलाया गया था। भोजनालयके सभी लोग मुझे सलाह देने लगे कि मैं काम छोड़कर दर्शनके लिये चला जाऊं वरना दर्शनसे रह जाऊंगा। मैंने इसकी परवाह न की और अपना पूरा काम समाप्त करके ही आया। और मजा यह कि श्रीअरविंदको थोड़ी देर हो गयी थी और मेरे दलकी बारी मेरे पहुंचनेपर ही आयी।

यह स्वाभाविक है!

जब आपने मुझे चिन्मयीका काम करनेके लिये ऊपर अपने कमरेमें बुलाया तो आपने कहा, अगर तुम अपने कामसे काम रखोगे और जब कभी मुझे देखो तो मेरी ओर ताकनेकी कोशिश न करोगे तो तुम बहुत सी कठिनाइयोंसे बच जाओगे। मैंने अपनी सामर्थ्यके अनुसार पूरी तरह इसका पालन करनेकी कोशिश की है और इससे मुझे बहुत सहायता मिली है। इसी भांति यद्यपि दिनमें कई बार मुझे श्रीअरविंदके कमरेकी तरफ जानेका काम पड़ता था परंतु मैंने कभी उन्हें देखनेकी कोशिश नहीं की। मैंने हमेशा यही समझा कि इतना काफी है कि आप मुझे देख लें। मेरा आपको देखना जरूरी नहीं है। अगर आप चाहें कि मैं इस तरीकेको बदल दूं तो मैं उसके लिए भी तैयार हूं, आप जितना कहें, जैसा कहें। जीवन एक पहेली है। है न?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी वृत्ति बहुत अच्छी है। कामके लिये और स्वयं तुम्हारे लिये बहुत सहायक भी है।

तो इसे यूं ही जारी रखो।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

८ अप्रैल १९६६

१५९—आश्रममें दूधकी व्यवस्था

दूधकी कठिनाई चल रही थी। प. ले. माताजीको लिखता है, दूध बांटनेकी भावी व्यवस्थाके बारमें अपनी ओरसे कोई सुझाव देनेकी जगह मैं यह जानना चाहूंगा कि आप क्या और कैसे देना चाहेंगी। बालक किन्हें माना जाय और अतिरिक्त दूध कैसे दिया जाय ?

मैं पन्द्रह वर्षसे कम आयु वालोंको बच्चे मानती हूं। दस वर्ष तकके बच्चेको मैं दिनमें पूरे दो प्याले दूध देना चाहूंगी। (जिन्हें दूध पसंद न हो उनसे जबर्दस्ती पीनेके लिये न कहा जाय)

बीमार अगर चाहें तो उन्हें भी डाक्टरकी सिफारिशपर दूध दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सब कुछ मैं तुम्हारी 'बुद्धिमत्ता' पर छोड़ती हूं।

१४ अप्रैल १९६६

१६०—तूफानके पीछेकी शक्तियां

माताजी; मेरी छतपर जो कांचका बक्सा रहा करता था, जिसमें मैं चीजें सुखानेके लिये रखता था, उसे कलके तूफानने उठाकर दो मीटर दूर फेंक दिया। कांच चूर-चूर हो गया। ऐसा लगता है कि इस तूफानको आश्रम और पांडिचेरीके लिये विशेष प्रेम था।

हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तूफानके पीछे जो शक्तियां थीं वे विरोधी न थीं। उनमें रूपांतर करनेकी शक्ति भरी थी। तुमने ठीक ही किया। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि अपने भीतर जाना और वहांसे शक्ति पाना अपने-आपको उत्तेजित कार्यमें फेंकनेकी अपेक्षा ज्यादा सहायक है। निश्चय ही तमस् अच्छा नहीं है लेकिन तमस्को बदला जा सकता है केवल भागवत चेतनाके प्रति समर्पणद्वारा।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

६ मई १९६६

१६१—एक कामकी व्यवस्था

उस दिन मेरे पास एक आदमी आया और बोला कि वह अपने कपड़े धोनेके लिये देना चाहता है। मैंने कहा, नियमानुसार तुम यहां एक वर्ष रहनेके बाद ही कपड़े दे सकते हो। उसने झट अपनी जेबसे आपके हस्ताक्षरवाली एक परची निकाली!!

हस्ताक्षर करनेसे पहले मैं **हमेशा** पूछ लिया करती हूं कि क्या इसे एक वर्ष हो गया है और मुझसे कहा जाता है **'जी हां'**। मेरे पास नियंत्रणका कोई उपाय नहीं होता क्योंकि मुझे पता नहीं होता कि कौन आ रहा है और किसे प्रवेश मिल गया है। मैं बहुत कम मामलोंमें ही जानकारी पाती हूं अतः इस मामलेमें करने लायक यही है कि जबतक परची तुम्हारे द्वारा न आये तबतक मैं उसपर हस्ताक्षर करनेसे इंकार कर दिया करूं।

आशीर्वाद।

१७ मई १९६६

१६२—पुरोधाके बारेमें

माताजी; एक गुजराती पति-पत्नी एक वर्ष रहनेके लिये आये हैं। बात तो यह हुई थी कि वे अपने खर्चपर रहेंगे। पति बेकरीमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करता है और पत्नी रसोईघरमें। उनका कहना है कि वे जहां से पैसेकी आशा कर रहे थे वहांसे पैसा नहीं आ रहा। काममें दोनों बुरे नहीं हैं।

जबतक वे काम करते रहें उन्हें खाना दिया जा सकता है।

कुछ मित्रोंकी सलाह है कि हम पुरोधामें आपकी और श्रीअरविंदकी साधनासंबंधी चीजें और ज्यादा छापा करें। मेरा ख्याल है कि हमारी पत्रिका अधिकतर युवकोंके लिये है और हमें उनके साथ सीधी-सीधी साधनाकी बात न करनी चाहिये। हमें उनका ध्यान आश्रम और आपकी शिक्षाकी ओर खींचना चाहिये, फिर वे आपकी पुस्तकें पढ़ें। जहांतक पत्रिकाका संबंध है, मेरा ख्याल है कि उसका मूल्य इसपर निर्भर है कि लेख किस चेतनासे लिखे जाते हैं, क्या लिखा गया है वह इतना अधिक महत्व नहीं रखता।

तुम्हारी बात ठीक है।

२ जुलाई १९६६

१६३—अव्यवस्थापर व्यवस्थाकी विजय

आश्रममें कई स्थानोंसे भोजनालयका टिकट मिलता था, कोई ठीक व्यवस्था न थी। प. ले. माताजीको इसके बारेमें लिखता है।

बात मजेदार है पर अप्रत्याशित नहीं। जबसे मैं 'निवृत्त' हुई हूं हर एक अपने-अपने विचारके अनुसार, एक-दूसरेके साथ ताल-मेल बिठाए बिना कर रहा है और मुझे कष्ट न देनेके बहाने मुझसे सलाह नहीं ली जाती है, न मुझे सूचना दी जाती है।

मैं अपने ही साधनोंसे न्यूनाधिक रूपमें जान लेती हूं कि क्या हो रहा है। मैं केवल मुस्कुरा देती हूं लेकिन बीचमें नहीं पड़ती, हर एकको अपने अनुभवोंसे सीखना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं उस दिनकी प्रतीक्षा कर रही हूं जब व्यवस्था अव्यवस्थाको जीत लेगी और सामंजस्य गड़बड़झालेका मालिक होगा। मैं इस दिशामें किये जानेवाले हर प्रयासके साथ हूं।

आशीर्वाद।

६ जुलाई १९६६

१६४—भगवान्‌का आविर्भाव

माताजी; बहुत-से भारतीय संतोंके जीवनमें ऐसी घटना आती है कि पूरे विश्वासके साथ उन्होंने निश्चय किया कि जबतक स्वयं भगवान् मानव रूपमें उनके पास आकर भोग न लगायेंगे तबतक वे खाना न खायेंगे। भगवान् सचमुच प्रकट हुए, उन्होंने मनुष्योंकी तरह व्यवहार किया और खाना खाया। क्या इन कहानियोंमें कुछ सत्य है?

एक मनोवैज्ञानिक सत्य क्योंकि अगर तुम निश्चय कर लो तो तुम्हारे लिये कोई भी भगवान् बन सकता है। आत्मनिष्ठ दृष्टि उसकी अपेक्षा बहुत ज्यादा व्यापक है जितना लोग समझते हैं।

२३ जुलाई १९६६

१६५—प्राणिक जगत्

माताजी; मैं श्रीअरविंदकी कविता 'प्रेम और मृत्यु' पढ़ रहा हूं। क्या सचमुच शाश्वत रात्रि और दुःखके ऐसे प्रदेश हैं जैसोंका यहां चित्रण किया गया है। क्या हम मृत्युके बाद वहां जाते हैं? वे साक्षात् नरक मालूम होते हैं जिनमें दुःख, निराशा, अंधकार और वैतरणी जैसी नदियां हैं। सत्ताका कौन-सा भाग वहां जाता है और क्यों?

प्राणिक जगत् अधिकतर ऐसा ही है और जो ऐकांतिक रूपसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक और प्राणिक जीवनमें रहते हैं वे मृत्युके बाद वहां जाते हैं...

लेकिन भागवत कृपा भी है!...

२ अगस्त १९६६

१६६—दो विद्यार्थी

माताजी; 'क' मेरे विद्यार्थियोंमेंसे एक है। वह बहुत मेहनत करती है लेकिन कुछ रख नहीं पाती। उसे दुःख होता है, फिरसे प्रयास करती है लेकिन वही ढाकके तीन पात। उसका प्रयास देखकर मैंने उसे ऊंची कक्षामें ले लिया था यद्यपि वह उसके योग्य नहीं। इस वर्ष भी वही बात है। उसकी बहन चतुर तो है पर है आलसी। मुझे कई बार अपने-आपको धीरज खोनेसे रोकना पड़ा है। उसे रस है। कभी-कदास काम करती है पर परिणाम कम ही आता है। ऐसे लोगोंके साथ कैसे व्यवहार किया जाय?

धीरज धरे रहो। यह एक तरहका मानसिक तमस् है। एक दिन वे जाग उठेंगी।

६ अगस्त १९६६

१६७—मृत्युके बाद पशु और वनस्पति

माताजी; आपने कहा है कि जो लोग ऐकान्तिक रूपसे भौतिक और प्राणिक जीवनमें रहते हैं वे "प्रेम और मृत्य"में चित्रित प्राणिक लोकोंमें जाते हैं, तो क्या पशु और वनस्पतियोंको भी वहीं जाना पड़ता है? वे वहांसे कैसे निकल पाते हैं?

विरले अपवादोंको छोड़कर पशु व्यष्टि रूप नहीं होते और जब वे मरते हैं तो जातिकी आत्मामें लौट जाते हैं।

क्या प्रेम और मृत्युके रुरू और प्रियम्वदा सावित्री सत्यवानके ही पहले रूप हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदने मुझे इस बारेमें कुछ नहीं बताया।

६ अगस्त १९६६

१६८—एक विभागके कामके बारेमें

(एक विभागके कामके बारेमें) माताजी; जहांतक मुझे मालूम है मुझे विभागाध्यक्ष होनेका चाव बिल्कुल नहीं है। मैं इसका काफी रस ले चुका हूं। साथ ही अगर मुझे कोई काम दिया जाय तो मैं उससे भागता भी नहीं, अगर मुझे इस काममें लगे रहना है तो बतलाइये कि मैं कैसे उपयोगी हो सकता हूं? अगर आपकी दृष्टिमें कोई और हो तो मुझे यहांसे खिसकनेमें जरा भी बुरा न लगेगा।

मैं चाहती थी कि तुम इस विभागके रुपये पैसेकी देख-रेख करो क्योंकि यही एक तरीका है जिससे पैसा मेरे पास आ सकता है।

जहांतक कामकी व्यवस्थाका सवाल है वह किसी औरको भी सौंपी जा सकती है बशर्ते कि वे मिलकर काम करना स्वीकार करें।

मैं तुमसे कुछ अधिक समय और धैर्यकी मांग करती हूं और आशा करती हूं कि वे ज्यादा निश्चित रूप ले लेंगी।

रही बात लोगोंके नाराज होनेकी, तो वे तो हमेशा कुढ़ते और शिकायतें करते रहेंगे। हमें उसे कोई महत्त्व न देना चाहिये।

१९६६

१६९—प्रकृतिका सहयोग

माताजी; क्या अभी जो तूफान आया था वह भी भगवान्की रूपांतरकारिणी शक्तियोंद्वारा लाया गया था?

प्रकृति अपने तरीकेसे सहयोग दे रही है। सब कुछ सहज सचाई-के विकासके लिये है।

आशीर्वाद।

७ नवंबर १९६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७०—एक सच्ची कहानी

माताजी; मैं अपनी पत्रिकाके लिये कहानियां लिखा करता हूं। लीजिये, आप भी एक सच्ची कहानी सुन लीजिये। एक सज्जन यहां आये थे। उनका कहना था कि वह गरीब आदमी थे। उनकी आमदनी १२००से १६०० मासिक थी। वे आपका विशेष दर्शन चाहते थे और आपने इंकार कर दिया—कैसी निर्दयता थी यह। गरीब आदमीने अपना मन पक्का किया और आपको फिरसे लिखा कि आप उसे विशेष दर्शन दें तो वह आपको दस रुपये भेंट करेगा, उसकी पत्नी पन्द्रह। इसके बाद भी आपने स्वीकृति न दी। उसके एक मित्रने सुझाव दिया, इस बार तुम १०० देनेकी बात लिखो। बेचारे गरीबने कहा, मेरे पास इतने रुपये हैं ही कहां और वह दुखी और निराश होकर चला गया। रास्तेमें उत्पात हो रहा था। कुछ उपद्रवी विद्यार्थियोंने उसे पकड़ लिया। वह रोया-धोया, भगवान्से प्रार्थना की। विद्यार्थियों ने उसे छोड़नेसे पहले ५०० उससे गिनवा लिये।

यह कहानी बार-बार दोहरायी जाती है, मंच अलग-अलग होते हैं। इसे बहुत बार, उफ कितनी बार सुनाया जा सकता है!

और भागवत कृपाकी समर्थताकी कहानियोंके बारेमें? शायद वे गिनतीमें कम हों पर कितनी अधिक सुखद होती हैं!

प्रेम और आशीर्वाद।

८ नवंबर १९६६

१७१—बुद्धिमत्ताका आगमन

माताजी; कल रात मेरे पास 'च' आया था। वह अपनी [illegible] बारेमें लंबी बात करता रहा। मुझे लगा है कि वह काफी संतुष्ट होकर गया है। काश! मैं इस विषयमें जितना बोल सकता हूं उसका आधा भी कर पाता। लेकिन ऐसा हो नहीं पाता। कभी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी तो मुझे शंका होती है कि मैं [illegible]में रस खोता जा रहा हूं। यहांतक कि [illegible]ओंके काममें भी उतने उत्साहसे काम नहीं करता-- शायद उसके आधे उत्साहसे भी नहीं ! हो सकता है कि मेरा रस कम होता जा रहा है या मैं बूढ़ा हो चला हूं या फिर ज्वरके बिना काम करना सीख रहा हूं। यह तो आप ही जानें।

मैं इसके अंदर बुद्धिमत्ताका आगमन देखती हूं जो सच्ची समताकी ओर लिये जा रही है।

आशीर्वाद।

१७ नवंबर १९६६

१७२—भागवत कृपा

माताजी; तकलीफोंको निमंत्रण देनेके लिये मनुष्यकी क्षमताकी आपको सराहना करनी होगी। मैं बिल्कुल ठीक और स्वस्थ था। आकाशमें उड़ते कौएकी तरह एक विचार आया, "तुम भगवान्के संरक्षणकी बात करते हो। देखो 'क' और 'ख'को। वे तुमसे अधिक उपयोगी हैं।" मैंने विचारको खदेड़ तो दिया पर जाते-जाते वह जुकामके रूपमें एक लात मारता गया। सौभाग्यवश आपका संरक्षण हमारी मूढ़ताकी परवाह नहीं करता।

यह उपयोगिताका प्रश्न नहीं है। भागवत कृपाका पूर्ण और समग्र परिणाम पानेके लिये श्रद्धा भी पूर्ण और समग्र होनी चाहिये। कहां है वह ???

प्रेम।

१९६६

१७३—एकमात्र आशा

माताजी; बेकरीका एक कार्यकर्ता चला गया है। एक और कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनोंमें जा रहा है। हमें वहांके लिये दो और भोजनालयके लिए एक आदमीकी सख्त जरूरत है।

आजकल मेरा लोगोंके साथ कोई संपर्क नहीं है और न कार्यकर्ता खोजनेके लिये कोई बाहरी साधन ही है। एकमात्र आशा है अदृश्य शक्तिकी सामर्थ्यसे !

प्रेम और आशीर्वाद।

१९६६

१७४—शुद्ध मजाक या मनका मरोड़

माताजी; मेरे एक विद्यार्थीने एक लेख लिखा है जिसमें उसका कहना है कि हमसे आशा की जाती है कि सेक्ससे कोई संबंध न रखें फिर भी हिंदी बोलते समय हमेशा स्त्रीलिंग और पुल्लिंगका ख्याल रखना पड़ता है !

यह या तो **शुद्ध मजाक** होगा या मनका एक मरोड़, हमारी सलाहका ठीक अर्थ समझनेसे इंकार करनेकी एक चालाकीभरी तरकीब।

आशीर्वाद।

१९६६

१७५—कम पाना और बहुत अधिक खर्च करना

माताजी; हमें भारत सरकारसे मौखिक आश्वासन मिला था कि वे लोग पुरोधाकी ५०० प्रतियां हर महीने लिया करेंगे। आज सात महीने बाद सरकारी आदेश आया है, वह भी १५० प्रतियोंका।

हमने उनके लिये इतनी अतिरिक्त प्रतियां छापकर रखी थीं, वे सब बट्टे-खातेमें। मैंने कभी न सोचा था कि मुझे पैसेके बारेमें सोचना पड़ेगा, अब मुझे अधिकाधिककी मांग करनी पड़ रही है आपसे ! !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या किया जाय। सभी ओर यही हाल है। यह एक नयी समस्या मालूम होती है जिसका चमत्कारपूर्ण ढंगसे समाधान करना होगा—कम पाना और बहुत अधिक खर्च करना।

प्रेम और आशीर्वाद।

१९६६

१७६—शरीरकी ग्रहणशीलता

माताजी; क्या कोई डाक्टर विश्वास करेगा कि कल जब मैं आपको पत्र लिख रहा था तो मेरे वंक्षणमें इतनी सूजन थी कि चलना मुश्किल हो रहा था। आज सवेरे जब आपको मेरा पत्र मिला तो मुझे लगना शुरू हुआ कि सूजन कम हो रही है, उत्तर आनेतक वह आधी रह गयी और अब तो मैं दौड़ सकता हूं। पैरकी सूजन भी इसी तरह चली जाती है लेकिन दोनोंमेंसे कोई भी मुझे पूरी तरह छोड़ती नहीं। वे एक ऐसे बिन्दुतक कम हो जाती हैं कि उनसे कष्ट न हो और फिर प्रगति बंद हो जाती है।

इससे तुम्हारे शरीरकी ग्रहणशीलताका ठीक परिमाण मालूम होता है। रुग्ण अंगोंपर शक्तिको एकाग्र करो और वे ठीक हो जाएंगे।

१९६६

१७७—धीरे-धीरे स्थिरतासे

एक मित्रने किसी कामके लिये बहुत बड़ी योजना बनायी थी। उसे देखकर माताजी कहती हैं :

साधारणतः महत्त्वाकांक्षाभरी योजनाएं असफल होती हैं। ज्यादा अच्छा है धीरे-धीरे किंतु स्थिरतासे चलो।

आशीर्वाद।

१९६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७८—भगवान्पर अविश्वास

माताजी; हमने ब्लांशिसरीके कार्य-कर्ताओंके साथ एक समझौतेपर हस्ताक्षर किये हैं। अब वे उसमें परिवर्तन करना चाहते हैं। मैंने उन्हें समझानेकी कोशिश की कि वे जो नयी मांग कर रहे हैं उसमें उन्हें कम लाभ होगा लेकिन वे यह माननेको तैयार नहीं हैं कि हम कोई ऐसी चीज कर सकते हैं जो उनके लिये ज्यादा लाभदायक हो। उनके इस अविश्वासको कैसे हटाया जाय?

क्या तुम अंधेको दिखला सकते हो!

कुछ अपवादोंको छोड़कर समस्त मानवजाति भगवान्पर अविश्वास करती है, फिर भी उनकी कृपा हमेशा सक्रिय रहती है...

१९६७

१७९—रामका शरीर-त्याग

माताजी; यूं ही एक प्रश्न है यदि आप उसका उत्तर देनेकी कृपा करें; रामायणका कहना है कि जब रामने देखा कि अब धरतीपर उनका काम पूरा हो गया है तो वे अपने संगी-साथियोंको लेकर सरयू नदीमें प्रवेश कर गये, हमें अवतारके कार्योंपर राय न बनानी चाहिये, फिर भी प्रश्न उठता है, यह तो आत्मघात हुआ और आत्मघात सबसे बड़ा पाप है। इसे कैसे समझाया जाय?

१—परम प्रभुके लिये कोई पाप नहीं होता।

२—भक्तके लिये इससे बड़ा पाप कोई नहीं कि वह अपने प्रभुसे दूर रहे।

३—जिस समय रामायण लिखी या सोची गयी थी तवतक श्रीअरविंदद्वारा प्रकट किया गया यह ज्ञान प्राप्त या स्वीकृत न हुआ था कि इस धरतीको दिव्य जगत्में रूपांतरित किया जा सकता है और यह परम पुरुषका आवास हो सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुम इन तीन बातोंपर विचार करो तो इस क्याको समझ जाओगे यद्यपि यह निश्चित नहीं है कि वास्तविक घटनाएं इस तरह की थीं या नहीं, जैसी वे हमें बतलायी जाती हैं।

१८०—बीमारीके बहाने बुलाना

माताजी; लुधियानाके एक युवकके नाम तार आया है कि घरपर कोई सख्त बीमार है। उसे बुलाया जा रहा है। वह आपका आदेश मांगता है।

क्या यह बहुत जरूरी है? साधारणतः ऐसे बुलावे बहुत सच्चे नहीं होते।

१९६७

१८१—सत्य या रसातल

माताजीने १९६७में नववर्षके संदेशमें कहा था, "मनुष्यो, देशो और महाद्वीपो, चुनाव अनिवार्य है--सत्य या रसातल" इसपर प. ले. कहता है: चुनाव तो बहुत पहले किया जा चुका है लेकिन उस दिशामें कोई प्रगति नहीं दिखायी देती, रसातल सामने मुंह बाये खड़ा है, फिर भी विश्वास यह है कि उसे रास्तेसे हटा दिया जायगा।

विश्वास बिल्कुल उचित है। यह संदेश उन लोगोंके लिये है जो अभीतक सोये पड़े हैं और अपनी नींदसे संतुष्ट हैं।
आशीर्वाद।

२ जनवरी १९६७

१८२—ध्यानपर लेख

माताजी; नवजात मुझसे आग्रह कर रहे हैं कि मैं ध्यान, समर्पण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि विषयोंपर लेख लिखूं। उनका कहना है कि मैं ही यह काम भली-भांति कर सकता हूं। मुझे लगता है कि यह ऐसा होगा जैसा अंधा अंधेको रास्ता दिखलाये। अपनी ओर नजर डालनेपर मुझे लगता है कि मैं जानता ही क्या हूं जो इन विषयोंपर कलम चलाऊं और दूसरोंको बताऊं।

लिखते जाओ। तुम्हें क्या पता कि **प्रेरणा** तुम्हारे पास आनेके लिये तैयार नहीं खड़ी है?

प्रेम।

१० फरवरी १९६७

१८३—ध्यानपर लेख (२)

माताजी; आपने पुरोधामें साधना संबंधी विषयोंपर लिखनेके लिये कहा था। और मैंने पहला लेख लिखा है ध्यानपर!! आपने एक बार कहा था कि अगर मुझे दंड देना हो तो आप मुझसे बैठ कर आधा घंटा ध्यान करनेके लिये कहेंगी!

लेकिन मैंने यह कभी नहीं कहा कि तुम इस विषयपर लिखनेमें असमर्थ हो!

आशीर्वाद।

८ मार्च १९६७

१८४—लेख लिखनेमें कठिनाई

माताजी; मुझे पत्रिकाके लिए लेख लिखनेमें कठिनाई हो रही है। मैं भली-भांति देख सकता हूं कि मैं जो लिखता हूं वह खोखला है, उसमें जान नहीं है लेकिन फिर भी मुझे लिखना पड़ता है, मासिक पत्रिकाके संपादनकी जिम्मेदारीके कारण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायताके लिये श्रीअरविंदको पुकारो और सब कुछ ठीक हो जायगा।

२४ मार्च १९६७

१८५—कटुताका चेप

२९ मार्च, पांडिचेरीमें माताजीके प्रथम आगमनका दिन होनेके नाते आश्रममें विशेष दिन माना जाता है। अपने काममें आनेवाली कठिनाइयोंका वर्णन करते हुए प. ले. कहता है, 'आह! आज २९ तारीखको मुझे यह सब कहना पड़ रहा है। ऐसी कृपा कीजिये कि मुझे भी इस कटुताका चेप न लग जाय।'

जब हम कटु होते हैं तो भगवान्के साथ संपर्क खो बैठते हैं क्योंकि हम बहुत कटु रूपमें मानव बन जाते हैं...

प्रेम और आशीर्वाद।

२९ मार्च १९६७

१८६—सावधान रहा करो

मेरे नामसे तुम्हें जो कुछ सुनाया जाता है उसके बारेमें सावधान रहा करो। वह बात जिस भावसे कही जाती है वह गुम हो जाता है।

२९ मार्च १९६७

१८७—जीवन एक चमत्कार

माताजी; मैं कटु नहीं हूं इसका साधारण-सा कारण यह है कि मैं उत्तरदायित्वकी भावना खोता जा रहा हूं। शब्द मेरे भावको भली-भांति वहन नहीं कर पाते। 'क' अधिकाधिक कटु होता जा रहा है—आपके विरुद्ध भी। उसे लगता है कि हम सब पुरानोंको असहाय अवस्थामें उठाकर फेंक दिया जायगा। मैं प्रार्थना कर रहा था कि मेरे अंदर इसका चेप न लग जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

All that happens
is to teach us one
and the same lesson.

Unless we get
rid of our ego
there is no peace
either for ourselves
or for the others.

And without ego
the life becomes
such a wonderful
marvel!...

Love

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कुछ भी होता है हमें एक ही पाठ सिखानेके लिये होता है। जबतक हम अपने अहंकारसे छुटकारा नहीं पा लेते तबतक कोई शांति नहीं हो सकती, न हमारे लिये न औरोंके लिये और अहंकारके बिना जीवन एक अद्‌भुत चमत्कार हो उठता है! ...

प्रेम।

३० मार्च १९६७

१८८—अपना अच्छे-से-अच्छा करो

माताजी; शायद आपको मालूम हो कि हमारी शक्करकी मात्रा कम कर दी गयी है। मैं नयी नीतिके बारेमें आपसे प्रथ-प्रदर्शन चाहता हूं, आप चाहें तो इस बारेमें विस्तृत सूचना दे सकता हूं।

मुझे कल ही इस विषयका पता चला है। मैं तुमसे बस यही कह सकती हूं, **'अपना अच्छे-से-अच्छा करो'**।

अगर तुम मेरे लिये शक्करका उपयोग करते हो तो उसे पूरी तरह बंद कर दो। जरूरत हो तो तुम उसकी जगह ग्लूकोजका उपयोग कर सकते हो।

ये सब बातें हमें नमनीय होना सिखानेके लिए हैं।

प्रेम और आशीर्वाद।

१३ अप्रैल १९६७

१८९—असाधारण बात

माताजी; शायद आप सोचती हैं कि आप बहुत ज्यादा खाती हैं! आपके शक्कर बंद कर देनेसे बहुत बचत होगी! शायद १९५१से मैं आपके लिये शक्करका उपयोग नहीं कर रहा क्योंकि आपने मना किया था। सवेरेकी ठंडाईमें मैं शहदका उपयोग करता हूं और शामको गन्नेके रसका। और किसी फलके रसमें जरूरत हो तो गन्नेका रस ही मिलाता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं यह जानकर बहुत खुश हुई कि तुम मेरे पेयोंमें शक्करका उपयोग नहीं करते। मैं उन्हें काफी मीठा पाती हूं। मैंने जो कहा था उसे याद रखनेके लिये तुम्हें बधाई—वस्तुतः यह एक असाधारण बात है! . . .

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१४ अप्रैल १९६७

१९०—भविष्यके लिये तैयारी

माताजीने विद्यालयको कई संदेश दिये थे जिनमें भूतको पीछे छोड़कर भवियष्की ओर बढ़नेपर जोर दिया था। उनके संदर्भमें प. ले. लिखता है: हिन्दी भाषाके अध्यापकके नाते मैं तुलसी रामायण, सूर, कबीर, मीरा आदिपर जोर देता रहा हूं, उपनिषदों और महाभारत आदिकी कहानियोंको भी मैंने लिया है, इस स्थितिमें मुझे क्या करना चाहिये। अगर मैं उन्हें इस कारण छोड़ दूं कि वे भूत-कालकी चीजें हैं तो उनके स्थानपर क्या लाऊं और अगर मैं उन्हें जारी रखूं तो क्या मैं आपकी धाराके विरोधमें न जा रहा हूंगा।

बिल्कुल नहीं, महत्त्व है वृत्तिका।

निचली कक्षाओंमें भी मैं भारतीय साहित्यकी कथा-कहानियोंपर जोर देता हूं। हमें भविष्यका अंतर्दर्शन प्राप्त नहीं है और अगर हम भूत कालकी इन सब चीजोंको छोड़ दें तो फिर साहित्यमें बच क्या जायगा?

भूत भविष्यकी ओर छलांग लगानेके लिये तख्ता होना चाहिये, हमें आगे बढ़नेसे रोकनेके लिये जंजीर नहीं।

जैसा मैंने कहा सब कुछ भूतकालके प्रति तुम्हारी वृत्तिपर निर्भर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहांतक मैं अपने बारेमें देख सकता हूं सबसे अच्छा तो यह होगा कि लिखना, पढ़ना, पढ़ाना, छोड़कर शुद्ध रूपसे भौतिक काममें लग जाऊं और आगमनकी प्रतीक्षा करूं। लेकिन यह तो आपकी भूल निकालना होगा क्योंकि आपने ही मेरी ऊपरसे दीखनेवाली अनिच्छाके बावजूद मुझे ये काम दिये हैं।

और मैं तुम्हें यह काम देना जारी रखती हूं। अगर तुम्हें लगता है कि परिवर्तनकी जरूरत है तो वह मनोवृत्तिमें हो सकता है, जो कहना है, जो प्राप्त करना है उसपर अधिक जोर दो और भूतकाल-का उपयोग करो भविष्यकी तैयारीके लिये।

यह करना बहुत कठिन नहीं है—मुझे विश्वास है कि तुम इसे आसानीसे कर सकोगे।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१७ अप्रैल १९६७

१९१—अच्छे-से-अच्छेकी आशा रखो

प. ले. ने लिखा कि भोजनालयके कार्य-कर्ता एक निरीक्षकके व्यवहारसे बहुत असंतुष्ट थे "इन परिस्थितियोंमें कृपया देखिये कि काम ज्यादा बिगड़ने न पाये। रसोईघरमें अच्छे कार्यकर्ता नहीं हैं। यह हमारे सबसे अधिक उपेक्षित विभागोंमें से है। मैं आशा करता हूं कि इस सब गड़बड़मेंसे ज्यादा अच्छी चीज निकल आयेगी। मुझे चमत्कारोंपर विश्वास है।"

जब मानव आवेग काम चलाते हों तो मैं केवल साक्षी बनकर एक ओर खड़ी रह सकती हूं। जो कुछ निश्चय हुआ हो उसके बारेमें मुझे सभ्यतासे सूचना दी जाती है—मुझसे यह नहीं पूछा जाता कि क्या किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आज्ञा नहीं दे सकती क्योंकि अगर इन आज्ञाओंकी अवज्ञा की जाय तो वह अवज्ञा अपने-आप संकटको ले आयेगी।

तो इस समय धीरजके साथ आवेगोंके ठंडे पड़नेकी प्रतीक्षा करनेके सिवाय कुछ नहीं किया जा सकता... और अच्छे-से अच्छेके लिये आशा रखो।

शायद कुछ लोग कड़ी मेहनत करनेकी आवश्यकताके प्रति जाग जायें...

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१९ अप्रैल १९६७

१९२—सच्ची ग्रहणशीलता

माताजी; पिछले कुछ अवसरोंसे मैं दर्शनके कामके बाद बहुत थक जाता हूं। मैं ज्यादा शारीरिक काम नहीं करता, न मैं घबराता हूं, न उत्तेजित होता हूं, इस बार तो मुझे जिम्मेदारीका भार भी नहीं लगा। मैं सारे समय उपस्थित रहता हूं और अंतमें थककर चूर हो जाता हूं। अगर मुझे काम करना पड़े तो बड़ा अच्छा लगता है लेकिन थकान बादमें आती है। क्यों? क्या किया जाय?

क्योंकि जब तुम काम करते हो तो शक्तिके प्रति ग्रहणशील रहते हो और वह तुम्हें संभाले रहती है लेकिन जब तुमपर कार्य-भार नहीं होता तो तुम कम ग्रहणशील होते हो। तुम्हें सब परिस्थितियोंमें सदा ग्रहणशील रहना सीखना चाहिये—विशेष रूपसे तब जब तुम आराम करते हो—वह तामसिक "विश्राम" नहीं बल्कि सच्ची ग्रहणशीलताका विश्राम होना चाहिये।

आशीर्वाद।

९ मई १९६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९३—भोजनालयकी चटाइयां

माताजी; भोजनालयकी चटाइयां बहुत फट गयी हैं। नयी चटाइयां मांगनेसे पहले मैं यह जानना चाहूंगा कि हमें चटाईकी प्रथा जारी रखनी है या हम बड़े पैमानेपर मेज और स्टूल चलाएं। अभी कुछ कमरोंमें मेज और स्टूल हैं और बाकीमें चटाइयां।

ऐसे लोग हमेशा रहेंगे जो जमीनपर बैठना पसंद करेंगे। चटाइयां मांग लो।

११ मई १९६७

१९४—सृष्टिकी कहानी

माताजी; क्या आप बतला सकेंगी कि आपको सृष्टिकी योजना बनानेमें कितनी देर लगी थी और उसे कार्यान्वित करनेवाला कौन था?

पहलेसे कुछ नहीं। सब कुछ तत्काल, सीधा सहज और किसी मध्यस्थके बिना। मध्यस्थोंके बीचमें पड़नेसे काम सरल होनेकी जगह ज्यादा कठिन हो गया। यह एक लंबी कहानी है।

आशीर्वाद।

१३ मई १९६७

१९५—भारतका भविष्य

माताजी; १९४७में पहले आपने मुझसे कहा था कि भारत कैंसर जैसी किसी चीजसे व्यथित है। प्रत्येक अंग और अंगोंको दबाकर अपने-आप बढ़ना चाहता है। उस समय हमारे लिये यह देख पाना असंभव था पर आज हम कैंसर और साथ ही कोढ़ भी देख सकते हैं। आपकी उपस्थितिके सिवा सब जगह अंधेरा ही अंधेरा है। भारत अपना उद्देश्य पूरा कर पाये उससे पहले पूर्ण विनाशकी जरूरत होगी क्या? क्या इसमें बहुत समय लगेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां कुछ काम करना हो वहां उसके बारेमें जितना ही कम बोला जाय उतना ही अच्छा।

१७ मई १९६७

१९६—अभीप्सा

माताजी; 'क' का मेरे साथ बहुत मैत्रीपूर्ण संबंध है। वह कई बार मेरे पास सलाहके लिये आती है। कभी-कभी उसे बहुत अकेला अनुभव होता है और वह शादी करनेकी सोचती है। कभी उसे लगता है कि उसका स्थान यहां आश्रममें है और बाकी सब चीजें बेकार हैं। मैं उसे कभी सीधी सलाह नहीं देता लेकिन मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या वह इस जीवनके लिये है। जब वह अगली बार इस तरहकी सलाह करने आये तो क्या सलाह दूं?

यह तथ्य कि वह यहां है, इस बातको प्रमाणित करता है कि उसकी सत्तामें कहींपर अभीप्सा है और कुछ सहायताके साथ वह सारी सत्तामें फैल सकती है।

प्रेम सहित।

५ जून १९६७

१९७—शांत श्रद्धा

आश्रमवासियोंको फल बांटना भी प. ले. का काम है। १९६७ में चारों ओरसे फलोंकी कमी हो गयी, शक्करकी भी कठिनाई थी तो उसने माताजीसे फरियाद की।

शक्कर मुख्य रूपसे बच्चोंके लिये उपयोगी है। औरोंको उसकी जगह कुछ और दिया जा सकता है।

निश्चय ही ये सब चीजें हमें यह शांत श्रद्धा सिखानेके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती हैं कि जिस चीजकी सचमुच जरूरत होगी वह हमें मिल जायगी। बाकीके लिये हमें परेशान न होना चाहिये!

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१५ जून १९६७

१९८—आश्रममें एक और भोजनालय

माताजी; 'क' भोजनालयपर अधिकार पानेके लिये बहुत ही उत्सुक है। मुझे इसकी परवाह नहीं है। आप चाहें तो दिसंबरसे जब आप नयी व्यवस्था करनेवाली हैं, वह भोजनालयका काम संभाल सकता है।

मुझे नहीं लगता कि यह संभव है, इसके कई कारण हैं जिन्हें मैं यहां नहीं लिख सकती। मैं पुनर्व्यवस्था नहीं कर रही, मैं एक और रसोई[1] खोल रही हूं क्योंकि खानेवालोंकी संख्या इतनी बढ़ गयी है कि एक साथ इतनोंके लिये पकाना मुश्किल हो गया है।

और फिर विद्यालयके बच्चोंके भोजन और आश्रमवासियोंके भोजनमें कुछ फर्क जरूरी है। बच्चोंको विकासके लिये विशेष भोजनकी जरूरत होती है।

२६ जून १९६७

१९९—शरीरमें योग

माताजी; क्या आप मुझे यह बतला सकती हैं कि यहां श्रीअरविंद-के आश्रममें आपकी उपस्थितिमें अधिकतर लोग स्वास्थ्यके लिये भोजन, व्यायाम और चिकित्सककी बात क्यों सोचते हैं। भागवत सहायता चौथा स्थान ले सकती है अगर वह चाहे तो। आपकी सहायताके बारेमें बोलना जरा कठिन होता है। इसके बारेमें

---

[1] कॉरनर हाउस, आश्रम विद्यालयका एक भोजनालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलनेसे लोगोंको लगता है कि व्यक्ति दिखावा कर रहा है या जुनूनी है।

श्रीअरविंदने कहा है कि शरीरको भी योगमें लेना जरूरी है। उसे त्यागा नहीं जा सकता, उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। और यहां प्रायः सभीने समझ लिया है कि वे शरीरमें योग कर रहे हैं और वे भौतिक "आवश्यकताओं" और कामनाओंके शिकार बन गये . . .

स्पष्ट रूपमें कहा जाय तो मैं इन भूलोंको ज्यादा पसंद करती हूं उन तथाकथित तपस्वियोंकी अपेक्षा जो औरोंके लिये तिरस्कार, दुर्भावना और घृणास्पद भावसे भरे होते हैं।

इस विषयपर जितना कहा जा सकता है वह सब कहनेके लिये समय नहीं है।

लेकिन किन्हीं बुरी आदतोंकी अपेक्षा आलोचना करनेका भाव ज्यादा विनाशकारी होता है।

आशीर्वाद।

१२ जुलाई १९६७

२००—सच्ची श्रद्धा, दलाई लामाके बारेमें

माताजी; मैंने न तो कभी अपने शरीरसे घृणा की है, न उसे आराधा है। मेरा झुकाव वैराग्य और तपस्याकी ओर जरूर रहा है। कल मैं किसीकी आलोचना नहीं कर रहा था।

मेरी टिप्पणी तुम्हारे लिये न थी। वह एक सामान्य टिप्पणी थी।

लेकिन मुझे दुःख, क्रोध और घृणा होती है जब मैं देखता हूं कि लोग अपने अस्वस्थ होनेकी शिकायत करते हुए मेरे पास आते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बतलाते हैं कि हमने यह किया, वह किया फिर भी कोई फायदा न हुआ। मैं उनके चेहरेसे देख सकता हूं कि अगर मैं उनसे आपपर श्रद्धा रखनेके लिये कहूं तो वे मेरे ऊपर विश्वास न करेंगे। वे यही समझेंगे कि मैं उन्हें अतिरिक्त फल, दूध आदि नहीं देना चाहता इसलिए कहानियां गढ़ रहा हूं। मैं इस चीजको निराशाजनक मानता हूं।

निराशाजनक क्यों? अगर सौमें से एकमें भी सच्ची श्रद्धा है तो यह अपने-आपमें एक चमत्कार है!

मैं वर्तमान दलाई लामाकी आत्मकथा पढ़ रहा हूं। क्या दलाई लामाकी खोज और उसकी पुनर्जन्मसंबंधी दंतकथामें कोई सत्य है?

एक समय था जब मुझे इस दन्तकथाका पता था लेकिन अब मैं भूल गयी हूं इसलिए मैं उसके बारेमें कुछ नहीं कह सकती। एक सामान्य वक्तव्य यह हो सकता है कि मनुष्य ऐसी किसी चीजकी कल्पना नहीं कर सकता जो कम-से-कम एक बार तो न हुई हो। इसलिये वक्तव्यके पीछे हमेशा कोई-न-कोई सत्य होता है।

भूल यह है कि लोग उसे लेकर सामान्य नियम बना डालते हैं।

प्रेम और आशीर्वाद।

१३ जुलाई १९६७

२०१—विद्यालयमें परीक्षाएं, विद्यार्थियोंके साथ संबंध

माताजी; मैंने परीक्षाओंके बारेमें आपके संदेश देखे हैं। मैं पूरी तरह स्वीकार करता हूं कि परीक्षाएं बेकार होती हैं। मुझे व्यक्तिगत रूपसे कुछ प्रश्न पूछने हैं। मैं एक भाषा सिखाता हूं। मुझे जानना चाहिये कि मेरे विद्यार्थी भाषा सीख रहे हैं या नहीं। एक कक्षामें मैंने परीक्षाकी जगह निबंध-लेखन शुरू करवाया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम संतोषजनक है। लेकिन इस प्रकारके मामलोंमें क्या किया जाय ?

१. 'क', उसे हिंदीपर अच्छा अधिकार है लेकिन वह बहुत लापरवाह है। काम नहीं करती और बहुत बार अनुपस्थित रहती है।

२. 'ख', बहुत बुद्धिमान और योग्य है लेकिन कामसे बहुत बचती है। अपनी मधुर और बुद्धिमत्तापूर्ण बातोंसे मुझे भरमाना चाहती है। मुझे छोड़ देना पड़ा।

३. 'ग', इसे रस तो बहुत है, साहित्यका अच्छा मूल्यांकन कर सकती है लेकिन एक वाक्य भी ठीक नहीं लिख सकती।

इसी तरह और भी कई हैं जो इन्हींकी श्रेणियोंमें आते हैं।

जो सच्चे नहीं हैं वे सचमुच कुछ सीखना नहीं चाहते। वे अच्छे अंक और अध्यापकोंसे प्रशंसा चाहते हैं। वे मजेदार नहीं हैं।

क्या अध्यापकके लिए हमेशा यह संभव हो सकता है कि अपने आंतरिक संबंधके बलपर यह जान सके कि विद्यार्थी भाषा भली-भांति जानता है या नहीं और क्या उसे उपरली कक्षामें भेजा जाय? मेरी कक्षामें 'क' वर्षमें दस दिनके लिये अद्भुत होती है और बाकी दिन वह सामान्य श्रोताकी तरह रहती है। इन दस दिनोंकी संभावनाको देखते हुए मैं उसे उपरली कक्षामें भेज देता हूं।

यह बिल्कुल ठीक है।

स्वभावतः अध्यापकको यह जाननेके लिए विद्यार्थीकी जांच करनी होगी कि उसने कुछ सीखा है या प्रगति की है या नहीं। लेकिन यह जांच हर विद्यार्थीके अनुसार व्यक्तिगत होनी चाहिये, सभीके लिए एक जैसी यांत्रिक जांच नहीं हो। वह सहज और अप्रत्याशित जांच होनी चाहिये जिसमें दिखावे और कपटके लिये कोई स्थान न हो। इसी तरह स्वाभाविक रूपसे यह अध्यापकके लिए बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा कठिन है लेकिन है बहुत ज्यादा जाग्रत् और मजेदार।
मैंने विद्यार्थियोंके बारेमें तुम्हारी टिप्पणियोंमें मजा लिया। इनसे प्रमाणित होता है कि तुम्हारा अपने विद्यार्थियोंके साथ व्यक्तिगत संबंध है—और यह अच्छे अध्यापकके लिये जरूरी है।

आशीर्वाद।

२५ जुलाई १९६७

२०२—समय आ गया है

माताजी; तीन दिनोंसे में रातके समय बहुत ज्यादा अस्वस्थ रहता हूं लेकिन में आपको बतला पाऊं उससे पहले सब कुछ ठीक हो जाता है।

प्राणायाम हमेशा मेरा बल रहा है। लेकिन चरबीके कारण श्वास गहरा नहीं जाता और न जाने क्या क्या!

अगर तुम ठीक तरह श्वास लेना **चाहो** तो ऐसा कर **सकते** हो। समय आ गया है कि केवल भगवान्की इच्छापर निर्भर रहा जाय और उसे **'मुक्त रूपसे'** अपने द्वारा **काम करने दिया जाय।**

यह वही उत्तर है जो मैं तुम्हें कल भेजना चाहती थी लेकिन मेरे पास लिखनेके लिये समय न था।

मैं फिरसे कहती हूं—आखिर समय आ गया है जब अपनी इच्छापर निर्भर न रहा जाय और सारा मामला भगवान्की इच्छाको सौंप दिया जाय और उसे अपना कार्य हमारे द्वारा करने दिया जाय, न केवल हमारे मन और भावोंके द्वारा ही बल्कि मुख्य रूपसे शरीर द्वारा—और अगर तुम उसे सचाईके साथ करो तो ये सारी शारीरिक मूर्खताएं गायब हो जाएंगी और तुम मजबूत और कामके लिये योग्य बन जाओगे।

आशीर्वाद।

२८ जुलाई १९६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०३——नयी शिक्षा-पद्धति

माताजी; आप शिक्षा-क्षेत्रमें क्या चाहती हैं यह समझना बहुत मुश्किल है लेकिन जितना कुछ मैं समझ पाया हूं उससे तो यही लगता है कि हम जो कुछ कर रहे हैं वह एकदम बेकार है। हिंदी काव्यमें कुछ ऊंची चीजें हैं पर आप जिस ऊंचाईकी मांग करती हैं उसकी तुलनामें उनकी क्या गिनती है? अगर हम अच्छी भाषा सीखना चाहें, उचित प्रयोग जानना चाहें तो उपन्यास, कहानियां आदि पढ़ना जरूरी है परंतु वे बहुत ही नीचे स्तरकी चीजें हैं क्योंकि वे सामान्य मानव जीवनका चित्रण करती हैं।

मुश्किल तब आती है जब मुझे वह करना पड़ता है जिसके बारेमें मैं जानता हूं कि यह वह नहीं है जो आप चाहती हैं। मेरे अंदर इतना साहस नहीं है कि अपने-आपको पूरी तरह आपके हाथोंमें छोड़ दूं।

तुम्हारी कठिनाई इस बातसे आती है कि तुम अब भी पुराना विश्वास रखे हुए हो कि जीवनमें कुछ चीजें ऊंची हैं और कुछ नीची। यह ठीक नहीं है, चीजें या क्रियाएं अपने-आपमें ऊंची या नीची नहीं हैं, करनेवालेकी **चेतना** सत्य या मिथ्या होती है।

अगर तुम अपनी चेतनाको परम चेतनाके साथ एक कर दो और उसे अभिव्यक्त करो, तब तुम जो कुछ सोचो, अनुभव करो या करो वह आलोकमय और सत्य हो जाता है। पढ़ानेके विषयको नहीं बदलना है, तुम जिस चेतनासे पढ़ाते हो उसे आलोकमय बनाना है।

प्रेम और आशीर्वाद।

३१ जुलाई १९६७

२०४——कठिनाइयोंपर विजय

माताजीके किसी शब्दसे प. ले. को शंका हो गयी कि वे भोजनालयके किसी कामसे असंतुष्ट हैं। उसने पूछा तो उत्तर मिला:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं किसी चीजको या किसी व्यक्तिको दोष नहीं देती और जानती हूं कि हर एक जितना अच्छे-से-अच्छा कर सकता है, करता है, यह तो स्पष्ट है कि काम बहुत कठिन है। लेकिन क्या हम यहां कठिनाइयोंपर विजय पानेके लिये नहीं हैं?

सप्रेम।

२३ अगस्त १९६७

२०५—श्रद्धाका परम कार्य

माताजी; मैं पुरोधाके अक्तूबर अंकमें आपका यह संदेश दे रहा हूं, "जिस समय चीजें बदसे बदतर हो रही हों उसी समय हमें श्रद्धाका एक परम कार्य करना चाहिये और जानना चाहिये कि भागवत कृपा हमें कभी निराश न करेगी।" मैं "श्रद्धाका परम कार्य"का मतलब नहीं समझ पाया।

मेरा मतलब है समस्त परिणामोंकी परवाह किये बिना आंतरिक विश्वासके अनुसार कार्य करना और सभी दीखनेवाले तथाकथित विपरीत प्रमाणोंके बावजूद श्रद्धाको अटल बनाये रखना।

२८ अगस्त १९६७

२०६—आंतरिक प्रतिक्रिया

माताजी; आपकी नब्बेवीं वर्षगांठपर फरवरीमें बहुत लोग आयेंगे। मेरे ऊपर हिसाब और आंकड़े सभी संभव और असंभव मुश्किलें दिखलानेके लिये लादे जा रहे हैं। मेरा ख्याल है कि हमारी समस्त त्रुटियोंके बावजूद आप रास्ता निकाल लेंगी और सब कुछ आसानी-से हो जायगा। मुझे लगता है कि अगर मैं अपने काममें आपके साथ ज्यादा मजबूत संबंध नहीं पा सकता तो विभागाध्यक्ष होना बेकार है। एक साधारण-सा होटल मैनेजर ज्यादा अच्छा काम कर लेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपया मुझे वह सब दीजिये जो इस अवसरके लिए और मेरी व्यक्तिगत अभीप्साके लिये जरूरी हो।

हिसाब-किताब और आंकड़े शुद्ध रूपसे मानसिक होते हैं और यहां सारे समय उच्चतर शक्तिकी क्रियाद्वारा सभी मानसिक नियमों-का प्रतिवाद होता रहता है।

तुम्हारी आंतरिक प्रतिक्रिया प्रायः ठीक होती है लेकिन तुम्हें उस-पर विश्वास नहीं हो पाता क्योंकि एक लंबे समयतक वह अहंकारपूर्ण प्रतिक्रियासे मिली रहती थी।

अब मिश्रण कम होता चला जा रहा है। इसलिये आशा की जा सकती है कि अगले वर्ष पूरी विजय पायी जा सकेगी और तब सबके लिये नहीं तो तुम्हारे लिए चीजें स्पष्ट और सरल हो जाएंगी....

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

३ सितंबर १९६७

२०७—ठीक प्रेरणा

प. ले. को किसी कामके लिये सलाह दी गयी। उसे अंदरसे लगा कि यह ठीक नहीं है फिर भी उसने 'क'के कहनेपर उसके बारेमें माताजीसे पूछ लिया। माताजीको वह विचार पसंद नहीं आया और उसके लिये मना करते हुए उन्होंने लिखा:

मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हें ठीक प्रेरणा मिली। अब तुम्हें उसके अनुसार चलना सीखना चाहिये...

प्रेम और आशीर्वाद।

९ सितंबर १९६७

२०८—विद्यार्थियोंका गृहकार्य

माताजीके पास काफी शिकायतें पहुंच रही थीं कि विद्यार्थियोंपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह-कार्यका भार बहुत होता है। इसके बारेमें विद्यालयकी ओरसे अध्यापकोंके पास एक परिपत्र आया। प. ले. ने उसपर अपनी टिप्पणी लिख भेजी तो--

यह बहुत-से बच्चों और माता-पिताके पत्रोंके उत्तरमें है जिसमें उन्होंने शिकायत की है कि बहुत गृह-कार्य होनेके कारण बच्चे बहुत देरसे सोते हैं और काफी नींद न पानेकी वजहसे थके-थके रहते हैं। मैं जानती हूं कि ये शिकायतें बढ़ा-चढ़ा कर की गयी हैं लेकिन ये इस बातका संकेत भी हैं कि हमारे यहां जो ढर्रा चल रहा है उसमें कुछ हेर-फेर की जरूरत है।

मैं सभी बच्चोंके साथ एक-सा व्यवहार करनेके पक्षमें नहीं हूं। इससे एक जैसा स्तर तो बन जाता है, यह पिछड़े हुओंके लिए लाभदायक होता है पर जो सामान्य ऊंचाईसे ऊपर उठ सकते हैं उनके लिये हानिकर होता है।

जो काम करना और सीखना चाहते हैं उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिये लेकिन जो पढ़ाई-लिखाईसे कतराते हैं उनकी शक्तिको किसी और दिशामें निकास मिलना चाहिये।

चीजोंको व्यवस्थित और संगठित करना है। कार्यका ब्यौरा पीछे निश्चित किया जायगा।

आशीर्वाद।

२६ सितंबर १९६७

२०१—महान् सत्ताएं

कुछ लोग कामसे कतराते थे, उनके बारेमें व्यंग्य करते हुए प. ले. ने लिखा "शायद वे विशेष सत्ताएं हैं जो यहां किसी और कारणसे आयी हैं और हम उनसे गलत आशाएं करते हैं।

'विशेष सत्ताएं' पर निशान लगाकर माताजीने लिखा--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे तो नहीं मालूम ।
महान् सत्ताएं हमेशा बहुत सरल और विनयशील होती हैं।
आशीर्वाद ।

२ अक्तूबर १९६७

२१०—एक विद्यार्थीके बारेमें

माताजी 'क' बहुत कमजोर और अनियमित लड़की है लेकिन वह चाहे तो अच्छा कर सकती है। 'ख'के जन्म दिनके अवसरपर उसने समारोहमें भाग लिया था और तबसे ज्यादा समझदार मालूम होने लगी है, उसे कक्षामें चढ़ाया जाय या नहीं ?

बुद्धि और समझनेकी क्षमता निश्चित रूपसे काममें नियमित होनेकी अपेक्षा ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, स्थिरता बादमें प्राप्त की जा सकती है ?

५ अक्तूबर १९६७

२११—चुने हुए लोग

माताजी : मैं अपने विद्यार्थियोंको अपनी मरजी मुताबिक बोलनेकी छूट देता हूं। कभी-कभी वे गंदी चीजें लिखते हैं। एकने लिखा है, "यौवन मौजके लिये है, बेकार ही बूढ़े लोग कहते हैं कि हमें भविष्यके लिये काम करना चाहिये आदि।" वे जानते हैं कि सत्य क्या है फिर भी वे ऐसी बातें लिखते हैं। इस बारेमें मैं क्या वृत्ति अपनाऊं? मैं नहीं चाहता कि वे मुझे खुश करनेके लिये मीठी-मीठी बातें कहें।

तुम उनसे कह सकते हो कि अगर उनको लगता है कि वे यहां-पर ऐसी कोई चीज नहीं सीख सकते जो और कहीं नहीं सिखायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती तो ज्यादा अच्छा यही है कि वे विद्यालय बदल लें... हमें उनका अभाव नहीं अखरेगा।

सामान्य भीड़की अपेक्षा चुने हुए कुछ लोगोंका होना ज्यादा अच्छा है।

आशीर्वाद।

५ अक्तूबर १९६७

२१२—मनकी जिम्नास्टिक्स

माताजी; कल रात मैं फरासीसी क्रांतिके बारेमें श्रीअरविंदका लेख पढ़ रहा था। इसे पढ़नेके बाद लगता है कि हम जो कुछ पढ़ते या सीखते हैं वह मिथ्यात्वका ढेर है। तो यह मिथ्यात्व पानेके लिये मेहनत क्यों की जाय?

मेरा ख्याल है कि यह मनके लिए जिम्नास्टिक्स है!

प्रेम और आशीर्वाद।

१६ अक्तूबर १९६७

२१३—सामान्य ज्ञानका महत्त्व

माताजी; कल रात मैंने रेडियोपर वह कार्य-क्रम सुना जिसमें हमारे विद्यार्थी भाग ले रहे थे। मेरा ख्याल है कि ऐसे कार्य-क्रम बहुत उपयोगी हो सकते हैं।

मुझे नहीं मालूम कि क्या आप 'सामान्य ज्ञान'को कोई महत्त्व देती हैं या नहीं। हमारे चारों लड़कोंसे पूछा गया, 'क्या तुम जानते हो कि आरकाट बंधु कौन हैं।' किसीको भी पता न था। ये दोनों मद्रासके शिक्षा और प्रशासन क्षेत्रके महत्त्वपूर्ण आदमी हैं। आजकल उनका ८१ वां जन्मदिन मनाया जा रहा है और अखबार उनके चित्रोंसे भरे रहते हैं। स्थानीय जनता यह मान लेगी, जैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि द्र. मु. क. वाले कहते नहीं थकते कि हम दक्षिणमें रस नहीं लेते या उन्हें नीची नजरसे देखते हैं।

खेद है कि स्वयं मुझे भी इन दोनों महत्त्वपूर्ण लोगोंके अस्तित्वके बारेमें पता न था इसलिये मुझे विश्वास है कि उन्हें जाने बिना भी हम बुद्धिमान हो सकते हैं...

हम दक्षिण भारतको बाकी सारे जगत्से अधिक महत्त्व नहीं दे सकते—और धरतीपर इतने अधिक महान् (मूल्यवान्) व्यक्ति भरे हुए हैं जिनके अस्तित्वके बारेमें भी हमें पता नहीं है।

२६ अक्तूबर १९६७

२१४—अनुवाद-कार्य

किन्हीं कारणोंसे प. ले. श्रीअरविंदकी पुस्तकोंके अनुवाद कार्यमें भाग नहीं लेना चाहता था। उसने अपनी कठिनाइयां गिनाते हुए माताजीको लिखा, अगर आपका ख्याल है कि मैं उपयोगी हो सकता हूं, कि इस मामलेमें आप मेरे द्वारा काम कर सकती हैं तब और केवल तभी मैं इसमें भाग लेना पसंद करूंगा और आपको देखना होगा कि मुझे कठिनाईमें न पड़ना पड़े। अगर काम आपकी ओरसे आता है तो मेरा संकोच उड़ जायगा और जिस किसी चीजकी जरूरत होगी वह आ जायगी।

कामके लिये इसमें कोई संदेह नहीं कि तुम्हारे साथ देनेसे चीजें बहुत सुधर जायेंगी। वस्तुतः मुझे लगता है कि इस कामकी सफलता उसीपर निर्भर है।

अतः तुम्हारा साथ देना अनिवार्य मालूम होता है—लेकिन मैं आशा करती हूं कि यह तुम्हारे लिये बहुत ज्यादा भार न हो जायगा।

आशीर्वाद।

६ नवंबर १९६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Everything and
anything can be
an instrument for
the Supreme Wisdom
to prepare the earth
in view of the new
creation! — —.

Blessings

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१५—परम प्रज्ञाका यंत्र

माताजी; आजकल 'क' योगीके रूपमें यूरोपमें बहुत लोक-प्रिय हो रहा है उसने एक योग विश्वविद्यालय खोला है और अब वह एक अंतर्राष्ट्रीय नगरका आरंभ कर रहा है। वह आपकी नकल करता है। उसने ध्यानके बारेमें एक ग्राफ बनाया है जिसकी एक प्रति आपको भेज रहा हूं, कहते हैं यह परात्पर ध्यान है!

नवीन सृष्टिकी दृष्टिसे धरतीको तैयार करनेके लिये कोई भी चीज और सभी चीजें परम प्रज्ञाका यंत्र बन सकती हैं...

आशीर्वाद।

२८ नवंबर १९६७

२१६—अस्वस्थता

माताजी; पिछले तीन चार दिनोंसे मैं अस्वस्थ-सा हूं। वमन और विरेचन इसके लक्षण हैं। साधारणतः ऐसा तब होता है जब मेरा मन क्षुब्ध हो लेकिन इस बार ऐसा नहीं है। मैंने तीन दिन तक कुछ नहीं खाया और मैं बिल्कुल ठीक था। कल मैंने थोड़ा-सा खा लिया और गड़बड़ फिरसे शुरू हो गयी। असली कारण कहीं और होगा।

यह बेचैनी और उत्तेजनाके कारण है। मामला क्या है?

शांतिको नीचे उतारो, अपने पेटमें भागवत शांतिको लाओ और सब कुछ ठीक हो जायगा।

प्रेम और आशीर्वाद।

२ दिसंबर १९६७

२१७—अस्वस्थता (२)

माताजी; मुझे किसी बेचैनी या उत्तेजनाका पता नहीं। हां, कभी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी ऐसा लगता है कि पेटके अंदर तितलियां उड़ रही हैं। पिछले कुछ दिनोंसे मैं सुस्त-सा रह रहा हूं। सामान्यतः मैं आपकी शांति-को पुकारता हूं और वह कभी निराश नहीं करती। लेकिन इस बार हड़ताल है। पुकार उठती ही नहीं।

मामला गंभीर है। पता करनेकी कोशिश करो कि "क्यों"?

२ दिसंबर १९६७

२१८—भागवत सहायता

माताजी; मैं नहीं जानता कि क्यों, इसका उत्तर तो आपको देना होगा। ऐसे मंद, निर्जीव समय बहुधा ऐसे आलोकमय समयके बाद आया करते हैं जब सब कुछ आपको बुलाता और आपके प्रति समर्पित मालूम होता है। इस मंदकालमें शुद्ध रूपसे तमस्का राज्य होता है। साधारणतः वे कुछ दिनों बाद चले जाते हैं।

यह इस बातका प्रमाण है कि तुम्हारी सत्ता केंद्रीय चैत्य पुरुषके चारों ओर एकत्र नहीं हुई है।

यह एक व्यक्तिगत कार्य है जो हर एकको अपने लिए करना होगा। सहायता तो हमेशा रहती है लेकिन उसकी क्रियाकी प्रभावकारिता ग्रहणशीलता और सचेतन पुकारके परिमाणके अनुसार होती है।

आखिर उद्योगमें धीरजका प्रश्न है।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

३ दिसंबर १९६७

२१९—शक्तिकी प्रबल और सतत एकाग्रता

माताजी; फिर एक बार मैं आपके संरक्षणके बाहर फिसल गया। यह बुरी बात है। मैं फलके कमरे और पवित्रके कमरेके बीचकी छतपर वर्षाके समय गिर पड़ा। कांचके सभी बरतन टूट गये। मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी ही चोटें आयीं। शायद यह ग्रहणशीलताकी कमीकी ओर संकेत हैं, इसे आप ही ठीक कर सकती हैं, इसे मेरे प्रयासपर न छोड़िये।

बल्कि बात उल्टी है। तुम निष्क्रिय रूपसे विश्वस्त रहो और मुझे सब कुछ करने दो...और वह हो जायगा। तुम्हारे पिछले पत्रके बादसे लगभग सारे समय तुम्हारे ऊपर शक्तिकी प्रबल और सतत एकाग्रता रहती है, उसे ठीक तरह ले सको तो तुम्हें बिल्कुल स्वस्थ रहना चाहिये।

प्रेम और आशीर्वाद।

८ दिसंबर १९६७

२२०—भीतरी आदेश

माताजी; हिंदीके प्रसिद्ध कवि दिनकर (जो यहां आते रहते हैं) ने लिखा है कि उनपर जोर डाला जा रहा है कि वे भारत सरकार द्वारा दी गयी उपाधि पद्म-भूषणको लौटा दें। यह सरकारकी भाषा-नीतिके विरुद्ध असंतोषका प्रदर्शन होगा। वह आपकी सलाह मांगते हैं, उन्हें क्या जवाब दूं?

वह धमकियोंकी परवाह क्यों करता है। उसे अपने भीतरी आदेशके अनुसार काम करना चाहिये, सार्वजनिक रायके अनुसार नहीं।

क्या मैं उन्हें बतला दूं कि आप अखिल भारतीय भाषाके रूपमें संस्कृतको चाहती हैं।

हां।

आशीर्वाद।

२९ दिसंबर १९६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२१—भारतकी राष्ट्रीय भाषा

हमारे एक मित्रने, जो विनोबाजीके भी मित्र हैं, यह लिखा है कि विनोबाजी जानना चाहते हैं कि माताजीने भारतकी राष्ट्रीय भाषाके रूपमें संस्कृतके बारेमें ठीक-ठीक क्या कहा है।

मैं अपनी ओरसे यह और पूछ लूं कि क्या आप चाहती हैं कि संस्कृतका कठिन व्याकरण सभीको सीखना है? यह साधारण उपयोगके लिए होगी या विशेष अवसरोंके लिए जैसे इंग्लैंडमें लेटिन है?

मैं सामान्य व्यवहारके लिए, व्याकरणकी दृष्टिसे सरल की गयी संस्कृतकी बात सोच रही थी। लेकिन वास्तवमें, मैं नहीं जानती कि क्या यह संभव है।

८ मार्च १९६८

२२२—एक ही उपाय

माताजी; जब मैं मानसिक या शारीरिक रूपसे पूरी तरह स्वस्थ न होऊं तब आपके लिए फलोंके रस आदि तैयार करना ठीक है क्या? मन दोनों ओर संतुलित युक्तियां देता है।

अगर तुम पेय तैयार करना बंद कर दो तो मुझे उसके बिना रहना पड़ेगा और अगर तुम अस्वस्थ होते हुए बनाओ तो मुझे पहले तुम्हारी कठिनाईपर क्रिया करनी होगी। इसलिये एक ही उपाय है, पेय बनाते समय तुम बिल्कुल स्वस्थ रहो—यह हम दोनोंके लिये अच्छा होगा।

प्रेम और आशीर्वाद।

८ मार्च १९६८

२२३—कार्यके बारेमें

माताजी; मैं भोजनालयमें तीस वर्ष काम कर चुका हूं। अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको लगे कि भविष्यकी आवश्यकताओंकी दृष्टिसे मेरे स्थानपर युवकोंको रखना ज्यादा अच्छा रहेगा तो मैं खुशीसे सरक जाऊंगा। मैं गंभीरतासे कह रहा हूं।

कामके लिये ज्यादा अच्छा है कि तुम जारी रखो क्योंकि तुम मुझे बुला सकते और अनुभव कर सकते हो। एक युवक शायद अछूती ऊर्जासे तो भरा होगा पर यह मानेगा कि वह स्वयं काम कर रहा है। इसके अतिरिक्त तुम्हारे बने रहनेके लिये ईमानदारी, सचाई तथा अन्य अच्छे कारण भी हो सकते हैं जिनका उल्लेख करनेकी जरूरत नहीं।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

१५ मार्च १९६८

२२४—झिझक और कामना

प. ले. को एक बिजलीका पंखा उपहारमें मिल रहा था। उसके अंदरकी तपस्या-वृत्ति उसे स्वीकार करना नहीं चाहती थी। ना कहनेसे पहले उसने माताजीको लिखा, मुझे अब भी आरामकी चीजें लेते हुए झिझक होती है।

झिझक उतनी ही बुरी है जितनी कामना—पंखा ले लो, और भगवान्‌की इच्छा पूरी होने दो। अंतमें उन्हींकी इच्छा सदा विजयी होती है!

प्रेम और आशीर्वाद।

१५ अप्रैल १९६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

आश्रममें १९८७ का नया साल विशेष रूपसे तैयार किये गये सुनीलके संगीतसे शुरू हुआ। उसके बाद प्रास्पेरिटीसे नव वर्षकी शुभ कामनाके कार्ड और केलेंडर तथा मिठाईका वितरण हुआ। साथमें श्रीअरविंदके एक चित्रके साथ माताजीके ये शब्द भी थे: "तुम भगवान्के जितने ही नजदीक जाओगे उतने ही अधिक उनकी अपरिमेय कृपाके दुर्दमनीय प्रमाणकी बौछारमें आओगे।"

शामको क्रीड़ांगणमें मार्च पास्ट और माताजीके इन ध्वन्यांकित शब्दोंके साथ ध्यान हुआ। "हे जगत्के परम प्रभु, हम तुझसे अनुनय करते हैं कि हमें वह बल, सौंदर्य और सामंजस्यपूर्ण पूर्णता प्रदान कर जो धरतीपर तेरा दिव्य यंत्र बननेके लिये जरूरी है।"

सोसायटीके बीच आफिसमें सवेरे ८.३० से ९ तक सोसायटीके सदस्यों और युवा संघके लिये आये हुए लोगोंने शांति, सामंजस्य, भागवत प्रेम और जगत्में दिव्य जननीके आविर्भावके लिये अभीप्सा-के साथ दीपमाला जलायी।

३ जनवरीको नवजातजीके जन्म दिनके उपलक्ष्यमें सोसायटी कार्यालयमें उनकी स्मृतिमें ध्यान हुआ और उनकी ध्वन्यांकित आवाज सुनी गयी।

'यूथ बुलेटिन' सोसायटीके युवा कक्षका अंग्रेजी मासिक है। दिसंबर ८६ और जनवरी ८७ का अंक पहली जनवरीको प्रकाशित हुआ। उसका नाम है 'टुडे एंड टुमौरो।'

सोसायटीकी वैज्ञानिक खोजबीनका काम 'श्रीअरविंद इंस्टीटयूट आफ एप्लाइड साइन्टिफिक रिसर्च'के तत्वावधानमें हो रहा है जिसमें सौर ऊर्जा, पवन-ऊर्जा आदिके उपयोग, अतिसार, जूं, फ्यास आदि-के उपचार, भवन निर्माण आदि अनेक विषयोंपर काम हो रहा है।

(शेष आवरण ४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम भारतवासी

अपने गणतंत्र के महान आदर्शों

लोकतंत्र
समाजवाद
धर्म-निरपेक्षता
न्याय
स्वतंत्रता
समानता
भ्रातृत्व
सद्भावना
एकता
अखंडता
शांति
उन्नति
के प्रति समर्पित हैं

हम इनके प्रति सदा ही
वचनबद्ध रहेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

O Lord, awaken in me an ardent desire to know Thee. I aspire that my life may be consecrated to Thy service.

The Mother

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

—श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश आ० २
संपादकीय : समाजका आधा अंग अनुबेन ३
दैनन्दिनी ५
माताजीका पत्र-व्यवहार : एक कार्यकर्तासे
२२५—सच्ची श्रद्धा, काम कैसे किया जाय ८
२२६—कठिन समय ९
२२७—सच्ची चीज १०
२२८—पुरस्कार ११
२२९—जरा-सी एकाग्रता ११
२३०—विवेक ११
२३१—लोभ १२
२३२—लाइफ डिवाइनका अनुवाद १२
२३३—श्रद्धा रखना और सहन करना १३
२३४—श्रीअरविंदपर पुस्तक १३
२३५—व्याज १३
२३६—वही (२) १४
२३७—इच्छा-शक्तिका उपयोग १५
२३८—नवीन सृष्टिकी प्रसव-वेदना १५
२३९—ओरोवीलमें व्यापार १६
२४०—नया काम १६
२४१—पुरोधा १७
२४२—समाचार-पत्र १७
२४३—सब कुछ हो सकता है १७
२४४—सीखनेका अवसर १८
२४५—माताजीके लिये निम्न प्रकारका आकर्षण १८

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४६—समझदारीकी बात १९
२४७—ओरोवीलमें काम १९
२४८—'मदर्स ऐक्शन' २०
२४९—पुरोधा और अग्निशिखा २०
२५०—हिन्दी और संस्कृत २१
२५१—काम जारी रखो २१
२५२—राष्ट्रभाषा २२
२५३—कामके लिये आवश्यक क्षमता २२
२५४—कटुता २३
२५५—पार्थिव जीवनका उद्देश्य २३
२५६—कठिनाईमें माताजीका आश्वासन २४
२५७—सत्य देखना और खोजना २४
२५८—लालच २५
२५९—बतरस २६
२६०—छुट्टियां २६
२६१—अनेक दृष्टिबिन्दु २९
२६२—सब कुछ ठीक हो जायेगा ३१
नारी जगत् ३३
जेल या . . . ? ३५

कृपया चेक न भेजें, उसमें बहुत असुविधा होती है। ड्राफ्ट, धनादेश या पोस्टल आर्डर भेज सकते हैं। अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।
संपर्क : संपादक अग्निशिखा एवं पुरोधा, पांडिचेरी—६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

समाजका आधा अंग

सदियोंके बाद संसारमें नारीकी ओर सचमुच ध्यान दिया जा रहा है। आजकल 'नारी दशक' जैसे विशेष समारोहकी बात सोची जा रही है। मैक्सिकोके नारी विश्व-सम्मेलनका ब्यौरा पढ़कर मन आशा और निराशाके झूलेमें झूलने लगा था। पुरुषोंके सम्मेलनोंमें अगर तू तू मैं मैं होती है तो उसे मानव स्वभावकी दुर्बलता कह कर टाल दिया जाता है किंतु स्त्रियोंकी इस कमजोरीपर काफी छींटाकशी होती है "स्त्री अनियंत्रित, कम बुद्धिमान्, बेचारी भावुक घरेलू जीव है। उससे कैसे आशा की जा सकती है कि वह शालीनतासे किसी सभाका संचालन करेगी या किसी गोष्ठीमें कोई उल्लेखनीय योगदान दे सकेगी। इन्दिरा गांधी उनकी दृष्टिमें एक अपवाद हो सकती हैं किंतु साधारणतः समाजकी राय इस प्रगतिशील समयमें भी वही है जो तुलसीदासजीके समयमें थी।

नारी जाग्रतिका प्रभाव अभी-अभी समाजपर पड़ा है और अब हमें ऐसे समर्थक प्राप्त हैं जो कहते हैं कि जबतक हम समाजके आधे हिस्सेकी अवहेलना करेंगे तबतक हम वांछित प्रगति न कर पायेंगे।

अगर हम मानव इतिहासपर दृष्टिपात करें तो वहां नारीके अगणित रूप दिखाई देते हैं। वीरांगना लक्ष्मीबाई, चांदबीबी, कित्तूरकी रानी, दक्ष शासिका अहल्याबाई या गुजरातकी रानी मिनलदेवी, ऋषियोंसे बहस कर उनकी पंक्तिमें बैठनेवाली गार्गी, अरुंधती, शंकराचार्यके समयकी भारती या गणितज्ञ लीलावती जैसे कितने ही चरित्र बहुविध रत्नोंकी भांति वहां चमकते हैं।

मध्य युगके अंधियारेमें सारे समाजका जो पतन हुआ उसमें सबसे अधिक सहना पड़ा नारीको। पुरुष अपनी कमजोरीका पूरा दोष नारीपर मढ़कर कहने लगा कि नारी नरकका द्वार है, उसे शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना, सुसंस्कृत करना व्यर्थ है वह केवल भोग-विलास और वंश-वृद्धिका साधन बनी रहे इसीमें सबका कल्याण है।

संसार उस मध्ययुगीन धारणासे अभी-अभी निकल ही रहा है और नारीका उचित सम्मान करनेका प्रयास कर रहा है। इस नारी जाग्रतिकी उषावेलामें नारीको अपनी अंतरतम गहराईमें जाकर यह जाननेकी कोशिश करनी चाहिये कि उसने संसारमें किस कार्यके लिये शरीर धारण किया है? इस समय उसका कर्तव्य क्या है? क्या पुरुषकी बराबरी करनेकी जिदमें हर क्षेत्रमें, जीवनके हर पहलूमें उसकी अंधाधुंध नकल करना ही उसका कर्तव्य है या अपने व्यक्तित्वकी, जातिगक व्यक्तित्वकी अभिव्यक्तिको अधिक मुखर और सुन्दर बनाना? शारीरिक दृष्टिसे देखें तो ऐसा कोई कार्य नहीं है जो स्त्री पुरुषकी भांति न कर पाये। उसका एक उदाहरण कुछ-कुछ ताजा ही है; जब श्री राममूर्ति अपने सीनेपरसे मोटर कारको दौड़ाते थे तो उसी समय ताराबाई अपने बालोंसे एक बैलगाड़ी बांधकर दौड़ती थीं। प्रश्न है कार्यक्षेत्र चुननेका।

भावनात्मक और बौद्धिक क्षेत्रमें आजकल नारी पुरुषसे बाजी मार लेती है, उसका कारण उसके अंदर स्वाभाविक रूपसे विकसित अंतः-प्रेरणा होती है। किसी अज्ञात मनोवैज्ञानिक कारणसे नारी अंतः-प्रेरणाके प्रति अधिक सजग होती है।

घूम फिर कर हमें उसी निष्कर्षतक पहुंचना पड़ता है कि जबतक नारी अपने-आपको न जाने, अपने-आपको मुक्त न करे कोई कानून, कोई आन्दोलन उसकी सहायता न कर पाएगा।

प्रत्येक दिन प्रत्येक नारी अपने अलग व्यक्तित्वको समझने और विकसित करनेमें कुछ समय बिताये तो उसका यह कार्य नारी आंदोलनसे अधिक महत्त्वपूर्ण होगा। हमें यह न भूलना चाहिये कि व्यक्तियोंका समूह ही समाज बनता है और हर व्यक्तिके विकासके अनुरूप समाजका स्तर बनेगा।

नारी आंदोलनको ऊंचा उठानेके लिये हर नारीका कर्तव्य है कि वह अपने व्यक्तित्वको विकसित और समृद्ध करे।

—अनुवेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

मार्च

१. कार्यमें, पूर्णताकी ओर अभीप्सा सच्ची आध्यात्मिकता है।
२. हम केवल भगवान्में ही अपना सुख खोजें।
३. यह भगवान्के ग्रंथमें लिखा गया है और उसे कोई भी न रोक पाएगा . . . कि भारतका राष्ट्रीय जीवन अपने ईश्वर और अपनी समर्थ नियतिसे संपर्क साधेगा और उन्हें प्राप्त करेगा।
४. एकमात्र व्यवसाय, एकमात्र ध्येय, एकमात्र हर्ष : भगवान्।
५. तुम अपने जीवनको सत्यकी निरंतर खोज बना लो और जीवन जीने लायक हो जायेगा।
६. जिस तरह बीजमें वृक्ष प्रतीक्षा करता है उसी तरह संसारकी सारी संभावनाएं मनुष्यके अंदर प्रतीक्षा कर रही हैं।
७. वे सबसे सुखी हैं जो श्रद्धापर ऐसे दृढ़ हैं मानों एक चट्टानपर खड़े हों।
८. कुछ लोग अपनी आत्मा भगवान्को अर्पित करते हैं, कुछ उन्हें अपना जीवन और कुछ अपना कार्य समर्पित करते हैं, कुछ अपना धन देते हैं। विरले हैं ऐसे लोग जो अपना सर्वस्व, अपने-आपको, अपने पास जो कुछ है आत्मा, जीवन, कार्य, धन सब कुछ समर्पित करते हों; ये भगवान्के सच्चे बालक हैं।
९. निरंतर विकासमें ही जीवन है, अगर हम सजीव मानसिकता चाहते हैं तो हमें बिना रुके प्रगति करते रहना चाहिये।
१०. विचार-लहरोंमें या किसी और तरहसे विचार, योजनाएं, सुखद आविष्कार इत्यादि अपने-आपको साकार करनेवाले मनको ढूंढ़ते हुए भटकते रहते हैं। एक मन उन्हें लेता है, देखता है और फेंक देता है, दूसरा लेता है, देखता है और उन्हें स्वीकार करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११. योगके लिये और योग किये बिना भी अपने विचारोंपर नियंत्रण रखना इतना ही आवश्यक है जितना अपने प्राणकी कामनाओं और आवेगोंपर या अपने शरीरकी क्रियाओंपर।

१२. जबतक तुम अपने विचारोंपर नियंत्रण न रख पाओ, उनके निरीक्षक, निर्णायक और स्वामी न बन पाओ, तबतक तुम पूर्ण विकसित मानसिक सत्ता, मनोमय पुरुष भी नहीं बन सकते।

१३. मानसिक सत्ताके लिये उच्छृंखल और बेलगाम विचारोंका टेनिस बाल बन जाना उतना ही अनुचित है जितना कामनाओं और वासनाओंके तूफानमें पतवारविहीन नौका बनना और शरीरके आलस्य या आवेगका दास बनना अनुचित है।

१४. विचारोंको बिल्कुल बाहरी वस्तुओंकी तरह महसूस करना चाहिये, तब उन्हें अस्वीकार करना या मनकी शांतिमें खलल पहुंचाये बिना गुजरने देना आसान होता है।

१५. हे देवगण, हम कानोंसे केवल शुभ ही सुनें, आंखोंसे वही देखें जो शुभ हो।

१६. जब समता प्राप्त हो जाय तभी शांति शरीरमें पूर्ण होती है। अगर मनमें थोड़ी-सी भी परेशानी या तकलीफ हो तो हमें समझ लेना चाहिये कि समतामें हलचल या दोष आ गया है।

१७. स्थिरता वह स्थिति है जिसमें चंचलता या परेशानी न हो।

१८. अचंचलता और भी अधिक अनुत्तेजित स्थिति है जो किसी भी बाधासे प्रभावित नहीं होती---यह स्थिरतासे कम नकारात्मक स्थिति है।

१९. शांति अधिक रचनात्मक स्थिति है---वह अपने साथ स्थिर और सामंजस्यपूर्ण विश्राम और मुक्ति लाती है।

२०. नीरवता वह अवस्था है जिसमें मन या प्राणकी कोई क्रिया नहीं रहती या फिर महान् स्तब्धता होती है जिसे कोई सतही क्रिया न भेद सकती है न बदल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१. जब हम निराशामें भगवान्को पुकारते हैं तो वे पुकारका उत्तर देते हैं।
२२. हम भगवान्से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारी कृतज्ञताकी और उल्लसित तथा पूरे विश्वाससे आज्ञापालन करनेकी तीव्र लौको स्वीकार करें।
२३. मेरे हृदयमें शांति है, मेरा मन अधीरतासे मुक्त है और मैं एक बालकके मुस्कराते विश्वासके साथ सब बातोंमें तेरी इच्छापर निर्भर रहता हूं।
२४. मेरे प्रभु, मुझे सब मिथ्याभिमानोंसे मुक्त कर; मुझे नम्र और सच्चा बना।
२५. मेरे प्रभु, मुझे भय और चिंतासे मुक्त रहने दो ताकि मैं अपनी अधिक-से-अधिक क्षमतासे तुम्हारी सेवा कर सकूं।
२६. प्रभु, मुझपर कृपा कर कि मैं तुझे कभी न भूल पाऊं।
२७. हे मेरे प्रभु, मधुर मां,
तुम्हारी शक्ति मेरे साथ है। तुम्हारा प्रकाश, तुम्हारा प्रेम और तुम मुझे सब बाधाओंसे बचा लोगे।
२८. परम प्रभु, हमें नीरव रहना सिखाओ ताकि हम नीरवतामें तेरी शक्ति और तेरी इच्छाको समझ सकें।
२९. सब हिंसाओंको शांत कर दे, तेरे प्रेमका शासन रहे।
३०. हे मेरे स्वामी, तेरी सहायता और कृपाके रहते डरकी क्या बात है!
३१. तू ही वह परम संरक्षण है जो सभी शत्रुओंको हरा देता है। अगर तुम भगवान्को सब कुछ दे दो, कुछ भी बचा कर न रखो तो तुम जो कुछ भी करो, जो कुछ सोचो, जो भी अनुभव करो, उस सबमें भगवान् हमेशा और हर क्षण पूरी तरह तुम्हारे साथ रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीका पत्र-व्यवहार

एक कार्यकर्तासे

इन पृष्ठोंमें हम माताजीके साथ एक आश्रमवासीका पत्र-व्यवहार दे रहे हैं। उसने गुरुकुल कांगड़ीसे शिक्षा समाप्त करके श्रीअरविंदके बड़े गुरुकुलमें सन् १९३८ में प्रवेश पाया था। शुरूके कुछ पत्रोंका उत्तर श्रीअरविंदने दिया है और बाकी सबका माताजीने।

इस आश्रमवासीने, जो अपने-आपको कार्यकर्ता कहना पसंद करता है, आश्रममें सब प्रकारके पापड़ बेले हैं, पीर, बावर्ची, भिश्ती, खर सब तरहके काम किये हैं अतः उसके पत्र-व्यवहारमें रसोई घरसे लेकर प्रशासन और पठन-पाठन आदि अनेक विषयोंकी बातें आ जाती हैं। इसमें माताजीके अनेक रूपोंका परिचय मिलता है, जहां उच्चतर और गुह्य जीवनकी बातें हैं वहीं नौकरोंके साथ व्यवहार, खाना पकाने, तेल, इमलीके व्यवहार आदिके बारेमें भी प्रामाणिक मार्ग-दर्शन मिलता है। आशा है पाठकोंको अपने-अपने रसकी चीज, अपने-अपने क्षेत्रमें पथ-प्रदर्शन मिल सकेगा।

२२५—सच्ची श्रद्धा, काम कैसे किया जाय

माताजी; १९६० में आपने मेरे पैरमें फाइलेरियाकी सूजनको ठीक कर दिया था। एक सप्ताह हुआ सूजन फिरसे भयंकर रूपमें लौट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयी है। टांग गरम है, उसमें तनाव, खुजली और दर्द है। मैं लंगड़ा कर चल रहा हूं, पांव दोगुना हो गया है।

तुम्हारी श्रद्धामें गंभीरतासे गिरावट आयी होगी क्योंकि शक्ति उसी तरह काम कर रही है। बहुधा वह अधिक समर्थ प्रमाणित हुई है। लेकिन श्रद्धा जितनी सच्ची होगी शक्ति उतनी ही प्रभावकारी होगी।

नलिनीने मेरे पास दो कार्य-कर्ता भेजे हैं। मेरे सामने प्रश्न है कि उन्हें कहां काम दिया जाय। प्रेसके पास रहनेके कुछ कमरे हैं। और विभागोंको जिन्हें आदमीकी जरूरत है उनके पास रहनेकी व्यवस्था नहीं है।

काम देते समय दो बातोंका ख्याल करना जरूरी है। एक तरफ आवश्यकता और दूसरी तरफ कार्य-कर्ताकी क्षमता। वाकी बातें राजनीतिक मिथ्यात्वकी गंध देती हैं।

२० मई १९६८

२२६—कठिन समय

माताजी; कई बार आपने मुझसे मेरी 'श्रद्धामें गिरावट'की बात की है। सचमुच यह बात मेरी समझमें नहीं आती। सच्ची बात तो यह है कि मैं नहीं जानता कि मेरे अंदर श्रद्धा है या नहीं है। मैं श्रद्धाके बारेमें लेख लिख सकता हूं परंतु यह नहीं जानता कि श्रद्धा है क्या--तो आप मुझसे ज्यादा श्रद्धाकी आशा कैसे कर सकती हैं! मुझे इसकी बहुत परवाह नहीं है कि मेरा पांव ठीक होता है या नहीं, कम-से-कम थोड़ी श्रद्धा तो आये मेरे अंदर।

सच कहूं तो मैं तुम्हारे अंदर श्रद्धा होने या यह माननेकी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे अंदर श्रद्धा नहीं है, बहुत परवाह नहीं करती। मैं बस यही चाहती हूं कि तुम स्वस्थ रहो और हंसी-खुशी अपना काम करते रहो। तुम्हारे बारेमें, तुम्हारे शरीरके बारेमें मुझे बहुत विशिष्ट ग्रहणशीलता और तुरंत रोगमुक्ति देखनेका अभ्यास था—इसी कारण मैंने यह टिप्पणी की थी।

यह सच है कि "हम" एक कठिन समयमेंसे गुजर रहे हैं (हम का मतलब है दुनिया) लेकिन जो स्थिर रहेंगे वे इसमेंसे पहलेकी अपेक्षा **ज्यादा मजबूत** होकर निकलेंगे।

प्रेम और आशीर्वादके साथ।

२१ मई १९६८

२२७—सच्ची चीज

माताजी; आपके सिवा कोई इस बातपर विश्वास न करेगा कि कल मेरा पांव घुटनेतक सूजा हुआ था। वह गरम और सख्त था और अपने साधारण आकारसे दो गुना मोटा था। तब आयी आपकी चिट्ठी। मेरी आंखें सूजनको कम होते हुए देखने लगीं। हर मिनट सूजन कम होती जा रही थी और कुछ ही मिनटों बाद केवल टखनेतक रह गयी और निचला भाग भी काफी अच्छा हो गया। लगभग आधे घंटेमें सब कुछ प्रायः स्वाभाविक हो गया। कुछ घंटोंके बाद थोड़ी-सी सूजन लौट आयी है, मुझे विश्वास है कि उसके लिये मुझे आपको फिरसे तंग न करना पड़ेगा—वह चली जायगी—और इसका श्रेय मेरी श्रद्धाको नहीं दिया जा सकता!

शाबाश! यह ठीक है, यह सच्ची चीज है और जारी रहनी चाहिये।

मेरे प्रेम और आशीर्वाद सहित।

२२ मई १९६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२८—पुरस्कार

हमारी कुछ नयी अध्यापिकाएं अपना काम ठीक तरह करनेकी कोशिश कर रही हैं लेकिन उनके पढ़ानेमें जान नहीं होती। वे नीरस होती हैं। ऐसा लगता है कि सारी कक्षा सो रही है। उनके काममें जान कैसे डाली जाय?

खेल-कूदमें प्रतियोगिताएं होती हैं, पुरस्कार होते हैं। विद्यालयमें तो पुरस्कार भी बंद कर दिये गये हैं??

पुरस्कार जीवनकी निचले स्तरकी चीजें हैं लेकिन अगर हम अब भी वही हैं.... अगर तुम्हें जरूरी लगे तो कर सकते हो।

२९ मई, १९६८

२२९—जरा-सी एकाग्रता

माताजी; जब लोग मेरे पास अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयां लेकर आते हैं तो मैं बहुत थक जाता हूं। मैं आपको बुलाता हूं और पांच दस मिनटमें ठीक हो जाता हूं। कल 'क' आयी थी और वह अपने पारिवारिक झमेलोंका दुखड़ा सुनाती रही। मैं बिल्कुल जाग्रत् और जीवंत था परंतु उसके जाते ही पूरी तरहसे ढह गया। सारा शरीर बहुत अधिक थक गया और अब चौबीस घंटे बीत चुके हैं और मैं अभीतक ठीक नहीं हो पाया।

हां, क्योंकि वह लेती तो है पर कुछ दिये बिना। मुझे बुलाते समय जरा-सी एकाग्रता रखो और सब कुछ समाप्त हो जायगा।

प्रेम और आशीर्वाद।

२७ जून १९६८

२३०—विवेक

माताजी; आपने मुझसे कहा था कि मुझे जब कभी जरूरत होगी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका आंतरिक पथ-प्रदर्शन मेरे साथ रहेगा। वह आता तो है परंतु बहुधा मैं उसे पहचान नहीं पाता और अपनी ही राय मान लेता हूं और उसपर जोर नहीं देता। परिणाम दिखलाता है कि यह मेरी भूल थी।

यह भी विवेक सीखनेका एक तरीका है।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

५ मार्च १९६९

२३१—लोभ

माताजी; अधिकतर लोग स्वीकार करते हैं कि अब भोजनालयकी तरकारीका स्तर काफी ऊंचा हो गया है और दूधकी मात्रा भी बढ़ गयी है। फिर भी अतिरिक्त दूध और तरकारीकी मांग बनी रहती है। क्या करूं?

अधिकतर लोग **लोभी** होते हैं और इस मामलेपर विचार करनेकी जरूरत नहीं। हां, अगर स्वास्थ्यके कारण उसपर विचार करनेकी जरूरत हो तो तुम उदार हो सकते हो।

आशीर्वाद।

१६ मई १९६९

२३२—लाइफ डिवाइनका अनुवाद

लाइफ डिवाइनके हिंदी अनुवादके बारेमें सलाह।

जो यहांसे प्रकाशित हो वह अच्छा अनुवाद होना चाहिये अन्यथा असंभव है। यहां व्यक्तियों और भावनाओंका प्रश्न नहीं है। काम ठीक तरहसे होना चाहिये, बस।

१७ जून, १९६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३३—श्रद्धा रखना और सहन करना

प. ले. ने लिखा कि तरकारियां मुश्किलसे मिल रही हैं। माताजीके हिमालयके बगीचेसे आनेवाले फल रास्तेमें कहीं इधर-उधर हो गये हैं...

इसलिये हमें श्रद्धा रखना और सहन करना चाहिये।

प्रेम और आशीर्वाद।

१२ अगस्त १९६९

२३४—श्रीअरविन्दपर पुस्तक

माताजी; मुझसे श्रीअरविंदकी जीवनीके बारेमें एक छोटी-सी पुस्तक लिखनेके लिये भारत सरकारके एन. सी. आर. टी. की ओरसे कहा गया था। मैंने पांडुलिपि भेज दी थी। उन्होंने कई परिवर्तन सुझाये हैं। क्रिप्स प्रस्तावोंपर श्रीअरविंदका संदेश उन्हें स्वीकार नहीं है लेकिन चीनके आक्रमण और कोरियाके युद्धके बारेमें पत्र स्वीकार हैं। ब्रह्मचर्यकी मनाही है, कोई ऐसी बात नहीं लिखी जा सकती जिसे प्रमाणित न किया जा सके। मैंने उन्हें अपनी पुस्तक देनेसे इंकार कर दिया है। आपको सूचना भर दे रहा हूं।

लेकिन तब वे किसी ऐसे आदमीसे लिखवा लेंगे जो श्रीअरविंदके बारेमें कुछ नहीं जानता और वह बहुत-सी ऊल-जलूल बातें लिख देगा!

क्या किया जाय?

(आखिर यह पुस्तक कविवर सुमित्रानंदन पंतको दिखलायी गयी और उनके कहनेपर छापी गयी)

५ सितंबर १९६९

२३५—ब्याज

माताजी; मैं पुरोधाके विज्ञापनोंसे दस हजार रुपयेकी आशा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूं। मुझे दो विचार आ रहे हैं। (१) इस राशिको जमा करवा दूं और उसके व्याजसे विद्यालयों और पुस्तकालयोंको निःशुल्क पुरोधा भेजूं या (२) भविष्यकी चिंता किये बिना सारी राशि आपका संदेश लोगोंतक पहुंचानेमें खर्च कर दूं और भविष्यको आपके हाथों-में छोड़ दूं। मैं फैसला नहीं कर पा रहा। कृपया सलाह दीजिये।

मैं धनपर व्याज लेनेके पक्षमें नहीं हूं। उसका उपयोग किसी और तरीकेसे, जो तुम्हें अच्छे-से-अच्छा लगे, करो।

आशीर्वाद।

५ सितंबर १९६९

२३६—व्याज (२)

माताजी; मैं चक्करमें पड़ा हूं। हम पुरोधाके आजीवन सदस्य बनाते हैं, उनका पैसा जमा करवा देते हैं जिसपर हमें चौदह प्रति-शत व्याज मिलता है। अब आपने कहा है कि व्याज लेना आपको पसंद नहीं है तो इस मामलेमें मैं क्या करूं? हमारे लगभग चालीस आजीवन सदस्य हैं और कुछ नये बन रहे हैं। वैसे भी पुरोधाके पास कुछ पैसा है जिसपर हमें व्याज मिलता है। ऐसी हालतमें क्या किया जाय?

मैं जो देखती हूं वह आगामी कलकी दुनिया है लेकिन विगत कल-की दुनिया अभीतक जिन्दा है और कुछ समय और जिन्दा रहेगी। तबतक पुरानी व्यवस्था ही चलने दो, जबतक वह जिन्दा है।

धरतीपर परिवर्तन धीमे-धीमे आते हैं।

चिन्ता न करो—और भविष्यके लिये आशा बनाये रखो।

प्रेम और आशीर्वादके साथ।

६ सितंबर १९६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३७—इच्छा-शक्तिका उपयोग

माताजी; इस वर्ष अपने विद्यालयके कामसे मैं कुछ निराश-सा हूं। इस वर्ष मैं कोशिश कर रहा था कि पहल विद्यार्थियोंकी ओरसे हो, उनके साथ मेरा मैत्रीपूर्ण संबंध हो। वे मुझे पसंद करते हैं, मैं उनके सामने दर्जनों प्रस्ताव रखता हूं कि हम यह कर सकते हैं और वह कर सकते हैं लेकिन मुझे कोई उत्तर नहीं मिलता, कोई पहल नहीं, कोई प्रस्ताव नहीं––मानों मैं दीवारसे बात कर रहा हूं। फिर भी विद्यार्थी अच्छे हैं, मैत्रीपूर्ण और बुद्धिमान हैं। मेरे अंदर ही किसी चीजकी कमी होगी जिससे मुझे कोई उत्तर नहीं मिल पाता। मेरी इच्छा होती है कि पढ़ाना छोड़ दूं। पहली बार मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है। कल मैं यह कहने-कहनेको था कि अबसे कक्षा लेने न आऊंगा। किसी चीजने मुझे रोक दिया। लेकिन इस कक्षामें भी यदि मैं इच्छा चलाऊं तो अच्छा उत्तर मिलता है।

तुम अपनी इच्छा क्यों नहीं चलाते? यह निश्चय ही उनकी इच्छाकी अपेक्षा अधिक आलोकित है और उसे उन्हें मार्ग दिखानेका अधिकार है।

निश्चय ही तुम्हारे कक्षा छोड़नेका सवाल नहीं उठता––अपनी इच्छा-शक्तिका उपयोग करो और उन्हें आगे बढ़ाओ।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

६ सितंबर १९६९

२३८—नवीन सृष्टिकी प्रसव वेदना

माताजी; १९१९ में श्रीअरविंदने लिखा था कि अव्यवस्था और विपदाएं शायद नवीन सृष्टिकी प्रसव वेदना हैं। यह प्रसव वेदना कबतक चलती रहेगी––आश्रममें, भारतमें और फिर सारे संसारमें?

वह तबतक जारी रहेगी जबतक जगत् नवीन सृष्टिको ग्रहण करनेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये इच्छुक और तैयार न हो जाय। इस नयी सृष्टिकी चेतना अब भी इस वर्षके आरंभसे काममें लगी हुई है। अगर विरोध करनेकी जगह लोग सहयोग दें तो काम जल्दी होगा।

परंतु मूढ़ता और अज्ञान बहुत दुराग्रही हैं।

प्रेम और आशीर्वाद।

२९ सितंबर १९६९

२३९—ओरोवीलमें व्यापार

माताजी : 'क', 'ख', 'ग' ने ओरोवीलमें ओरो स्टील नामक कारखाना बनानेकी योजना बनायी है। वे उसमें अलग-अलग राशियां लगायेंगे। मुनाफा किस तरह बांटा जायगा, उनकी पूंजीके अनुपातमें या किसी और तरह? सब मिला कर दो लाख लगेंगे।

शायद उन्हें यह नहीं मालूम कि ओरोवीलमें सब खर्च निकालनेके बाद — जिसमें उनके भरण-भोषणका खर्च भी शामिल है, मुनाफा नगरको मिलेगा।

आशीर्वाद।

१७ अक्तूबर १९६९

२४०—नया काम

किसी नये कामके सिलसिलेमें।

समय आ गया है कि आश्रममें शांति और सामंजस्यका राज्य हो।

प्रेम और आशीर्वाद।

६ नवंबर १९६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४१-पुरोधा

मैं पुरोधाके विषयमें बहुत खुश नहीं हूं। वह अब भी बहुत अधिक भूतकालपर आधारित है और उसे भविष्यमें अपनी राह नहीं दीखती।

भविष्य अनिवार्यतः भूतकालसे अधिक अच्छा है। हमें बस आगे बढ़े चलना है।

प्रेम और आशीर्वाद।

१७ जनवरी १९७०

२४२—समाचार-पत्र

माताजीने स्कूलके विद्यार्थियोंको एक संदेश भेजा था जिसमें समाचार-पत्र पढ़नेके बारेमें कुछ तेज टिप्पणी थी और उन्हें मिथ्यात्व-का प्रचारक बतलाया गया था, इसपर प. ले. ने पूछा कि क्या यह उसपर भी लागू होता है, क्या उसे भी समाचार-पत्र पढ़ना बंद कर देना चाहिये? इसपर माताजीने कहा—

पढ़ना बंद करनेकी आवश्यकता नहीं है। अबतक तुम्हें विवेक प्राप्त हो गया होगा।

४ फरवरी १९७०

२४३—सब कुछ हो सकता है

माताजी; इससे पहले कि मैं अपनी बातको कपोल कल्पना मान बैठूं, मैं आपको एक बात सुनाना चाहता हूं। दर्शनसे ठीक पहले मेरे गुदद्वारके पास टेनिसकी गेंद जैसा एक फोड़ा हो गया। चलना-फिरना भी कठिन हो गया। सोनेसे पहले मैंने आपसे कहा: "इससे काम न चलेगा। अगर यह बना रहा तो दर्शनके सारे सप्ताह मुझे बिस्तरपर पड़ा रहना पड़ेगा," मुझे इस बातकी संभावना-पर विश्वास नहीं होता लेकिन सवेरे जब मैं उठा तो फोड़ा अपने स्थानसे तीन इंच दूर हट गया था और मुझे चलने-फिरनेमें जरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी असुविधा न रही। दो एक दिनमें वह फट गया और अब सूख चुका है। अब भी मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या फोड़े इस तरह अपने स्थानसे हट सकते हैं।

सब कुछ हो सकता है, केवल तुम्हारा "तार्किक मन" सीमाएं बांधता है। मुझे तुम्हारे शरीरको उसकी ग्रहणशीलताके लिये बधाई देनी चाहिये।

प्रेम और आशीर्वादके साथ

२५ फरवरी १९७०

२४४—सीखनेका अवसर

माताजी; यहां आनेसे पहले मैं जर्मन सीखनेके लिये बहुत उत्सुक था परंतु कोई अवसर नहीं मिला। अब एक अवसर मेरा द्वार खटका रहा है। मैं उत्सुक नहीं हूं। बताइये क्या करूं?

अगर अवसर आया है तो इसका मतलब है कि यह कुछ उपयोगी हो सकता है।

प्रेम और आशीर्वाद।

२३ मार्च १९७०

२४५—माताजीके लिये निम्न प्रकारका आकर्षण

माताजी; एक कालिजका विद्यार्थी सामान्य जीवनसे बाहर निकलना चाहता है और प्रायः मुझे पत्र लिखा करता है। वह बहुत स्पष्ट-वादी है। वह कहता है कि वह आपके फोटोपर ध्यान एकाग्र करता है लेकिन हालमें उसने आपके लिए लड़के-लड़की जैसा आकर्षण अनुभव करना शुरू किया है। वह मेरी सलाह मांग रहा है।

हो सकता है कि कोई पुराना फोटो हो। उसे कोई हालका फोटो ले लेना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा उसे उस संवेदनको ऊपर खींचकर अपने हृदय-चक्रमें समर्पित कर देना चाहिये।

आशीर्वाद।

२१ अप्रैल १९७०

२४६—समझदारीकी बात

माताजी; मेरे अंदर एक भय उठ रहा है। यहां आनेसे पहले मेरे मनमें मनुष्योंका नेता बननेकी महत्त्वाकांक्षा थी और मैंने अपने-आपको उसके लिये तैयार करनेकी भी कोशिश की। जब मैं यहां आया तो यह सारी चीज वह गयी। अभी कुछ दिन पहले राम-कृष्णदास और प्रपत्ति मुझे पकड़ कर अपने युवा सम्मेलनमें ले गये और मुझे भाषण देना पड़ा। कहते हैं मेरा भाषण अच्छा था और उन लोगोंने निश्चय किया कि जब कभी उनके सम्मेलन होंगे तो मुझे बोलना पड़ेगा। मुझे भय है कि कहीं मेरी पुरानी महत्त्वा-कांक्षा नये रूपमें आकर मेरे अहंकारको न फुलाये। कृपया मुझे दूसरा 'क' बननेसे बचाइये।

तुम सुरक्षित हो। तुम्हें बस मेरी तरह यह याद रखना चाहिये कि जब कभी हम कोई समझदारीकी बात कहनेकी कोशिश करते हैं तो हमारे द्वारा श्रीअरविंद बोलते हैं।

मेरे प्रेम और आशीर्वादके साथ।

२ जून १९७०

२४७—ओरोवीलमें काम

मैं कुछ सप्ताह पहले ओरोवील गया था और वहांके लोगोंका काम देख कर बहुत खुश हुआ। हममें इतना काम कर सकनेवाले ज्यादा नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने जो लिखा है उसे पढ़कर मैं बहुत खुश हुई और मैं तुम्हारे साथ सहमत हूं। सब कुछ ठीक है।

प्रेम और आशीर्वादके साथ।

२३ जून, १९७०

२४८—'मदर्स ऐक्शन'

माताजी; मेरे कुछ अच्छे कार्यकर्ता मुझसे पूछते हैं कि क्या वे 'श्रीअरविंद ऐक्शन'[1] में जा सकते हैं? मैंने उनसे कहा है कि वे इस समय भी 'मदर्स ऐक्शन'के सदस्य हैं और उन्हें इसे छोड़कर दूसरेकी ओर भागनेकी जरूरत नहीं।

बिलकुल ठीक।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

२५ जून १९७०

२४९—पुरोधा और अग्निशिखा

माताजी; पुरोधाके आधे पृष्ठोंमें आपकी और श्रीअरविंदकी चीजोंके अनुवाद होते हैं और बाकीमें आपकी और श्रीअरविंदकी शिक्षापर आधारित लेख, कहानियां आदि। आपने मुझसे कहा था कि मैं क्या लिखता हूं इसका महत्त्व नहीं है। महत्त्व इस बातका है कि मैं किस चेतनासे लिखता हूं। अब कुछ मित्र आग्रह कर रहे हैं कि मुझे श्रीअरविंद ऐक्शनके साथ ताल-मेल बैठाना चाहिये। मैं इसका अर्थ नहीं समझ पाता। कृपया बतलाइये कि मैं अपनी नयी पत्रिका अग्नि[2] के लिये कौन-सी लीक अपनाऊं।

---

[1] श्रीअरविंदका काम करनेके लिये बनी एक नयी संस्था।

[2] दूसरी पत्रिकाका नाम माताजीने अग्नि ही चुना था परंतु सरकारी कारणोंसे वह नाम स्वीकृत न हुआ और उसका नाम अग्निशिखा कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च १९८७

कोई परिवर्तन नहीं, सब बिलकुल ठीक है।

अग्निके लिये—बच्चोंको यह शिक्षा देनी चाहिये कि जीवन सुन्दर हो सकता है।

प्रेम और आशीर्वादके साथ।

१७ जुलाई १९७०

२५०—हिन्दी और संस्कृत

Hindi is good only for those who belong to a Hindi speaking province, Sanskrit is good for all Indians.

हिन्दी केवल हिन्दी भाषी प्रदेशोंके लिये अच्छी है। संस्कृत सारे भारतीयोंके लिये अच्छी है।

१९७०

२५१—काम जारी रखो

माताजी; भोजनालयके विरोधमें एक आन्दोलन-सा चल रहा है और हमेशा एक ही स्थानसे शुरू होता है। मुझे किसी ऐसे आदमी-के पक्षमें निवृत्त होनेमें खुशी होगी जो मेरे आलोचकोंको स्वीकार हो ताकि बार-बार आपको परेशान न किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे बिना मुझे सारे समय परेशानी रहा करेगी। इसलिये मेरे लिये ज्यादा अच्छा है कि तुम अपना काम जारी रखो।

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

४ मई १९७१

२५२—राष्ट्रभाषा

प. ले. ने सुना था कि श्रीअरविंद हिंदीको राष्ट्रभाषा बनानेके पक्षमें थे। उसने माताजीसे पूछा, फिर आपने किस आधारपर कहा कि संस्कृत भारतकी राष्ट्रभाषा होनी चाहिये।

मैंने संस्कृत इसलिये कहा क्योंकि श्रीअरविंदने मुझसे यही कहा था।

आशीर्वाद।

१९७१

२५३—कामके लिये आवश्यक क्षमता

जब आश्रममें शारीरिक शिक्षणका महत्त्व बढ़ा तो कुछ लोगोंकी श्रद्धा डिगने लगी। उन्हें लगा कि यह तो योगाश्रमकी जगह व्यायामाश्रम होता जा रहा है। उनमेंसे एक कर्मठ व्यक्तिने माताजी-को लिखा कि उसका शारीरिक बल कम होता जा रहा है और वह अपना काम करनेमें असमर्थ होता जा रहा है। माताजीने प. ले. द्वारा उसे यह उत्तर भेजा:

यहां जो भी काम दिया जाता है, उसके साथ ही साथ, उसे जिस तरह करना चाहिये उसके लिये पूरा बल और भागवत कृपा भी दी जाती है। अगर तुम बल और कृपाका अनुभव नहीं करते तो यह प्रमाणित करता है कि तुम्हारी वृत्तिमें कहींपर कुछ भूल है। या तो श्रद्धाकी कमी है या तुम पुराने ढर्रे और पुराने पंथोंमें जा गिरे हो और इस तरह अपनी ग्रहणशीलता खो बैठे हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Here, for each work given, the full strength and Grace are always given at the same time to do the work as it has to be done. If you do not feel the strength and the Grace it proves that there is some mistake in your attitude. The faith is lacking or you have fallen back on old tracks and old creeds and thus you lose all receptivity.

1-10.52

निम्नलिखित पत्रोंकी तारीखका पता नहीं

२५४—कटुता

प. ले. ने दो व्यक्तियोंके बारेमें लिखा जो साथ काम करते थे परंतु एक दूसरेके प्रति बहुत कटु थे।

जीवनमें सभी कटुता **हमेशा** अहंकारके अपदस्थ होनेसे इंकार करनेसे आती है।

आशीर्वाद।

२५५—पार्थिव जीवनका उद्देश्य

पार्थिव जीवनका उद्देश्य है प्रगति करना। अगर तुम प्रगति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना बंद कर दो तो मर जाओगे। प्रगति किये बिना बीतता हुआ हर क्षण तुम्हें अपनी कब्रकी ओर ले जानेवाला कदम होता है।

२५६—कठिनाईमें माताजीका आश्वासन

मेरे प्यारे बालक;

तुम्हें छोड़ने देनेकी अपेक्षा तुम्हारे दिमागको साफ करना बहुत आसान है। दूसरा विकल्प तो एकदम असंभव है। मुझे यहांपर तुम्हारी जरूरत है और तुम्हें जाने देनेका कोई इरादा नहीं है। सच कहा जाय तो मैं यह मानती हूं कि मैंने तुम्हें जो जिम्मेदारी और काम सौंपा है उसे छोड़ना कहीं अधिक विश्वासघात होगा उन अप्रिय किंतु उड़ती हुई प्रतिक्रियाओंकी अपेक्षा जो कामके ब्योरोंमें अनिवार्य उतार-चढ़ावके कारण आती हैं।

अपने अंदर इस सारे विक्षोभको किसी विरोधी शक्तिके आक्रमण (परीक्षा) के रूपमें लो, कार्यकी व्यवस्थामें छोटे-मोटे परिवर्तनोंके कारण नहीं।

मैं आशा करती हूं कि तुम इस अस्तव्यस्ततामेंसे बाहर निकल आये हो। मैं यह सब तुम्हें इसलिये भेज रही हूं ताकि उसका कहीं नामो-निशान भी बचा न रहे....

प्रेम और आशीर्वाद सहित।

सचमुच प. ले. को बादमें इतना भी याद नहीं रहा कि यह किस विषयकी बात हो रही है।

२५७—सत्य देखना और खोजना

ऊपरसे दीखनेवाले विरोधोंकी परवाह न करो।

इनके पीछे सत्यको देखना, खोजना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५८—लालच

Greed for anything concerning physical conveniences, so called necessities and comfort of whatever nature these are — is one of the most serious obstacles to Sadhana. Each little satisfaction you get through greed is one step backward from the goal.

भौतिक सुख सुविधा, तथाकथित आवश्यकताओं और आरामोंके वारेमें —चाहे वे जिस तरहके क्यों न हों—लालच साधनाकी सबसे गंभीर बाधाओंमेंसे एक है। लालचसे प्राप्त हर छोटी-मोटी संतुष्टि लक्ष्यसे एक कदम पीछे हटना है।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५९—बतरस

किसी विभागमें कामके समय बहुत बतरस बंटा करता था। माताजीने एक संदेश भेजा :

—माताजी

For the sake of sadhana and for the sake of work it is always better to work silently

साधनाके लिये और कार्यके लिये, हमेशा चुपचाप काम करना ज्यादा अच्छा है।

—माताजी

२६०—छुट्टियां

विद्यालयके हिंदी विभागमें छुट्टियोंके बादकी सभामें भाषणोंका विषय था 'छुट्टियां'। विद्यार्थियोंने आग्रह किया कि प. ले. (जो उनका अध्यापक भी था) भी इस विषयपर कुछ बोले। उसने माताजीसे कहा, मैं छुट्टियोंके बारेमें सामान्य बकवास नहीं करना चाहता। कृपया बताएं कि मुझे क्या कहना चाहिये। माताजीने यह लिख कर उसे थमा दिया और कहा कि इसके आधारपर एक कहानी लिख डालो। बात शायद १९६० के आस पासकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च १९८७

Holidays

Shall we say holy days?
There are two kinds of them:
traditionally, the Lord for six days (or eons) worked to create his world and the seventh He stopped for rest, concentration and contemplation. This can be called the day of God.
The second one is the man, the creatures, during six days work for their personal interests and egoistic motives, and the seventh, they stop working to take rest and have time to look inwardly or upwardly, in contemplation of the source and origine of their existence and consciousness, in order to take a dip in It and renew their energies.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

It is scarcely necessary to mention the modern ~~way~~ manner of understanding the words for the things that is to say All the possible ways of wasting time in a futile attempt ~~of~~ at amusing oneself -

हॉलीडेज या छुट्टियां[1]

हम होलीडेज़ कह सकते हैं? इनके दो प्रकार होते हैं। एक मान्यताके अनुसार भगवान्ने छह दिन (या छह युग)तक काम करके यह सृष्टि बनायी और सातवें दिन विश्राम, एकाग्रता और ध्यान-चिंतनके लिये काम बन्द रखा। इसे भगवान्का दिन कहा जा सकता है।

दूसरे मनुष्य, भगवान्के बनाये हुए जीव छह दिनतक अहंकारमय उद्देश्योंके लिये और व्यक्तिगत हितोंके लिये काम करते हैं और सातवें दिन आराम करने और अपने अंदर और ऊपर देखनेके लिये समय निकालनेके लिये अपनी सत्ता और चेतनाके स्रोतका ध्यान करते और उसमें गोता लगाकर नयी शक्ति प्राप्त करनेके लिये काम बन्द रखते हैं।

---

[1]अंग्रेजीमें छुट्टीको हॉलीडेज़ कहते हैं और होली डे हुआ पवित्र दिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें शब्दको आधुनिक अर्थमें समझनेके ढंगके बारेमें कुछ कहनेकी शायद ही जरूरत हो, अर्थात् अपने मनोविनोदके व्यर्थके प्रयासके लिये हर संभव रूपसे समय नष्ट करना।

२६१—अनेक दृष्टिबिंदु

द्युमान आश्रमके एक विभागाध्यक्ष हैं। उनके साथ प. ले. का किसी बातपर मतभेद हो गया। आज उसका काल या संदर्भ याद नहीं है। प. ले. ने शायद सारी चीज माताजीके सामने रखी होगी। उसपर उत्तर मिला।

यह कहनेकी जरूरत नहीं कि तुम और द्युमान दोनों ही ठीक (या गलत) हो। ये प्रश्नके दो पहलू हैं। अन्य दृष्टिबिन्दु भी अपनाये जा सकते हैं।

एक बात ध्यानमें रखनेकी जरूरत है कि, कोई भी पूरी तरह ठीक या पूरी तरह गलत नहीं होता और इस या उस दृष्टिकोणके पक्षमें निर्णय नहीं किये जा सकते।

हर एक वही करे जो उसके अपने विचार या अपने अनुभवके अनुसार अच्छे-से-अच्छा हो . . . भागवत चेतना परिणामकी व्यवस्था कर लेगी।

आशीर्वाद

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

useless to say that you and Dyuman are both right (or wrong); it is two aspects of the question and other points of view can be adopted too.

The only thing to keep in mind is that nobody is completely right or completely wrong and decisions cannot be taken favouring this or that point of view.

Let each one do his best according to what he thinks or feels to be the best and ... the Divine Consciousness will manage the results.

blessings M.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च १९८७

२६२—सब कुछ ठीक हो जायेगा

Cheer up, all will be all right, if we know how to last and endure.
Love and blessings

उठो, खुश हो जाओ, सब कुछ ठीक हो जायगा, अगर हम टिके रहना और सहन करना जानें।

प्रेम और आशीर्वाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन किसी कारणसे प. लेखक बहुत उदास था। माताजी उसे अपने पास बिठाकर कुछ समझा रही थीं। पासमें ही एक रद्दी कागजका टुकड़ा पड़ा था। माताजीने उसे उठा लिया और बातें करते-करते फाउंटेन पेनसे हंसती हुई बिल्लीका यह चित्र बना कर उसे दे दिया। उदासी गायब हो गयी और हंसीके फव्वारे छूटने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी जगत्

श्रीअरविंद सोसायटीकी नारी परिषद्ने 'अवेकनिंग' नामक एक मासिक बुलेटिन प्रकाशित करना शुरू किया है। इस स्तंभमें हम इस बुलेटिनकी कुछ सामग्री दिया करेंगे। जिन्हें उसमें रस हो वे व्यवस्थापक 'अवेकनिंग', श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरीसे पत्र-व्यवहार करें। —सं०

पुरुष और स्त्री एक दूसरेके दास

...पारस्परिक संबंधमें पुरुष और स्त्री एक दूसरेके एक ही साथ निरंकुश स्वामी और कुछ दयनीय दास भी होते हैं।

हां, दास; क्योंकि जबतक तुम्हारे अंदर कामनाएं हैं, अभिरुचियां और आसक्तियां हैं, तबतक तुम इन वस्तुओंके और उन व्यक्तियोंके भी दास हो जिनपर तुम इन इच्छाओंकी पूर्तिके लिये निर्भर रहते हो।

अतएव स्त्री पुरुषकी दासी इसलिये है कि वह पुरुष और उसके बलका अनुभव करती है, उसके अंदर "घर" बसानेकी इच्छा होती है, वह घरसे प्राप्त होनेवाली सुरक्षाको चाहती है और अंतमें उसके अंदर मातृत्वके प्रति मोह भी होता है; इधर पुरुष भी स्त्रीका दास है अपनी अधिकार भावनाके कारण, शक्ति और प्रभुत्वकी अपनी तृष्णाके कारण, कामवासनाकी तृप्तिकी इच्छा, अपनी कामना तथा विवाहित जीवनकी छोटी-मोटी सुख-सुविधाओंके प्रति आसक्तिके कारण।

इसीलिये कोई कानून स्त्रियोंको तबतक बन्धनमुक्त नहीं कर सकता जबतक वे स्वयंको बन्धनमुक्त न करें; उसी तरह पुरुष भी अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमानेकी समस्त आदतोंके होते हुए भी तबतक दासतासे मुक्त नहीं हो सकते जबतक वे अपने अंदरकी सारी दासतासे मुक्त न हो जायें।

—माताजी

पूर्ण समानताकी स्थापना

. . . जबतक एक ऐसी नयी जातिको—जिसे प्रजननकी आवश्यकताके अधीन होनेकी जरूरत न हो और जो सत्ताके दो पूरक लिंगोंमें विभाजित होनेके लिये बाध्य न हो—उत्पन्न करनेके लिये प्रकृतिको प्रेरित करनेवाला नया विचार एवं नयी चेतना प्रकट नहीं हो जाते, तबतक वर्तमान मानवजातिकी उन्नतिके लिये अधिक-से-अधिक यही किया जा सकता है कि पुरुष और स्त्री दोनोंके साथ पूर्ण समानताका व्यवहार किया जाय, दोनोंको एक ही शिक्षा तथा प्रशिक्षा दी जाय तथा दिव्य वास्तविकताके साथ, जो कि समस्त लिंग-भेदोंसे ऊपर है, सतत संपर्क स्थापित करके समस्त संभावनाओं और समस्त समस्वरताओंके उद्गमको प्राप्त करना सिखाया जाय।

—माताजी

भारतमें नारी

यह देखने लायक है कि प्राचीन भारतमें कम-से-कम कानून और सिद्धांतके अनुसार, अन्य प्राचीन प्रजाओंकी भावनाओंके विपरीत, स्त्रियोंको सामाजिक अधिकारोंसे वंचित नहीं किया गया था। यद्यपि व्यवहारमें उनके घरेलू धंधोंके कारण उसकी समानता नगण्य रह गयी थी। अब भी ऐसे उदाहरण मिल जाते हैं जिनमें नारियां केवल रानियों या प्रशासकोंके रूपमें नहीं, भारतीय इतिहासमें कई बार युद्ध क्षेत्रमें भी, बल्कि नगरपालिकाओं आदिमें चुने हुए प्रतिनिधियोंके भी रूपमें प्रकट होती हैं।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल या...?

कलकत्तेके पास एक जगह है उत्तरपाड़ा।

जेलसे छूटनेपर श्रीअरविंदने अपना पहला भाषण उत्तरपाड़ामें दिया। यह तो तुम जानते ही होंगे कि श्रीअरविंद एक साल जेलमें रहे थे।

उनका क्या कसूर था? कुछ भी नहीं। बस यही कि अंग्रेज सरकार उनसे बहुत डरती थी। उसे डर था कि वे उसका अन्त नजदीक ला रहे हैं। उन्हें सालभर जेल में रहना पड़ा, उसमेंसे कुछ समय एकांतवासमें।

तुम शायद पूछो कि एकांतवास क्या होता है?

एकांतवासका मतलब है एकदम अकेलेमें रहना। एकांतवासमें उन्हें अकेला रहना पड़ता था। आसपास कोई नहीं। उन्हें कभी बाहर आंगनमें टहलने भी न दिया जाता था। हां, बादमें उन्हें शामके समय जरा-सा टहलनेकी इजाजत मिल गयी थी। हमारे तुम्हारे तो यह सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसी हालतमें एक दिन रहना भी मुश्किल है।

लेकिन श्रीअरविंद महान् हैं। वे हमें यह दिखा रहे हैं कि आदमी सब कुछ कर सकता है। कठिनाइयोंसे उसे भागना नहीं चाहिये, वे आयें तो धीरजके साथ उनका सामना करना चाहिये।

हजारों लोग जेल जाते हैं। क्या वे जेल जाकर कुछ प्राप्त करते हैं? नहीं, ऐसे बहुत कम होते हैं। श्रीअरविंद जेल जाकर एक बहुत बड़ी चीज लाये। वे अपने जीवनके सत्यको खोज लाये।

जेलमें एक साल बिता आनेपर उन्होंने उत्तरपाड़ामें अपने जेलके अनुभव सुनाये। वहांकी बातें बतायीं और बताया कि जब उन्हें अपने चारों तरफ अंधेरा दीखता था भगवान्ने यकायक उजाला कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा बच्चो, बताओ यदि तुम्हें कभी स्कूलमें या और कहीं भाषण देनेके लिये कहा जाय तो तुम क्या करोगे? पहले जो कुछ कहना है उसे लिख लोगे और फिर अपने लेखको दो-चार बार ठीक तरह पढ़ जाओगे। तुम्हें डर लगा रहेगा कि कहीं तुम बीचमें ही भूल न जाओ और सबके सामने तुम्हारी हंसी न उड़े। और यदि भाषण देनेसे पहले कोई तुमसे कहे कि अच्छा आज इस विषय-पर न बोलकर किसी दूसरे विषयपर बोलो तो क्या तुम स्वीकार करोगे? शायद कभी नहीं। तुम्हारे मनमें तरह-तरहके विचार उठेंगे —यदि अटक गया तो! एक बार रुक जानेपर क्या होगा? आदि...

श्रीअरविंदके साथ ऐसा ही हुआ। वे कहनेवाले थे हिंदूधर्मके बारेमें किंतु सुनाने लगे अपने जेलके अनुभव, क्योंकि भगवान्‌का यही आदेश मिला था।

श्रीअरविंदके जेल जानेके समय देशके लोगोंमें बहुत उत्साह था। भारतको आजाद करनेके लिये वे बहुत कुछ कर रहे थे। उस समय भारत मानों एक समुद्र था जिसमें भारतवासी लहरोंके समान काफी ऊंचे उठ रहे थे। उनके मनमें जोश भरा था। लेकिन जेलसे निकलनेपर श्रीअरविंदने सब कुछ उल्टा देखा। समुद्र शांत हो चुका था। ऐसा लगा मानों भारत फिरसे सो गया हो।

लेकिन क्या वे यह सब देखकर हताश हुए?

जरा भी नहीं। उन्होंने सोचा जो शक्ति कोलाहल लायी थी वही इस शांतिको भी लायी है। शायद यह समय भारतके सोचने-का है। कोई बड़ा काम करनेसे पहले हम सोचते हैं, सोचते समय बाहरसे देखनेमें ऐसा लगता है मानों हम समय नष्ट कर रहे हैं। शायद भारतके लिये वही समय था।

जेलसे बाहर जानेपर उन्हें कोई भी बड़ा नेता मैदानमें न दिख-लायी दिया लेकिन वे निराश न हुए। क्योंकि उन्हें सब जगह ईश्वरकी कृपा दिखायी देती थी। लेकिन मैं तो पीछे की बात पहले सुनाने लग गयी। अब जरा मेरे साथ वापिस चलो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन मईकी दूसरी तारीख थी। श्रीअरविंद अभी सोकर भी न उठे थे कि पुलिस उन्हें पकड़ने आ गयी और किसी बमके मामलेमें उन्हें लालबाजार थाने ले जाया गया। उस समय श्रीअरविंद इस रहस्यको न समझ पाये। बच्चो, जरा कल्पना करो तुम्हें कोई कच्ची नींदमें जगा कर सीधा थानेमें ले जाये तो तुम क्या करोगे?

शांत स्वभावके श्रीअरविंद ऊपरसे कुछ न बोले, लेकिन उन्होंने मन-ही-मन भगवान्से पूछा, भगवन्! यह क्या? मुझे अपनी मातृभूमिके लिये बहुत कुछ करना है। जेल चले जानेपर मैं अपने कामोंको कैसे कर पाऊंगा? क्या अब मैं अपने देशके भाइयों और मातृभूमिके लिये काममें न आ सकूंगा? स्वाभाविक ही था कि उस हालतमें ऐसे विचार मनमें आयें।

हम जानते हैं कि भगवान् अपने बालकोंका दुःख नहीं देख सकते। अगर तुम उनके सच्चे बालक हो और किसी मुसीबतमें पड़े हो तो भगवान् दौड़े-दौड़े तुम्हें बचाने आयेंगे। तुमने ऐसी कितनी ही कहानियां सुनी होंगी। सुनी हैं न? हां, तो श्रीअरविंदने ज्यों ही उन्हें बुलाया, वे तत्क्षण उपस्थित हो गये और बोले, ठहरो, और देखो क्या होता है।

स्वयं प्रभुकी आवाज सुनकर उनका मन एकदम शांत हो गया।

पहले उन्हें एक महीनेतक एक अलग कमरेमें रखा गया। कमरा क्या, काल कोठरी समझो। वहां न कोई बात करनेवाला था और न कुछ पढ़नेकी सामग्री थी। ऐसे समय श्रीअरविंदने फिरसे भगवान्की वाणी सुननेकी कोशिश की। मन एकदम शांत कर वे अंदरके भगवान्को खोजनेमें लग गये। और जानते हो उन्होंने क्या खोजा?

भगवान्ने उनसे कहा, मैं तुम्हें किसी और कामके लिये इस धरतीपर लाया हूं। राजनीतिके कामको बढ़ानेके लिये अब और लोग आएंगे।

जेलमें एक सालमें भगवान्ने उन्हें बहुत कुछ समझाया और उनके हाथोंमें गीता पकड़ा दी।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Selfishness kills the soul; destroy it. But take care that your altruism does not kill the souls of others.

Sri Aurobindo

ASSAM TEA

WAREHOUSING

CORPORATION

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*"Live in his Being, Shine with His Light,
Act with His Power, Rejoice with His Bliss."*

The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast Packagings Private Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 *Telex:* 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

Works:

PLOT No. G. 1/3 MIDC AREA, BOISAR,
DIST. THANE MAHARASHTRA

Phones: 682, 491, 591 *Telex::* 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

अप्रैल १९८७ वर्ष १७, अंक ९, पूर्णांक २०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश

संपादकीय : अर्पण — १

अनुबेन

दैनन्दिनी — २

ऋषिवर बोले : डाकू — ३

वन्दना

श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना-पद्धति — ६

अतिमानसिक योग — १२

सोसायटी समाचार — १५

श्रीअरविंद सोसायटीका मुकद्दमा — ३४ ३५

कृपया चेक न भेजें, उसमें बहुत असुविधा होती है। ड्राफ्ट, धनादेश या पोस्टल आर्डर भेज सकते हैं। अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

संपर्क : संपादक अग्निशिखा एवं पुरोधा, पांडिचेरी–६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेश

Above all preferences we want to be at the service of the Divine.

सभी पसंदोंसे ऊपर, हम भगवान्‌की सेवामें रहना चाहते हैं।

*

भगवान्‌की सेवामें रहना उपलब्धि पानेका सबसे निश्चित साधन है।

—श्रीमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

अर्पण

एक सज्जनकी चिट्ठी आयी है जो श्रीअरविंद सोसायटीकी ओरसे एक्यू प्रेशर आदि द्वारा जनताकी सहायता करते हैं। वे अग्नि-शिखामें छपे श्रीअरविंदके उस पत्रका उल्लेख करते हैं जिसमें कहा गया है कि परोपकार करना, देश सेवा या समाज सेवा हमारा ध्येय नहीं है। इस पत्रको पढ़कर उनके मनमें यह प्रश्न उठ रहा है कि कहीं वे उल्टी राहपर तो नहीं चल रहे, क्या उन्हें ये सब जन सेवाके कार्य बन्द कर देने चाहियें ?

हमें हर वस्तुको उसकी गहराईमें जाकर देखना चाहिये। श्रीअरविंदकी यह चिट्ठी आश्रमके एक ऐसे साधकको लिखी गयी थी जिसने अपने जीवनका सर्वप्रथम ध्येय ईश्वर प्राप्ति और रूपांतरको माना होगा। उसे माताजीका सान्निध्य और प्रत्यक्ष रूपमें उनकी सेवाका, उनके आदेश-पालनका अवसर प्राप्त था। उसके लिये किसी और मार्गकी जरूरत न थी। किंतु जो सांसारिक जीवन जीते हैं, जिन्हें दिन रात एक कर के अपनी रोजी रोटी कमानी पड़ती है उनके लिये परोपकार, देश सेवा और समाज सेवा अपने संकीर्ण और सीमित दायरेसे बाहर निकलनेका एक अवसर देते हैं। इनसे उन्हें निःस्वार्थ कार्यके आनंदका अनुभव प्राप्त होता है और इस तरह उनका व्यक्तित्व विकसित होकर परिवारके स्वार्थसे निकल अधिक विस्तृत, उदार समाज रूपी परिवारमें प्रवेश करता है।

हमें यह याद रखना चाहिये कि श्रीअरविंदके मतानुसार समस्त जीवन योग है और घर-बार और सांसारिक जीवनका भार वहन करनेवाला गृहस्थ भी राजा जनककी तरह योग कर सकता है अगर वह अपना प्रत्येक कार्य भगवान्को समर्पित करे और हर क्षण उनका स्मरण कर सके, क्योंकि प्रकृतिका लक्ष्य है मनुष्यको भगवान्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर ले जाना। उस कार्यमें हम सहायक तब हो सकते हैं जब हम सचेतन रूपसे उसमें योगदान दें। भगवान्‌की दृष्टिमें किसी कार्यका अपने-आपमें कोई महत्त्व नहीं है। फर्श बुहारना, अफसरी करना, समाज सेवा सबका मूल्यांकन एक ही मापदंडसे होता है। वह है उस कार्यके करते समय हम किस भावसे काम करते हैं। अगर हम भगवान्‌की सेवा समझ कर कार्य करें तो हम पाएंगे कि हम हर क्षण प्रगति कर रहे हैं। हमारे जीवनका मुख्य उद्देश्य यही तो है। लेकिन अगर हम यजन-याजन, पूजा, दान आदि भी अहंके साथ करें तो उसका भी कोई मूल्य नहीं होता।

हमारे लिये एकमात्र उपाय यही है कि हम जो भी कार्य करें, माताजीको अर्पित करते चलें।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

अप्रैल

१. अपनी अभीप्साको उत्कट और निष्कपट बनाए रखो, यह कभी न भूलो कि तुम भगवान्‌की संतान हो। यह तुम्हें किसी भी ऐसे बर्तावसे रोकेगा जो भागवत बालकोंके लिये अयोग्य हो।

२. अंतहीन ग्रहणशीलता और दिव्य शक्तिके अधिकाधिक जोरदार और शक्तिशाली कार्यको सहनेकी क्षमता बढ़ती रहनी चाहिये, वरना कोई महान् या उल्लेखनीय कार्य नहीं हो पाता।

३. हम प्रकृतिके जिस दिव्यीकरणकी बात करते हैं वह है रूपांतरकी, केवल किसी तरहकी परम मानव जातिके विकासकी बात नहीं है बल्कि हमारी अज्ञानमय प्रकृतिके मिथ्यात्वमेंसे भागवत प्रकृतिके सत्यमें परिवर्तनकी बात है।

४. पार्थिव जगत्‌में दिव्य चेतनाको उतारना सबसे कठिन कार्य है। क्या इस कारण हमें प्रयास करना छोड़ देना चाहिये? निश्चय ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. दिव्य चेतना तुम्हारा रूपांतर करनेमें लगी है। तुम्हें उसकी ओर खुलना चाहिये ताकि वह तुम्हारे अंदर स्वतंत्र हो कर कार्य कर सके।

६. सच्ची आध्यात्मिकता जीवनका रूपांतर कर देती है।

७. शिक्षाका पहला सिद्धांत यह है कि कुछ भी सिखाया नहीं जाता। शिक्षक शिक्षा देनेवाला या कठोर अधिकारी नहीं है, वह सहायक और मार्ग-दर्शक होता है।

८. एक बालकको शिक्षक या मां-बापकी इच्छाके अनुसार ठोक-पीटकर आकार देना जंगली और अज्ञानी अंध विश्वास है।

९. पहला कार्य होना चाहिये बच्चेके जीवनमें, कार्य और ज्ञानमें रस जगाना! उसके ज्ञान-प्राप्तिके साधनोंका पूरी सावधानीसे विकास करना और वह जिस साधनका उपयोग करे उसपर उसका पूरा अधिकार होना चाहिये।

१०. विशाल मन, उदार हृदय, अटल इच्छा-शक्ति, शांत, स्थिर निश्चय, अथक शक्ति और अपने कार्यमें पूर्ण विश्वास।

११. दुःख और दर्दके द्वारा प्रकृति आत्माको यह याद दिलाती है कि वह जिस सुखका भोग कर रही है वह अस्तित्वके सच्चे आनंदका संकेत मात्र है।

१२. हमारी सत्ताके हर दुःख और यातनामें परमानंदकी लौ का रहस्य छिपा है जिसकी तुलनामें हमारी बड़ी-से-बड़ी खुशियां केवल झिलमिलाहट हैं।

१३. यही है वह रहस्य जो हमारी आत्माके लिये बड़ी अग्नि-परीक्षाओं, दुःखों और जीवनके भयावह अनुभवोंके आकर्षणका रूप लेता है जिनसे हमारा विकल मन भागता और घृणा करता है।

१४. न भगवान् प्रकृतिकी ओर झुकनेसे रुक सकते हैं और न मनुष्य देवत्वकी ओर अभीप्सा करनेसे। यह सांतका अनंतसे शाश्वत रिश्ता है। जब ऐसा लगता है कि वे एक दूसरेसे विमुख हो रहे हैं तो वह अलगाव अधिक अंतरंग मिलनके लिये होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. अपने जीवनको उपयोगी बनाओ।
१६. अपने जीवनको सत्यकी निरंतर खोज बना दो और वह जीने योग्य होगा।
१७. अपनी उच्चतम अभीप्साको तुम अपने जीवनको व्यवस्थित करने दो।
१८. हमारा सारा जीवन एक प्रार्थना होनी चाहिये जिसे हमने भगवान्के अर्पित किया है।
१९. हर सुबह उठनेपर हम पूर्ण समर्पणके दिनके लिए प्रार्थना करें।
२०. सहृदय, सच्ची पुकार सुनी जाती हैं और उन्हें प्रत्युत्तर मिलते हैं।
२१. जब हम अपनी निराशामें भगवान्को पुकारते हैं वे हमेशा हमारी पुकारका उत्तर देते हैं।
२२. हम भगवान्से प्रार्थना करें कि वे हमारी कृतज्ञताकी तीव्र लौ और पूरी विश्वासपूर्ण और आनंदपूर्ण आज्ञाकारिताको स्वीकार करें।
२३. मेरा हृदय शांत है, मेरा मन अधीरतासे मुक्त है और सब बातोंमें एक बालकके मुस्कुराते विश्वासके साथ मैं तेरी इच्छापर निर्भर रहता हूं।
२४. मेरे प्रभु, मुझे सब घमंडोंसे मुक्त कर; मुझे नम्र और सहृदय बना।
२५. हे प्रभु, मुझे भय और चितासे मुक्त कर ताकि मैं अपनी सर्वाधिक क्षमतासे तेरी सेवा कर सकूं।
२६. प्रभु, मेरे ऊपर यह कृपा कर कि मैं तुझे कभी न भूलूं।
२७. मेरे प्रभु, मधुर मां, तुम्हारी शक्ति मेरे साथ है। तुम्हारी ज्योति, तुम्हारा प्रेम और तुम मुझे सब मुसीबतोंसे बचा लोगे।
२८. परम प्रभु, हमें नीरव रहना सिखा ताकि नीरवतामें हम तेरी शक्तिको ग्रहण कर सकें और तेरी इच्छाको समझ सकें।
२९. समस्त हिंसाको शांत कर दे, तेरे प्रेमका शासन हो।
३०. हे मेरे प्रभु, तेरे प्रेम और तेरी कृपाके रहते डरनेकी क्या बात है! तू परम संरक्षण है जो सारे शत्रुओंको पराजित करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर बोले :

डाकू

(एक प्रतीकात्मक कहानी)

नहीं, वंदना दीदी, आज हम आपकी एक न चलने देंगे। वर्षके ३६४ दिन तो आप हमपर हुकुम चलाती हैं, आज हमारी वारी है। आज तो आपको शिशुवत् व्यवहार करना चाहिये।

अच्छा तो लो, मैं शिशुवत् लेट जाती हूं और ज्यादा-से-ज्यादा ऊं आं कर दूंगी इससे ज्यादा कुछ नहीं।

जी, हम आपकी इन सब चालाकियोंके लिये तैयार हैं। अब सीधी तरहसे एक अच्छी-सी कहानी सुनाना शुरू कर दीजिये वरना आपका, हमारा और ऋषिवरका, सभीका समय नष्ट हो रहा है।

अच्छा बाबा लो, तुम जीते और मैं हारी। कलिकाल है न, 'संघे शक्तिः कलौ युगे'। मैं शुरू करती हूं महारानी लक्ष्मी बाईसे। लेकिन यह प्रचलित कहानीसे भिन्न है जिसका अर्थ तुममेंसे कोई बूझेगा। महारानीके समय झांसीमें एक डाकू रहता था। बड़ा डील-डौल, बड़ा खूंखार, उसकी नजर बड़े बड़ोंकी टांगें लड़खड़ा देती थी। रानीने उसे पकड़नेके लिये सेना भेजी परंतु अकेला डाकू सेनाके हाथ न आया। अब रानीने नयी तरकीब की। अपनी दो सुन्दर सखियों-को साथ लेकर जंगलकी ओर चल पड़ीं। डाकूसे आंखें चार हुईं, रानी दृढ़ और शांत, रानीकी सुन्दर सखियोंने अनुभव किया मानों लक्ष्मीबाईकी वह निर्भीकता उनके अंदर भी अधिकाधिक साहसको जगा रही है। उधर उस खूंखार डाकूकी समझमें न आया कि जहां बड़े-बड़े दिग्गजोंको उसने गाजर मूलीकी तरह काट डाला है वहां आज अचानक इन तीन नारियोंका सामना होनेपर अंदर ही अंदर उसका कलेजा क्यों कांपा जा रहा है...? उसके शरीरसे पसीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों छूट रहे हैं और हाथ अस्त्रोंका भार उठानेमें एकाएक असमर्थ क्यों हो उठे हैं?

रानीकी हृदयवेधिनी दृष्टिने डाकूके अंतर्तमको बींध दिया—कैसा अजीब युद्ध! न तलवारें टकरायीं, न शस्त्र खड़खड़ाये और शत्रु पराजित हुआ जा रहा है! रानी मंद-मंद मुस्करा रही थीं। उनका वह हास क्रूर विजेताका नहीं बल्कि मां भगवतीका सबपर करुणा बरसानेवाला पवित्र हास था। दिग्गज डाकूने छिन छिन पराजित होते हुए भी अहंके कारण अपनी पराजय स्वीकार न की। अपने अंदरकी सारी शक्ति बटोरकर क्रूर दृष्टिसे रानीकी ओर देखा लेकिन यह क्या? आंखे चार होते ही उसकी दृष्टि चौंधिया गयी। साक्षात् महादुर्गाकी आंखोंमें आंखें डालनेकी धृष्टता कर बैठा वह! बेहोश होते-होते अचानक वह जोरसे हुंकारा और पलटकर रानीकी दोनों सखियोंको घूरा, सखियां सकपकायीं, उनकी निर्भीकतामें दरार पड़ गयी, उधर डाकूकी उखड़ी हुई सांस मानों सामान्य होने लगी, वह संभल उठा, 'हां, अपनी जान बचानेके लिये मुझे इन्हीं सुन्दरियोंकी ढाल बनानी होगी।' डाकू यह सोच मूंछों-ही-मूंछोंमें मुस्कुरा उठा —रानीकी दोनों सखियां डाकूकी एक नजरसे डगमगा उठीं, अभी-अभी प्राप्त निर्भीकता कछुएकी भांति अपने खोलमें सिमटने लगी—भयको प्रवेश द्वारमें दरार मिल गयी थी...

सखियां डगमगाने लगीं, डाकू अपना बल पाने लगा। रानीकी भृकुटि एक क्षणके लिये चढ़ी और पलक झपकते न झपकते उन्होंने दोनों सखियोंको स्पष्ट स्वरमें दृढ़ताके साथ पुकारा, सखियां चेतीं, मानों तुरंत होशमें आ गयीं, एक बार फिर साक्षात् निर्भीकता बन डाकूकी आंखोंमें दहशत घोलने लगीं। "महारानीकी जय" "महारानी लक्ष्मीबाईकी जय"की जयजयकारोंसे जंगल गुंजा दिया महारानीकी सखियोंने। डाकूके अंतिम अस्त्र भी छिटक चुके थे। वह तुरंत महारानीके चरणोंमें गिर पड़ा। रानीने उसे प्यारसे उठाकर अपने अंकमें भर लिया, डाकू रोकर कह उठा, 'महारानी, आजसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका यह दास हर पल आपका हुकुम बजायेगा।'

रानी गद्गद् हो बोल उठीं, 'तुम्हारा यह निर्णय मेरे आनंदका बांध तोड़ रहा है, आजसे तुम मेरी सेनाके सेनापति बने, मुझे तुम जैसे वीरोंकी जरूरत है।'

डाकूके समर्पणके बादसे सखियां अपने अंदर एक अवर्णनीय आनंदका, एक स्पष्टताका अनुभव कर रही थीं। राजमहल लौटनेके लिये सबने अपने घोड़े मोड़ दिये, रानी ठिठकीं, हंसकर बोलीं, 'सेनापति, आज ही तुम्हारी परीक्षा है। बोलो, स्वीकार है?'

'जो आज्ञा महारानी।'

'सुना है इस जंगलके छोरपर हमारी सल्तनतका सबसे घाघ डाकू रहता है, कइयोंको लूट चुका है, हजारोंपर धावा बोल चुका है, उन्हें तहस-नहस कर डाला है लेकिन ताज्जुब है इस लूटमारमें बाहरी दृष्टिसे न खून-खराबा होता है न तलवारें चलती हैं...'

सब हैरान! काफी दूर चलनेके बाद अचानक सबको कुछ परिवर्तन-सा महसूस होने लगा, नयी खुशनुमा बहार चलने लगी, सब उस वातावरणमें कुछ-कुछ बौरा-से उठे। सब? नहीं, महारानीके स्थिर चित्तको शायद भगवान् भी नहीं डिगा सकते थे। अचानक सामने एक खूबसूरत महल चमकता दीखा, महलके बाहर जगमगाते लट्टुओंकी बारात सजी थी, बाहर यह शान-शौकत तो अंदरका नजारा तो आंखें चौंधियानेवाला होगा। कोई अदृश्य डोर उन्हें बरबस महलकी ओर खींचने लगी।

अचानक रानीकी धीर-गंभीर वाणी सुनायी दी, 'यही उस दस्युका महल है जिसकी हमें खोज थी, लेकिन अंदर चलनेसे पहिले मैं तुम सबको स्पष्ट रूपसे यह बतला दूं कि दस्युओंके इस दस्युसे पग-पगपर बहुत ही सावधान रहना, इसके पास एक नहीं सैंकड़ों जाल हैं सीधे-सादे मनुष्योंको फंसाकर ठगनेके।'

इतना कह रानीने घोड़ेको एड़ लगायी, सेनापति और सखियां पीछे हो लिये। द्वारपालोंने अतिथियोंका स्वागत किया और सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें राजमहलके मुख्य कक्षमें ले आये, सेनापति और सखियां अंदर-की चकाचौंध देख सचमुच पलक झपकाना भूल गये, झाड़-फानूसोंसे निकलती नीली-पीली रोशनियोंमें वे डूबने-उतराने लगे। पृष्ठ-भूमिमें बजता संगीत उन्हें मदहोश किये जा रहा था, अचानक दस्यु महाराज अतिथियोंको देख उनकी अगवानीके लिये उठे—'आइये, आइये, अतिथिगण, अरे महारानी लक्ष्मीबाई,' दस्युकी आवाज लड़-खड़ाई, लेकिन अगले ही क्षण वह संभल उठा, उसने अपना पहला पांसा फेंका—'महारानी, आज सचमुच मेरे भाग्य जागे जो आप इस नीचके महलमें पधारीं, लेकिन आपने भला क्यों कष्ट किया, मुझे बुला लेतीं, मैं आपका दास तुरंत हाजिर हो जाता।'

रानी मंद-मंद मुस्कुरायीं फिर बोलीं, 'दस्युराज, आज हम यूं ही वन भ्रमणको निकले थे, घूमते-घामते यहांतक आ पहुंचे!

'धन्य हूं रानी, मैं सचमुच धन्य हुआ! आइये, भोजन तैयार है, ग्रहण कीजिये।'

'नहीं दस्युराज, पहले मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहती हूं।'

दस्युके शरीरमें एक सिहरन दौड़ गयी लेकिन ऊपरसे अचंचल वाणीमें बोला—'ठीक है महारानी।'

सभासद उठकर बाहर चले गयें। सबने आसन ग्रहण किया। रानीने स्पष्ट वाणीमें कहा—'दस्युराज आज, मैं तुम्हारे महलमें किसी कार्यके लिये आयी हूं, मैं चाहती हूं कि तुम आत्मसमर्पण कर दो, समय आ गया है, अब डाके, लूटमारका अंत होना चाहिये।'

दस्युकी त्यौरियां कुछ चढ़ गयीं, महारानीकी आंखोंमें सीधा देखनेका खतरा न मोल ले सकता था, दृष्टि नीची कर बोला—'यह क्या महारानी, मेरे चरमोत्कर्षके समय आप आत्मसमर्पणकी बात कर रही हैं। नहीं नहीं, मुझे यह कतई स्वीकार नहीं।' फिर तुरंत महारानीकी सखियोंसे आंखें चार करता हुआ बोला, 'क्यों मैंने ठीक कहा न?' दोनों सखियां उस चकाचौंधके जालमें बुरी तरह फंस चुकी थीं, दस्युने चैनकी सांस ली, वह उठकर चलने लगा, सखियां भी पतंगकी डोरकी न्याई उसके पीछे हो लीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानीने पुकारा, 'सखियो, लौट आओ, यह तुम्हें भूल-भुलैयामें ले जा रहा है।'

सखियां मानों रानीकी आवाजके प्रति बहरी हो गयी थीं।

डाकू हंसा, और सखियोंके साथ अदृश्य हो गया, वापिस आया तो अकेला था, इस बार उसने सेनापतिको घूरा, सेनापतिके शरीरमें बिजलीकी लहर दौड़ पड़ी, रानीने उसका हाथ पकड़ कर दबाया, सेनापतिने गरज कर कहा, 'दस्युराज, रानीकी सखियोंको छोड़ दो वरना युद्धके लिये तैयार हो जाओ।'

दस्युराजने हुंकार भरी, उसे अपने बलपर गहरा विश्वास था, 'अरे सेनापति, जान प्यारी है तो तलवार म्यानसे बाहर मत निकालना . . .।'

सटाक्, सेनापतिकी तलवार उसके हाथमें चमक रही थी। सटाक् दस्युराजने म्यानसे तलवार खींची। महारानी निश्चल अटल खड़ी रहीं।

घमासान युद्ध हुआ, कई घंटोंतक चला, दोनोंका बल अब क्षीण हो चला था, अचानक सेनापतिने महारानीकी ओर कातरतापूर्ण दृष्टिसे देखा, बलका ओघ उसके अंदर उमड़ पड़ा और अगले ही क्षण दस्युराज महारानीके चरणोंमें था। आश्चर्य, महलकी नीली-पीली रोशनियां सुनहरी हो उठीं। इतनेमें सखियां दौड़ती हुई आयीं और रानीके चरणोंमें लोट गयीं। दस्युराजने अश्रुपूर्ण वाणीमें कहा—'महारानी क्षमा। आज मेरा जीवन सफल हुआ।'

इतना कह वंदना दीदी चुप हो गयीं। सबकी आंखें उनके चेहरे-पर टिकी थीं। अचानक मीरा बोल उठी, 'यह तो प्रतीकात्मक कहानी जान पड़ती है, मेरी समझमें बात पूरी-पूरी न आयी।'

वंदना दीदी मुस्कुरायीं, प्रश्नभरी दृष्टिसे हर चेहरेको देखा, कुछ क्षण चुप्पी छायी रही, अचानक सीमाकी आंखें जुगनू-सी चमकने लगीं। उत्साहसे पगे शब्दोंमें बोली—'मैं समझी, बताऊं।'

'कहानी सचमुच प्रतीकात्मक है—अंतरात्मा, मन, प्राण और मनुष्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कहानी। महारानी लक्ष्मीबाई हैं अंतरात्मा, पहला डाकू जो उनका सेनापति बना, वह हुआ मन, दूसरा डाकू है प्राणका प्रतीक और सखियां हैं शरीरका प्रतीक। मन और प्राण मनुष्यपर डाका डालते हैं, उन्हें लुभाते हैं और अपने जालमें फंसाकर आत्मासे दूर कर देते हैं, कभी मनुष्य मन तो कभी प्राणके हाथों कठपुतलीकी तरह नाचता रहता है। वह उस चकाचौंधको ही अपना ध्येय मान बैठता है। यहां मन, जिसने अंतरात्माको समर्पण कर दिया था, शरीरको प्राणके चंगुलसे बचा लाया।'

'वाह सीमा वाह' ऋषिवर उसकी पीठ थपथपाते हुए बोले। 'तूने तो १०१ नंबर पा लिये।'

मंजुला जो कुछ सोचमें डूबी थी बोल पड़ी, 'तो ऋषिवर यह तो हर मनुष्यके अंदरकी कहानी है, हर क्षणकी कहानी, जब मनुष्यको यह निश्चय करना पड़ता है कि वह मन या प्राणके हंकाये हंकेगा या अंतरात्माकी मधुर आवाजपर कान देगा।'

'बिल्कुल ठीक'। सुधाकर दार्शनिक भावसे बोल उठा।

'तो बच्चो, अब इस सभाको यहां समाप्त करें—'

सब उठ खड़े हुए। जाते-जाते सुधाकर बोल उठा, 'वन्दना दीदी, बहुत बढ़िया कहानी सुनायी, समय समयपर ऐसी कहानी सुनाती रहा करिये। अच्छा ऋषिवर, अब इस कहानीको अपने जीवनमें उतारनेका प्रयास करें तो बात कुछ बने।'

—वन्दना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदकी शिक्षा और साधना-पद्धति

अभीप्सा है शक्तियोंको बुलाना। जब शक्तियां उत्तर दे दें तो फिर स्थिर ग्रहणशीलताकी घन किंतु सहज स्वाभाविक स्थिति रहती है।

*

हो सकता है कि उच्चतर चेतना अभीप्साके अनुसार न आये, परंतु अभीप्सा निष्फल नहीं होती। वह चेतनाको खुला रखती है, जो कुछ भी आ जाय उसके आगे मौन स्वीकृतिकी अवस्थाको रोकती है और उच्चतर चेतनाके स्रोतोंपर एक प्रकारसे खींचनेकी क्रिया करती है।

*

स्वभावतः अभीप्सा जितनी एकाग्र होगी उतनी ही तेज प्रगति होगी। कठिनाई तब आती है जब प्राण अपनी कामनाओंसहित या भौतिक अपनी पिछली अभ्यासगत गतिविधियोंके साथ आता-जाता है—जैसा वे प्रायः सभीके साथ करते हैं: तब सहज अभीप्साकी शुष्कता और कठिनाई आती है। समस्त साधनामें यह शुष्कता जानी मानी बाधा है। लेकिन तुम्हें उसे रखना चाहिये और हतोत्साह न होना चाहिये। अगर इन निष्फल अवधियोंमें भी अपने संकल्पको दृढ़ रखो तो ये चीजें चली जाती हैं और उनके जानेके बाद अभीप्साकी ज्यादा बड़ी शक्ति और अनुभूति संभव होती है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीप्साकी तीव्रता अनुभूतिकी तीव्रता लाती है और बार-बार अनुभूतिकी तीव्रतासे परिवर्तन आता है।

*

चैत्य ही सच्ची अभीप्सा देता है। अगर प्राण शुद्ध हो जाय और चैत्यके अधीन हो तो प्राण तीव्रता देता है लेकिन अगर वह अशुद्ध हो तो वह अधीरता, अवसाद और निराशाकी प्रतिक्रियाके साथ राजसिक तीव्रता लाता है।

*

साधारणतः अपने लिये चीजें करनेकी कामनासे ही खींचना शुरू होता है। अभीप्सामें आत्मदान होता है ताकि उच्चतर चेतना उतरकर कब्जा कर ले। पुकार जितनी तीव्र होगी आत्मदान उतना ही अधिक होगा।

*

अगर अच्छी कामनाएं हैं तो बुरी कामनाएं भी आयेंगी। इच्छा और अभीप्साके लिये स्थान है परंतु कामनाके लिये नहीं। अगर कामना रही तो आसक्ति, मांग, लालसा, संतुलनका अभाव, न पाने-पर दुःख—सभी योगविरोधी चीजें आ जाती हैं।

*

तुम्हें जो मिलता है उससे संतुष्ट रहना चाहिये और फिर भी स्थिरताके साथ बिना संघर्षके अधिकके लिये अभीप्सा करनी चाहिये —जबतक सब कुछ प्राप्त न हो जाय। कोई कामना नहीं, कोई संघर्ष नहीं—अभीप्सा, श्रद्धा, उद्घाटन और कृपा।

*

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई विरला ही इतना पर्याप्त मजबूत होता है जो अभीप्सा और इच्छाकी सहायताके बिना स्वयं ही निम्न प्रकृतिकी शक्तियोंपर विजय पा ले, जो इसे करते हैं वे भी केवल अमुक तरहका अधिकार पाते हैं, पूर्ण स्वामित्व नहीं पाते। भागवत शक्तिकी सहायताको नीचे उतारने और निम्न शक्तियोंके साथ सत्ताके संबंधमें उसे भागवत पक्षमें रखनेके लिये इच्छा और अभीप्सा आवश्यक हैं। आध्यात्मिक इच्छा और हृदयकी चैत्य अभीप्साको चरितार्थ करनेवाली भागवत शक्ति ही इस विजयको ला सकती है।

*

अभीप्सामें शब्दोंकी कोई आवश्यकता नहीं। वह शब्दोंमें अभिव्यक्त या अनभिव्यक्त हो सकती है।

*

यह आवश्यक नहीं है कि अभीप्सा विचारके आकारमें हो—वह अंदर एक ऐसी भावना हो सकती है जो उस समय भी बनी रहती है जब मन कार्यमें व्यस्त हो।

(बुलेटिन नवंबर ८२)

संसारको पृथक् छोड़कर भगवान्से प्यार करनेका मतलब है तीव्रताके साथ पर अपूर्ण रूपमें उनकी पूजा करना।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिमानसिक योग

(माताजीने कहा था कि आम योग-मार्ग जहां खत्म होते हैं, श्रीअरविंदका मार्ग वहांसे शुरू होता है। अन्य मार्गोंमें कड़ी तपस्या करवायी जाती है और उसके बाद साधककी परीक्षा ली जाती है और परीक्षामें उत्तीर्ण होनेपर दीक्षा दे दी जाती है। श्रीअरविंदके मार्गमें इस तरहकी कोई बाहरी प्रक्रिया नहीं होती परंतु साधकसे आशा की जाती है कि वह पल-पल सजग रहे, हर क्षण उसे सत्य और मिथ्यामें चुनाव करना पड़ता है, स्वयं उसकी अंतरात्मा ही उसकी परीक्षा लेती रहती है।

प्रस्तुत वार्तालापमें कुछ शिष्योंने श्रीअरविंदसे साधनासंबंधी प्रश्न पूछे हैं। इन प्रश्नों और उत्तरोंको पुराणीजीने अपनी स्मृतिके आधारपर लिख लिया था। श्रीअरविंदको इन्हें देखनेका मौका नहीं मिला।—सं०)

९-४-२३

शिष्य—क्या सामान्य जीवनमें रहते हुए भी अतिमानस योग किया जा सकता है?

श्रीअरविंद—यह सच है कि अतिमानस योग जीवनको स्वीकार करता है लेकिन इसका मतलब उस जीवनसे नहीं है जैसा कि वह आजकल है क्योंकि अतिमानस पूर्णता चाहता है और आजका जीवन पूर्ण नहीं है। आज जीवनके बहुतसे क्षेत्रोंपर मिथ्यात्वका राज है। हम जीवनके सारे ढांचेको ही बदलना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि मनके बाद मानव विकासका अगला कदम हो अतिमानस। अब उसके आनेके लक्षण दीख रहे हैं अतः हमें उसे नीचे भौतिक सत्तामें उतार लानेकी कोशिश करनी चाहिये, अपेक्षाकृत अतिमानसमें चढ़ जाना आसान है लेकिन जो लोग वहां तक चढ़ जाते हैं वे सामान्यतः जीवनसे चले जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवता अभिव्यक्तिका एकमात्र क्षेत्र है और सभी लाभ उसी स्तरपर यानी सामान्य चेतनापर ले लेने चाहियें। लेकिन यह करने-के लिये केवल सत्यकी ही मांग करनी चाहिये वरना कोई मानसिक, भावनात्मक, या प्राणिक बोधका उत्तर मिल जाता है और आदमी उसीसे संतुष्ट हो जाता है। अभीतक मानव जातिने सत्यकी झलकें ही पायी हैं—सत्य नहीं, हर आध्यात्मिक आन्दोलनने यही किया है और कुछ हदतक सफलता पायी है। वैष्णव मत सत्यको प्राणलोकमें और सौंदर्यबोधको सत्तामें उतारना चाहता था। वह वहीं आकर ऊब गया। वैदिक ऋषियोंको सत्यका बोध था लेकिन उन स्थितियों-में उसे मानवतामें उतारा नहीं जा सकता था। उपनिषदोंमें सत्यका विचार तो है लेकिन वह केवल एक स्थितिका वर्णन है, उसे उतार लानेकी कोई बात नहीं है। उनका मुख्य रूपसे अंतर्भासात्मक मानसिकताका कार्य है। उसके बाद बौद्धिक दर्शन आये जो केवल बौद्धिक थे। फिर आये पुराण।

अगर अतिमानसको भौतिकमें उतारा जाय तो हो सकता है कि वह टिक सके, जड़ भौतिक यद्यपि सीमित है लेकिन इस लोकमें वही एक निश्चित तत्त्व है। अगर कुछ मनुष्य इस स्थितितक पहुंच सकें तो समय आनेपर यह मानव जातिमें स्थायी शक्ति बन सकता है। वह निश्चय ही नयी शक्तियोंको मैदानमें लायेगा और वर्तमान वैश्व शक्तियोंके संतुलनको बदल देगा।

अतिमानसके परे बहुत-सी चीजें हो सकती हैं लेकिन अतिमानसकी सहायताके बिना स्थायी नहीं हो सकतीं; इसीलिये उसे मानवजातिका एक स्थायी अंश होना चाहिये।

१३-४-१९२३

एक शिष्यने दत्तात्रेय योगके बारेमें बात चलायी और पूछा कि वह क्या है।

श्रीअरविंद—महाराष्ट्रमें एक परंपरागत योग पद्धति है जिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दत्तात्रेय योग कहते हैं, उसके पीछे सत्य यह है कि दत्तात्रेय उच्चतम उपलब्धिके प्रतीक हैं, उनकी चेतना हमेशा अनंतमें डूबी रहती है और वह अनंतकी स्वाधीनता या मोक्षको मानसिक, प्राणिक बल्कि भौतिक स्तरतक उतार लाते हैं अतः उस मार्गका सिद्ध अनंतकी तरह मुक्त है, अपनी प्रकृतिमें भी मुक्त—अतः वह बहुधा इस तरह क्रिया करता है जिसे समाज अनैतिक कहता है। वह मुक्त अनंतकी शक्तिको अभिव्यक्तिके यंत्रोंमें नीचे उतार लाता है और इसे पूर्णता समझता है लेकिन उसके पूर्णता होनेमें संदेह है।

समस्त बंधनोंसे मुक्त अनंतकी उपलब्धिमें यह खतरा रहता है कि बहुत-सी झूठी उपलब्धियां भी सत्यके रूपमें विचर सकती हैं। उदाहरणके लिये ऐसे आदमीको बहुत अधिक शक्ति प्राप्त हो जाती है और उसका स्वभाव अहं-केंद्रित होता है। यूं तो रावण भी बहुत बड़ा योगी था। जिस व्यक्तिको प्राण लोकपर बहुत अधिकार हो वह राक्षस कहलाता है। असुरको अपने मन और प्राणपर अधिकार होता है। दत्तात्रेय योगमें बहुत बड़ी भूल कर बैठनेकी बहुत संभावना रहती है।

शिष्य—अवधूत गीतामें, जो दत्तात्रेयकी कृति मानी जाती है, वैराग्यके ऊपर बहुत बल दिया जाता है। वह जगत् और प्रकृतिका त्याग सिखाती है।

श्रीअरविंद—हां, लेकिन दत्तात्रेय योगका अंत यहीं नहीं हो जाता। यह उसका एक पार्श्व है, दूसरा पार्श्व सभी संबंधोंसे मुक्त, अनंतके सभी निर्धारणोंको स्वीकार करता है। उसमें एक ओर स्वच्छन्द सुख भोग है और दूसरी ओर सुखसे वैराग्य।

शिष्य—कुछ लोग कहते हैं कि उन्होंने दत्तात्रेयको देखा है।

श्रीअरविंद—लेलेने मुझसे कहा था कि दत्तात्रेय उन्हें एक बालकके स्वरूपमें गिरनारपर मिले थे और उन्होंने घंटा भर बात चीत की थी।

शिष्य—लेलेने आपका योगमें पदार्पण करवाया था। उन्होंने आपको दत्तात्रेय योग नहीं सिखलाया ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—मैंने लेलेके साथ तो योग शुरू नहीं किया था। पहले मैंने अपने-आप प्राणायाम शुरू किया। इससे मुझे अच्छा स्वास्थ्य, शरीरमें हल्कापन और अधिक चिंतन शक्तिका लाभ हुआ। साथ-ही-साथ कुछ अनुभूतियां भी हुईं लेकिन न तो बहुत अधिक न महत्त्वपूर्ण, मैं सूक्ष्म जगत्की चीजें देखने लगा।

जब मैंने राजनीतिमें कदम रखा तो मुझे यह सब छोड़ देना पड़ा। मैं कोई ऐसी पद्धति स्वीकार न करना चाहता था जिसके लिये मुझे कर्म और जीवनका त्याग करना पड़े।

जब मैं सूरत कांग्रेसके बाद बड़ौदा आया तो बारीनने मुझे लिखा कि वह एक योगीका मेरे साथ परिचय करवायेगा। बड़ौदासे बारीनने लेलेको तार दे दिया और वे आ गये। उन दिनों मैं खासीराव जादवके मकानमें रहता था। हम सरदार मजूमदारके घर गये और तीन दिनतक वहां एक ऊपरके कोठेमें बंद रहे। उन्होंने मुझसे कहा, तुम्हारे मनमें जो भी विचार आयें उन्हें बस फेंकते जाओ और कुछ करनेकी जरूरत नहीं। तीन दिनमें मैंने यह कर लिया। हम दोनों एक साथ ध्यानमें बैठे। मुझे नीरव-निश्चल ब्रह्म-चेतनाकी सिद्धि प्राप्त हो गयी। मैंने मस्तिष्कके ऊपरसे सोचना शुरू कर दिया और तबसे यही चल रहा है। कभी-कभी रातको शक्ति आती थी और मैं उसे ग्रहण कर लेता था, उसके साथ कुछ विचार भी आते थे। मैं सवेरे उन्हें शब्दशः लिख लेता था।

उसी नीरव-निश्चलतामें, विचारमुक्त अवस्थामें हम बंबई गये जहां मुझे नैशनल यूनियनमें भाषण देना था। मैंने लेलेसे पूछा कि मैं क्या करूं? उन्होंने कहा कि प्रार्थना करो। लेकिन मैं नीरव निश्चल ब्रह्ममें लीन था। मैंने उनसे कहा, मैं प्रार्थना करनेकी अवस्थामें नहीं हूं। उन्होंने कहा अच्छा, मैं या और कोई तुम्हारे लिये प्रार्थना करेंगे, तुम जनताको नारायण मानकर नमस्कार करना, तब तुम्हारे अंदरसे कोई शक्ति बोलेगी। मैंने ठीक ऐसा ही किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मैं सभामें जा रहा था तो किसीने मुझे एक कागज पकड़ाया। उसमें कुछ चीज छपी थी। मैंने उसपर नजर डाली और बस। जब मैं बोलनेके लिये खड़ा हुआ तो कोई विचार मेरे मनमें कौंध गया और अचानक मेरे अंदरसे कोई बोलने लगा। लेलेके साथ मेरा यह दूसरा अनुभव था। इससे यह भी मालूम होता है कि उनमें औरोंको योगकी अनुभूतिको देनेकी क्षमता थी।

जब मैं बंबईमें था तो एक मित्रके छज्जेपरसे मैंने सारी बंबई-को एक छाया चित्रकी तरहसे गति करते हुए देखा। यह वेदांतका अनुभव था, तबसे हमेशा मेरे अंदर मनकी शांति बनी हुई है। कठिनाइयोंके बीच भी उसने मुझे कभी नहीं छोड़ा। बंबईसे कलकत्ते जाते हुए रास्तेमें मैंने जितने भी भाषण दिये वे सब इसी तरहके थे। कहीं-कहीं मनका मिश्रण हो जाता था। लेलेसे अलग होनेसे पहले मैंने उनसे कहा, अब जब कि हम अलग हो रहे हैं, मैं चाहूंगा कि आप मुझे साधना-संबंधी कुछ आदेश दें। मैंने उनसे यह भी कहा कि मेरे हृदयके अंदरसे कौन-सा मंत्र उठ रहा था। वे मुझे कुछ आदेश दे ही रहे थे कि एकदम रुक गये और बोले, क्या तुम पूरी तरह उसपर निर्भर रह सकते हो जिसने तुम्हें यह मंत्र दिया है? मैंने कहा, मैं हमेशा उसपर निर्भर रह सकता हूं। तब लेलेने कहा, तब तुम्हें निर्देशनकी कोई जरूरत नहीं है। उसके बाद हममें कोई बातचीत नहीं हुई। कुछ महीनों बाद वे कलकत्ता आये और तब मुझसे पूछा, क्या तुम सवेरे-शाम ध्यान करते हो? मैंने नकारमें उत्तर दिया तो उन्होंने सोचा कि मुझे किसी शैतानने पकड़ लिया है। उन्होंने मुझे आदेश देने शुरू किये परंतु मैंने उनका अनुसरण न किया। मुझे भीतरसे परम आदेश मिल चुका था कि तुम्हारे लिये मानव गुरुकी जरूरत नहीं है। रही बात ध्यानकी तो मैं लेलेसे यह कहनेके लिये तैयार न था कि मेरा ध्यान प्रायः सारे दिन ही चलता रहता था।

मैंने वन्दे मातरम् और कर्मयोगिनमें जो कुछ लिखा वह इसी अवस्थामें लिखा गया था। तबसे मैंने आंतरिक पथ-प्रदर्शनपर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास किया है, तब भी जब मुझे लगा कि वह मुझे भटका रहा है। आर्य और उसके बादके लेख मस्तिष्कसे नहीं आये, निश्चय ही वह वही शक्ति काम कर रही थी। अब मैं उस तरीकेका उपयोग नहीं करता। मैंने उसे पूर्णतातक पहुंचाया और फिर छोड़ दिया।

२९-५-१९२३

श्रीअरविंद—(एक शिष्यसे) वास्तवमें दो बातोंका महत्त्व है। एक है आत्मा जो ऊपर है और क्रियाशील है, दूसरा है जीवन जो आत्माकी अभिव्यक्तिका क्षेत्र है। मन, भाव और दूसरी मनोवैज्ञानिक क्रियाएं केवल बीचके कदम हैं। मन न्यूनाधिक रूपसे एक वाहिनी है, हृदयके लिये भी यही कहा जा सकता है। शरीर तो केवल एक सांचा है।

सशक्त मनोमय सत्ता भी बहुत जरूरी है नहीं तो जब अनुभूतियां आती हैं तो आदमी उलट-पलट जाता है। भारतमें हमारा मानसिक विकास, मेरा मतलब है बाह्य मनुष्यका विकास अनुपातसे एकदम बाहर है। कइयोंमें चैत्य पुरुष तैयार है, आध्यात्मिक जीवनके लिये अभीप्सा भी है और श्रद्धा भी परंतु मन, तर्क-बुद्धि, समझ—क्रियाशील मन—बहुत ही अनगढ़ है। इसीलिये कभी-कभी मैं योग सिखानेमें सकुचाता हूं।

यूरोपमें बाहरी भाग, क्रियाशील मन आदि बहुत अच्छी तरह विकसित हैं लेकिन सब मिला कर देखें तो यूरोपीय लोग आध्यात्मिक जीवनके लिये शिशु समान हैं। उनकी आंतरिक सत्तामें दारिद्र्य भरा है। आंतरिक और बाह्य विकासका मेल बिठाया जा सके तो वह आदर्श होगा। उदाहरणके लिये भौतिक विज्ञान तर्क-बुद्धिको स्थिर बनाता और भौतिक मनको मजबूत आधार देता है। कला, मेरा मतलब शुद्ध, सरल सौंदर्यकी सराहना, वस्तुका ऐन्द्रिय ग्रहण नहीं, मनके सौंदर्यबोध वाले भागको प्रशिक्षित करता है। सच्चे कलाकारमें हमेशा शुद्ध, मुक्त और निर्वैयक्तिक प्रेम होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन शुद्ध चिंतन-शक्तिको विकसित करता है और राजनीति तथा मानसिक कार्यके ऐसे ही दूसरे विभाग क्रियाशील मनको प्रशिक्षित करते हैं। इन सबको इस पूरी जानकारीके साथ भली-भांति प्रशिक्षित करना चाहिए कि इन सबका अपना-अपना सीमित उपयोग है। दर्शन केवल मानसिक जिम्नास्टिक्स और स्वयं अपने विचारों और अपनी रचनाओंके लिये पक्षपात बन जाता है। इसी भांति तर्क-बुद्धि अत्याचारी बन जाती है और अपनेसे आगे किसी चीजको नहीं मानती। लेकिन अगर इन भागोंको प्रशिक्षण दिया जाय, साथ ही उनकी सीमाओंका भी ध्यान रखा जाय तो वे इस योगके उद्देश्य-की अच्छी सेवा कर सकते हैं। जैसा कि मैंने कहा इन सभीको अपने अंदर एक उच्चतर क्रियाको प्रवेश करने देना चाहिए।

एक शिष्यने किसी विद्यार्थीकी आध्यात्मिक अनुभूति सुनायी।

श्रीअरविंद—चैत्य अनुभूति और उपलब्धिके बारेमें जल्दी मचाने-का कोई लाभ नहीं। तुम्हें अपने भौतिक मन, सामान्य ज्ञानकी समझ और योगसंबंधी ज्ञानको तैयार करना चाहिए। तुम्हें यह समझ सकना चाहिए कि तुम्हारे पास क्या आ रहा है। कभी-कभी तुम यह भी नहीं जानते कि तुम्हारे पास क्या आया है। तुम्हें शुद्धिका भी ख्याल रखना चाहिए। इसमें अंतर्निरीक्षण, कर्मयोग और भक्तिसे सहायता मिलती है। इसके बाद एक कदम आगे बढ़ाया जा सकता है।

किसीने गुरु द्वारा शिष्योंको आध्यात्मिक अनुभूति दिये जानेके बारेमें पूछा।

श्रीअरविंद—इसका मतलब यही है कि पहलेसे ही तैयारी थी और गुरुकी सहायताने बाधाओंको हटा दिया और स्वाभाविक विकास हुआ लेकिन कोई भी चेतनाको स्थायी रूपसे नहीं बदल सकता।

शिष्य—हम लोगोंकी बड़ी मुश्किल यह है कि हम आसान रास्ता ढूंढ़ते हैं और आसानीसे संतुष्ट हो जाते हैं। वे कोई कठिन काम नहीं करना चाहते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—पहली बात तो यह है कि वे आसानीसे संतुष्ट हो जाते हैं लेकिन एकमात्र महत्त्वपूर्ण चीज है चेतनाका स्थायी परिवर्तन, पर हमारे लोग कष्ट नहीं उठाना चाहते। फिर योगको चमत्कारोंका क्षेत्र माना जाता है। दूसरी बात यह है कि वे स्वयं अपने साथ कठोर भी नहीं होना चाहते। वे बस इतना अनुभव करके संतुष्ट रहना चाहते हैं कि 'मैं ठीक हूं।'

'क्ष' को सिरके ऊपर स्वर्णिम माताकी अनुभूति हुई और फिर बड़ी स्थिरताका अनुभव हुआ। अब अगला कदम था सारी सत्ताकी शुद्धि ताकि अनुभूति बनी रहे। लेकिन वह ऐसा न कर सका और अनुभूतिको खो बैठा, उसे अनुभूति प्राप्त हुई और उसने सोच लिया कि बस सब कुछ हो गया। वह पूछ सकता था 'आखिर यह अनुभूति क्या है? और फिर इसके बाद?' इन लोगोंको तरह-तरहकी अनुभूतियां मिलती हैं लेकिन जब चेतनाके स्थायी परिवर्तनकी बात आती है तो वे एक मजबूत कदम नहीं उठा सकते।

११-११-१९२३

जरा चले हुए दिमागवाले एक साधकका तार आया। वह मरना चाहता था। किसीने कहा कि ऐसा विचार रक्तमें आनुवंशिक विष होनेके कारण आता है।

श्रीअरविंद—इन लोगोंमें पापका विचार बहुत जोरसे आता है। वे पछताना तथा दूसरोंके आगे अपने-आपको तुच्छ घोषित करना पसंद करते हैं। वे अपने-आपको बहुत महत्त्वपूर्ण भी अनुभव करते हैं। वैश्व योजनामें वे अपने-आपको बहुत महत्त्वपूर्ण मानते हैं।

(कुछ रुककर) इस योगमें, अगर इसे अच्छी तरह करना हो, संतुलन बहुत जरूरी है। इसलिये जिन लोगोंको जरा यूं ही, योगके लिये सामान्य-सी पुकार सुनाई देती हो उन्हें इस योगकी दिशामें न जाना चाहिए क्योंकि यह योग उच्चतर चेतनाके लिये संभावनाओंके द्वार खोल देता है, साथ ही प्राणिक जगत्की शक्तियों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के घुस आने और सत्तापर कब्जा कर लेनेकी भी संभावनाएं पैदा कर देता है। अगर आदमीमें पूरा संतुलन नहीं है तो इन शक्तियों-के लिये उसपर कब्जा कर लेना आसान हो जाता है। कभी-कभी जिस आदमीको अदृश्य वस्तुओंपर विश्वास न हो वह विश्वास करने-वाले या गुह्य प्रकृतिवालेकी अपेक्षा ज्यादा अच्छी स्थितिमें रहता है। वह सामान्यतः उनपर विश्वास नहीं करता और उनकी ओर खुला नहीं रहता इसलिये अपेक्षाकृत उनके आक्रमणोंसे ज्यादा बचा रहता है जब कि जो उनपर विश्वास करता है वह उन्हें अवसर देता है। इस योगमें तुम्हारा मन संयत होना चाहिए।

शिष्य—प्रचलित विचार यह है कि जिसके दिमागका कोई स्क्रू ढीला न हो वह योग मार्गके लिये नहीं आता (हंसी)।

श्रीअरविंद—तुम्हारा मतलब क्या है। अगर कोई स्क्रू ढीला हो तब तो मशीन काम ही न करेगी!

शिष्य—विचार यह है कि जितने ही स्क्रू ढीले होंगे उतनी ही योगके लिये क्षमता अधिक होगी।

श्रीअरविंद—तुम्हारा मतलब मुझसे है? (हंसी)

शिष्य—जी नहीं, मेरा यह मतलब न था। लेकिन क्या आपका मतलब यह है कि समझदार आदमी योगके लिये ज्यादा उपयुक्त होता है?

श्रीअरविंद—पूर्ण योगके लिये पूर्ण संतुलनकी जरूरत होती है।

शिष्य—लेकिन मेरा ख्याल है कि समझदार लोग ज्यादा व्याव-हारिक होते हैं।

श्रीअरविंद—जरूरी नहीं है। "समझदार"से तुम्हारा क्या मतलब है?

शिष्य—समझदारका अर्थ मंदसे नहीं है।

श्रीअरविंद—नहीं, बात ऐसी नहीं है। जब मैं लोगोंमें संतुलनके अभावकी बात कहता हूं तो इसका यह मतलब नहीं होता कि वे "पागल" हैं। इसका मतलब केवल यही होता है कि उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास ठीक अनुपातमें नहीं हुआ या एक तरफा हुआ है या उनकी प्रकृतिमें कहींपर कुछ ऐंठन-सी है जो सभी भागोंके सामंजस्यपूर्ण विकासमें बाधक है।

(कुछ समय मौन)

श्रीअरविंद—यही चीज, यानी पूर्ण संतुलनने हमेशा मेरी रक्षा की। पहले तो यह कि मुझे विश्वास था कि कोई चीज असंभव नहीं है और साथ ही साथ मैं हर विषयमें, हर बातपर प्रश्न कर सकता था। अगर मैं सामने आनेवाली हर चीजपर विश्वास कर लेता तो मैं विजय कृष्ण गोस्वामी जैसा हो जाता।

शिष्य—पूर्ण संतुलन क्या है ?

श्रीअरविंद—पूर्ण योगीमें प्रबल कल्पना हो सकती है और साथ ही समान रूपसे प्रबल तर्क-बुद्धि। कल्पना हर बातपर विश्वास कर सकती है और तर्क-बुद्धि न्यायसंगत कदम उठाती है। वैज्ञानिकोंके बारेमें भी तुम देखोगे कि उनमें बड़ी मजबूत कल्पना होती है।

शिष्य—शायद वह ठीक कल्पना नहीं होती।

श्रीअरविंद—कल्पना है जीवनके सामान्य अनुभवसे परेकी चीजोंके बारेमें सोच सकना।

शिष्य—क्या वह सत्यके समान है ? या कोई उच्चतर क्षमता है और कल्पना मनमें उसका प्रतिनिधित्व करती है ?

श्रीअरविंद—जब वह ऊंचा उठती है तो अंततः प्रेरणा बन जाती है। वह जितनी शुद्ध हो उतनी ही सत्यके निकट होती है। उदाहरणके लिये कवियोंमें प्रायः अन्तःप्रेरित कल्पना काम करती है। तुम वैज्ञानिकोंके बारेमें जो कहना चाहते थे वह शायद अंतर्भास है (कुछ रुककर)

मेरे बौद्धिक विकासका सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समय वह था जब मैं स्पष्ट रूपसे देख सकता था कि बुद्धि जो कहती है वह ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता, कि बुद्धि जिसका औचित्य सिद्ध करती है वह सच है पर उसका विरोधी पक्ष भी सच है। मैंने अपने मनमें कभी किसी सत्यको इस तरह नहीं स्वीकार किया कि उसके साथ-ही-साथ मनको उसके विपरीत रूपके लिये भी खुला न रखा हो।

देखो, मनका अर्थ है अनंत संभावना। तर्क या बुद्धि सब संभावनाओंको हटाकर एकको चुन लेता है, लेकिन तर्क ही तो एकको अधिक मूल्य देकर उसे चुन लेता है। यह विज्ञानके नियमोंकी तरह है जहां तुम एक नियमको स्वीकार कर लेते हो क्योंकि वह अधिकतर परिस्थितियोंकी ठीक व्याख्या कर देता है। मनमें हम एकको स्वीकार करते हैं और बाकी संभावनाओंको दबा देते हैं। इसी तरह हम अपनी दृष्टिका समर्थन करनेवाले तर्कको स्वीकार कर लेते हैं और बाकीको दबा देते हैं। या फिर बुद्धि व्यर्थके चक्कर लगा-लगा कर ऐसी चीजको सिद्ध करनेकी कोशिश करती है जिसे सत्ताका कोई और भाग पहले ही स्वीकार कर चुका है।

बुद्धि केवल चयन करती है, मैंने काफी लंबे समयतक इस चीज-को स्पष्ट रूपसे अनुभव किया और इसका पहला परिणाम यह था कि बुद्धिकी प्रतिष्ठा चली गयी। तुम जब ज्यादा ऊपर जाते हो तो एक विशालतर गति विकसित होती है जो सब विपरीत चीजोंका सामंजस्य कर देती है।

तब तुम उन शक्तियोंको देखते हो जो मानसिक भावोंके पीछे हैं, निश्चय ही, साधारण आदमीसे ये बातें कहना बेकार है क्योंकि अगर वह यह देख पाये कि सभी चीजें संभावना मात्र हैं तो वह बहुत ज्यादा चकरा जायगा। अगर मैं तुम्हारे आगे सभी संभावनाएं रख दूं तो तुम भी बहुत अधिक घपलेमें पड़ जाओगे।

शिष्य—जब सभी बौद्धिक कार्य केवल संभावनाओंके साथ व्यवहार प्रतीत हों तो चयन कैसे किया जाय और कैसे क्रिया की जाय?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—इसमें घबरानेकी कोई बात नहीं है, उन्हें बस देखो, उनका निरीक्षण करो और पता लगाओ कि वे क्या हैं और उनके पीछे क्या है।

उदाहरणके लिये मैं शंकरके मायावादके या महात्माके मतपर हंस सकता हूं लेकिन मैं उन दोनोंके पीछेके सत्यको देख सकता हूं। मैं जानता हूं कि वैश्व शक्तियोंकी लीलामें उनका क्या स्थान है क्योंकि वास्तवमें इसका यही अर्थ निकलता है।

शिष्य—क्या संतुलनकी कमीको ठीक किया जा सकता है?

श्रीअरविंद—सब कुछ किया जा सकता है। तुम उसे अपनी सीमाओंमें कर सकते हो। तुम्हारे अंदर जो भाग अच्छी तरह विकसित हैं उनकी अतिशयताको तुम रोक सकते हो और जो दबे हुए हैं उन्हें विकसित करके अपनी सत्तामें संतुलन ला सकते हो।

३१-१-१९२४

शिष्य—क्या व्यक्तिगत साधनाकी अपेक्षा सामुदायिक साधनामें कोई लाभ है?

श्रीअरविंद—हां है।

शिष्य—क्या उसमें कुछ हानियां भी हैं?

श्रीअरविंद—हां कुछ हैं। यह उनके लिये लाभदायक है जो कम विकसित हैं और हानिकारक उनके लिये है जो काफी आगे बढ़े हुए हैं। सामुदायिक साधनामें हमेशा किसी ऐसे आदमीकी जरूरत होती है जो आवश्यक वातावरण बना सके। किसी और साधनसे नहीं केवल अपनी उपस्थितिसे।

शिष्य—हानिको कैसे कम किया जा सकता है और नेता या नेताओंके भारको कैसे कम किया जा सकता है?

श्रीअरविंद—जैसा कि मैंने अभी कहा, इसमें किसी ऐसेकी जरूरत होती है जो किन्हीं शक्तियोंको दूर रख सके और साथ ही अपनी उपस्थितिसे एक वातावरण बना सके। उदाहरणके लिये मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां तुम्हारे साथ ध्यान करता हूं। लेकिन मैं उसी चेतनाके साथ बाहर नहीं आता जो अंदर रहते हुए होती है। यह भार किसी व्यक्तिका प्रश्न नहीं है। इसमें कोई सहायता नहीं कर सकता।

२६-२-१९२४

कुछ दिन पहले श्रीअरविंदने एक नये शिष्यके बारेमें कुछ टिप्पणी की थी। उसके बारेमें बात चली।

श्रीअरविंद—पता नहीं, वह योगमें कितनी दूरतक जा सकेगा; उसके अतिरिक्त उसमें कुछ विशाल चीज है। अगर वह तीव्र रूपसे साधना शुरू करेगा तो उसे बहुत-सी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ सकता है, विशेष रूपसे प्राणमें। विशालता बहुत लाभदायक भी हो सकती है और हानिकारक भी। लेकिन अगर वह जारी रख सके तो उसके लिये परिणाम ज्यादा समृद्ध और प्रचुर होंगे। वह 'क्ष' की तरह सीधा और सीमित नहीं है।

शिष्य—मान लीजिये दो आदमी अतिमानसिक योगका अभ्यास शुरू करते हैं और उसमें पूर्णता पा लेते हैं तो हम यह कैसे कह सकते हैं कि उनमेंसे एक दूसरेसे अधिक समृद्ध है क्योंकि दोनों ही पूर्णता पा चुके हैं? दोनों अतुलनीय हैं। हर एक अपने ढंगसे महान् है।

और एक शिष्य—मेरा ख्याल है कि पूर्णता पानेपर भी वर्गीकरण रहेंगे। तुम एक आधारभूत द्रव्य लेकर चलते हो और अंतमें जाकर उसीकी गिनती होती है।

और एक शिष्य—बात यूं है। हम कहते हैं कि साधनाके अंतमें हर चीज सोनेकी होगी लेकिन तुम कुछ तांबा लेकर चलते हो जो सोना बननेवाला है। अगर तुम ज्यादा तांबा लेकर चलो तो तुम्हारे पास ज्यादा सोना होगा, है न?

श्रीअरविंद—अधिक समृद्ध परिपूर्णता क्यों नहीं हो सकती? ऐसा लगता है कि तुम यह मानते हो कि अतिमानस एक भव्य एकरसता है! योगियों और सिद्धोंमें श्रेणियां क्यों न हों?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य--मैंने अपनी कठिनाई आपके सामने रख दी है कि दो आदमी एक साथ चले हैं और अंततक जा पहुंचे हैं। यह कैसे कहा जा सकता है कि उनमेंसे एक श्रेष्ठतर है या एककी साधना दूसरेकी अपेक्षा अधिक समृद्ध है ?

श्रीअरविंद--तुम यह क्यों मान लेते हो कि सबको बराबर होना चाहिये और कोई किसी दूसरेसे कभी ज्यादा बड़ा या ज्यादा ऐश्वर्यशाली न हो ? तुम्हें इस लोकतांत्रिक विचारसे पिंड छुड़ा लेना चाहिये। अतिमानसमें श्रेणियां, क्षेत्र और ऊंचाइयां हैं और वे मनमें पायी जाने वाली इन चीजोंसे अधिक सुनिश्चित हो सकती हैं।

शिष्य--जब सारी सत्ता ही अतिमानसिक हो जाय तो फिर कोई फर्क कैसे रह सकता है ?

श्रीअरविंद--अगर तुम तात्त्विक सत्ताकी बात करो तो तुम्हारे, एक बिल्ली और एक पेड़के बीच कोई फर्क नहीं है, तात्त्विक आत्मा एक ही है। फर्क होता है कि तुम प्रकृतिमें क्या रूप लेते हो। अतिमानसमें भी यह जरूरी नहीं है कि प्रकृतिद्वारा तुम जिस चीज-को प्रकट करो वह एक ही हो, एकके द्वारा जो प्रकट किया जा रहा है, अन्यके द्वारा जो प्रकट किया जा रहा है वह एक जैसा नहीं होगा। तब तुम कह सकते हो कि एक अभिव्यक्ति दूसरीसे अधिक समृद्ध है।

शिष्य--मेरा ख्याल है कि मैं "अतिमानसिक" होनेका ठीक अर्थ नहीं पकड़ पा रहा। अगर आप अर्थ स्पष्ट कर दें तो मैं समझ पाऊंगा।

श्रीअरविंद--अतिमानसिक होनेसे मतलब है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा तुम अतिमानसको अपने अंदर आने देते हो ताकि वह तुम्हारी सत्ताके विविध भागोंपर अधिकार कर ले, पूर्ण अतिमानसीकरणका अर्थ होगा अतिमानसका पूरी सत्तापर, यहांतक कि भौतिक शरीर तकमें प्रवेश और उसपर अधिकार।

शिष्य--मैं भी यही अर्थ मानता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—हां, लेकिन तुम ऊंचाई और समृद्धिमें घपला कर रहे हो, दो व्यक्ति एक ही स्तरपर हो सकते हैं फिर भी एक दूसरेसे अधिक समृद्ध हो सकता है।

शिष्य—मैं मानता हूं कि एक ज्यादा तेज जा सकता है पर मान लीजिये आप और मैं एक साथ चलना शुरू करते हैं, तो लक्ष्यतक पहुंचनेपर हमारे बीच कोई फर्क न रहेगा।

एक और शिष्य—यानी अगर यह लक्ष्यतक पहले पहुंच जाय और अतिमानसपर कब्जा कर ले—क्योंकि यह ज्यादा तेज है तो आपको वहां उसी गट्ठरमें से भाग लेना होगा! यह तो अतिमानसिक बॉलशेविज्म हुआ!

श्रीअरविंद—नहीं, बात ऐसी नहीं है, जब तक तुम लक्ष्यपर पहुंचोगे, मैं एक स्तर ऊपर जा चुका होऊंगा! समझे।

शिष्य—लेकिन पूर्णता पा लेनेके बाद क्या होगा?

श्रीअरविंद—पूर्णतासे तुम्हारा क्या मतलब है? पूर्णता एक सापेक्ष परिभाषा है, अतिमानसिक स्थिति क्या है? यह निरपेक्ष नहीं सापेक्ष चीज है।

शिष्य—इस तरह हम कह सकते हैं कि हर आदमीके अंदर अनंत संभावनाएं हैं इसीलिये सब आदमी बराबर हैं।

श्रीअरविंद—हां, हर मनुष्यमें अनंत संभावनाएं हैं लेकिन यह माननेका क्या कारण है कि अमुक समय दो व्यक्तियोंको एक-सी ही संभावनाएं प्रकट या अभिव्यक्त करनी चाहियें? तुम कह सकते हो कि हर व्यक्तिमें अनंत संभावनाएं हैं जो कालकी शाश्वततामें प्रकट हो सकती हैं।

शिष्य—जी, यह शाश्वतता एक भयंकर चीज है! हम आजकी चीजों और इस जीवनकी संभावनाओंकी बात कर रहे हैं और यह सच है कि वे संभावनाएं दो व्यक्तियोंके लिए एक-सी नहीं हो सकतीं।

एक और शिष्य—मैं मानता हूं कि प्रकृतिके या अभिव्यक्तिके प्रकारोंमें फर्क हो सकता है लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरेसे अधिक समृद्ध है। ज्यादा-से-ज्यादा हम यह कह सकते हैं कि इनमें तुलना नहीं की जा सकती।

श्रीअरविंद—तुम यह क्यों कहते हो कि भेद केवल प्रकारका हो सकता है कोटिका नहीं? मानसिक पूर्णताकी ही बात ले लो, यद्यपि यह भी अपूर्ण और सापेक्ष है—मुझे और विपिनचन्द्र पालको लो। हम दोनोंने एक-सी परिस्थितियोंमें आरंभ किया, एक ही तरहका काम किया और एक ही समयमें रहे। वे अपने मानसिक विकासमें स्थिर हो गये और उन्होंने विकसित होना बंद कर दिया। उन्होंने केवल भाषण देनेकी क्षमतामें विकास किया, वे मुझसे अच्छे वक्ता हो गये, ऐसी ही दो एक चीजोंमें कुछ अधिक विकसित हुए होंगे परंतु सामान्य बौद्धिक विकासमें मैंने अपनी बुद्धिको बहुत-सी दिशाओंमें प्रशिक्षित किया और मेरे मनका विकास अधिक समृद्ध हुआ। अतिमानसके लिये भी यही कहा जा सकता है।

शिष्य—मैं प्रकारके अंतरके उदाहरणके रूपमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर और जगदीश चन्द्र बसुके नाम दे सकता हूं। दोनों बौद्धिक लोग हैं।

श्रीअरविंद—रवीन्द्रनाथ और जगदीश बसुके बारेमें तुम मोटे तौरपर कह सकते हो कि बसुकी अपेक्षा रवीन्द्रनाथका बौद्धिक विकास अधिक समृद्ध है, उनका व्यक्तित्व भी अधिक बड़ा है।

शिष्य—अतिमानसको भौतिक चेतनामें उतार लाया जाय तो अंतिम रूप क्या होगा? पुराने ग्रंथोंमें लिखी इच्छा-मृत्युसे वह किस तरह भिन्न होगा?

श्रीअरविंद—साधारणतः जिसे इच्छा-मृत्यु कहते हैं वह मृत्युपर विजय नहीं है।

शिष्य—साधारणतः जब योगियोंको पता लग जाता है कि उनकी मृत्युका समय आ रहा है तो वे अपने प्राणको ऊपर खींचकर मरनेके लिये तैयार हो जाते हैं।

श्रीअरविंद—एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणको ब्रह्मरंध्रमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खींच लिया जाता है और फिर मनुष्य अपने शरीरको छोड़कर चला जाता है। जिसकी जरूरत है वह है मृत्युके सब भांतिके एजेंटों, रोगोंसे मुक्ति। व्यक्तिमें यह क्षमता होनी चाहिये कि जब चाहे तब शरीरको छोड़ सके, बाहरी शक्तियां उसे छोड़नेके लिये बाधित न करें, और भी कुछ दबाव हैं, जैसे चैत्य दबाव जो शरीर त्यागकी मांग कर सकते हैं। बहरहाल आदमीके अंदर यह क्षमता होनी चाहिये कि वह शरीरको कपड़ेकी तरह छोड़ सके।

१६-१०-१९२५

(एक शिष्यके किसी मित्रने एक अन्य गुरुसे योगकी दीक्षा ली थी और अब श्रीअरविंदके मार्गपर आना चाहता था, उससे कहा गया कि यह पथ उसके लिये नहीं है)

शिष्य—मैंने उससे कह दिया है कि अपने पुराने गुरुको खोज निकाले और उन्हींके साथ रहे। लेकिन वह एक 'सुशिक्षित' और 'सुन्दर गुरु' चाहता है। (हंसी)

श्रीअरविंद—उसने बातचीत करते हुए मुझसे कहा, 'मैं दुर्बल हूं,' मैंने उससे कहा मजबूत बनो। अगर वह काममें डटकर नहीं लगना चाहता तो इसका मतलब यह है कि वह उसे करना नहीं चाहता। मुझे लगता है कि यह कहीं भी लग कर न रह सकेगा। और फिर उसमें अपने गुरुके बारेमें यह 'शिक्षित' मूर्खता है! लोग जिसे शिक्षा कहते हैं वह किसी निश्चित लक्ष्यके बिना कुछ विचार और बेचैनी है। उसे सुन्दर दीखनेवाला गुरु चाहिये तो वह रवींद्रनाथसे दीक्षा ले सकता है! सारी बात तो यह है कि वह कष्ट उठानेके लिये तैयार नहीं है।

शिष्य—महापुरुष वह उस आदमीको मानता है जो छोटे आदमीसे ऐसा काम करवा सके जिसे वह अकेला न कर सके।

श्रीअरविंद—क्या तुम्हारा मतलब है कि महापुरुष उसके लिये अभीप्सा कर देगा, उसकी जगह योग करने बैठेगा? पता नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतमें चमत्कार द्वारा परिवर्तन लानेका यह विचार कहांसे आ गया है? भारतीय परम्परा तो योगके अभ्यासकी बात करती है, तपस्याकी बात करती है, चमत्कारकी नहीं। कुछ लोगोंका कहना है कि यह विचार वैष्णव समर्पण और प्रपत्तिके विचारसे आया है। रामानुजाचार्यके कुछ शिष्योंकी मान्यता है कि उन्होंने साधना कर ली इसलिये अब शिष्योंके लिये यह जरूरी नहीं है। यह कैसे संभव हो सकता है?

शिष्य—अगर यह नहीं हो सकता तो फिर महापुरुषका लाभ ही क्या? उसका स्थान ही क्या रह गया? (हंसी)

श्रीअरविंद—वह भूमिपर अपने ही पैरोंपर खड़ा होगा! वह बस पथ दिखा सकता है, अनुभूति दे सकता है और फिर मनुष्यको अपने-आप कार्यान्वित करना होगा।

शिष्य—आध्यात्मिकताका यह विचार समर्पणसे आया है।

श्रीअरविंद—हां, लेकिन कोई भी दूसरेके लिये समर्पण नहीं कर सकता। हर एकको अपने लिए आप करना होगा। और समर्पण आसान नहीं है। अगर तुम बिना शर्तके, सर्वभावेन समर्पण कर सको, जैसा कि गीताने कहा है, तब फिर और कुछ करनेके लिये नहीं रह जाता। लेकिन क्या कोई आदमी यह कर सकता है? तुम केवल यह कह कर कि मैं समर्पण करता हूं, समर्पण नहीं कर सकते। वह वास्तविक होना चाहिये, यह है साधना।

शिष्य—तो क्या केवल गुरुके प्रति समर्पणका भाव पर्याप्त होगा?

श्रीअरविंद—इससे तुम्हारा क्या मतलब है? क्या तुम सोचते हो कि समर्पण करना आसान है? यह बहुत कठिन है, आपने-आपमें साधना है।

शिष्य—मान लीजिये कि कोई व्यक्ति मानव गुरुके प्रति समर्पण करता है तो क्या यह पर्याप्त होगा?

श्रीअरविंद—मानव गुरुके प्रति समर्पणसे तुम्हारा क्या मतलब है? और पर्याप्त किसलिये?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—पूर्णता या भगवान्को पानेके लिये पर्याप्त।

श्रीअरविंद—मेरा ख्याल है कि मनुष्यके प्रति समर्पणका अर्थ है उसके अंदर विराजमान भगवान्के प्रति समर्पण और उसका पर्याप्त होना या न होना उस मनुष्यपर निर्भर है जिसके प्रति वह समर्पण करता है।

शिष्य—क्या वह भगवान्के प्रति समर्पण करनेके समान है?

श्रीअरविंद—मेरा ख्याल है कि जब एक मनुष्य दूसरेके प्रति समर्पण करता है तो वह उसमें विराजमान सत्यके प्रति समर्पण करता है, तुम इसका और क्या अर्थ कर सकते हो? अगर वह सच्चा है तो वह उस सबको पा सकता है जो उसके गुरुके पास है और अगर उसमें ढूंढ़नेके लिये अधिक सचाई हो तो वह अपने गुरुसे भी महान् हो सकता है।

अब शिष्योंने अलग-अलग गुरुओंकी कहानियां सुनानी शुरू कीं। प्रश्न उठा कि महापुरुषका अपने-आपको भगवान् कहना ठीक होगा? राधा और रुक्मिणीके समर्पणकी भी बात चली। रुक्मिणीने अपने समर्पणमें शर्तें लगायी थीं जब कि राधाका समर्पण बिना किसी शर्तके था।

शिष्य—मुझे याद आ रहा है कि गिरीश चंद्र घोषने मरनेसे कुछ समय पहले कहा था कि यद्यपि रामकृष्णने मुझसे कहा था कि मैं अपनी साधनाका भार उनपर छोड़ दूं परंतु मैं यह कर न सका।

श्रीअरविंद—भारतमें यह विचार प्रचलित है कि योग अभ्यासकी चीज है, एक आदमी दूसरेके लिये साधना कैसे कर सकता है? और योगोंमें चाहे जो मान्यता हो, कम-से-कम हमारे योगमें तो अपना भार गुरुपर छोड़ देना अपनी पराजयको बुलाना होगा। हर एकको अपना मार्ग बनाना होगा। गुरु अधिक-से-अधिक यही कर सकता है कि वह उसमें शक्ति स्थापित कर दे लेकिन त्याग और रूपांतरका काम तो स्वयं साधकको ही करना होगा। उसे जब जरूरत हो तब वह सहायता ले सकता है। और जब गुरु शक्ति स्थापित करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो हो सकता है कि साधक उसे ग्रहण न कर सके या व्यर्थकी चीजों-में गंवा दे। हर एकको अपना रास्ता आप बनाना होगा।

नवागन्तुकको सुझाव दिया गया था कि वह अपने वैष्णव गुरुके साथ ही रहे जिसने उसे अस्थायी शांतिका अनुभव दिया था। गुरुके प्रति उसे तीन आपत्तियां थीं। (१) वह वैष्णव था (२) वह सामान्यत: बोलता या समझाता नहीं था (३) कि वह देखनेमें प्रभावो-त्पादक नहीं था। यह बात श्रीअरविंदको सुनायी गयी तो उन्होंने कहा :

अगर ये बातें ठीक हैं तो यह दोष न होकर उसके गुण हैं! यह तथ्य कि वह मौन रहकर अनुभूति दे सकता है एक बड़े साधकका चिह्न है, वह जब तक जरूरी न हो, बातचीत नहीं करता यह भी अच्छा लक्षण है। वह शैव है या वैष्णव, इससे कुछ नहीं आता जाता। यह तो मतकी बात है, यह आदमी मत नहीं आध्यात्मिक विकास चाहता है। उसके साथ मतोंका क्या संबंध है।

रही बात प्रभावात्मक चेहरेकी तो ऐसे अधिकतर लोग उसे प्राण-मय जगत्से पाते हैं और उससे धोखा होता है।

सोसायटी समाचार

सदस्योंके नाम

कुछ सदस्योंने अभीतक सदस्यता फार्म नहीं भेजे हैं। इसके फार्म आपके पास पहले भेजे जा चुके हैं, अगर आपको फार्म नहीं मिले हैं तो सोसायटी सदस्यता विभागको पत्र लिखकर नया फार्म मंगा लें और शीघ्र भर कर भेजें।

शिक्षा-शिविर

अध्यापकों, अभिभावकों आदि उन सभी लोगोंके लिये जिन्हें शिक्षामें रस है, मई २६ से जून ६ तक पांडिचेरीमें एक शिक्षा-शिविर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगेगा जिसमें शिक्षाके आदर्शों, सिद्धांतों और पद्धतियोंपर माताजी और श्रीअरविंदकी दृष्टिसे प्रकाश डाला जायगा। आश्रमके शैक्षिक क्रिया-कलापका भी परिचय दिया जायगा।

जिन्हें इस कार्यक्रममें रस हो उन सबका स्वागत है। उन्हें अपने रहने-खानेका खर्च अपने-आप करना होगा और रहनेकी व्यवस्थाके लिये एकोमोडेशन सेक्शन, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी—६०५००२ को लिखकर जल्दीसे जल्दी व्यवस्था कर लेनी चाहिये। सोसायटी-की धर्मशालामें शयनशालाकी व्यवस्था निःशुल्क हो सकती है। आवेदन पत्र निश्चित फार्मपर पहली मईसे पहले सोसायटीमें पहुंच जाने चाहियें। जिन्हें जरूरत हो वे आवेदन पत्र सोसायटीसे मंगा सकते हैं।

श्रीअरविंद सोसायटीका मुकद्दमा

हमें यह सूचना देते हुए खुशी होती है कि २७ फरवरी १९८७ को हमें माताजीकी ओरसे एक उपहार मिला। उस दिन पांडिचेरी-के मुख्य न्यायाधीशने श्रीअरविंद सोसायटीपर चलाये गये तीन फौज-दारी मुकद्दमोंमेंसे आखिरी पर अपना फैसला सुना दिया। इस सिलसिलेमें केन्द्रीय सरकारके शिक्षा मंत्रालयके तत्कालीन शिक्षा सलाहकार श्री किरीट जोशीकी शिकायत पर तलाशियां और जब्तियां भी हुई थीं। न्यायाधीशने न केवल सोसायटी और उसके भूतपूर्व पदाधिकारियोंको निधिको बेईमानीसे हथिया लेनेके अभियोगसे मुक्त कर दिया बल्कि यह भी कहा कि ये अभियोग 'क्लेशकर तथा तुच्छ" हैं जो श्री किरीट जोशीने अपने निजी द्वेषके कारण सोसायटी पर थोपे थे और ये "स्पष्ट रूपसे अभिप्रेरित थे"। आपकी सूचनाके लिये २८ फरवरी १९८७के इंडियन एक्सप्रेस मद्रासके मुखपृष्ठपर छपी खबरकी फोटोकापीका अनुवाद यहां दिया जा रहा है। आपको याद होगा कि सी. बी. आई. द्वारा दायर किये गये तीन फौजदारी मुकद्दमोंमेंसे दो पहले, प्रारंभिक स्तरपर ही "प्रथम दृष्टिमें ही"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरख्वास्त कर दिये गये थे। यह सारी चीज निरंतर इस बातकी पुष्टि करती और इसे सिद्ध करती है कि सोसायटीको कुछ लोगोंके परोक्ष अभिप्रायके कारण "बेकारमें परेशान तथा अपमानित" किया गया!

सरकारने सोसायटीके हाथसे ओरोवीलका संचालन अपने हाथमें लेनेके मुख्य कारण ये बताये थे (१) निधियोंको बेईमानीसे हथियाने और अव्यवस्थाका आरोप तथा (२) ओरोवीलके लिये करोड़ों रुपयोंका यूनेस्को तथा उसके सदस्यों द्वारा योगदान जिसके कारण इस मामलेमें सरकारका मुड़ना जरूरी हो गया। पहला आरोप अदालतोंने निराधार घोषित कर दिया। रही बात दूसरे अभियोगकी, तो उसमें स्वयं सरकारके लेखा परीक्षकोंने सोसायटीके हिसाब-किताबका लेखा विवरण प्रस्तुत किया, वह इस चीजका द्योतक है कि ओरोवीलके लिये यूनेस्को या यूनेस्कोके किसी भी सदस्यने सोसायटीको पैसा नहीं दिया। श्रीअरविंद सोसायटीने शिक्षा मंत्रालयसे कई बार निवेदन किया कि वे इस चीजके बारेमें सच्ची बात कह दें लेकिन मंत्रालय अबतक चुप है क्योंकि सचको कबूल करना कठिन होता है।

अब हम प्रार्थना करें कि माताजीकी कृपासे ये बादल छंट जायेंगे जो संकट कालमें हमपर छाये हुए थे।

हस्ताक्षर
किशोरीलाल ढांढणिया जनरल सेक्रेटरी

२८ फरवरी १९८७ के इंडियन एक्सप्रेस मद्रासमें छपी दो खबरोंका अनुवाद

श्रीअरविंद सोसायटीने मुकद्दमा जीत लिया

पांडिचेरीके मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति प्रभाशंकरने बृहस्पतिवारको श्रीअरविंद सोसायटी तथा उसके भूतपूर्व जनरल सेक्रेटरी श्री श्यामसुन्दर झुनझुनवालाको ओरोवील परियोजनाके लिये मिली सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधियोंको बेईमानीसे हथिया लेनेके आरोपोंसे बरी कर दिया।

सोसायटी इसी तरहके दो मुकद्दमे जीत चुकी है, एक पांडिचेरीकी अदालतमें और दूसरा भुवनेश्वरकी एक अदालतमें। यह तीसरा बड़ा मुकद्दमा था जिसे उसने सी. बी. आई.के विरुद्ध निचली अदालतमें जीता। पहले दो मुकद्दमोंके लिये सी. बी. आई.ने अपील की है।

ओरोवील अंतर्राष्ट्रीय नगरको १९८० में सरकारने अपने हाथमें ले लिया था जब वहांके प्रबंधके सिलसिलेमें वहां रहनेवाले विदेशी तथा भारतीय नागरिकोंमें आपसमें झगड़े झंझट होने लगे।

सी. बी. आई. ने सोसायटीपर यह मुकद्दमा दायर किया था कि सोसायटी, जो ओरोवील परियोजनाका संचालन कर रही थी, उसे ओरोवीलमें भारत निवास तथा दूसरे राज्य-मंडपोंके निर्माणके लिये केंद्रीय तथा विभिन्न प्रादेशिक सरकारोंने ३१ मार्च १९७६ तक समय-समयपर कुल मिलाकर ७४.०५ लाख दिये थे जिसमेंसे १८.७४ लाखका हिसाब नहीं लिखा गया था।

सी. बी. आई.ने इस बातका भी आरोप लगाया कि इस योजनाके लिये दी गयी राशिका अधिकांश खर्च नहीं किया गया था, स्थानीय बैंकोंमें सोसायटीका ७.८८ लाखका ओवर ड्राफ्ट था। जिसे सी. बी. आई. ने "रहस्यमय" बताया।

इस अभियोगने सोसायटी तथा उसके भूतपूर्व जनरल सेक्रेटरी श्यामसुन्दर झुनझुनवालापर निधियोंको बेईमानीसे हथिया लेनेका आरोप लगाया।

इस अभियोगको रद्द करते हुए न्यायाधीश प्रभाशंकरने कहा कि यह अभियोग उन आरोपोंको प्रमाणित नहीं कर पाया। वे "क्लेशकर तथा तुच्छ" थे।

उन्होंने कहा, "सोसायटीपर यह मुकद्दमा केंद्रीय सरकारके शिक्षा मंत्रालयके तत्कालीन शिक्षा सलाहकार किरीट जोशीने थोपा था जिनका सोसायटीके विरुद्ध "प्रबल अभिप्राय" था। न प्रादेशिक

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*"Live in his Being, Shine with His Light,
Act with His Power, Rejoice with His Bliss."*

The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast Packagings Private Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 *Telex:* 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

Works:

PLOT No. G. 1/3 MIDC AREA, BOISAR,
DIST. THANE MAHARASHTRA

Phones: 682, 491, 591 *Telex::* 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और न ही केंद्रीय सरकारने सोसायटीके विरुद्ध निधियोंको बेईमानीसे हथियाने या कुव्यवस्थाका कोई आरोप लगाया है न ही सोसायटीके विरुद्ध ही कोई शिकायत दर्ज की है।"

न्यायाधीशने इसपर भी ध्यान आकर्षित किया कि सोसायटीका हिसाब देखनेके लिये सरकारकी ओरसे नियुक्त ओझा कमेटीने भी निधियोंको हथिया लेनेका दोषारोपण नहीं किया। उन्होंने यह भी जोड़ दिया कि "किरीट जोशीके व्यक्तिगत द्वेषके कारण सोसायटीको बेकार परेशान तथा अपमानित किया गया।"

श्रीअरविंद सोसायटी सी. बी. आई. के विरुद्ध अदालतकी लड़ाई जीत गयी

श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरीने शुक्रवारको केंद्रसे अदालतकी एक बड़ी लड़ाई जीत ली जब स्थानीय अदालतने सी. बी. आई. के द्वारा आरोपित इस फौजदारी मुकद्दमेको रद्द कर दिया कि ओरोवील परियोजनाके लिये मिली निधियोंको सोसायटीने बेईमानीसे हथिया लिया।

मुख्य न्यायाधीश श्री प्रभाशंकरने सोसायटी तथा उसके भूतपूर्व जनरल सेक्रेटरी श्री श्याम सुन्दर झुनझुनवालाको केंद्र तथा दूसरी प्रादेशिक सरकारों द्वारा ओरोवील परियोजनाके लिये दिये गये १८.७४ लाख रुपयोंको बेईमानीसे हथिया लेनेके दोषारोपणसे मुक्त कर दिया।

न्यायाधीशको यह भी लगा कि सोसायटीपर यह मुकद्दमा केंद्रीय सरकारके शिक्षा मंत्रालयके तत्कालीन शिक्षा सलाहकार श्री किरीट जोशीने दायर किया जिनके, उन्होंने कहा, सोसायटीके विरुद्ध प्रबल अभिप्राय थे।

सरकारी निधियोंके गलत प्रयोगके आरोपके बारेमें श्री प्रभाशंकरने कहा, "वस्तुत: प्रादेशिक या केंद्रीय किसी भी सरकारने सोसायटीके विरुद्ध निधियोंको बेईमानीसे हड़प लेने या कुव्यवस्थाका कोई आरोप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70

REGD. No. M. 8731

नहीं लगाया और न ही उन्होंने कोई शिकायत दर्ज की है।

न्यायाधीशने कहा कि सोसायटीका हिसाब-किताब देखनेके लिये १९७७ में सरकार द्वारा नियुक्त ओझा कमेटीने "बेईमानीसे हथिया लेने" इन शब्दोंका प्रयोग नहीं किया।

श्री प्रभाशंकरने इस बातकी पुष्टि की कि "अधिक बड़ी शक्तियां हैं—और अभियोगीको बेकारमें परेशान तथा अपमानित किया गया।"

सोसायटीकी तरफसे किसी भी तरहके "झूठे अभिप्राय"की बातको रद्द करते हुए न्यायाधीशने कहा कि सोसायटीके विरुद्ध किये गये इस आरोपमें कोई सचाई नहीं है कि उसने निधियोंको हड़प लिया या उसमें हेर-फेर की। उन्होंने यह भी कहा कि सोसायटीके विरुद्ध श्री किरीट जोशीके "व्यक्तिगत द्वेष"के कारण यह आरोप लगाया गया जो "स्पष्ट रूपसे अभिप्रेत" था।

न्यायाधीशने यह कहते हुए सोसायटी तथा श्री झुनझुनवालाको आरोपसे मुक्त कर दिया कि निधियोंका हिसाब-किताब रखनेमें किसी तरहकी कोई भूल-चूक न थी।

यह मुकद्दमा जो सोसायटीके विरुद्ध १९८० में—जब सरकारने ओरोवीलकी कार्य-व्यवस्था अपने हाथमें ले ली थी—दायर किये हुए सी. बी. आईके तीन मुकद्दमोंमेंसे अंतिम था—उसे जीतकर अदालतोंमें सी. बी. आई. के विरुद्ध सोसायटीकी यह बड़ी विजय हुई।

पहले दो निर्णयोंकी अपील सी. बी. आई. ने एक पांडिचेरीकी अदालतमें दूसरी भुवनेश्वरकी अदालतमें की है।

ओरोवील, एक अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक नगर, जिसकी कल्पना माताजीने की थी, का संचालन पहले श्रीअरविंद सोसायटीके हाथमें था लेकिन बादमें वहां रहनेवाले विदेशी तथा भारतीयोंके बीच संघर्ष-के कारण इसे १९८० में सरकारने अपने हाथमें ले लिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

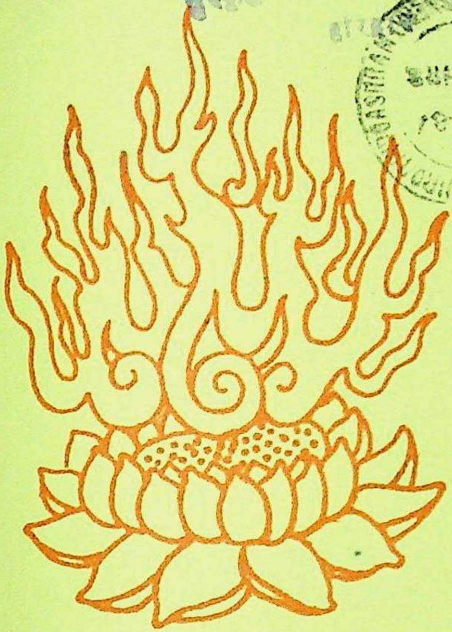

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

मई १९८७ वर्ष १७, अंक १०, पूर्णांक २०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश १

'संपादकीय' : चुनौती — अनुवेन २

दैनन्दिनी ३

ऋषिवर बोले : आत्महत्या ६

अतिमानसिक योग ९

सोसायटी समाचार ३६

कृपया चेक न भेजें, उसमें बहुत असुविधा होती है। ड्राफ्ट, धनादेश या पोस्टल आर्डर भेज सकते हैं। अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

संपर्क : संपादक अग्निशिखा एवं पुरोधा, पांडिचेरी–६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुवेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेश

"O Lord, O marvellous Friend, O all-powerful Master, Penetrate all our being, transfigure it till Thou alone livest in us and through us."

THE MOTHER

"हे प्रभो, हे अद्‌भुतमित्र, हे सर्वशक्तिमन् स्वामिन्, प्रविश नः सम्पूर्णसत्तां, तावत् च तां रूपान्तरय यावन्न त्वमेव अस्मासु अस्माभिश्च प्राणिषि।"

—श्रीमाता

"हे प्रभु, हे अद्‌भुत मित्र, हे सर्वशक्तिमान् स्वामी, हमारी समस्त सत्तामें प्रवेश कर, उसे इतना रूपांतरित कर कि केवल तू ही हमारे अंदर और हमारे द्वारा जिये।"

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

चुनौती

श्रीअरविंदने लिखा है कि भारतको कोई बौद्धिक या मानसिक योजना द्वारा एकताके सूत्रमें नहीं बांधा जाएगा। जितने भी ऐसे प्रयास किये जाएंगे वे जन्मसे ही असफल होंगे क्योंकि भारतने, जो दुर्गा और शिवकी भांति एक देवी है, अपना पथ निश्चित कर लिया है। और वह पथ देवी द्वारा निर्धारित किया गया है इसलिये कोई मानव सत्ता उसका उल्लंघन नहीं कर पाती। देवी-भारतीने यह प्रण किया है कि भारतवासियोंको जब आंतरिक एकताका बोध होगा तभी वे राष्ट्रको एक सूत्रमें बांध सकेंगे।

एकताका यह विचार नयी खोज नहीं है। हमारी धार्मिक प्रणाली, हमारे संस्कार उस एकताकी नींवपर ही खड़े हैं। भारत-वासी कहींका भी हो, उत्तर, पूरब, पश्चिम या दक्षिणका, आज भी वह पुरीकी, बदरी केदारकी, रामेश्वरम्‌की यात्रा करता है, सब धर्मोंमें श्रद्धा रखता है। गंगा सबके लिये भागवत कृपाका, वरदानका स्रोत है, वह सबके लिये पतितपावनी है। आजके कवि श्रीमनेथू भी लिखते हैं:

नाम केवल इक नदीका ही नहीं है, वरन मेरे देशकी पहचान
है गंगा !
नील, श्यामल, हरित-नद, सबको समोए; बह रही है।
एकताके छंद संस्कृतिकी ऋचाएं; कह रही हैं।
गोमुखी गिरिसे तरंगित, सिन्धुके; वैविध सफरमें पूर्ण हिंदुस्तान
है गंगा !
बांटती खुशियां——खिलाती तटोंपर हरियालियां; लहरा रही है।
शीश शिवका छोड़ शिवता की ध्वजा फहरा रही है।
कलुष-ढोती कलयुगी काली हुई खुद श्लथ नहीं है आज भी गति-
मान है गंगा !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे वर्तमान मतभेद नकली, आरोपित हैं। ये हमारी भटकन-का संकेत हैं। हम इस समय चरित्र भ्रष्टताके शिकार हैं। आज-का भारतीय न भारतीय है, न यूरोपीय। वह दोनोंकी निकृष्टताओं-का अजूबा है। भारत एक विकट बौद्धिक विषचक्रमें फंस गया है। उसमेंसे निकलनेके लिये न प्रधान मंत्री, न अन्य मंत्री-दल, न राज-नेता, न समाज सेवक हमारी सहायता कर सकते हैं। इस समय हमारी कसौटी है, हमारे भारत-प्रेमकी परीक्षा। क्या हम स्वार्थों-से ऊपर उठकर अपनी आत्माको जगा पाएंगे? क्या उसके उजालेमें हम राष्ट्रको, स्वयंको और समस्त जातिको एकताके सूत्रमें बांधेंगे? यह हमारे सामने एक चुनौती है।

—अनुबेन

दैनन्दिनी

मई

१. जब भगवान्‌के अर्घ्यके रूपमें कार्य किया जाता है तो चेतनाका विकास सबसे अच्छी तरह होता है।
२. कार्यमें पूर्णताकी ओर अभीप्सा ही सच्ची आध्यात्मिकता है।
३. निपुण हाथ, स्पष्ट सावधानी और अखंड एकाग्रता द्वारा तुम भौतिक तत्त्वको आत्माकी आज्ञा माननेके लिये बाधित कर सकते हो।
४. कार्यमें अपना आदर्श पूर्णतासे कमको मत मानो और निश्चित रूपसे तुम भगवान्‌के यंत्र बन जाओगे।
५. जबतक तुम कड़ी मेहनत नहीं करते तुम्हें शक्ति प्राप्त न होगी क्योंकि तब तुम्हें उसकी आवश्यकता न रहेगी और तुम उसके योग्य न होगे। तुम्हें शक्ति तभी प्राप्त होगी जब तुम उसका उपयोग करोगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. कार्यके द्वारा तुम्हारा स्वभाव कम कठोर, कम सख्त, अधिक नमनीय और लचीला बन जाता है।

७. मानवजातिका आध्यात्मिक धर्म ही भविष्यकी आशा है। इसका अर्थ एक पद्धति, धर्म, मत, बौद्धिक आस्था और सिद्धांत और बाह्य कर्म-कांड नहीं होगा जिसे वैश्व कर्म कहते हैं।

८. मानवजातिके धर्मका अर्थ है इक बढ़ती हुई अनुभूति कि एक गुह्य आत्मा है, दिव्य सद्वस्तु है जिसमें हम सब एक हैं और वर्तमान कालमें मनुष्य जाति धरतीपर उसका सर्वश्रेष्ठ वाहन है।

९. मनुष्यको यह अनुभव करना चाहिये कि अपने साथी-मनुष्यों-के जीवनमें ही उसका अपना जीवन पूर्ण हो सकता है।

१०. सत्यके लिए प्रेम और प्रकाशके लिए प्यासके द्वारा हमारा जीवन शासित होना चाहिये।

११. जिस मिथ्यात्वमें मनुष्य रहता है उससे जब वह घृणा करेगा तभी संसार सत्यके शासनके लिये तैयार होगा।

१२. शांतिकी स्थिर चेतना जो इस समय तुम्हारे मनमें है, उसे केवल अचंचल ही नहीं विशाल भी होना चाहिये।

१३. मनमें सुस्थिर शांति और नीरवताको लाना साधनामें पहली चीज है।

१४. आंतरिक सत्तामें एक ऐसा स्थान है जहां मनुष्य हमेशा स्थिर और अचंचल रह सकता है और वहांसे वह सतही चेतनाकी गड़बड़ पर संतुलित दृष्टि डाल कर निर्णय कर सकता है और उसे बदलनेके लिये कार्य कर सकता है।

१५. अगर नीरवतामें सुनोगे तो तुम ठीक तरह सुनोगे और ठीक तरह समझोगे : लेकिन जब तक तुम्हारे दिमागमें कुछ हिलता-डुलता है और शोर मचाता है, तुम सिरमें घूमती चीजको ही समझोगे; जो कहा गया है उसे नहीं।

१६. हमारे विश्वासकी सचाईमें हमारी विजयकी निश्चिति रहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७. पूर्ण होनेका अर्थ है बिल्कुल वैसा होना जैसा भगवान् चाहते हैं कि तुम बनो।
१८. पूजा करनेकी अपेक्षा वहीं बन जाना कहीं अधिक अच्छा है।
१९. अपनी उच्चतम अभीप्साको अपने जीवनकी व्यवस्था करने दो।
२०. सत्यको स्वाधीनतासे खोजना और उसके पास अपने ढंगसे जाना मनुष्यका अधिकार है।
२१. आध्यात्मिक शिक्षा धर्मोंसे परे है और सार्वभौम सत्यकी ओर प्रयत्नशील रहती है।
२२. ऐसा कुछ न करना चाहिये जो तुम भगवान्‌के सामने न कर पाओ।
२३. भगवान् न केवल हर चीजमें उपस्थित हैं बल्कि वही सब कुछ हैं।
२४. सबसे अच्छी सुरक्षा है भागवत कृपामें अडिग श्रद्धा।
२५. हम अपने-आपको निष्कपटतासे, और पूरी तरह भगवान्‌को अर्पित कर दें तो हम उनकी रक्षाका आनंद लेंगे।
२६. जो भगवान्‌को दिया गया है उसे छोड़ कर कुछ भी सुरक्षित नहीं है।
२७. उदारता देती है और अपने-आपको बिना सौदेबाजीके देती रहती है।
२८. कम बोलो, सच्चे रहो, निष्कपटतासे कार्य करो।
२९. अपने ऊपर उपकार करनेवालेपर न कुढ़ना चरित्रकी उदात्तताका चिह्न है।
३०. खलबलीके बावजूद सत्यकी विजय होगी।
३१. संसारपर एक नये प्रकाशका उदय हो रहा है। जाग उठो और उसे ग्रहण करने, उसका स्वागत करनेके लिये एक हो जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर बोले :

आत्महत्या

आज ऋषिवरके यहां सभी चित्र लिखेसे बैठे थे। वह हंसी-खुशी, वह ठहाके वह चहल-पहल किसीका लेश मात्र भी न था। सभी अत्यंत गंभीर चेहरा बनाये उनके आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

समय हुआ और ऋषिवरके पैरोंकी आहट सुनायी दी। सब सावधान हो बैठे गये और उनके आते ही दो तीन गलोंसे एक साथ निकला, 'ऋषिवर आज हम आतम-हत्याके बारेमें जानना चाहते हैं', ऐसा अप्रत्याशित विषय सुनकर ऋषिवर भी चौंक पड़े। उन्होंने कहा, 'बात क्या है? यह विषय कहांसे आ टपका तुम्हारे समाजमें?'

विष्णुने कहा, 'शायद आपके कानोंतक यह बात नहीं पहुंची, हमारे साथी जसवन्तने न जाने क्यों पेड़से लटक कर अपनी जीवन-लीला समाप्त कर ली है। अभी उसने मुश्किलसे पच्चीस वसन्त ही देखे होंगे, फिर अभीसे क्यों चला गया इसके बारेमें हम सब चिंतित हैं, आप कुछ बता सकेंगे?'

ऋषिवरने कहा, 'मैं तो यह समाचार पहली बार सुन रहा हूं, तुम लोगोंने कोई कारण सुना हैं क्या?'

वंदनाके मुंहका ताला टूटा। उसने कहा, 'जी, जितने मुंह उतनी बातें। कोई कहता है कि वह जिस कारखानेमें काम करता था वहां फोरमेनसे उसकी नहीं बनी, उसने कुछ ऊलजलूल कह दिया और इसने खेल खतम कर दिया, कुछ कहते हैं बेचारा झोंपड़-पट्टीमें पड़ा था, वह सपने देखा करता था महलोंके। झोंपड़-पट्टी उसे असह्य हो उठी और उसने किसी और लोकमें जानेकी ठानी। एक तीसरा मत है कि वह तीर्थ यात्राके लिये जाना चाहता था, कामसे छुट्टी न मिली और वह 'हरि सों ज़ाय मिलौंगी आज' कहता हुआ चला गया और कुछ लोग रोमांसको ही इसकी जड़ बता रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्ची बात क्या है यह तो भगवान् ही जानें लेकिन हर घंटे एक नया कारण बनता जा रहा है।

'हम सबको इसकी चिंता है और इससे बढ़कर यह चिंता है कि कहीं वह भूत-प्रेत बनकर हम सब परिचितोंको तंग न करे।'

ऋषिवरके चेहरेपर मृदु मुस्कान आ गयी, उन्होंने कहा, "मैंने कहा न यह समाचार मैं तुमसे ही सुन रहा हूं इसलिये मैं नहीं कह सकता कि इस दुर्घटनाका कारण क्या है। परंतु इतना निश्चित है कि तुम्हारे बताये हुए कारणोंमेंसे कोई भी सच्चा कारण नहीं हो सकता।

'आदमीको ही नहीं, प्राणी मात्रको अपना जीवन बहुत प्रिय होता है और वह किसी कीमतपर मरना नहीं चाहता। यूं कहनेको बहुत लोग जब कष्टमें होते हैं तो कहते हैं, इस जीनेसे मरना भला लेकिन सचमुच कोई मरना नहीं चाहता। हमारे जीवनमें पीछेकी ओर कहीं अमरता छिपी है और हर एकके अंदर उसकी ललक रहती है।

'हम जिस कामके लिये धरतीपर जन्म लेते हैं उस कामको शरीर पूरा नहीं कर पाता तो उस शरीरको छोड़ना ही पड़ता है। इसमें केवल उच्चतम जीवनके लक्ष्यकी ही बात नहीं होती, प्राणकी कामनाओं-का भी हिस्सा होता है। अंतरात्मा बलवान न हो तो प्राणकी ही चलती है और वह अपनी लालसा पूरी करनेके लिये नया शरीर धारण करनेकी कोशिश करता है और तब आत्माकी हत्याकी ओर प्रवृत्ति होती है। एक जन्ममें हत्या कर लेनेपर यह प्रवृत्ति और जन्मोंतक चलती रहती है।

'लेकिन प्राणमें लाख प्रवृत्ति हो अंतरात्माकी स्वीकृतिके बिना मृत्यु नहीं आ सकती, इसलिये यह कभी न सोचो कि अमुक व्यक्तिने इसके प्रेममें फंस कर, उससे नाराज होकर, किसी औरसे तंग आकर प्राण छोड़े हैं। जिस जगह कोई हत्या या आत्महत्या हो जाय उस जगहके वातावरणमें कुछ ऐसी चीज समा जाती है कि उस जगह भले भलोंके अंदर भी यह प्रवृत्ति जाग सकती है, तुमने साधारण दुर्घटनाओंके बारेमें भी सुना होगा कि सड़कपर जिस जगह एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्घटना हो जाती है वहां वह एक बार हो कर ही नहीं रह जाती।'

सुधाकर बीचमें ही टपक पड़ा, 'तो फिर कौन-सी चीज है जो इसके लिये उत्तरदायी होती है? मैंने सुना है कि कई गुह्य शक्तियोंको संसारमें इस तरहके उपद्रव करनेमें मजा आता है।'

ऋषिवरने कहा, "मैं अभी उसी बातपर आ रहा था। हमारे वातावरणमें लाखों सूक्ष्म सत्ताएं भरी हैं, इनमेंसे अधिकतर निम्न प्राणकी हैं, ये कामनाओं, वासनाओं और अन्य निम्न कोटिकी प्रवृत्तियोंसे जन्म लेती और पोषण पाती हैं। अतृप्त प्राण, ऐसे प्राण जिनकी जीवन डोरी सहसा कट जाती है जाकर इन्हींमें शामिल हो जाते हैं और जहां भी संभव हो नवीन किंतु रुग्ण प्राणको चूसनेकी कोशिश करते हैं। हमारे जीवनकी बहुत-सी गड़बड़ोंका कारण यही शक्तियां होती हैं। जो आत्म-हत्या करता है वह भी अपनी सब अतृप्त वासनाओंको लेकर उन्हींमें जा मिलता है और नये-नये शिकारोंकी तलाश करता है। और नये-नये उपद्रव करता है। इसीलिये हमारे यहां उसकी शांतिके लिये यज्ञ हवन आदि किये जाते हैं। प्राण जिन कठिनाइयोंसे बचनेके लिए आदमीसे आत्म-हत्या करवाता है, कभी वह अपने मजेके लिये भी करवा सकता है, वे कठिनाइयां अगले जन्ममें और भी ज्यादा भयंकर रूप लेकर आती हैं और उनसे पार पाना और भी कठिन होता, है जिस आवेश या जिस अवसादमें आकर आदमी ऐसा कृत्य कर बैठता है वह उसका पीछा नहीं छोड़ता, वह दुगुने वेगसे उसका पीछा करता है और उसे परेशान करके अपने-आप परेशान होकर उस परेशानीमें रुग्ण रस लेता है। साधारण भाषामें लोग इसे ही भूत कहते हैं।'

पीछेसे किसीने पूछा, 'अच्छा किसीने आत्म-हत्या कर ही डाली, जैसे आप कहते हैं, किसी अवांछनीय शक्तिके प्रभावमें आकर अपनी इहलीला समाप्त कर ली तब हमें क्या करना चाहिये जिससे हम मृत जीवकी कुछ सहायता कर सकें और उसके आस-पास रहनेवालोंको भयसे मुक्ति दिला सकें?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवरने कहा, 'भय बड़ी भयानक चीज है। तुम जिससे डरते हो, मानों उसे अपने पास आनेका निमंत्रण देते हो, वह भय ही कष्ट देनेके लिये नाना प्रकारके रूप धारण कर लेता है। अगर तुम अपनी श्रद्धाके अनुसार जहां आत्म-हत्या हुई है उस स्थानपर वैदिक मंत्रोंके साथ यज्ञ हवन करो, माताजी-श्रीअरविंदके वचनोंका पाठ करो, नाम जप, ॐ जप करो तो तुम वातावरणको भी स्वच्छ कर सकोगे और मृत प्राणीको भी सहायता पहुंचा सकोगे। साथ ही शांति पाठ भी कर सकते हो।'

अतिमानसिक योग

२-३-१९२६

श्रीअरविंद बोलनेके भावमें न थे। उन्होंने कहा, "अगर तुम बोलना चाहते हो तो कोई विषय निकालो। आज मैं बोलचालसे खाली हूं।"

शिष्य—इस योगमें साधकका क्या भाग होता है, वह किस हद-तक भगवान्पर निर्भर है और कितना गुरुपर ?

श्रीअरविंद—हे भगवान्! यह तो बहुत बड़ा प्रश्न है। क्या तुम गणितके हिसाबसे उत्तर चाहते हो ?

शिष्य—जी नहीं, मुझे गणितकी जरूरत नहीं है। मैं पहले ही हिसाब लगा चुका हूं।

श्रीअरविंद—तो फल क्या निकला ? तुम्हें कोई सूत्र मिला ?

शिष्य—जी, एक नहीं, अनेक।

श्रीअरविंद—पहला तो यह कि अगर तुम इस योगमें सब कुछ अपने-आप ही करना चाहो तो घपला पैदा कर दोगे। फिर भी हर क्षण तुम्हें उच्चतर गतिविधिको स्वीकृति देनी होगी; निम्नतर गतिको अस्वीकार करना होगा। इस हदतक तुम्हें क्रिया करनी ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी और अगर तुम उचित रूपमें क्रिया न करो तो भी घपला पैदा कर दोगे।

जब तुम उच्चतर शक्तिको नीचे उतरते देखो तो तुम्हें उचित रूपमें उसे ग्रहण करना होगा, जब उच्चतर शक्ति उपस्थित हो तो तुम्हें यह देखना होगा कि तुम उसका उचित तरीकेसे उपयोग करो, न तो उसे तोड़ो मरोड़ो, न उसे पीड़ा पहुंचाओ। जब उच्चतर शक्ति अनुपस्थित हो तो स्वयं तुम्हें क्रिया करनी और फल भोगने होंगे। तुम यह नहीं कह सकते कि भगवान्को सब कुछ करना चाहिए। भगवान् हर चीज इस तरहसे नहीं करते।

रही बात गुरुकी। गुरुसे तुम्हारा क्या मतलब है? अगर तुम्हारा मतलब मुझसे है तो मैं, सुविधाके लिये गुरु कहलाना स्वीकार कर सकता हूं लेकिन लोग साधारणतः गुरुका जो अर्थ समझते हैं उस अर्थमें इस योगमें कोई गुरु नहीं है। उच्चतर शक्ति नीचे उतर रही है। सामान्यतः जब कभी ऐसी उच्चतर शक्ति नीचे उतरती है तो वह एक यंत्रको तैयार करती है जो सत्यको खोजता है। बल्कि सच पूछो तो जिसके लिये सत्य खोजा जाता है। वह अपने-आपको उसकी ग्रहणशक्तिके अनुपातमें उसके अंदर अभिव्यक्त करती है। वहां भी शक्ति. उसे दी जाती है। जब नीचे उतरनेवाली शक्ति ऐसे एक यंत्रको तैयार करती है तो उसके लिये ऐसे और लोगोंके अंदर उतरना ज्यादा आसान हो जाता है जो अपनी ही राह नहीं चलना चाहते बल्कि सत्यको पाना और जीना चाहते हैं। तब सफलताका अवसर होता है। (अपनी ओर इशारा करते हुए) यह यंत्र है। जहां कहीं मानव यंत्र हो वहां उच्चतर शक्तिके लिये जीवनमें उतरना ज्यादा आसान हो जाता है। अगर तुम उसे 'डायनेमो' कहना चाहो तो कह सकते हो। फिर भी हर एकको अपना-अपना काम तो करना ही होगा।

कम-से-कम इस योगमें तुम यह नहीं कह सकते कि गुरु सब कुछ करेंगे और यह कहकर सारा भार उनपर नहीं छोड़ सकते। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और योगोंकी बात नहीं जानता लेकिन इस योगका अर्थ है, तुम्हारे अंदर जो कुछ हो रहा है उसके बारेमें हर क्षण सचेतन होना, तुम्हें उच्चतर क्रियाको स्वीकृति देनी होगी और निचली क्रियाओंको अस्वीकार करना होगा। यही आधार है।

गुरुकी सहायता पानेके लिये भी वही शर्तें हैं जो उच्चतर शक्तिकी सीधी सहायता पानेके लिये हैं। जब तक कि तुम उनकी क्रियाके लिये सहमत न हो, स्वयं भगवान् भी मनुष्यकी सहायता नहीं करते। इस योगमें मनुष्यको चुनाव करनेके लिये पूरी छूट है।

शिष्य—हमें सहायता सीधी मिलती है या आपके द्वारा?

श्रीअरविंद—दोनों तरहसे। चूंकि शक्ति नीचे उतरती है इसलिये तुम भी और सबकी तरह उसे पा सकते हो। तुम मेरे द्वारा भी पाते हो, यह एक ही सत्य है। जो चीज आ रही है वह मनके परेकी है। अगर तुम सहायताके लिये मेरी ओर मुड़ो तो तुम्हें मुझसे सहायता मिल जायगी। मेरे पाससे कोई चीज तुम्हारे अंदर जाती है और तुम्हारे अंदर उच्चतर शक्तिके अवतरणके लिये आवश्यक परिस्थितियां तैयार कर देती है। वस्तुतः ये दोनों क्रियाएं इतनी अलग नहीं हैं जितना तुम समझ रहे हो।

शिष्य—तिरुपति (एक साधक)के बारेमें क्या हुआ?

श्रीअरविंद—मुझे उससे साफ कहना पड़ा, "अगर तुम अपनी मरजीके मुताबिक करना चाहो और फिर चाहो कि गुरु तुम्हारी सहायता करे, तो यह मुझसे न होगा।" उसके मामलेमें दो बातें गलत थीं। उसे कुछ अनुभूतियां हुई थीं और वह उनका भोग करने लगा। वह उल्लास और शक्तिका अनुभव करने लगा। जब वह अपने उस दुर्बल शरीरके साथ दो-तीन दिन बिना खाये रह सका तो लोग आश्चर्य करने लगे लेकिन यह सब प्राण-शक्तिके कारण था। उसने अपने-आपको पूरी तरहसे प्राणमें प्रक्षिप्त कर दिया है।

दूसरी बात यह है कि वह सत्यके लिये सत्य नहीं चाहता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि वह उसके सहारे महान् और अद्वितीय बनना चाहता था, वह सत्यको अपने लिये चाहता था। वह दिव्य होना चाहता था। वह मुझसे कहता था कि मैं आधा अतिमानव तो बन ही चुका हूं। मैं उसे भौतिक चेतनामें धकेलनेकी कोशिश कर रहा था लेकिन दुर्भाग्यवश उसके चैत्य पुरुषको अन्य भागोंपर कोई अधिकार न था।

शिष्य—तो क्या उसने जिस शक्तिको नीचे खींच लिया था, वह चाहे जो भी क्यों न हो, उसे दूर किया जा सकता है ?

श्रीअरविंद—नहीं, तबतक नहीं जबतक वह स्वयं उसके लिये राजी न हो, अगर तुम सहायता न लेना चाहो तो स्वयं भगवान् भी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते।

शिष्य—क्या उसमें निष्कपटताका अभाव, सत्यको तोड़ने-मरोड़नेकी वृत्ति शुरूसे ही थी ?

श्रीअरविंद—उसका बीज तो रहा होगा। ऐसे बीजको या तो विकसित किया जा सकता है या नष्ट किया जा सकता है। अगर तुम उसे अस्वीकार कर दो तो उसे नष्ट किया जा सकता है और उसे विकसित करो तो वह कड़ा और मजबूत हो सकता है।

शिष्य—क्या जब उसने योग शुरू किया था तो उसमें सच्चाई और निष्कपटता न थी ?

श्रीअरविंद—उसमें सच्चाई थी वरना वह यह योग कभी शुरू ही न कर पाता लेकिन जब दूसरी चीज उठती है तो वह सारी सत्ताको आच्छादित कर देती है और सच्चाईपर भी छा जाती है।

शिष्य—जब उसपर आक्रमण होता है तो क्या आप उसकी रक्षा नहीं कर सकते ?

श्रीअरविंद—मैं बहुत समयतक उसे कसकर पकड़े नहीं रख सकता। अगर मैं उसे इस तरह पकड़े रखूं तो जब मैं किसी और की तरफ ध्यान दूं तो पकड़ छूटते ही कठिनाई उसके अंदर फिरसे घुस पड़ेगी।

शिष्य—क्या आप उसे उसकी मरजीके बिना बदल नहीं सकते ?

श्रीअरविंद—नहीं, उसकी रजामंदीके बिना यह संभव नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं भगवान् भी ऐसा करना पसंद नहीं करते और नहीं करते और वे तो मुझसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं। व्यक्तिकी रजामंदीके बिना कुछ नहीं किया जा सकता। मैंने उससे कहा 'उच्चतर शक्तिको मत खींचो'। उसने हां, हां तो कर दी परंतु खींचना बन्द नहीं किया। आखिर वह ऐसी स्थितिमें पहुंच गया कि वह मेरी बात न सुन सकता था। वह कहता था कि उसे जो प्राप्त है वह अतिमानस है! जब मैंने उसे बताया कि यह अतिमानस नहीं है तो वह हां तो कह देता था, पर चलता था अपने ही ढर्रे पर। उसका छुटकारा इसीमें था कि वह भौतिक मनमें आ जाय और साधारण मनुष्यकी तरह व्यवहार करे।

शिष्य—क्या आप उसे यह अनुभव नहीं करा सकते कि वह सच्चा और निष्कपट नहीं है?

श्रीअरविंद—नहीं, वह जानना नहीं चाहता। मैं उसे सच्ची स्थिति-का अनुभव दे सकता हूं लेकिन उसे निम्न क्रियाको त्यागकर उच्चतर क्रियाको स्वीकार करना होगा। मैं सारे समय उसे पकड़े नहीं रह सकता।

मतलब यह है कि सत्ताके जिस भागने निम्नतर खेलको स्वीकार कर लिया है वह हट जाय, उससे दूर हो जाय। बाधासे पिंड छुड़ाने-की यह शर्त है।

मतलब यह हुआ कि इस योगमें तुम्हें जबरदस्ती सत्य नहीं दिया जा सकता। तुम्हें पग-पगपर सत्यको स्वीकार करना होगा।

शिष्य—क्या आपका ख्याल है कि अन्य योग मार्गोंमें भी ऐसा ही है?

श्रीअरविंद—मुझे पता नहीं लेकिन मेरा ख्याल है कि सत्तामें कहींपर किसी तरहकी, खुली या छिपी रजामन्दी एकदम जरूरी है, तभी गुरुकी शक्ति काम कर सकती है। लेकिन बाहरका मूल्य नहीं है। वास्तविक चीज है केंद्रीय स्वीकृति, जिसकी जरूरत है।

शिष्य—मान लीजिये कि केंद्रीय स्वीकृति है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—केंद्रीय स्वीकृतिसे तुम्हारा क्या मतलब है?

शिष्य—मेरा मतलब है चैत्य सत्ताकी स्वीकृति।

श्रीअरविंद—चैत्य सत्ता मन, प्राण आदिके पीछे होती है। जिसे मैं केंद्रीय सत्ता कहता हूं वह समस्त सत्ताके ऊपरकी चीज है जो प्रकृतिपर दबाव डालती और चीजें करवा लेती है। वही मनुष्यको योगकी ओर प्रेरित करती है, बाकी सब तो बहाने होते हैं चाहे वे परिस्थितियां हों, बौद्धिक विचार हों या ऐसी ही कोई और चीजें हों। स्वयं मैंने भारतको स्वतंत्र करानेकी दृष्टिसे योग शुरू किया था। जब मैं योगमें गहरा उतरा तो मैंने देखा कि कोई चीज पहले ही उठ आयी है और मैं सीधा और ठीक-ठीक चला अन्यथा मैं पथसे भटक जाता।

इस योगमें यह काफी नहीं है कि केंद्रीय सत्ता, जो साधारणतः ऊपर होती है, दूरसे ही स्वीकृति दे दे। जब जरूरत हो तो उसे आगे आना और अन्य भागोंके ऊपर प्रभाव दिखा सकना चाहिए। प्रायः वही रक्षा करती है। उदाहरणके लिये सत्तामें सैंकड़ों बार संदेह उत्पन्न हो सकते हैं और कुछ देरके लिये ऐसा लग सकता है कि वे तुम्हें पूरी तरह बहा ले गये। तब केंद्रीय सत्ता ही आग्रहके साथ कहती है, "मैं सत्यको जानती हूं। मैं उसके लिये प्रतीक्षा कर सकती हूं।"

शिष्य—केंद्रीय सच्चाई क्या है?

श्रीअरविंद—यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। तुम कह सकते हो कि यह केंद्रीय सत्तामें कोई चीज है जो आह्वानके लिये तत्पर रहती है। आदमी पथसे भटक सकता है, दोष हो सकते हैं लेकिन अगर केंद्रीय सत्ता है तो वह मार्गपर लौट आता है। सत्यको प्राप्त करनेके लये केंद्रीय सचाई आवश्यक शर्त है।

शिष्य—क्या सब प्रकारकी शक्तियोंके लिये यही बात है?

श्रीअरविंद—यह इसपर निर्भर है कि तुम किस प्रकारकी शक्ति पा रहे हो—बहुत प्रकारकी शक्तियां होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—"चकमे देना और विकृत करना" प्राणका सामान्य रोग है लेकिन इसे ठीक करना बहुत कठिन है।

दूसरा शिष्य—क्या मनमें भी इस तरह चकमे देने और विकृत करनेका रोग नहीं होता ?

श्रीअरविंद—होता है और वह भी साधकको उचित पथसे भ्रष्ट कर सकता है। फिर भी, आखिर मनमें प्रकाशके लिये कुछ अभीप्सा होती है और उसे प्रकाश देना अपेक्षाकृत सरल है। सारा वास्तविक संकट प्राणमय सत्तासे आता है। वहींपर साधक पथ-भ्रष्ट होता है। हो सकता है कि भौतिक अंधकारके उठनेके कारण आदमी योग न कर सके। लेकिन अगर किसीने प्राणतक काम कर लिया है तो पथ भ्रष्ट होनेका मौका नहीं आता। अगर आदमी भौतिक संघर्षमें गिर भी पड़े तो वह सचमुच पतन नहीं होता क्योंकि उसने जो कुछ कमाया है वह भविष्यके लिये बना रहेगा। लेकिन अगर कोई प्राणमें भटक जाय तो वह सचमुच पथभ्रष्टता होगी जिसका अर्थ है पराजय।

साधारणत: ऐसे लोग उतरनेवाली शांतिको पसंद नहीं करते। जब 'क्ष' यहां आया तो उसे लगा मानों वह एक मामूली-सा आदमी है। उसे इस स्थितिसे बहुत सख्त आपत्ति थी। जब उच्चतर शक्ति उपस्थित होती है तो शक्ति और आनंदका भाव होता है, कुछ लोग उसे अपनी निजी शक्ति मान बैठते हैं और जब वह अनुपस्थित हो तो वे अपने-आपको भूसेकी तरह अनुभव करते हैं और सचमुच बात है भी ऐसी, ऐसे समय तुम एक ही चीज कर सकते हो: स्थिर, अचंचल रहो। काम शक्तिको करना है, मनुष्यको नहीं।

शिष्य—रूपांतर सिद्ध करनेके लिये शांतिकी क्या शर्तें हैं ?

श्रीअरविंद—अगर मेरे अंदर पूरी तरहसे रूपांतर हो जाय तो यह औरोंके लिये सरल हो जायगा और अगर यह दूसरोंमें सफलताके साथ प्रतिष्ठित हो जाय तो इसका अर्थ होगा कि उसके जगत्में जारी रहनेके लिये आवश्यक परिस्थिति तैयार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—इसका अर्थ यह हुआ कि उसके लिये समयकी जरूरत है और इसका यह भी अर्थ हुआ कि जब तक वैश्व परिस्थितियां तैयार न हों तबतक सत्य अपने-आपको अभिव्यक्त नहीं कर सकता।

श्रीअरविंद—काल वैश्व भाव है। सब कुछ वहां हो पर फिर भी हो सकता है कि परिसर तैयार न हो।

शिष्य—क्या स्नायविक और भौतिक सत्तामें सच्ची मांग स्थापित करना बहुत कठिन नहीं है?

श्रीअरविंद—साधारणत: भौतिक कपटी नहीं होता। वस्तुत: वह सच्चा, निष्कपट तो होता है परंतु बहुत धुंधला, रूढ़िग्रस्त और बदलनेमें धीमा, जड़ और मंद होता है।

स्नायविक सत्तामें अज्ञानकी ओर लौटना अतीतकी स्मृतिके कारण होता है या फिर भौतिक सत्ताका अपनी अशुद्धियोंको ऊपर फेंकने या प्राणिक सत्ताका अपनी अशुद्धियां उसपर डालनेके कारण होता है, अत: स्नायविक अशुद्धियोंसे काम पड़े तो तुम्हें पहले यह देखना चाहिए कि वे कहांसे आ रही हैं। अगर प्राणमय सत्ता सच्ची है तो स्नायविक सत्तामें गड़बड़ भौतिकसे आ रही है।

९-४-१९२६

आज शामको साधकोंके शराब पीने या नशीली चीजोंका उपयोग करनेकी बात चली।

शिष्य—जो साधक शराब पीते या नशीली चीजें लेते हैं इससे उन्हें समाधिमें पहुंचनेमें क्या कोई सहायता मिलती है?

श्रीअरविंद—यह सब इसपर निर्भर है कि तुम समाधि कहते किसे हो, इस विषयमें मेरा अपना अनुभव यह है कि शराब और दूसरी नशीली चीजें शरीरके सबसे अधिक तामसिक केंद्रोंकी क्रियाओंको अवरुद्ध करती हैं और मस्तिष्कके दूसरे केंद्र उत्तेजित हो जाते हैं, इससे आदमीको भौतिक चेतनाकी सीमाओंसे बच निकलनेमें सहायता मिलती है और वह चेतनाके अन्य लोकोंमें जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारणत: जो साधक पहाड़ोंपर रहते हैं वे गरमी पानेके लिये और ठंडसे बचनेके लिए इन चीजोंका उपयोग करते हैं। दूसरे ऐसे भी हो सकते हैं जो भौतिक चेतनासे दूर जानेके लिए इनका उपयोग करते हैं।

शिष्य—क्या इससे उन्हें सचमुच कुछ सहायता मिलती है या वे केवल कल्पना कर लेते हैं और यह पीने और अपनी कामनाको पूरी करनेका एक बहाना बन जाता है?

श्रीअरविंद—यह काफी जानी हुई बात है कि इससे लोगोंको, चाहे वे साधक हों या न हों, भौतिक चेतनासे निकल जानेमें सहायता मिलती है।

शिष्य—कुछ लोग नशेके असरमें अपनी कविताएं लिखा करते हैं।

श्रीअरविंद—एक दिन माताजीने एक मजदूरसे पूछा कि तुम क्यों पीते हो। उसने कहा, पीनेके बाद मेरे मनमें ऐसे विचार आते हैं जो अन्यथा कभी न आते। कालरिजने अपनी सभी कविताएं अफीमके नशेमें लिखी हैं। एक बार किसीने टेनिसनकी एक पंक्ति की प्रशंसा की तो कविने कहा: "आह! वह पंक्ति, इसके लिये मुझे २५ सिगार खर्च करने पड़े थे।"

अत: इसका कोई कारण नहीं कि साधक इन चीजोंसे लाभ क्यों न उठाएं (कुछ देर रुक कर) मैं आशा करता हूं कि ये प्रश्न पूछनेमें तुम्हारे कोई गंभीर इरादे नहीं हैं! (हंसी)

शिष्य—मैं केवल यह जानना चाहता हूं कि क्या इससे वे लोग सचमुच समाधिमें चले जाते हैं!

श्रीअरविंद—समाधिसे तुम्हारा मतलब क्या है? अगर इतना ही है कि यह एक अंतरकी ओर खिंची हुई स्थिति है तो निश्चय ही उसमें जानेके लिये इससे सहायता मिल सकती है।

शिष्य—साधारणत: पीनेवाले हल्की-फुल्की मनोवृत्ति वाले होते हैं।

श्रीअरविंद—बहुत-सी मनोवृत्तियां होती हैं, हल्की-फुल्की, कोप भरी, भावुकतापूर्ण मनोवृत्ति। अंतिम स्थिति पानेके लिये तुम्हें बड़ा भक्त होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—मेरे ऊपर शराबका कोई असर न होता था, सिर्फ मुझे चक्कर आते थे।

श्रीअरविंद—यह पहला कदम है।

शिष्य—और फिर मैं सो जाता था।

श्रीअरविंद—यह एक तरहकी निश्चेतन समाधि है (हंसी) यह एकाग्र होनेमें सहायता दे सकती है लेकिन आदमी उस एकाग्रताका क्या उपयोग करता है यह उस आदमीपर निर्भर है। मेरा अपना ख्याल यह है कि जितने भी लोग इस तरहके साधनोंका उपयोग करते हैं उनमेंसे नब्बे प्रतिशत कभी प्राणिक चेतनाके परे नहीं जा पाते। वे उसे पा लेते हैं, फिर प्राण बहुत बड़ा रचयिता है, वह असंख्य वस्तुओं, लोकों, स्थितियोंकी रचना कर डालता है, वह तुम्हें यह विचार भी दे सकता है कि तुम उच्चतम स्थितिमें हो। प्राणिक स्थितिमें अनगिनत सिद्धियां हैं और अगर तुम्हें उचित ज्ञान हो तो इन चीजोंका उपयोग कर तुम उन्हें पा सकते हो। और अगर तुम ब्रह्म चेतनामें भी पहुंच जाओ तो यह उच्चतम सत्य न होगा। ब्रह्म चेतना तो किसी भी स्तरपर मिल सकती है। तुम उस चेतनाको मानसिक या प्राणिक स्तरपर पा सकते हो।

ये उत्तेजक चीजें तुम्हें भौतिकसे दूर जानेमें मदद देती हैं लेकिन तुम इस स्वतंत्रतासे क्या करते हो वह तुम पर निर्भर है। ये बाहरी साधन हैं अतः उनकी बड़ी बुरी प्रतिक्रिया होती है—साधारणतः आध्यात्मिक जीवनमें इन चीजोंकी सिफारिश नहीं की जाती।

शिष्य—सामान्यतः आध्यात्मिक अभीप्सुओंमें सिद्धिका भय होता है और उनका निषेध किया जाता है।

श्रीअरविंद—इसका कारण यह होगा कि एक बार तुम प्राणमय स्तरमें घुस जाओ तो फिर सत्यको पाना बहुत मुश्किल हो जाता है। साधारण धारणा यह है कि ब्रह्म-चेतनाकी अनुभूतिके लिये तुम्हें हमेशा अपने भीतर खिंचा रहना चाहिए लेकिन यह बिल्कुल सच्ची बात नहीं है। मुझे ब्रह्म चेतनाका पहला अनुभव बड़ौदामें मनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिर करनेसे हुआ था लेकिन मैं अचेतन न था। मैंने इस अवस्था-को, जो मनमें आयी थी, एक महीनेतक रखा था। मैं लोगोंसे मिलता-जुलता था। लेकिन मैं सब कुछ मायाके रूपमें देखता था और उन सबके पीछे थी एकमेव सद्वस्तु। शून्यका अनुभव और भी अधिक विलक्षण है क्योंकि तुम उसमें सबके, आत्मातकके निषेध द्वारा पहुंचते हो।

शिष्य—शून्य चेतना क्या है?

श्रीअरविंद—उसका ठीक-ठीक वर्णन करना असंभव है क्योंकि वह शून्य है। तुम निष्क्रिय हो सकते हो परन्तु निष्क्रियताका वह अनुभव सकारात्मक होता है जब कि शून्य कुछ भी नहीं है, असत् है जिसमेंसे सत् उत्पन्न हुआ। असतो सदजायत।

शिष्य—क्या वह किसी वास्तविकताके साथ मेल खाता है?

श्रीअरविंद—वास्तविकताके लिये तुम्हारी कसौटी क्या है?

शिष्य—क्या अनुभूतिकी इन अवस्थाओंका सचमुच कोई अस्तित्व है?

श्रीअरविंद—क्यों नहीं? अगर तुम पूछो कि क्या वे यहां भौतिक स्तरपर मौजूद हैं तो यह बेतुकी बात है क्योंकि स्वाभावतः ही वे अतिभौतिक हैं पर हैं वास्तविक।

शिष्य—मेरा मतलब यह है कि क्या चेतनाकी इन अवस्थाओंका अस्तित्व है?

श्रीअरविंद—निश्चय ही। सच्ची बात यह है कि मनोमय पुरुष परम सद्वस्तुके प्रति जितनी चाहे उतनी स्थितियां ग्रहण कर सकता है और हर स्थितिमें एक निरपेक्ष सत्य पा सकता है जो उतना ही निरपेक्ष है जितना कोई और। इस तरह हर एक पूर्ण और चरम है। उदाहरणके लिये एक आनंदका लोक है जो स्वयंभू है। अगर तुम उस स्थितिमें हो तो तुम इस बातकी परवाह नहीं करते कि तुम्हारे सिरके ऊपरकी छत बैठ रही है या तुम्हारे मित्रोंको क्या हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८-५-१९२६

आज एक शिष्यने फिरसे वही प्रश्न उठाया कि शक्ति या नारी प्रतिरूपके बिना पूर्ण रूपांतर संभव है। ऐसा लगता था कि श्रीअरविंद इस विषयपर अपनी पूरी बात करनेके लिये तैयार न थे।

श्रीअरविंद—मेरी समझमें नहीं आता कि एक शक्तिके बिना रूपांतर साधित करना क्यों असंभव हो। रूपांतर तब पूरा होगा जब तुम उच्चतर शक्तिको, जो मन और प्राणमें उतरती है, भौतिक सत्तामें, शरीरके, जड़ शरीरके कोषाणुओंतकमें उतार सको। पूर्ण रूपांतरकी शर्तें यह हैं कि तुम मनसे लेकर शरीरके जड़ कोषाणुओंतक एक-सी गहरी शांति, विशालता, बल, शुद्धि, शक्ति और नमनीयता बनाये रख सको। यह भौतिक आधार है। इस रूपांतरके लिये किसी नारी प्रतिरूप या शक्तिकी जरूरत नहीं है।

शिष्य—शायद वह यह कहना चाहता है कि यह रूपांतर केवल आपमें ही हो सकता है और किसीमें नहीं।

श्रीअरविंद—तब तो मेरी बड़ी बुरी अवस्था होगी, मैं अकेला रूपान्तरित व्यक्ति रहूंगा। मैं सृष्टिके आरंभमें स्थित पुरुष जैसा होऊंगा जिसने अपने-आपको एकदम अकेला पाया! (हंसी)

शिष्य—जी, जब उसने अपने-आपको एकदम अकेला पाया तो उसे सृष्टि बनानेकी जल्दी मची।

शिष्य—मैं योग करने या ज्ञान और शक्तिको पानेके बारेमें नहीं पूछ रहा था। मैं शरीरमें भगवान्‌को अवतरित करनेके बारेमें जानना चाहता था।

श्रीअरविंद—हां, भगवान्‌को अवतरित करनेका अर्थ है अपनी दिव्य आत्माको अवतरित करना जो अतिमानसमें है। वह तुम्हारी वर्तमान आत्मासे बिल्कुल भिन्न है। वह अतिमानसिक लोकके ज्ञान, शक्ति और आनंदसे भरी होती है। वह कोई अवैयक्तिक सत्ता न होकर एक पुरुष है। जैसा कि मैंने कहा, उस सत्ताके नीचे उतरने और यहां काम करनेके लिये शर्त यह है कि तुम्हारे अंदर तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

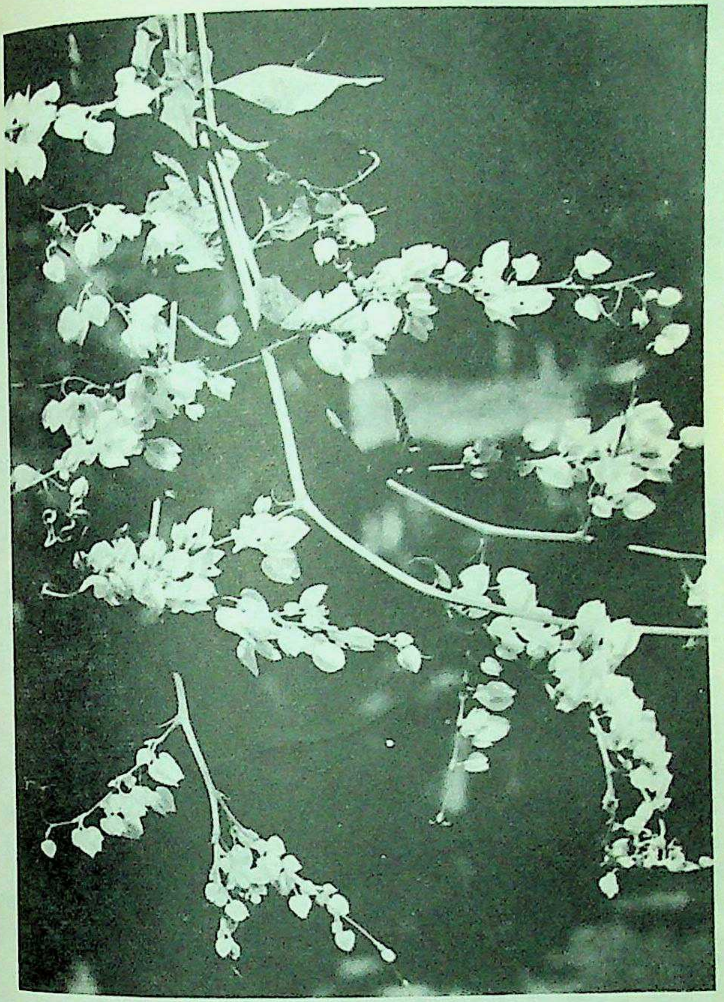

सामंजस्य

न विवाद, न झगड़े — विरोधाभासहीन जीवनका माधुर्य-
—यह है सामंजस्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

In the night as in the day be always

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

In the night as in the day be always with me.

In sleep as in waking let me feel in me always the reality of your presence.

Let it sustain and make to grow in me Truth, consciousness and bliss constantly and at all times.

Sri Aurobindo

प्रार्थना

रातको भी दिनकी तरह हमेशा मेरे साथ रहो।
वर दो कि नींदमें भी जागती अवस्थाकी तरह मुझे तुम्हारी उपस्थितिकी वास्तविकताका अनुभव हो।
वर दो कि वह मेरे अंदर सत्य, चेतना और आनंदको सदा सर्वदा सहारा दे और विकसित करे।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक सत्तातक में वही गहरी शान्ति, वही विस्तार, बल, नमनीयता आदि हों। रूपांतर एक व्यक्तिगत मामला है। मेरी समझमें नहीं आता कि शक्ति वहां क्या करेगी।

तुम चीजोंकी खिचड़ी बना रहे हो। (१) रूपांतर और शक्तिकी आवश्यकता (२) तुम अपने और मेरे बीच घालमेल कर रहे हो!

शिष्य—जी नहीं, मैं अपने-आपको आपके साथ मिलाना नहीं चाहता था।

श्रीअरविंद—मैंने सोचा कि शक्तिके बारेमें तुम्हारा प्रश्न विवाह-की याचिकाकी पूर्व भूमिका है (हंसी) (कुछ रुककर) कोई सच्चा मामला हो तो मैं शक्तिके बारेमें आपत्ति नहीं करूंगा। अगर तुम्हारी आस्तीनमें कोई छिपी हो तो निकालो। (हंसी)

दूसरा शिष्य—वह सोच रहा था, 'शक्तिके बिना रूपांतरका क्या लाभ?'

शिष्य—मेरा कोई निजी मामला नहीं है। मैं ज्यादा जानना और समझना चाहता हूं।

श्रीअरविंद—मैं इस विषयपर सब कुछ कहनेके लिये तैयार नहीं हूं। मेरे ख्यालसे मैं किसी और समय यह पहले भी कह चुका हूं: शक्तिकी क्रिया एकदम भिन्न होती है। मेरे लिये, मुझे जो काम करना था उसमें यह जरूरी शर्त थी। अगर मुझे स्वयं अपना रूपांतर करना होता या एक नया योग शुरू करना होता या उन कुछ लोगोंको, जो मेरे संपर्कमें आते, एक नया आदर्श देना होता तो मैं यह सब बिना किसी शक्तिके ही कर लेता। लेकिन मुझे जो काम करना था उसके लिये जरूरी था कि दोनों पक्ष एक साथ आयें। मेरे और माताजीके एक साथ होनेसे कुछ ऐसी परिस्थितियां पैदा हो गयीं जिनके कारण तुम्हारे लिये रूपांतर प्राप्त करना ज्यादा आसान हो गया। तुम उन परिस्थितियोंका लाभ उठा सकते हो।

लेकिन यह जरूरी नहीं है कि हर एकके पास शक्ति हो। लोगों-को सामान्य नियम बनानेकी बीमारी होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—मैं कहना चाहता था कि हम आपकी तरह महान् नहीं हैं।

श्रीअरविंद—यहां छोटे-बड़ेका सवाल नहीं है। सवाल है मेरी अपेक्षा कम जटिल होनेका।

और इससे पहले कि तुम्हारे पास शक्ति हो, तुम्हें शक्तिका अधिकारी होना चाहिए। सबसे पहली शर्त यह है कि तुम्हें काम-पर प्रभुत्व होना चाहिये।

शिष्य—मैं इस शर्तको जानता हूं।

श्रीअरविंद—यही एकमात्र शर्त नहीं है, और भी बहुत-सी बातें हैं। जैसा कि मैंने कहा, मैं इस विषयमें सब कुछ कहनेके लिये तैयार नहीं हूं। एक बात यह है कि दोनोंको निकट आना चाहिए और चेतनाके प्रत्येक स्तरपर पूर्ण ऐक्य होना चाहिए।

शिष्य—अगर शक्ति है तो ये सभी शर्तें पूरी हो जाएंगी।

श्रीअरविंद—क्या तुम्हारा ख्याल है कि चूंकि दोका मिलन केंद्रीय सत्तामें या कहीं और हो रहा है इसलिये सारा काम पूरा हो गया?

मनुष्यके अंदर बहुत-से व्यक्तित्व होते हैं और संपूर्ण पूर्णता पानेके लिये तुम्हें संसारमें व्यक्तित्वके मूल्यको जानना चाहिए। तुम्हारे अंदर सच्चा व्यक्तित्व क्या है? हर स्तरपर भिन्न-भिन्न व्यक्तित्व होते हैं और पुरुष और शक्तिके बारेमें उन्हें प्रत्येक स्तरपर मेल खाना चाहिए। इतना पूर्ण ऐक्य साधित होनेसे पहले तुम्हें लंबी कठोर तपस्या करनी होगी।

परंतु इसका रूपांतरके साथ कोई संबंध नहीं है।

शिष्य—लेकिन हम जिस गतिसे प्रगति कर रहे हैं उसे अगर हम वर्षोंकी गतिसे गुणा करें, तो मुझे उसे प्राप्त करनेकी बहुत कम आशा दीखती है।

श्रीअरविंद—अभी तुम ऐसी स्थितिमें हो कि अगर तुम्हें यह लगे कि चीज असंभव है तो तुम निराश हो जाते हो।

शिष्य—मैं सदासे ऐसा न था।

श्रीअरविंद—मुझे पूरा विश्वास नहीं है। तुम आजकी गतिसे यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि अगले वर्ष क्या गति होगी। अभी हम पैदल चल रहे हैं। कुछ समय बाद हम साइकिलपर चल सकते हैं और फिर मोटर कार में।

शिष्य—और फिर हवाई जहाजपर।

श्रीअरविंद—हां, एक समय था जब मुझे यह काम अपने इस जीवन-कालमें करनेका विचार छोड़ देना पड़ा था। प्राणिक सत्तामें बहुत जोरका आवेश था कि इसे बहुत जल्दी पूरा कर डालूं। तब मुझे इन सब विचारोंको छोड़ देना और सारी चीज भगवान्‌के हाथमें छोड़ना सीखना पड़ा कि वे जो चाहें करें।

प्राणिक सत्ता बहुत जल्दी उल्लसित हो जाती है और भौतिक सत्ता अवसादमें आ जाती है। मैंने भी अवसादके काल देखे हैं लेकिन मैंने श्रद्धा कभी नहीं छोड़ी। मैं जानता था कि चीज करनी है और की जायगी लेकिन मैं यह न जानता था कि इसे मैं ही अपने जीवनकालमें कर लूंगा या कोई और इसे पूरा करेगा। मेरे अंदर अवसादके काल कभी लंबे न होते थे। वस्तुतः मुझे यह वर्ष पिछले तीन वर्षोंसे अधिक अच्छा लग रहा है।

शिष्य—१) क्या साधनाकी परिपूर्णताका यह अर्थ नहीं है कि उच्चतर चेतनाको भौतिक स्तरपर, यहांतक कि बाहरी काममें भी क्रियाशील और प्रभावकारी बनाया जाय?

२) अगर ऐसा है तो उस कार्यकी सामान्य रूप-रेखा क्या है?

३) हमें उसमें जो भाग लेना है उसका ठीक-ठीक रूप क्या है?

श्रीअरविंद—तुम ये प्रश्न क्यों कर रहे हो? दो बातें हैं। पहले तो रचनात्मक मन अपने आगे किसी प्रकारका खाका चाहता है, हां, वह मानसिक रूपरेखा चाहता है, दूसरे, प्राणिक मन, जो खेल चाहता है।

अगर तुम यह जानना चाहो कि क्या हमारा लक्ष्य यह है कि उच्चतर शक्तिको जीवनके सभी क्षेत्रोंमें कार्यरत करें, तो जवाब देना मेरे लिये आसान होगा। तब मैं कहूंगा, हां, हमारा उद्देश्य है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चतर शक्तिको जीवनमें लायें, ऐसी शक्तिको जो क्रियाशील और प्रभावकारी हो।

फिर बाहरी कामसे तुम्हारा क्या मतलब है?

शिष्य—मैंने साधना और भीतरी परिवर्तनोंकी बात नहीं की थी, मेरा मतलब था बाहरी जीवनके व्यवहार और कार्यसे।

श्रीअरविंद—तुम सीमा कैसे निर्धारित करोगे? क्या हर कामका भीतरी जीवनके साथ भी संबंध नहीं होता?

शिष्य—जी हां, हर काममें एक बाह्य और एक आंतरिक सहकारी कारण होता है। बाहरी कामसे मेरा मतलब है ऐसा काम जिसमें बाहरका सहकारी कारण भीतरी कामकी अपेक्षा अधिक होता है।

श्रीअरविंद—अपने पकानेके कामको ही ले लो, तुम इसे बाहरी काम कहोगे या भीतरी?

शिष्य—मैं इसे बाहरी काम कहूंगा।

श्रीअरविंद—इसका मतलब यह है कि तुमने अभीतक उसके बारेमें उचित मनोवृत्ति नहीं स्थापित की है अन्यथा वह तुम्हारे भीतरी कामका एक अंश भी होता।

शिष्य—मेरा ठीक यह मतलब नहीं है कि यह भीतरी कामका एक भाग नहीं हो सकता। मैं अपनी बात समझानेकी कोशिश करूंगा। मान लीजिये कि अतिमानस उतर आया है और हम सब अतिमानव हैं। हमें एक बाहरी जीवन भी जीना होगा। हम एक दूसरेके साथ व्यवहार करेंगे। तब हमारे व्यवहारमें और साधारण आदमीके व्यवहारमें क्या फर्क होगा?

श्रीअरविंद—तुम गीतामें किये गये अर्जुनके प्रश्नकी तरह पूछ रहे हो। स्थितप्रज्ञ कैसे चलता है, कैसे बोलता है?

शिष्य—मेरा मतलब यह नहीं है। उसके और एक साधारण आदमीके जीवनमें क्या मौलिक भेद होगा?

श्रीअरविंद—सभी मौलिक परिवर्तन भीतरी हैं, बाहरी नहीं, यानी हम उच्चतर चेतना पा लेंगे और जो कुछ करेंगे उस चेतनासे करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन जिस सत्यको यहां नीचे भौतिकमें आना है उसकी रूप-रेखा जाननेके लिये इतनी उतावली क्यों? यह अपने लक्ष्यको व्यर्थ कर देगा। आगे बढ़नेका यह गलत तरीका है। मान लो तुम अपने मनमें निश्चय कर लो कि उच्चतर सत्य, वह चाहे कुछ क्यों न हो, इन रेखाओंको अपनाएगा तो यह तुम्हारा अपना दिया हुआ रूप होगा, तुम्हारी मानसिक रचना होगी और जब उच्चतर सत्य आयेगा तो तुम उसे अपने सीमित चौखटेमें बैठानेकी कोशिश करोगे।

वस्तुतः जो सत्य नीचे आ रहा है वह मानसिक नहीं है। वह अनंत सत्य है, वह जो रूप धारण करेगा वह अनंत सत्यका संगठन होगा। लेकिन अगर हम उसे एक मानसिक सूत्रमें बांध दें और कहें, उदाहरण के लिये, कि उसे लोकतंत्र या साम्यवाद या समाजवाद या ऐसी कोई चीज होना चाहिए तो स्वभावतः तुम सत्यको सीमित कर देते हो।

साधनाने मेरे लिये जो एक बड़ी चीज की है वह यह कि उसने मेरे मनसे सभी वादोंको नष्ट कर दिया है। अगर तुमने कुछ वर्ष पहले यह प्रश्न मुझसे पूछा होता तो मैं कहता, "यह आध्यात्मिक समाजवाद है" या फिर जैसे चंदननगर वाले कहते हैं, "व्यापार, संस्कृति और समुदाय।" उस समय मेरा मन ऊपरसे आनेवाले सत्यको ग्रहण करता था और सोचता था कि उच्चतर सत्य कोई विशेष रूप ग्रहण करेगा, जैसा कि मैंने एक बार मोती लाल रायसे कहा था। लेकिन उस समय भी मुझे पूरा विश्वास नहीं था कि यही वह रूप है, मुझे लगा कि यह एक उचित रूप है और मैंने उसे एक परीक्षणके रूपमें स्वीकार कर लिया।

लेकिन अब तुम मुझसे वही बात पूछो तो मैं कहूंगा, "ठहरो, पहले सत्यको यहां नीचे उतर आने दो।" और तब मन उसे रूप या आकार न देगा, अतिमानस अपने-आप अपने रूप बना लेगा। वह तरल और नमनीय हो सकता है और अपने क्रियान्वित होनेमें अनंत रूपसे जटिल हो सकता है।

अभी हम बस इतना ही कर रहे हैं कि अपने-आपको उच्चतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यके उचित यंत्रके रूपमें तैयार करें ताकि जब वह यहां उतरे तो उसे अपने कार्यके लिये उचित यंत्र-विन्यास मिल जाये। हम जीवन-का त्याग नहीं करेंगे। हमें अपने बाहरी काममें एक नयी चेतना लानी होगी। मान लो कि मैं बिल्लियोंके लिये मछली तैयार कर रहा हूं—यह मेरा अतिमानसिक कार्य नहीं है लेकिन चूंकि यह काम मेरे आगे है इसलिये मैं उसे कर लेता हूं ताकि जो कुछ करनेकी जरूरत हो, मैं उसे बिना भूल किये ठीक तरहसे कर सकूं। वायोलिन-की तान ठीक करना केवल भौतिक ही नहीं, मानसिक कार्य भी है और है भी बहुत अधिक जटिल। हमें अपना काम यांत्रिक ढंगसे नहीं करना चाहिए। जो शक्तियां काममें लगी हैं उनके बारेमें हमें सचेतन होना चाहिए और उनका पता लगाना चाहिए जो सफलताका कारण होती हैं और जो असफलता लाती हैं। हमें उचित क्रिया लानी चाहिए।

जीवनमें कोई वाद नहीं होता। अतिमानसमें भी कोई वाद नहीं है। मन ही सब वादोंको ले आता और अव्यवस्थाकी सृष्टि करता है। यह है फर्क एक ऐसे आदमीमें जो जीता है और एक विचारकमें जो जी नहीं पाता। जो नेता बहुत सोचता हो, हमेशा विचारोंमें व्यस्त रहता हो, सारे समय जीवनकी वास्तविकताओंको अपने विचारों साथ बैठानेकी कोशिशमें लगा रहता हो वह मुश्किल-से ही सफल हो पाता है लेकिन जिस नेताके भाग्यमें सफलता बदी हो वह अपने मस्तिष्कको विचारोंसे तंग नहीं करता। वह कार्य करनेवाले सत्योंको देखता है और अंतर्भाससे जानता है कि कौन-सी सफलताकी ओर ले जानेवाली है। वह शक्तियोंका ठीक मेल बैठा सकता है और जानता है कि कब कार्य करना चाहिये।

इसका यह मतलब नहीं है कि ऐसा आदमी अपने मनसे अपने और औरोंके लिये योजनाएं नहीं बनाता बल्कि यह कि अगर योजना बना लेनेके बाद उसे लगे कि शक्तियां बदल गयी हैं तो वह घूम कर एक नया रास्ता अपनानेमें संकोच नहीं करता। भारतीय राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीतिज्ञोंको देखो—बस विचार ही विचार, सब अपने विचारोंमें मस्त हैं। हिंदू-मुस्लिम समस्याको ही ले लो। पता नहीं हमारे राजनीतिज्ञोंने महात्माजीके खिलाफत आन्दोलनको क्यों स्वीकार कर लिया। सामान्य मुसलमानकी मानसिकताके साथ जो प्रतिक्रिया पैदा हुई वह अवश्यम्भावी थी। तुमने एक शक्तिको पोषण दिया, उसने शक्ति जुटाई और ऐसी मांगें करनी शुरू कर दीं जिनके विरुद्ध हिंदू मानसिकताको खड़ा होना पड़ा और उन्हें अस्वीकार करना पड़ा। इसे जाननेके लिये अतिमानसकी जरूरत नहीं है, साधारण बुद्धि काफी है। तब मुस्लिम वास्तविकता और हिंदू वास्तविकताने कलकत्तेमें सिर फुटौवल शुरू कर दी। नेता उनका सीधा सामना करनेकी जगह अपने विचारोंके अनुसार ले दे कर मेल बैठानेकी कोशिश करने लगे।

शिष्य—क्या अतिमानसिक कार्य आरंभ होनेसे पहले भारत स्वतंत्र हो जाएगा ?

श्रीअरविंद—हां, भारत स्वतंत्र होगा, इसमें कोई शंका नहीं, सवाल यह है कि यह कई शांतिमय स्थितियोंमेंसे होकर स्वतंत्र होगा या अचानक ही। यह राजनीतिक लोगोंका काम है, उसके लिये हमें अतिमानसको उतारकर लानेकी जरूरत नहीं। भारत कैसे स्वतंत्र होगा यह कहना बहुत बड़ी बात है, मैं इस बातके बहुत अधिक विरुद्ध हूं कि एक सच्चा राजनीतिज्ञ अपनी योजना जनसाधारणके सामने रखे ताकि वे उसपर बहस करें और उसे फाड़ डालें। उसे अपनी बातें अपनी हदतक ही रखनी चाहियें।

जहांतक मेरा सवाल है मेरे पास अपना काम है और मैं उससे संतुष्ट हूं। ऐसी बात नहीं है कि जब सत्य उतर आयेगा तब क्या करना होगा, इसका मुझे कोई ख्याल नहीं है लेकिन अभी तो हमें भौतिक मन, स्नायविक सत्ता और प्राणिक मनमें परिवर्तन लाने हैं ताकि वे सत्यका ठीक-ठीक यंत्र बन सकें। मेरा ख्याल है कि यह काफी बड़ा काम है। ऐसी बात नहीं है कि मुझे परम लक्ष्यका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता नहीं है लेकिन उच्चतर सत्य जब भी जिस परिवर्तनको लेकर आये उसे स्वीकार करनेके लिये मैं अपने मनको हमेशा खुला रखता हूं। मेरे पास एक विचार है लेकिन जो भी नया प्रकाश आये उसे मैं बंद नहीं करना चाहता।

जबतक तुम मानसिक विचारोंपर बहस करते हो तबतक इसका बहुत मूल्य नहीं होता—मेरा मतलब है योगके बारेमें। उसमें तुम कुछ समझ सकते हो और तुमने अपने-आपको तैयार कर लिया। लेकिन तुम व्यावहारिक पक्षको पहलेसे क्यों जानना चाहते हो? पहली बात, अगर मैं तुमको मानसिक विचार दे भी दूं तो तुम उसे मानसिक रूपमें पकड़ोगे। पहले तो मेरे विचारमें भूल हो सकती है। फिर तुम उसपर बहस करोगे और मानसिक रूप बना लोगे। तुम ज्यादा बड़ी भूलें कर सकते हो। फिर वे वातावरणमें फेंके जायेंगे और अपनी ही परिपूर्णताकी राहमें आड़े आयेंगे।

इन व्यावहारिक कार्योंमें केवल ऐसी शक्तियां ही नहीं होतीं जो सहायता करती हैं बल्कि विरोध करनेवाली भी होती हैं। मैं यह नहीं चाहता कि उन्हें पहलेसे पता चल जाय कि मैं क्या करनेवाला हूं। मैं महात्मा गांधीकी तरह ऐसी बातोंमें गोपनीयताको पाप नहीं मानता, तुम्हें पता लगा लेना चाहिये कि तुम्हें कौन-सी भूमिका अदा करनी है।

शिष्य—हमें उसका ज्ञान होना चाहिये।

श्रीअरविंद—उच्चतर सत्य अपना ज्ञान अपने साथ लाता है। वह मनकी तरह नहीं है; जो सत्य नीचे आ रहा है वह ज्ञान है। (शिष्यकी ओर मुड़कर) तुम जानना चाहते हो कि तुम्हें कौन-सी भूमिका अदा करनी है। लेकिन मैं तुम्हें कैसे बता दूं। मुझे जानना चाहिए कि तुम्हारे भीतर क्या है। तुम्हें अपने अंदर सच्चे पुरुषको खोजना होगा। जब तुम्हारे अंदर सत्यका उचित यंत्र बननेकी क्षमता आ जाय तब तुम्हें पता लग जायगा कि तुमसे किस चीजकी आशा की जाती है। तब तुम्हें पता लगेगा कि यह मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम है और मुझे उसे इस तरह करना होगा। एक समय यह माना जाता था कि मन पूर्ण सत्यको ग्रहण कर सकता है और मानव जातिके आगे आनेवाली सभी समस्याओंको हल कर सकता है। मनने अपना पूरा जोर लगा कर देख लिया और अब हम जानते हैं कि मन सब समस्याओंको हल नहीं कर सकता, अब हम देखते हैं कि मनके परे जा सकना संभव है और यह कि अतिमानस भी है जो अनंत चेतनाका संगठन है। मन और प्राणमें जो कुछ है उस सबका सत्य तुम वहां पाते हो।

उदाहरणके लिये तुम देखते हो कि लोकतंत्र, समाजवाद, साम्यवाद सभीके पीछे कुछ सत्य है लेकिन वह पूर्ण सत्य नहीं है। अब तुम्हें उन शक्तियोंका पता लगाना चाहिए जो कार्य कर रही हैं और यह समझना चाहिए कि ये मानसिक विचार और वाद किसके सूचक मात्र हैं। तुम्हें जानना चाहिए कि लोग इन शक्तियोंके सत्यके साथ व्यवहार करते हुए क्या भूलें करते हैं और इन भूलोंके पीछे भी क्या सत्य है। अभी मैं लोक-तंत्रके विरुद्ध बोल रहा हूं, इसका यह मतलब नहीं है कि उसके पीछे सत्य नहीं है। मैं सत्यको जानता हूं फिर भी मैं लोकतंत्रके विरुद्ध बोलता हूं क्योंकि इस समय वह मनोवृत्ति, जो सत्य नीचे उतरनेकी कोशिश कर रहा है, उससे विरुद्ध है।

सच्चे रूपको पानेके लिये—और अगर तुम उच्चतर शक्तिकी अबाध लीला चाहते हो तो तुम्हें बहुत ज्यादा खुला हुआ और अपने निजी, सामाजिक और राष्ट्रीय विचारोंको बदलनेके लिये तैयार रहना चाहिए। स्वाद और भोजनकी बात लो, एक समय मैं उग्र आमिषभोजी था जैसे आजकल 'क्ष' उग्र निरामिष भोजी है। तब मुझे पता लगा कि मेरी प्राणिक सत्ता मांसकी मांग कर रही थी। तो मैंने उसे छोड़ दिया और बरसोंतक मेरे सामने जो भी आ जाता उसीको खा लिया करता था। तब मुझे पता लगा कि लोग जिसे नीरस, निःस्वाद या बुरे स्वाद वाला भोजन कहते हैं उसमें भी एक स्वाद होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—क्या समरस (तात्विक आनंद) का अनुभव सभी चीजोंमें होता है ?

श्रीअरविंद—हां, आज मैं एक ही साथ आमिष और निरामिष-भोजी हूं और जानता हूं कि लोग जब अमुक प्रकारके भोजनके लिये आग्रह करते हैं तो उन्हें किस चीजकी मांग होती है। उस स्थिततिक पहुंचनेके लिये तुम्हें निजी पसंद और नापसंद दोनोंको छोड़ देना चाहिए, क्योंकि वह बहुत ही सीमित अवस्था है। तुम्हें वैश्व चेतनामें प्रवेश करके यह पता लगाना चाहिए कि वैश्व आत्मा इन सब रूपोंमें किस चीजका भोग करती है और वह हर एकमेंसे क्या आनंद पाती है।

शिष्य—अतिमानवका बाहरी मानव जातिके साथ क्या संबंध होगा ?

श्रीअरविंद—तुम फिरसे मानव जातिके पुराने प्रश्न पर आ गये हो। मेरा इसके साथ कोई सीधा संबंध नहीं है। अगर यह अति-मानस सत्य नीचे आये तो निश्चय ही कोई समस्या नहीं रहती क्योंकि अतिमानसमें कोई समस्या नहीं होती, वहां बस सत्य होता है। लेकिन इस तरह होनेकी संभावना नहीं दीखती क्योंकि इस जगत्में चीजें इस तरह नहीं हुआ करतीं। हम एक छोटेसे आरंभ-की आशा कर सकते हैं जब उच्चतम सत्य अपनी पूरी शक्तिके साथ नीचे आये तो मानव जाति इस जगत्में जीवनके अंदर भगवान्की पूर्णताको भी अभिव्यक्त कर सकती है। लेकिन अभी नहीं।

१८-८-१९२६

शिष्य—अतिमानव बननेके लिये कम-से-कम आवश्यकताएं क्या हैं ? उनका कुछ अंदाज पाना संभव है क्या ?

श्रीअरविंद—क्या यह परीक्षाकी तरह नहीं है ? इस प्रश्नका उत्तर देना कठिन है।

शिष्य—क्या किसीने अतिमानवता प्राप्त की है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—नहीं, लेकिन हम कह सकते कि उसके लिये जरूरत है १) पूर्ण उद्घाटनकी, उच्चतम मनसे लेकर अत्यंत जड़ भागतक सबको सत्यकी ओर खुलना होगा—यही ऊपरसे नीचेतक एक तरहका पूर्ण चतुष्कोण होगा, २) चेतनाके केंद्रको ऋत-चित्के स्तरतक उठाना ताकि व्यक्ति सामान्यतः अतिमानसिक स्तरपर रहे।

शिष्य—सारे समय?

श्रीअरविंद—हां, सारे समय। और तीसरी चीज जिसकी जरूरत है वह है प्रकृतिकी सभी गतिविधियोंमें, मानसिक, प्राणिक और भौतिकमें सामंजस्यकी स्थापना और इनका सत्यके प्रकाशनमें संगठन। यह सब एकके-बाद-एक क्रममें नहीं बल्कि एक ही साथ, एक ही समयमें होगा।

शिष्य—अतिमानसमें कौन-से क्रम हैं?

श्रीअरविंद—अतिमानसमें चार क्रम हैं १) सरमा, २) सरस्वती, ३) इळा, ४) दक्षिणा।

शिष्य—जब सत्ताके सभी भाग सत्यकी ओर खुले हों तो क्या विरोधी शक्तियोंके साथ संघर्ष अधिक उग्र हो जाता है?

श्रीअरविंद—यह खुलनेसे पहले किये गये कामपर निर्भर है: यानी खुलनेसे पहले तुमने अपनी प्रकृतिकी अशुद्धियोंको कुछ हदतक साफ किया है। यह सब काम सचेतन रूपसे किया जाना चाहिए।

शिष्य—क्या यह खुलनेसे पहले करना चाहिए?

श्रीअरविंद—क्यों? खुलनेका अर्थ यह भी है कि प्रकृतिकी गतिविधिके बारेमें सचेतन हुआ जाय।

साधारणतः व्यक्ति अतिमानसके श्रेणीक्रममेंसे गुजरता है। मैंने इसके बारेमें 'आर्य'में लिखा है। वहां मैं उच्चतम अतिमानसकी नहीं, 'मनके अंदर' उच्चतम अतिमानसकी बात कहता हूं। उदाहरणके लिये अंतर्भासात्मक मानसिकताको लो। वह अतिमानस नहीं मानस ही है। तुम कह सकते हो, वहां अतिमानस मनके आधारपर झलकों द्वारा काम करता है। उच्चतम अतिमानसकी दृष्टिसे अंतर्भास 'भव्य अनुमान' हैं। हां अनुमान बिल्कुल ठीक हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाकी तीन क्रम हैं, १) प्रतिनिधि, २) व्याख्यात्मक, ३) नियोजक तुम जैसे जैसे विकसित होते जाते हो वैसे ही वैसे अतिमानसके ऊंचे ऊंचे केंद्र सक्रिय होते जाते हैं। अंतर्भासात्मक मानसिकता एक प्रकारका अपरिवर्तित अतिमानस है।

शिष्य—अपरिवर्तित अतिमानससे आपका क्या मतलब है?

श्रीअरविंद—जैसे-जैसे अतिमानस नीचे आता है वह मानसिक गतिविधियोंको परिवर्तित करता जाता है। और अपने-आप भी परिवर्तित होता जाता है।

शिष्य—अग्नि क्या है। ऋतु क्या है?

श्रीअरविंद—समस्त आंतरिक प्रयासके पीछे की शक्ति है अग्नि और ऋतु है इच्छा-शक्ति तथा कुछ और चीजें भी।

शिष्य—कल आपने कहा था कि घड़ियां मानसिक विचार और इच्छाको प्रत्युत्तर देती हैं। इससे आपका क्या मतलब था?

श्रीअरविंद—यही कि अगर तुम ठीक तरहसे सुझाव दो तो वे प्रत्युत्तर देती हैं।

शिष्य—किस प्रकारके सुझाव?

श्रीअरविंद—किसी भी तरहके, लेकिन दिये जाएं ठीक तरहसे।

शिष्य—घड़ियां किस तरह प्रत्युत्तर देती हैं?

श्रीअरविंद—निश्चय ही तुम चाहो तो वे मेजपरसे उछल न पड़ेंगी।

शिष्य—क्या उन्हें सुस्त या तेज किया जा सकता है?

श्रीअरविंद—हां, और उन्हें संकेतसे चलाया या बंद किया जा सकता है।

शिष्य—अगर घड़ी बंद हो गयी है तो क्या वह मेरे संकेत देने-पर चल पड़ेगी।

श्रीअरविंद—नहीं, अगर मशीनमें कुछ खराबी है तो नहीं; तुम्हारे संकेतके लिये मशीनका पर्याप्त आधार तो होना ही चाहिये।

शिष्य—क्या इच्छा-शक्तिके जोरपर आग सुलगायी जा सकती है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—यह एक और बात है।

शिष्य—अगर मैं अपनी इच्छा लगाऊं तो क्या बंदूककी लिबलिबी चल पड़ेगी?

श्रीअरविंद—हां, अगर तुम्हारी इच्छा-शक्ति इस कामके लिये काफी मजबूत हो। प्रत्युत्तर मिलनेमें कुछ समय लग सकता है।

शिष्य—जब बहुत सारे अतिमानव होंगे तो वे कौन-सी भाषाका उपयोग करेंगे? या फिर वे उसी भाषाका उपयोग करते हुए उसमें अधिक अर्थ और शक्ति भर देंगे?

श्रीअरविंद—इसके लिये अतिमानव होनेकी जरूरत नहीं है। कवि अतिमानव हुए बिना ऐसा करते हैं।

शिष्य—हमारी सारी भाषा मानसिक है और कहते हैं कि एक समय था जब एक ही प्राकृतिक भाषा थी।

श्रीअरविंद—अपने मूलमें हमारी भाषा मानसिक नहीं है। वह अधिक-से-अधिक अर्द्ध-मानसिक थी। मनुष्यने भाषाका प्रयोग इतना विचार व्यक्त करनेके लिये नहीं किया जितना संवेदन प्रकट करनेके लिये। और संवेदन प्रकट करनेके लिये ध्वनि-विशेष पैदा की गयी। शब्दकी अपेक्षा ध्वनिका महत्त्व अधिक था और एक ही ध्वनिको अलग-अलग लहजेमें बोल कर अलग-अलग भाव समझाये जाते थे।

शिष्य—कहा जाता है कि शुरूमें केवल एक ही भाषा थी।

श्रीअरविंद—संभव है, शुरूमें लोग संवेदनोंको प्रकट करनेके लिये ध्वनिका उपयोग किया करते थे और प्रत्येक शब्द बहुत-सी चीजोंका सूचक था।

जब मनका विकास हुआ तो विचार व्यक्त किये जाने लगे और हर शब्द केवल एक ही अर्थके लिये बांध दिया गया। भाषाका यह विकास संस्कृतके इतिहासमें बहुत स्पष्ट दिखायी देता है। एक समय था जब मैं इस विषयके अध्ययनमें काफी दूर तक गया था।

शिष्य—मानवजातिका सामान्य वातावरण व्यक्ति या दलकी साधनापर कैसे प्रभाव डालता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद––देखो, वैश्व यानी मानव जातिके सामान्य वातावरण-से सब तरहकी चीजें तुम्हारे पास आती हैं––मनमें विचार और भाव, प्राणमय सत्तामें आवेग आदि। इसीलिये साधकको अपने-आपको साधारण वातावरणसे अलग कर लेना पड़ता है और एक अपना किला बनाना पड़ता है जहां और कोई न आ सके।

६-९-१९२६

शिष्य––शिष्यका गुरुके साथ आदर्श संबंध क्या है?

श्रीअरविंद––कोई और प्रश्न पूछो। इस बारेमें तो तुम्हें अपने-आप पता लगाना चाहिये।

शिष्य––गुरुका शिष्यके साथ कैसा संबंध होना चाहिये?

श्रीअरविंद––यह मैं जानता हूं। (हंसी)।

शिष्य––शिष्योंमें आपसमें कैसा संबंध होना चाहिये?

श्रीअरविंद––यह तुम 'क'से पूछ लो, वह समझा सकेगा।

शिष्य––नियमानुसार कोई निश्चित संबंध कैसे हो सकता है?

श्रीअरविंद––ऐसी बातोंमें मानसिक विचार और आदर्श बनाना बेकार है और उसके अनुसार संबंध कैसे बनाये जा सकते हैं। फिर यह भी गुरुपर निर्भर है।

शिष्य––मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या अहैतुकी कृपा जैसी कोई चीज है?

श्रीअरविंद––अहैतुकी कृपासे तुम्हारा मतलब क्या है? कि शिष्य योग्य हो या न हो, गुरु उसके लिए सब कुछ कर दे?

शिष्य––ठीक-ठीक अर्थ तो मैं भी नहीं जानता लेकिन मेरा ख्याल है कि कृपाका अर्थ भगवान्‌की ओरसे मनुष्यमें उतरती हुई किसी वस्तुसे है।

श्रीअरविंद––लेकिन कृपा भागवत प्रज्ञाका भी एक भाग है। तुम्हारा यह मतलब तो नहीं है कि भागवत कृपा भगवान्‌की एक संयोगात्मक सनकका परिणाम है! वह होती है क्योंकि भगवान् उसका प्रयोजन जानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—अहैतुकी भक्ति और कृपाका अर्थ है कि उनमें कोई प्रयोजन नहीं है यानी कोई ऐसा प्रयोजन या कारण नहीं है जो मनुष्य जान सके लेकिन कोई ऐसा प्रयोजन जरूर होता होगा जिसे मनुष्य नहीं जानता।

श्रीअरविंद—यह अलग बात है, हो सकता है कि उसका कोई मानव प्रयोजन न हो।

शिष्य—तो क्या गुरुका कोई व्यक्तिगत पक्ष नहीं होता? मैं हमेशा यही समझा करता था कि एक व्यक्तिगत पक्ष होता है और एक निर्वैयक्तिक पक्ष, जो भी अपने-आपको गुरुके निर्वैयक्तिक पक्षकी ओर खोलता है वह सत्यको पा लेता है लेकिन व्यक्तिगत पक्षके आगे समर्पणके बिना चीज पूरी नहीं होती। गुरुका वैयक्तिक पक्ष भागवत कृपाका उपयोग कर सकता है।

श्रीअरविंद—यह गुरुपर निर्भर है, अगर वह एक मानव गुरु है तो उसकी व्यक्तिगत मानसिक या प्राणिक पसंदें अपनी भूमिका निभा सकती हैं और तब कृपाका प्रयोजन ही गड़बड़ा जाता है। वे जितना कम हस्तक्षेप करें उतना अच्छा। लेकिन वैयक्तिक और निर्वैयक्तिकसे तुम्हारा मतलब क्या है? क्या तुम्हारा मतलब यह है कि अगर तुम हर रोज मुझे बहुत सारे फल-फूल आदि देते रहो तो हर रोज तुम्हें मुझसे बहुत सारी आध्यात्मिक चीजें मिलती रहेंगी? (हंसी)

शिष्य—यह इसपर निर्भर होगा कि फल-फूल किस उद्देश्यसे दिये जाते हैं।

एक और शिष्य—ये अहैतुक फल होंगे।

शिष्य—जी हां, अहैतुकी कृपापर निगाह लगाए हुए अहैतुक फल।

शिष्य—(श्रीअरविंदसे) तो क्या पतित पावन जैसी कोई चीज नहीं है?

श्रीअरविंद—यह भावुकता है।

शिष्य—कृपाका विशेष कार्य ही है अधमका उद्धार करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—इसका मतलब हुआ कि भगवान्‌को उत्तमकी उपेक्षा और अधमका पक्षपात करना चाहिए। (हंसी)

यह तो उस ईसाई विचारके अनुसार हुआ कि जिसपर भगवान्‌की अधिक कृपा होती है उसपर अधिक मार पड़ती है। जिस आदमी-पर जितनी अधिक मार पड़े वह भगवान्‌का उतना ही अधिक लाड़ला होगा !

(क्रमशः)

सोसायटी समाचार

८ फरवरी १९८७ को आश्रममें विशेष दर्शन समारोह हुआ। उस दिन ६० साल पहले माताजी और श्रीअरविंद उस मकानमें रहने आये थे जिसमें वे अंततक रहे। श्वेत और रक्त कमलके चित्र बांटे गये।

२१ फरवरी १९८७ को माताजीका १०९ वां जन्मदिन था। उस दिन माताजीका बचपनका एक चित्र बांटा गया जिसपर छपा था: 'तथाकथित मानव बुद्धिकी सभी जटिलताओंसे ऊपर स्थित है भागवत कृपाकी प्रकाशमान सरलता। अगर हम आने दें तो वह आकर प्रति-ष्ठित होनेके लिये तैयार रहती है बशर्ते कि हम उसे करने दें।"

२८ फरवरी १९८७ को सोसायटी बीच आफिसमें ओरोवीलके शिलान्यासकी वर्षगांठ मनायी गयी।

फरवरी १८ से २८ तक सोसायटीके बीच आफिसमें स्वाध्याय शिविरकी व्यवस्था की गयी जिसमें डॉ. महेश्वरीने श्रीअरविंदकी पुस्तक 'द मदर' का अध्ययन करनेमें सहायता की। यह वार्षिक आयोजन होता है। जिन लोगोंको रस हो उनका स्वागत है।

२१ फरवरीको किशोरी लाल ढांढणियाकी वार्ता पांडिचेरी वानोली निलयम (आकाशवाणीसे) प्रसारित की गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२० फरवरीको दूर-दूरके सोसायटीके सदस्य और कार्यकर्ता २१ ता. के दर्शनके लिये आया करते हैं और इस दिन सोसायटीकी आम सभा हुआ करती है। इस बार इस दिन बीच आफिसमें दो सभाएं हुईं। पहली थी नारी परिषद् जिसमें यह निश्चय किया गया कि १८ से २५ नवंबरतक पांडिचेरीमें "कौशल प्रदर्शन" की वर्कशापका प्रदर्शन होगा। २४ नवंबर को सावित्रीके अखंड पाठका भी प्रस्ताव रखा गया जिसे सबने पसंद किया। दूसरी सभामें हमारे सभापति पी. पी. नारायणनने विभिन्न क्षेत्रोंमें सोसायटीके कार्य-कलापका ब्यौरा दिया, उन्होंने बताया कि सोसायटी भवन बनना शुरू हो गया है। आशा है उसका पहला खंड दिसंबर ८७ तक तैयार हो जायगा। 'समर्पण' अतिथि शाला इसी वर्ष जून तक तैयार हो जायगी। फरवरीके शुरूमें भारत सरकारने यहांके सामाजिक विज्ञानके क्षेत्रमें सोसायटीके कार्यका निरीक्षण करनेके लिये एक दल भेजा था।

युवा परिषद् :

श्रीअरविंद सोसायटीके युवा परिषद्ने २२ दिसंबर १९८६ से २ जनवरी १९८७ तक पांडिचेरीमें युवा परिषद्की व्यवस्था की थी जिसमें भिन्न-भिन्न प्रदेशोंके ३७ लोगोंने भाग लिया। इस शिविरने आगेके कार्यके लिये नक्शा बनाया, विषय था 'युवा केंद्रका संगठन, युवा सदस्यके गुण, राष्ट्रीय एकीकरण, शिक्षा, बच्चोंके नीड़, शारीरिक शिक्षण, कला, संस्कृति, ओरो सर्विस आदि'। धनके बारेमें वृत्तिपर पूरी एक बैठक हुई। उन्होंने आश्रमके लेक और ग्लोरियाको भी देखा और वातावरण, परिस्थिति-विज्ञान आदिके बारेमें जानकारी प्राप्त की। इसका विस्तृत परिचय 'टुडे एंड टुमॉरो'में मिल सकता है।

पिछले वर्षके अंतमें दिल्लीकी श्रीअरविंद सोसायटी द्वारा आयोजित

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

O Lord, awaken in me an ardent desire to know Thee. I aspire that my life may be consecrated to Thy service.

The Mother

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Live in his Being, Shine with His Light,
Act with His Power, Rejoice with His Bliss."

The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast Packagings Private Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 *Telex:* 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

Works:

PLOT No. G. 1/3 MIDC AREA, BOISAR,

DIST. THANE MAHARASHTRA

Phones: 682, 491, 591 *Telex::* 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills
(Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेमिनारमें राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंहने कहा "आज शस्त्रास्त्रोंकी होड़-का एक ही इलाज है, वह है आध्यात्मिकता।" सर्वश्री माधव पंडित, वसंत साठे और किशोरी लालके भी भाषण हुए। दूसरे दिन श्रीमती शीला दीक्षित, सर्वश्री पंडित; रंगराजन और किशोरी-लालके भाषण हुए।

हैदराबादके श्रीअरविंद भवनमें ८ फरवरीको श्रीअरविंदके पवित्र अवशेषोंकी प्रतिष्ठा की गयी। दो दिनके लिये आंध्र प्रदेशकी सोसायटीके सदस्योंका अधिवेशन हुआ।

रतलाम (म. प्र.) में पहली जनवरीको विशेष समारोह हुआ। माताजीके विद्यालयके बच्चों और अन्य भक्तोंने माताजीके प्रतीकके चारों ओर अभीप्साके दीप जलाये और गुब्बारे उड़ाये।

पुरुलिया (प. बं.) में ११ जनवरीको "भारत और राष्ट्रीयता" पर युवा सेमिनार हुआ।

कलकत्तेमें सोसायटीकी क्षेत्रीय शाखाने स्वाध्याय शिविरका आयोजन किया।

अहमदाबादमें स्वाध्याय केंद्रकी ओरसे गुजरात विश्व विद्यालयमें श्रीअरविंद स्मारक भाषणमालाके अंतर्गत डा. थानकीके चार भाषण हुए।

भावनगर (गुजरात) में कवि सुन्दरमके भाषण और प्रश्नोत्तरका आयोजन किया गया।

इटलीमें ध्यान, स्वाध्याय, पुस्तकालय, रंगमंच, चित्रकला, भाषा-शिक्षण आदि कई प्रकारके क्रिया-कलाप हुए।

लन्दनमें सभी विशेष अवसरोंपर प्रार्थना, ध्यान, सत्संगका आयोजन होता है।

सिंगापुरकी श्रीअरविंद सोसायटीमें डा. नाडकर्णीने फरवरीमें हर रविवारको भाषण दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70

REGD. No. M. 8731

---

२९ मार्चको माताजी पहली बार पांडिचेरी आयी थीं और २४ अप्रैलको दूसरी और अंतिम बार, इसी तरह श्रीअरविंद ४ अप्रैलको आये थे। ये तीनों दिन आश्रममें विशेष महत्त्व रखते हैं। २४ अप्रैल तो दर्शन दिन होता है।

दिल्ली प्रशासनने स्वाधीनता संग्रामके इतिहासके बारेमें पुस्तक लिखनेके लिये प्रतियोगिता की जिसमें ४५६ पुस्तकें आयी थीं। आश्रमके पीटर हीसको इसमें एक पुरस्कार मिला है।

नयी दिल्ली केंद्रने "जीवनकी कला"पर विशेष कार्यक्रमकी व्यवस्था की थी। हर सप्ताह बुधवारको श्रीमती करुणामयीका संगीत-कार्यक्रम होता है।

गुजरात और कलकत्तेमें युवा-कार्यक्रम हुए।

ऊना (गुजरात) कलमेश्वर (नागपुर) और नारखेड (महाराष्ट्र) में सोसायटीके नये केंद्र खुले हैं।

नये प्रकाशन—श्री मातृवाणीका १६ वां खंड अंग्रेजीमें तैयार है। मूल्य ग्राहकोंके लिये ६०, औरोंके लिये ७५, डीलक्स १०० और १२५।

गुजरातीमें "योग विषये पत्रों—श्रीअरविंदके योगविषयक पत्रोंका अनुवाद, ३ खंडोंमें, मूल्य २०० रु. डाक व्यय, अतिरिक्त।

सूर्य परीक्षित मार्ग (माताजीके कुछ वचन) मू. २७. ..

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जून १९८७ वर्ष १७, अंक ११, पूर्णांक २०३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश
संपादकीय : सत्यमेव जयते — अनुबेन — १
दैनन्दिनी — २
अतिमानसिक योग — ३
कुछ बात — ६
आशाके दीप — २८
श्रीअरविंदके साथ बातचीत — ३०
बिखरे मोती — ३४
आशा किरण — ३७
सोसायटी समाचार — आ० ३
आ० ४

कृपया चेक न भेजें, उसमें बहुत असुविधा होती है। ड्राफ्ट, धनादेश या पोस्टल आर्डर भेज सकते हैं। अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

संपर्क : संपादक अग्निशिखा एवं पुरोधा, पांडिचेरी–६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेश

अपने-आपको दिव्य चेतनामें खो देना लक्ष्य नहीं है।
लक्ष्य है दिव्य चेतनाको भौतिक तत्त्वमें प्रवेश करने देना और उसका रूपांतर करना।

—श्रीमाताजी

दिव्यचेतनायाम् आत्मविलयः न खलु लक्ष्यम्।
लक्ष्यं हि दिव्यचेतना भौतिकतत्त्वं प्रविशेत् तत् च रूपान्तरयेत् इति।

—श्रीमाता

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'संपादकीय' :

सत्यमेव जयते

आज भारतकी विषम स्थिति देख कर युधिष्ठिरकी शांत, धर्म-परायण मूर्ति सामने आ रही है।

एक बातका हमें पूरा विश्वास, केवल विश्वास ही नहीं, अनुभूति प्राप्त ज्ञान है कि 'सत्यमेव जयते' कोरा शास्त्रका कथन नहीं है। जीवनके प्रत्येक स्तरपर उसका जो भी सत्य होता है उसकी विजय इस अस्तव्यस्त काल खंडमें भी होती है। जैसी कहावत है, अल्लाह-के घर देर हो सकती है अंधेर नहीं, सचमुच वैसे ही सत्यकी विजय हो उससे पहले सत्य पथ पर चलनेवालेकी अग्नि-परीक्षा हो सकती है किंतु अगर वह डटा रहे तो विजय-श्री और सफलता उसके चरण चूमेंगी, इसमें शंका नहीं :

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

हम भारतवासी अपने मनको टटोलें, और अपने पूर्वजोंकी भांति यही उद्यम करें कि हम सत्य-आचरण करें, सत्य-पथका अनुसरण करें और अपने हृदयसे भगवान्से प्रार्थना करें कि भारत विजयी हो, वह अपनी अग्नि-परीक्षामेंसे अधिक दृढ़ और सशक्त बन कर निखर उठे।

—अनुवेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

जून

१. उद्घाटनका अर्थ है सारी प्रकृतिका सभी स्तरोंपर अपने-आपको पूरी तरह खोलना ताकि उसके सब भाग बिना सीमा-बंधनके उस महानतर दिव्य चेतनाको ग्रहण करें जो इस मरणशील अर्ध सचेतन सत्ताको लपेटे रहती है और पहलेसे ही उसके ऊपर और पीछे उपस्थित होती है।

२. हमारे अंदर अंतहीन ग्रहणशीलता होनी चाहिये, दिव्य शक्ति-की अधिकाधिक आग्रही और सामर्थ्यपूर्ण क्रियाको झेलनेकी क्षमता होनी चाहिये।

३. दिव्य और शाश्वत माताके प्रति आत्म-समर्पण चाहे जितना कठिन क्यों न हो, हमारे लिये एकमात्र प्रभावशाली साधन और स्थायी शरण है।

४. सबसे कठिन कर्म है भौतिक जगत्में दिव्य चेतनाको उतारना; क्या इस कारण प्रयासको छोड़ देना चाहिये ?
निश्चित रूपसे नहीं।

५. दिव्य चेतना तुम्हारा रूपांतर करनेके कार्यमें लगी है और तुम्हें उसकी ओर खुलना चाहिये ताकि वह तुम्हारे अंदर स्वतंत्र रूपसे कार्य कर सके।

६. सच्ची आध्यात्मिकता जीवनका रूपांतर कर देती है।

७. सच्ची शिक्षाको, विकसित होती हुई सत्ताओंमें जो कुछ विद्यमान है उसे प्रकट करना और उसे प्रस्फुटित करना है।

८. जिस तरह फूल सूर्यके प्रकाशमें खिलते हैं, उसी तरह बच्चे हर्षमें खिलते हैं।

९. भारतने हमेशा मनुष्यमें व्यक्तिगत आत्मा देखी है, दिव्यताका एक अंश देखा है जो मन और शरीरमें ढका रहता है; उसे प्रकृतिमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैश्व आत्मा और अंतर पुरुषकी सचेतन अभिव्यक्तिके रूपमें देखा है।

१०. मैं चाहूंगी कि वह (सरकार) योगको शिक्षा माने, हमारे लिये नहीं, बल्कि इसलिये कि वह राष्ट्रके लिये अच्छा है।

११. भौतिक तत्त्वका रूपांतर होगा और एक सुदृढ़ आधार होगा। जीवन दिव्य बन जायगा। भारत इसके लिये नेतृत्व करे।

१२. शिक्षाका उद्देश्य मनुष्यको जीवन और समाजमें सफल बननेके लिये तैयार करना नहीं है बल्कि उसकी पूरणीयताको उसके चरमोत्कर्ष तक ले जाना है।

१३. धर्मकी किसी रूपमें विशेष शिक्षा दी जाय या न दी जाय, भगवान्‌के लिये जीना, मानवजातिके लिये, राष्ट्रके लिये, दूसरोंके लिये और सबके अंदर अपने-आपके लिये जीना; धर्मका यह सारांश, हर उस विद्यालयका आदर्श होना चाहिये जो अपने-आपको राष्ट्रीय कहता हो।

१४. अपनी सत्ताकी गहराइयोंमें तुम्हें उस चीजको खोजना होगा जो अपने अंदर सार्विकता, अंतहीन प्रसार और सतत निरंतरका भाव लिये रहती है।

१५. आराम, संतोष, भोग और सुखके लिये व्यक्तिगत चाहनाका त्याग कर दो। प्रगतिके लिये प्रज्ज्वलित अग्नि मात्र बने रहो, जो कुछ तुम्हारे नजदीक आये उसे अपनी प्रगतिमें सहायकके रूपमें लो और जल्दीसे आवश्यक प्रगति कर लो।

१६. जो कुछ काम करो उसमें प्रसन्न रहनेकी कोशिश करो, लेकिन प्रसन्नताके लिये कभी कुछ न करो।

१७. कभी उत्तेजित, अधीर न होओ या घबरा मत जाओ। परिस्थितियोंके सामने पूर्ण रूपसे शांत स्थिर बने रहो फिर भी जाग्रत् रहो, कि तुम्हें कौन-सी प्रगति करनी है और समय गंवाये बिना उसे झटपट प्राप्त करो।

१८. शिक्षाका मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिये कि वह बढ़ती हुई आत्माको उसके अंदर जो सर्वोत्तम हो उसे बाहर लाये और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे संपूर्ण बनाये ताकि वह उसका उदात्त रूपसे उपयोग कर सके।

१९. सारी पृथ्वी आत्माका अभिव्यक्त गृह होगा।

२०. कलियुगमें शूद्रका राज्य होगा। वह पुराने ढांचोंको तोड़ देता है, आचारके टुकड़े-टुकड़े कर देता है। वह हर वस्तु-पर प्रश्नचिह्न लगा देता है, हर वस्तुको नष्ट-भ्रष्ट कर देता है, हर वस्तुको समतल कर देता है; हर वस्तुका पुनः निर्माण करता है। वह शूद्र है और उसमें कार्य, सेवाके लिये आवेश और पूर्ण आग्रह होता है। वह प्रभुत्वको उतार फ़ेंकता है ताकि वह मानव जातिका दिव्य सेवक बन पाय।

२१. एक नयी धरती और नया स्वर्ग जन्म लेने जा रहे हैं और मनुष्यकी चेतनाको उनकी मांगके प्रति जागना होगा।

२२. हम जैसे-जैसे पूर्णताके उस सोपान तक पहुंचेंगे जो हमारा लक्ष्य है, हम पायेंगे कि हम जिस सत्यको खोजते हैं उसके चार मुख्य पक्ष हैं, प्रेम, ज्ञान, शक्ति और सौंदर्य . . .

२३. सच्चे प्रेमका वाहक होगा चैत्य पुरुष, अमोघ ज्ञानका वाहक होगा मन, प्राण अजेय शक्ति और सामर्थ्यको अभिव्यक्त करेगा और शरीर संपूर्ण सौंदर्य और सामंजस्यकी अभिव्यक्ति होगा।

२४. प्रश्न—संसार स्वर्गके प्रतिरूपमें कब बदल जाएगा?
जब सारी मानवजाति एक साथ लड़के और लड़कियां बन कर, सबसे सुखी लड़का और सबसे शक्तिशाली लड़की कृष्ण और कालीके रूपमें प्रकट भगवान्‌के साथ स्वर्गके उद्यानमें खेलेंगे।

२५. प्रिय और श्रेयस्करके बीच भेद करना होगा।

२६. सच्ची आध्यात्मिकता जीवनके त्यागमें नहीं, बल्कि जीवनको दिव्य पूर्णतासे पूर्ण बनानेमें है।

२७. अभीप्सा, प्रार्थना, भक्ति और प्रेम; इस साधनाके मुख्य आधार हैं—साथ ही हम जिसके लिये अभीप्सा करते हैं उसके रास्ते-में जो कुछ आये उसे अस्वीकार भी करना है।

२८. चैत्य पुरुषके पूर्ण उद्‌घाटनके लिये शर्त है—शुद्धता, सरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्कपटता और अहंकारविहीन अमिश्रित, बिना दिखावे और मांगके आत्म-दानकी।

२९. अपनी आत्माकी आज्ञाका पालन करो, केवल उसीको तुम्हारे जीवनपर शासन करनेका अधिकार है।

३०. उस पारके स्वर्ग महान् और अद्भुत हैं, लेकिन उनसे अधिक महान् और अद्भुत हैं तुम्हारे अंदरके स्वर्ग।

अतिमानसिक योग

(गतांकसे आगे)

शिष्य—तो क्या व्यक्तिगत कृपा जैसी कोई चीज नहीं है?

श्रीअरविंद—जैसा कि मैंने कहा यह गुरुपर निर्भर है। तुम्हारा यह मतलब तो नहीं है कि गुरुका वैयक्तिक पक्ष भगवान्की पर-वाह किये बिना स्वतंत्र रूपसे ठीक करता है कि शिष्यको क्या दिया जाय। जब कभी वह ऐसा रूप लेता दिखायी भी देता है तब भी कोई और ही चीज निश्चय करती है। जितना अधिक वैयक्तिक तत्त्व (गुरुकी मानसिक या प्राणिक पसंद) होगा, उतनी ही अधिक भूल होनेकी संभावना भी होगी। अगर वह खाली मानव गुरु है, और अगर वह बंगाली है तो वह बंगालियोंको या अपने चुने हुए नातेदारोंको कृपा देना चाहेगा। इसका भागवत कार्यके साथ कोई संबंध नहीं है। पतित पावन और अधम उद्धारकका मतलब बस यही है कि बाहरी जीवन चाहे जितना बुरा और दुष्ट क्यों न प्रतीत होता हो फिर भी मनुष्यकी रक्षा की जा सकती है, अगर उसमें कोई चीज सत्यको ग्रहण कर सकती है। यह भी कहा जा सकता है कि भागवत कृपाके उतरनेके लिये भी शर्तें होती हैं।

शिष्य—क्या ये शर्तें भगवान्द्वारा निश्चित की जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—अगर तुम यह मान लो कि भगवान् ही सब कुछ निश्चय करते हैं तो हमें तो कुछ करना ही नहीं है, बस चुपचाप बैठे रहना चाहिये। अगर इसे मानसिक युक्तिके छोरतक ले जाओ तो बस मुर्देकी तरह पड़े रहना होगा। लेकिन वस्तुस्थितिके अनुसार मनुष्यको अपनी भूमिका निभानी है।

शिष्य—क्या पूर्व निर्धारणके जैसी कोई चीज है? मनुष्यके बारेमें हर चीजका निर्धारण कोई दिव्य वस्तु कर देती है?

श्रीअरविंद—नहीं, जैसा कि मैंने कहा, इन बातोंमें जबतक तुम मनसे बातचीत करो, तुम्हारे शब्दोंका कोई मूल्य न होगा क्योंकि जो चीज निश्चित की गयी है उसका निश्चय इतने ऊंचे स्तरपर हुआ है कि मनुष्य यह नहीं कह सकता कि 'सब कुछ निश्चित किया जा चुका है।'

शिष्य—हमारे योगमें उच्चतर शक्ति ही सब कुछ करती है।

श्रीअरविंद—फिर भी कदम-कदमपर तुम्हारी रजामन्दी जरूरी है।

शिष्य—मेरा ख्याल है कि 'समर्पण' मुख्य शर्त है।

श्रीअरविंद—यह तो एक शर्त है। शक्तिको ग्रहण करनेकी शक्ति भी चाहिए, और भी कई चीजें हैं। यह इतना सरल नहीं है जितना बहुत-से लोग समझते हैं कि गुरुने दिया और शिष्यने ले लिया।

शिष्य—क्या यह सच नहीं है कि रामकृष्णके सभी शिष्योंमेंसे विवेकानन्दको सबसे अधिक लाभ प्राप्त हुआ था?

दूसरा शिष्य—तुम्हारा मतलब आध्यात्मिक लाभसे है?

श्रीअरविंद—(कुछ रुककर) इसमें बहुत संदेह है। निस्संदेह वे उनमें सबसे अधिक बलवान् थे इसलिये उन्होंने उसे सबसे अधिक अभिव्यक्त किया और उसे अपनी अभिव्यक्तिमें प्रकट किया। लेकिन यह आध्यात्मिकताका माप नहीं है।

शिष्य—उदाहरणके लिये ब्रह्मानन्द जैसे चुपचाप आदमीने शायद औरोंसे अधिक लाभ पाया हो।

श्रीअरविंद—बहुत बार मनुष्यकी आंतरिक प्रगतिके लिये बाहरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता लाभदायक नहीं होती। कभी-कभी आदमीकी प्रगतिके लिये यह ज्यादा अच्छा होता है कि वह सफल होनेकी जगह असफल हो।

शिष्य—क्यों ?

श्रीअरविंद—क्योंकि सफलताका अर्थ हो सकता है मार्गसे भटक जाना। हां, यह इसपर निर्भर है कि तुम सफलता कहते किसे हो। अगर सफलतासे तुम्हारा मतलब बाहरी जीवनमें सफलता है तो यह दूसरी बात है लेकिन अगर तुम्हारा मतलब है क्रम-विकासमें ऊपरके रास्तेपर चलना तो बाहरी जीवनकी तथाकथित सफलता हानिकर हो सकती है।

शिष्य—(दूसरे शिष्यसे) अगर तुम मंत्री बन जाते तो बाहरी अर्थमें यह सफलता होती लेकिन तुम्हारे आध्यात्मिक विकासका क्या होता ?

श्रीअरविंद—हां, और हमारा 'क्ष' कहीं बहुत बड़ा अफसर बन जाता और मोटी पेंशन लेकर सेवानिवृत्त होता। (हंसी)

शिष्य—जी हां, और 'ग' मधुमेहका शिकार प्रोफेसर होता। (हंसी)

शिष्य—हां, बदहजमीका शिकार योगी होनेकी जगह।

श्रीअरविंद—और 'प' राममूर्तिकी तरह विशालकाय पहलवान होता।

शिष्य—वातसे पीड़ित साधक होनेकी जगह।

श्रीअरविंद—और अगर बाहरी सफलताकी लीकको आगे बढ़ाते चलें तो मैं बड़ौदामें कहीं पर होता; वह जीवन आसान था।

शिष्य—लेकिन तब आपकी ऊर्जाका क्या होता ?

श्रीअरविंद—क्या तुम सोचते हो कि तब मेरे अंदर इतनी ही ऊर्जा थी जितनी कि आज है ?

शिष्य—लेकिन संभावना और क्षमता तो निश्चय ही थी।

श्रीअरविंद—यह तो किसी पेड़के बीजकी तरह है। अगर उसे जमीन न मिले तो वह नहीं जमता। अगर मैं अपने काममें लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता तो शायद प्रिंसिपल बन जाता, कुछ कविताएं लिख लेता और एक बुर्जुआकी तरह आरामसे रहता।

मेरे अंदर जो भी ऊर्जा है वह योगकी ऋणी है। पहले मैं बहुत अक्षम था। राजनीतिमें भी मैंने जो ऊर्जा लगायी थी वह भी योगसे आयी थी।

शिष्य—आपने उन शक्तियोंके बारेमें कहा था जो धनपर अधिकार रखती हैं। आपने कहा था दो शर्तें जरूरी हैं, पहली यह कि हमें बहुत स्थिर और शांत रहना चाहिए, जरा भी क्षुब्ध न होना चाहिए और हमारे अंदर धनकी कोई कामना न होनी चाहिए। दूसरी, वैश्व शक्तियोंके साथ समझ होनी चाहिए। यह समझ क्या है?

श्रीअरविंद—बहुत-से तरीके हैं, एक मनुष्यके लिये भी अनेक तरीके हैं जिनका वह अनुसरण कर सकता है—मेरा मतलब योगके तरीकोंसे है। पहला यह कि तुम अपनी आवश्यकताएं भगवान्‌के आगे रखो, और उनसे इन्हें पूरा करनेके लिये कहो। तुम्हारा कर्तव्य यहींपर समाप्त हो जाता है, उस हालतमें वैश्व शक्तियोंके साथ समझौतेकी जरूरत नहीं रहती।

लेकिन हम धनको भगवान्‌की एक शक्तिके रूपमें मानते हैं, और जैसा और चीजोंके लिए है, हम इसे भी भगवान्‌के लिये इस जीवन-में ही जीतना चाहते हैं। अतः इस दशकमें एक "समझौता" जरूरी है। चूंकि आज धन शक्ति आसुरी शक्तिके हाथमें है इसलिये हमें उनसे युद्ध करना होगा। जब कभी वे देखेंगी कि तुम उन्हें निकालने-की कोशिश कर रहे हो, वे तुम्हारे प्रयासोंको असफल करनेकी कोशिश करेंगी। तुम्हें इनसे ऊंची शक्तिको उतारना और इन्हें नीचा दिखाना होगा। पहले वे तुम्हें सफलता दिखला कर झांसा देना चाहती हैं। हम कह सकते हैं कि वे तुम्हें खरीद लेना चाहती हैं। अगर आदमी उस पिंजड़ेमें फंस जाय तो उसका आध्यात्मिक भविष्य नष्ट हो जाता है।

सचमच तुम्हें धन-शक्तिकी एक लयका अनुकरण करना चाहिये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस लयका जो धन लाती और बाहर फेंकती है। शुरूमें तुम्हें धन दिया जाता है, फिर तुम्हें उसका अधिकार प्राप्त करना चाहिये। तुम्हें यह प्रमाणित करना चाहिये कि तुम उसे नष्ट नहीं कर रहे। अगर तुम धनका अपव्यय करो तो तुम उसपर अधिकार खो बैठते हो।

शिष्य—अपव्यय क्या है?

श्रीअरविंद—अपव्यय अपव्यय है। बिना किसी व्यवस्थाके धनको खर्च कर डालना, धन प्राप्तिके साधनोंकी परवाह किये बिना, खर्चकी उपयोगिता देखे बिना अव्यवस्थित खर्च। तुमसे धनका अपसंचय करनेके लिये नहीं कहा जा रहा, वह खर्च करनेके लिये ही है लेकिन उसे उचित ढंगसे खर्च करो, किसी व्यवस्थाके साथ खर्च करो।

कभी-कभी भगवान् भी मनुष्यकी सनकोंका अनुसरण करते हैं इसके अनेक उदाहरण हैं ठाकुर दयानन्द जैसे लोग।

शिष्य—जी हां, उन्हें जो कुछ मिलता है वह उसी दिन खर्च हो जाना चाहिये, यह नियम है और फिर उन सबको अगले दिनका भोजन आनेतक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

श्रीअरविंद—परिणाम यह है कि कभी सात दिनतक उन्हें इतना खाना मिलता है कि वे खा नहीं सकते और फिर पन्द्रह दिन उपवास करना पड़ता है!

शिष्य—छोटे बच्चोंको भी उस अवधिमें खाये बिना रहना पड़ता है।

श्रीअरविंद—यह तो बड़ी अव्यवस्थाकी गति है लेकिन वे उसीका अनुसरण करते हैं।

शिष्य—बड़े-बड़े उद्योगपति, जिनके पास बहुत पैसा आता है इसी लयमें बहते हैं जिसके बारेमें आपने अभी कहा।

श्रीअरविंद—हां, निश्चय ही, अन्यथा वे अमीर नहीं बन सकते। वे उसे अंदर लेते हैं और फिर बाहर फेंक देते हैं। इसी कारण वे बेहिसाब धन पाते हैं, प्रायः इन अमीर लोगोंको धनसे आसक्ति नहीं होती। वे धनमें नहीं प्राणिक शक्तिकी क्रियामें मजा लेते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—यह एक प्राणिक गति है।

श्रीअरविंद—हां, वैश्यका यही आदर्श था जो बनिये—कंजूस—के आदर्शके विरुद्ध है। वैश्य अपार धन पानेवाला व्यक्ति होता था, वह उदारताके साथ खर्च भी कर सकता था। वह आदान-प्रदान करता और लयमें प्रवेश कर सकता था।

शिष्य—लेकिन ये मारवाड़ी जो बहुत अमीर हैं, वे तो अपने धनसे बहुत आसक्त हैं।

श्रीअरविंद—नहीं।

शिष्य—नहीं, वे आसक्त नहीं होते। हम उन्हें लोभी समझते हैं क्योंकि वे धन उस तरहसे खर्च नहीं करते जैसे हम चाहते हैं। वे प्रायः उसे पुराने रूढ़िगत तरीकेसे खर्च करते हैं। हम उन्हें लोभी समझते हैं क्योंकि वे अपने व्यापारमें छोटी-छोटी चीजों, पाईतक का, ख्याल रखते हैं।

श्रीअरविंद—यह बहुत जरूरी है, ठीक यही चीज है जो उनके पास धन लाती है।

शिष्य—हेनरी फोर्डकी भी ऐसी आदत है इसलिये वह बहुत धनाढच बन गया है। उसने अपनी आत्म-कथामें लिखा है कि उसने अपना काम पैसा कमानेके लिये नहीं, लोगोंको तेज यातायातकी सस्ती सुविधा देनेकी दृष्टिसे शुरू किया था।

श्रीअरविंद—अमरीकियोंको वह तरकीब आती है जिससे वे उस लयमें जा मिलते हैं जो धन लाती है। उदाहरणके लिये फ्रेंच तरीका सफल नहीं होता क्योंकि वे छोटे संकीर्ण मार्गपर चलते हैं। अमरीकी खुलकर बड़े पैमानेपर उस गतिमें जा मिलते हैं और धनका संचार होने लगता है, उसका संचार होता है, संचय होता है और वह जहां भी जाता है जीवनका विस्तार करता है।

शिष्य—आपने कहा था कि कुछ लोगोंके प्राणमें एक विशेष क्षमता होती है जो उनकी ओर धनको खींचकर लाती है।

श्रीअरविंद—हां, कुछ लोगोंमें यह क्षमता होती है, कुछ स्त्रियोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी होती है। पुरुष जो कुछ भी करे, स्त्री उसमें बहुत जबर्दस्त प्रोत्साहन और प्रेरणा दे सकती है लेकिन कुछ ऐसी स्त्रियां भी होती हैं जो लक्खी-छाड़ा (बंगलामें लक्ष्मीद्वारा त्यक्त) होती हैं।

९-९-१९२६

शिष्य—क्या साधककी प्रगतिके लिये विरोधी शक्तियोंके आक्रमण-का उपयोग किया जा सकता है?

श्रीअरविंद—तुम्हारा ठीक-ठीक मतलब क्या है?

शिष्य—हमारे योगमें प्रकृतिकी निम्नतर क्रियाओंको साधनामें बाधा मानकर छोड़ देना पड़ता है किंतु तान्त्रिक और विशेषकर वीर साधक इन बाधाओंसे आध्यात्मिक जीवन बनानेमें सहायता लेते हैं।

श्रीअरविंद—कैसे?

शिष्य—यह तो मेरा प्रश्न है।

श्रीअरविंद—मुझे मछली खानेमें कोई आपत्ति नहीं है, तुम्हारे अनुकूल पड़ती हो तो तुम शराब भी पी सकते हो, लेकिन सेक्सकी क्रियाको आध्यात्मिक जीवनमें सहायक कैसे बनाया जा सकता है? अपने-आपमें सेक्सकी क्रिया बुरी नहीं है जैसा कि नैतिक लोग मानते हैं। वह प्रकृतिकी एक क्रिया है जिसका कुछ उद्देश्य है। वह न अच्छी है न बुरी। योगके दृष्टिकोणसे सेक्सकी शक्ति दुनिया-भरकी शक्तियोंमें सबसे अधिक मजबूत है और अगर उसका ठीक तरह उपयोग किया जाय तो सत्ताका पुनर्निर्माण करने और उसे पुनरुज्जीवित करनेमें सहायता करती है लेकिन अगर उसका साधा-रण तरीकेसे भोग किया जाय तो वह दो कारणोंसे सबसे बड़ी बाधा बन सकती है। पहला यह कि सेक्सकी क्रियामें प्राणिक शक्तिका बहुत अधिक ह्रास होता है, यह मृत्युकी ओर ले जानेवाली गति है यद्यपि उसके बदलेमें वह नया जीवन उत्पन्न करती है। वह मृत्यु-की ओर ले जानेवाली गति है इसका प्रमाण है वह थकान जो इसके बाद आती है। अनेकोंको उसके बाद जुगुप्सा भी होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—लेकिन आंकड़ोंसे पता चलता है कि विवाहित लोग क्वांरोंसे ज्यादा जीते हैं।

श्रीअरविंद—यह एक हेत्वाभास है। एक कहता है कि वह सौ वर्षतक जी सका क्योंकि वह धूम्रपान नहीं करता था और दूसरा दावा करेगा कि वह सिगरट पीते हुए सौ वर्षतक जी सका।

दूसरा कारण यह है कि सेक्सकी क्रियाके साथ जो उत्तेजना पैदा होती है वह मनुष्यकी चैत्य संभावनाओंको नष्ट कर देती है। मनुष्य चेतनाके उच्चतर केंद्रोंसे अलग और विघटित हो जाता है और नीचेकी ओर जाता है। लोग कहते हैं कि वे ऐसी मनोवृत्ति अपनाते हैं मानों शक्ति उनके द्वारा भोग कर रही है लेकिन यह कहनेका एक तरीका भर है। लोग निचली गतिविधिमें रस लेते, विरोधी शक्तियोंके आगे झुक जाते और साथ-ही-साथ योगी बने फिरते हैं। बहुधा वेदांती मनोवृत्तिको भी विरोधी शक्तियोंके आगे झुकनेका एक बहाना बनाया जाता है। "सब कुछ माया है, न कोई पाप है न पुण्य, न कोई शुभ है न अशुभ" कहते हुए वे अपने-आपको विरोधी शक्तियोंको सौंप देते हैं।

शिष्य—लेकिन क्या प्रकृतिकी निम्न गतियां अपने-आपमें विरोधी नहीं हैं?

श्रीअरविंद—नहीं, लेकिन वे विरोधी शक्तियोंके लिये द्वार खोल देती हैं और वे शक्तियां अपना उद्देश्य पूरा करनेके लिये इनका उपयोग करती हैं।

शिष्य—क्या सेक्सकी क्रियाके गिरानेवाले प्रभावपर विवाह और कानूनी स्वीकृतिसे कोई फर्क पड़ता है?

श्रीअरविंद—बिल्कुल नहीं। ये नैतिक निषेधाज्ञाएं समाजको बनाये रखनेके लिये, पैदा होनेवाले बच्चोंकी सुरक्षाके लिये हैं लेकिन जहांतक योगका संबंध है अपनी पत्नीके साथ सेक्स क्रिया उतनी ही हानिकर है जितनी किसी अन्य स्त्रीके साथ। केवल जो लोग मानव स्तरसे ऊपर उठ गये हैं, जिनके अंदर एक अमुक प्रकारकी

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिक और साथ-साथ प्राणिक शक्ति है वे ही सेक्स क्रियाका आध्यात्मिक उद्देश्यके लिये उचित उपयोग कर सकते हैं। अगर निचले स्तरके साधक इन चीजोंको अपना लें तो उनका पतन निश्चित है।

शिष्य—अगर सेक्सकी क्रिया इतनी खतरनाक है तो उसका सहायताके रूपमें भी क्यों उपयोग किया जाय? अपने-आपको सुरक्षित मार्ग तक ही क्यों न रखा जाय?

श्रीअरविंद—यह एक भयानक प्रश्न है। मैं इसका उत्तर तब देना चाहूंगा जब तुम मानव स्तरसे ऊपर उठ जाओगे।

शिष्य—जब हम मानव चेतनासे ऊपर उठ जाएं तो सेक्सकी क्रियासे होनेवाली क्षतिसे कैसे बचा जा सकता है? तब उत्तेजना और चेतनाके उच्चतर केंद्रोंसे कट जानेके बारेमें क्या होगा?

श्रीअरविंद—उच्चतर शक्ति चीजोंको अपने ढंगसे ले सकती है और हानिकर परिणामोंको रोक सकती है। तब विधि और कर्म मानव रीतिसे एकदम भिन्न हो जाते हैं।

शिष्य—मेरा मूल प्रश्न तो यह था कि साधक विरोधी शक्तियोंके आक्रमणका उपयोग कर सकते हैं?

श्रीअरविंद—हां, उन्हें जीतकर। साधक विरोधी शक्तियोंकी क्रियाका ज्ञान प्राप्त कर लेता है और अपनी प्रकृतिके दोषोंका भी जो इन आक्रमणोंको निमंत्रित करते हैं।

शिष्य—क्या वह ज्ञानसे बढ़कर और भी कुछ पाता है?

श्रीअरविंद—हां, उच्चतर शक्तिके प्रति नये उद्घाटन हो सकते हैं, उसका बल बढ़ सकता है—आदि।

शिष्य—क्या विरोधी शक्तिको विजय द्वारा किसी शुभ और सहायक चीजमें बदला और रूपांतरित किया जा सकता है?

श्रीअरविंद—प्रकृतिकी शक्तिको बदला जा सकता है लेकिन तुम विरोधी सत्ता या उसकी शक्तिको कैसे बदल सकते हो? यह जरूर सच है कि विरोधी शक्तियोंकी पकड़में कुछ प्राकृतिक शक्तियां होती हैं। अगर तुम विरोधी सत्तापर विजय पा लो तो प्रकृतिकी ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तियां मुक्त हो जाती हैं और भगवान्‌की लीलाको पूरा करनेमें सहायक होती हैं। यूं क्रोध प्रकृतिकी एक शक्ति है जो विरोधी शक्तियोंकी जकड़में है। अगर उसे उनके प्रभावसे छुड़ाया जा सके तो उसका भगवान्‌के प्रयोजनके लिये उपयोग हो सकता है।

शिष्य—'क्रोध' दिव्य विधिसे कैसे काम कर सकता है?

श्रीअरविंद—भगवान् आक्रमण करने या प्रहार करनेसे नहीं सकुचाते। वे प्रायः ऐसे व्यवहार करते हैं जो साधारण मनको क्रूरता भरा मालूम होगा परंतु वृत्ति एकदम अलग है। वेदोंमें पणि स्वर्गकी गौओंकी–सूर्यकी–चोरी करते हैं और उन्हें गुफाओंमें छिपा देते हैं। जब पणियोंपर विजय प्राप्त कर ली जाती है तो गौएं मुक्त हो जाती और स्वर्गकी ओर उठती हैं।

शिष्य—तो क्या यह कहा जा सकता है कि उच्चतर चेतना विरोधी शक्तियोंको साधकके पास भेजती है?

श्रीअरविंद—विरोधी शक्तियां मौजूद हैं और उच्चतर शक्ति उनका अपने उद्देश्यके लिए उपयोग कर सकती है। निश्चय ही, सब कुछ परम शक्तिसे आता है लेकिन इस बातको अनगढ़ तरीकेसे नहीं समझना चाहिये। विरोधी शक्तिका उपयोग साधककी क्षमता जांचनेके लिए किया जा सकता है।

शिष्य—कभी-कभी उच्चतर शक्ति विरोधी शक्तिकी तरह काम कर सकती है, जैसे उच्चतर शक्तिके अवतरणके कारण साधक टूट जाता है।

श्रीअरविंद—हां, उच्चतर शक्तिके अवतरणके कारण अयोग्य आधार टूट जाता है और योग्य प्रगति करता है, कुछ खतरे तो हैं ही किन्तु सभी महान् कार्योंमें खतरे होते हैं। जब कोई तैयार और योग्य न हो फिर भी भगवान्‌को नीचे बुलाता रहे तो हो सकता है कि शक्ति उतरे और आधार ढह जाय।

शिष्य—क्या विरोधी आक्रमणोंकी शक्ति हमेशा साधककी प्रतिरोध करनेकी शक्तिके अनुपातमें होती है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—हमेशा नहीं, अन्यथा इतनी असफलताएं और पराजयें क्यों? गुरु क्षतिको पूरा कर सकता है।

शिष्य—क्या कभी गुरु साधकके प्रयासके बिना भी आक्रमणको रोक सकते हैं?

श्रीअरविंद—हां, कोई सामान्य नियम नहीं है। कुछ मामलोंमें गुरु सब कुछ कर देते हैं, कुछमें साधक शुरू करता है और गुरु सहायता करते हैं जिसका अर्थ है कि उच्चतर शक्ति सहायता करती है, गुरु तो केवल माध्यम होते हैं।

१०-९-१९२६

शिष्य—ऐसा लगता है कि तंत्रोंमें प्रतीकवाद है, भिन्न-भिन्न चक्र हैं जो एकके बाद एक करके खुलते हैं?

श्रीअरविंद—कोई बंधा हुआ नियम नहीं है कि कौन-सा पहले खुले। हृदय चैत्य चक्र है और अगर वह पहले खुले तो यह बहुत अच्छा उद्‌घाटन होता है।

शिष्य—कहते हैं कि वामन अवतारमें बौने भगवान्‌ने असुर बालि-से तीन पग धरती मांगी थी। क्या इसका अर्थ यह है कि भौतिक, प्राणमय और मनोमय तीनों लोक असुरके हाथमें थे और भगवान् चाहते थे कि तीनोंकी मुक्ति हो जाय और वे भगवान्‌के राज्यमें आ जायें।

श्रीअरविंद—मेरा ख्याल है, लेकिन अभीतक मुक्तिका काम अधूरा पड़ा है।

शिष्य—उच्चतर शक्तिकी क्रियासे जब मनका रूपांतर हो जाता है तो मनमें क्या परिवर्तन आते हैं?

श्रीअरविंद—मनका कौन-सा भाग? विचारशील मन?

शिष्य—जी हां।

श्रीअरविंद—तर्क-वितर्क और मनकी काल्पनिक रचनाओंका अंत हो जायगा। रह जायगी केवल अंतर्भासकी लीला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—क्या तर्क-बुद्धि बिल्कुल नहीं रहती ?

श्रीअरविंद—जब समस्त मन अंतर्भासात्मक हो जाय तो वह प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करता है और उसमें विवेचनाकी जरूरत नहीं रह जाती, मैं तुम्हें अपने सामने देख रहा हूं तो मैं इस विषयमें तर्क क्यों करूं कि तुम हो या नहीं हो।

शिष्य—सत्य-प्राप्तिके लिये तर्क बुद्धिकी जरूरत भले न रहे परंतु हो सकता है कि सत्यके व्यावहारिक उपयोगके लिये विवेचनकी जरूरत हो।

श्रीअरविंद—क्या तुम्हारा ख्याल है कि सत्य व्यावहारिक नहीं है? सत्य कोई अमूर्त वस्तु नहीं है। जबतक मन तर्क करता है तवतक भूल की संभावना रहती है।

शिष्य—क्या मानसिक रचनाएं हमेशा गलत होती हैं, क्या वे सत्य द्वारा प्रेरित नहीं हो सकतीं ?

श्रीअरविंद—मन अपने अंतर्भासोंपर रचना कर सकता है लेकिन उसमें भूल-भ्रांतिकी संभावना हमेशा रहती है। मानसिक रूपांतर धीरे-धीरे होनेवाली प्रक्रिया है। पहले मानसिक तर्कणा और रचना-को बन्द किया जाता है। फिर मन अंतर्भासात्मक बनता है। फिर तुम अनुभव करते हो कि ऊपर कोई चीज है जो अंतर्भाससे बहुत बढ़-चढ़कर है। अंतर्भास नीचेकी ओर जाता है और उच्चतर सत्य उसका स्थान ले लेता है। अभी तुम्हें यह समझना मुश्किल लगता है कि समस्त विवेचन और मानसिक रचनाको कैसे बन्द किया जा सकता है। यह तुम तभी जान सकते हो जब तुम यह जान जाओ कि अंतर्भास क्या है।

शिष्य—मेरा ख्याल है कि तर्कणा और मानसिक रचनाएं सत्ताके सत्यके आनेमें बाधक होती हैं।

श्रीअरविंद—हां, अगर तुम सदा इन्हींमें लगे रहो तो सत्य न आयेगा।

शिष्य—तब फिर उच्चतर सत्यके नीचे आनेसे पहले हमें इन चीजोंको ठीक करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—तुम यह नहीं कर सकते। केवल सत्य ही प्रकृति और मनके क्रिया-कलापको बदल सकता है। तुम उन्हें केवल अचंचल बना सकते हो ताकि सत्य नीचे आये और रूपांतरका काम ले ले।

शिष्य—अगर मनको नीरव निश्चल बना दिया जाय तो क्या सत्य नीचे उतर आयेगा?

श्रीअरविंद—अगर तुम मनको केवल नीरव निश्चल कर लो और इसके सिवाय और कुछ न करो तो बस तुम्हें नीरव निश्चल मन प्राप्त होगा और कुछ नहीं।

शिष्य—अगर एक विकसित और एक अविकसित मन भगवान्‌की ओर खुलें तो दोनोंमेंसे कौन-सा अधिक सफल होगा?

श्रीअरविंद—पहले तो तुम्हें यह देखना होगा कि क्या अविकसित मन उच्चतर सत्यकी ओर खुल सकता है? साधारणत: वह नहीं खुल पाता। उसमें एक पतली-सी दरार हो सकती है जिसका परिणाम सीमित होता है। उच्चतर सत्य मनको बादमें विकसित कर सकता है लेकिन अगर मन पहलेसे ही विकसित है तो उच्चतर सत्यके कार्य करनेके लिये पहलेसे ही एक मूल्यवान् उपादान रहता है। लेकिन बहुत अधिक विकसित मन भी एक बाधा होता है। उसके निश्चित अभ्यास होते हैं, निश्चित खांचे होते हैं जिनसे वह चिपका रहता है। सत्यके नीचे, मन तक उतर आनेसे, हो सकता है कि मन अचानक नयी क्षमताएं विकसित कर ले जैसे चित्रकारी या काव्य-लेखन आदि।

शिष्य—क्या इसका यह अर्थ न होगा कि इन चीजोंकी तैयारी किसी पिछले जीवनमें की जा चुकी थी?

श्रीअरविंद—तुम्हारे कहनेका मतलब यह तो नहीं है कि अगर कोई अचानक चीनी भाषा समझने लग जाय तो वह पिछले जन्ममें चीनी था?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०-९-१९२६

शिष्य—यह कैसे होता है कि अयोग्य व्यक्ति इस योगकी ओर खिंचे चले आते हैं और कुछ योग्य व्यक्ति इसकी ओर आकर्षित नहीं होते।

श्रीअरविंद—खिंचे आनेसे तुम्हारा क्या मतलब है?

शिष्य—मेरा मतलब यह है कि कोई चीज उन्हें इस योगकी ओर धकेलती है और तब पता चलता है कि वे अयोग्य हैं और उन्हें इस ओर इसलिये धकेला जाता है कि वे टूट जायं।

श्रीअरविंद—तुम्हारा मतलब यह है कि कोई विरोधी शक्ति आदमीको योगकी ओर ठेल देती है जब कि सचमुच उसके अंदर ऐसी कोई चीज नहीं होती जो योग करना चाहती हो?

शिष्य—जी।

श्रीअरविंद—यह नहीं हो सकता। जो योग-मार्गको अपनाता है उसके अंदर कोई चीज सत्यको चाहती है लेकिन हो सकता है कि दूसरे भाग अनुसरण नहीं कर पाते।

शिष्य—इसका मतलब यह है कि ऐसे लोग योगके योग्य नहीं हैं और अगर वे इसे अपना लें तो टूट जाते हैं।

श्रीअरविंद—"योग्यता" क्या है?

शिष्य—मेरा मतलब है सत्यके लिये अभीप्सा, प्राणमें कुछ बल और विकसित मन।

श्रीअरविंद—हो सकता है कि एक आदमीमें वे सब योग्यताके गुण हों जिनकी तुम बात कर रहे हो। और वह मजबूत भी मालूम होता हो फिर भी वह इस मार्गपर न चल सके जब कि कोई और कमजोर मालूम होता हो फिर भी पीछेसे कोई चीज हस्तक्षेप करे और वह चल पड़े। ।

इस मामलेमें कोई मानसिक नियम नहीं है।

शिष्य—लेकिन जो लोग योग्य नहीं हैं उन्हें कौन-सी चीज योग-की ओर धकेलती है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—जैसा कि मैंने कहा, उनके अंदर कोई चीज योग करना चाहती है और उन्हें ठेलती है। कुछ लोगोंको उनकी नियति ठेलती है।

शिष्य—नियतिका क्या मतलब है?

श्रीअरविंद—यह एक व्यापक परिभाषा है जिसका प्रयोग हर उस चीजको ढकनेके लिये किया जा सकता है जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। (हंसी)

शिष्य—क्या इसका यह अर्थ है कि आदमीको इस पथपर इसलिये ठेला जाता है क्योंकि उसे चुना गया है?

श्रीअरविंद—हां, तुम उसे चुना हुआ कह सकते हो, स्वीकार किया हुआ कह सकते हो या जो मरजी कह सकते हो, उससे इस मामलेमें कोई सहायता नहीं मिलेगी।

शिष्य—बहुत-से लोग अपने-आपको चुना हुआ समझते हैं लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिलती।

श्रीअरविंद—यह तुम्हारे 'सोचने' का सवाल नहीं है। बहुत-से लोग सोचते हैं कि उन्हें स्वीकार कर लिया गया है जब कि सचमुच बात ऐसी नहीं होती। दूसरी ओर ऐसे लोग हैं जो अपने इस विश्वासपर लगभग अंततक डटे रहते हैं कि उन्हें स्वीकार नहीं किया गया है और तब उन्हें पता लगता है कि वे सफल हुए हैं।

शिष्य—मैं 'क्ष' के बारेमें सोच रहा था। क्या उसमें कोई भी चीज योग करना चाहती थी?

श्रीअरविंद—तुम्हारा मतलब क्या है? उसमें कोई चीज तो ऐसी थी ही जो योग करना चाहती थी अन्यथा वह उसमें कैसे ठेल दिया जाता; लेकिन उसके मन और प्राणका दर्प मार्गमें आ गया और उसने अवसर खो दिया।

शिष्य—अमुक जिलेके लोगोंको देखिये। वे कितना प्रयास करते हैं लेकिन आगे नहीं बढ़ पाते फिर भी वे उसमें लगे ही रहते हैं जिसे वे साधना कहते हैं। आखिर वे यह क्यों करते हैं और क्या इसका कोई उपयोग है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद––स्पष्ट है। उनमें कोई चीज योग करना चाहती है लेकिन आधार या जड़-भौतिक यंत्र-विन्यास दुर्बल है। रही बात उपयोगिताकी, तो तुम उपयोगिता कैसे जान सकते हो? कोई चीज काम कर रही है और वे कड़ाहेमें पड़े पदार्थ हैं। कुछ सिज जाते और कुछ नहीं सिजते। तुम योग शुरू करनेके लिये तबतक प्रतीक्षा नहीं कर सकते जबतक सब परिस्थितियां ठीक न हो जायें। और योग्यता है क्या?

शिष्य––मुझे नहीं मालूम, मैं चाहता हूं कि आप मुझे बताएं।

श्रीअरविंद––मैं अबतक किसी ऐसे व्यक्तिसे नहीं मिला जिसके अंदर इस योगको करनेके लिये आवश्यक पूर्ण योग्यता हो। योग्यताके बारेमें तुम्हारा क्या विचार है?

शिष्य––हमें कुछ लोग इस योगके लिये 'योग्य' मालूम होते हैं लेकिन वे यहां नहीं आते जब कि दूसरे हैं जिनमें कुछ भी नहीं है। वे आते हैं और कुछ नहीं पाते।

श्रीअरविंद––और ऐसे उदाहरण हैं जहां, जिन्हें तुम मजबूत कहते हो, वे टूट जाते हैं और कमजोर लोग किसी-न-किसी तरह पार हो जाते हैं।

शिष्य––इस योगमें सफलताकी क्या शर्तें हैं?

श्रीअरविंद––मैं उनके बारेमें कई बार कह चुका हूं। जिनमें केंद्रीय सच्चाई है वे पार हो जाते हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि सत्ताके सभी अंगोंमें सचाई है। उस अर्थमें कोई भी पूरी तरह तैयार नहीं है। लेकिन अगर केंद्रीय सचाई हो तो उसे सत्ता-के सभी भागोंमें स्थापित करनेकी संभावना रहती है।

दूसरी जरूरी चीज है सत्तामें एक तरहकी ग्रहणशीलता जिसे हम सभी स्तरोंका उच्चतर शक्तिकी ओर खुलना कहते हैं।

तीसरी जरूरी चीज है उच्चतर शक्तिको अपने अंदर बनाये रखनेकी क्षमता, एक घनत्व जो ऊपरसे आनेवाली शक्तिको धारण कर सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और धकेलनेवाली चीजोंके बारेमें, दो चीजें हैं जो साधारणतः धकेलती हैं। एक है केंद्रीय सत्ता, दूसरी है नियति। अगर केंद्रीय सत्ता कुछ करना चाहती है तो वह मनुष्यको ठेलती है। अगर आदमी राहसे भटक भी जाय तो उसे फिर मार्गपर ला दिया जाता है। निश्चय ही केंद्रीय सत्ता मनमेंसे या सत्यके किसी और भागमेंसे होकर धकेलती है। और अगर मनुष्यकी नियति है तो उसे मार्ग-की ओर ठेला जाता है ताकि वह आगे निकल जाये या फिर टूट जाये।

शिष्य—ऐसे लोग हैं, जो सोचते हैं कि वे विशेष रूपसे चुने हुए हैं और हम देखते हैं कि वे चुने हुए नहीं हैं।

श्रीअरविंद—हां, बहुत-से लोग समझते हैं कि वे विशेष रूपसे चुने हुए हैं, कि वे प्रथम और बहुत ही विशेष हैं, आदि, आदि लेकिन यह सब कुछ नहीं है।

शिष्य—तो क्या आप कह सकते हैं कि जितने आये हैं उनमेंसे कौन योग्य हैं ?

श्रीअरविंद—यह कहना बहुत कठिन है लेकिन यह कहा जा सकता है कि जो आये हैं उनमेंसे हर एकके लिये अगर वह टिका और डटा रह सके तो, संभावना है कि वह पार हो जाये।

शिष्य—और असफलताकी भी संभावना है।

श्रीअरविंद—निश्चय ही सारा विश्व ही शक्तियोंका खेल है और हम सभी शर्तोंके पूरे होनेतक प्रतीक्षा नहीं कर सकते। तुम्हें जोखिम उठानी और संयोग देखना पड़ता है।

शिष्य—संयोग या मौकेका क्या मतलब है ? क्या इसका मतलब यह है कि यह अनेक संभावनाओंमेंसे एक है या यह कि व्यक्ति योग करनेमें सफल हो सकेगा।

श्रीअरविंद—इसका मतलब यह है कि अगर व्यक्ति अपनी संभा-वनाका ठीक उपयोग करे तो वह सफल हो सकता है।

शिष्य—जो मार्गसे गिर पड़ते या फिसल जाते हैं क्या वे क्रम-विकासमें नीचे जा गिरते हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद—यह कई बातोंपर निर्भर है। हो सकता है कि वे योगका अवसर खो बैठें।

शिष्य—गीतामें कहा है, 'न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति'—जिसने कुछ भला किया है उसकी दुर्गति नहीं हो सकती।

श्रीअरविंद—यह एक और दृष्टिकोणसे है। तुम्हें कल्याणकृत् शब्दपर खास ध्यान देना चाहिये।

२६-९-१९२६

शिष्य—जबतक कि व्यक्ति उच्चतर शक्तिसे परिचित न हो या कम-से-कम अंशत: उसे पा न ले तबतक वह उससे कोई चीज कैसे करवा सकता है?

श्रीअरविंद—अगर वह उसे मनसे जानता है तो सभी मानसिक उपलब्धियोंकी तरह वह भी घुलमिल जायगी। मन भाग करता है, अनुमान करता है, कल्पना करता है और भगवान्‌के लिये मानसिक मानदण्ड देता है। वह भगवान्‌को आज्ञा देता है कि वह मानसिक मानदण्डोंको संतुष्ट करें। मन समस्त चेतना नहीं है। वह आंशिक है। और फिर मन दम्भी है। वह मानता है कि वह उच्चतम यंत्र है, विश्वका स्वामी या राजा है। उसमें मिथ्या ज्ञानकी भ्रांति है। वह आंशिक प्रकाशतक सीमित है।

प्राणिक मन ऊधमी होता है। वह चीजें करना चाहता है। वह उग्र है, कहता है, "हां, मैं समर्पण करता हूं लेकिन मैं चाहता हूं कि भगवान् यह करें।" वह यह नहीं कहता कि मैं समर्पण नहीं करना चाहता। भौतिक मन अंधकारमय और मन्द है। प्राणमें अपने आगे भी प्राय: बिना जाने दिखावेकी भावना होती है।

आदर्श स्थितिमें व्यक्ति अपने दोष स्वीकार करनेके लिये तैयार होता है और आध्यात्मिक विनयके साथ चौकीदारी करता है। लेकिन ये सब चीजें निम्न प्रकृतिमें उच्चतर चेतनाके कार्यको बहुत कठिन बना देती हैं। इसीलिये इस योगमें हम सचाई और निष्कपटतापर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत जोर देते हैं। चैत्य सत्तामें ऐसे कोई दिखावे नहीं होते क्योंकि वह भगवान्को जानती और उनके आगे समर्पण कर सकती है। इसीलिये हमारे योगमें चैत्य सत्ताको जगाना इतना महत्त्वपूर्ण है। वही तुम्हें ऐसा चैत्य कौशल देती है जो सब कठिनाइयोंसे बच निकलता है।

शिष्य—क्या हम उच्चतर शक्तिको साधनाका भार दे सकते हैं?

श्रीअरविंद—तुम साधनाकी रचना उच्चतर शक्तिके हाथमें छोड़ सकते हो।

२-१०-१९२६

शिष्य—'मद्रास मेल'में कीनेसका एक लेख आया है जिसमें वह लिखता है कि आधुनिक कालमें सरकारका एकाधिकार स्थापित करनेका प्रयास वांछनीय नहीं है। लोग यह नहीं जानते कि क्या हो रहा है।

श्रीअरविंद—लेखक तथ्योंको देखनेमें बहुत व्यस्त है इसलिये वह यह नहीं देखता कि क्या आ रहा है।

पूंजीपति और मजदूरका संघर्ष तो है ही और आजकी व्यक्तिवादी सभ्यताकी प्रतिक्रिया स्वरूप साम्यवाद और समाजवादको लाना ही पड़ा। संगठन तथा मनकी कुशलताके लिये सामुदायिक सत्ताका दृढ़ कथन जरूरी था क्योंकि पूंजीवादकी यह वृत्ति थी और होगी कि धन-शक्ति कुछ थोड़े-से लोगोंके हाथमें रहे। यह आशा करना व्यर्थ है कि पूंजीवाद लोकोपकारके भावोंसे परिचालित होगा। पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद सभीके पीछे एक सत्य है। पहले तीन दल थे, पूंजीवादी; मजदूर और सरकार। कुछ देशोंमें सरकारें बड़ी हदतक पूंजीवादियोंसे प्रभावित थीं। उदाहरणके लिये इंग्लैंडमें सरकार तीसरा दल होते हुए भी निर्दलीय नहीं रह सकी। यह बात कोयलेकी हड़तालसे स्पष्ट है। वास्तवमें किसी भी सरकारके लिये धन-शक्तिसे प्रभावित हुए बिना रहना बहुत कठिन है—अपवाद है रूस जैसा देश जो क्रांतिकारी सिद्धांतोंपर आधारित है। लेकिन वहां भी सरकारने अपने-आपको मजदूरोंके साथ एक कर लिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रामाणिक सूत्रोंके अनुसार, जहांतक रूस जैसे गरीब देशमें संभव था, उसने मजदूरोंकी स्थितिको बहुत ज्यादा अच्छा कर दिया है। इटलीमें मसोलिनीने कोशिश की कि सरकार एक तीसरा दल रहे जो पूंजीपतियों और मजदूरों दोनोंपर नियंत्रण रख सके, लेकिन वहां भी लगता है कि पूंजीपतियोंकी ही बड़ी हृदतक विजय हुई है।

(एक शिष्यने कुछ और प्रश्न करके विषय बदल दिया)

शिष्य—आपने कल कहा था कि मानव स्वभावको बदलनेके लिये केवल भगवान्‌को पा लेना काफी नहीं है।

और एक शिष्य—बात यूं उठी थी कि ईसाई गुह्यवादियोंकी मान्यता है कि एक बार दिव्य चेतनाको पा लिया जाय तो फिर करनेके लिये कुछ नहीं रह जाता।

उनका कहना है कि उसके बाद आदमी जो कुछ करता है वह उसका नहीं भगवान्‌का काम होता है।

श्रीअरविंद—उन्हें कैसे मालूम ? और वे कौन-सा दिव्य कर्म करते हैं ?

शिष्य—साधारणतः वे साधु थे और चर्चका काम किया करते थे।

श्रीअरविंद—मैं यही कहता हूं कि एक बार दिव्य चेतनाकी अनुभूति पा लेनेके बाद भी आदमी साधारणतः अपने मानसिक और प्राणिक स्तरपर वही रहता है जो पहले था। इस तरह वे परंपराके अनुसार चर्च और धर्मके सामान्य विचार लिये फिरते हैं और अपने-आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि यही दिव्य कर्म है।

यह अद्वैतवादियोंका दूसरा पक्ष है जो जगत्‌को माया मानते हैं। बस एक बार तुम ब्रह्मका साक्षात्कार पा लो फिर बाकीका कोई महत्त्व नहीं है। वे इसकी परवाह नहीं करते कि निम्न प्रकृतिका क्या होता है। अगर मानसिक या प्राणिक सत्तामें कुछ गतिविधियां हैं तो वे पिछले आवेगोंके कारण हैं और तुम्हारा उनसे कोई सरोकार नहीं। वे तुम्हारे बाहर हैं, तुम्हारी अपनी नहीं हैं।

जब मैंने कहा था कि केवल भगवान्‌का साक्षात्कार काफी नहीं है तो मेरा मतलब यह था कि ऐसा साक्षात्कार चेतनामें स्थायी परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तन लानेके लिये काफी नहीं है। मानव प्रकृतिको बदलनेके लिये भगवान्‌की सक्रिय शक्तिकी क्रियाकी जरूरत है।

शिष्य—उनमें यह बात इस कारण होती है कि भागवत चेतनाकी पहली झलक भी ऐसी अभिभूत करनेवाली होती है कि वही उनके लिये अत्यधिक हो जाती है! वे उसी अनुभूतिसे संतुष्ट हो जाते हैं।

श्रीअरविंद—यह सच है कि सभी आधारोंमें भागवत चेतनाको धारण करनेकी क्षमता नहीं होती और वे स्वाभाविक यंत्रकी क्षमता बढ़ानेके लिये प्रयास नहीं करते। एक बार तुम भागवत चेतनामेंसे नीचे उतर आओ तो तुम फिर साधारण मनुष्यकी तरह होते हो। तुम्हें अपने स्वाभाविक यंत्रकी क्षमताको जटिलता और बहुविधतामें बढ़ानेका प्रयत्न करते जाना चाहिए ताकि जब भगवान्‌का अवतरण हो तो वह उसे धारण कर सके।

शिष्य—कहते हैं कि एक तुरीय समाधि होती है?

दूसरा शिष्य—मुझे तुरीयमें प्रवेश करना बहुत कठिन लगता है। मैं प्रयास करते ही सो जाता हूं। (हंसी)

श्रीअरविंद—इसका मतलब यह हुआ कि तुम काफी गहरे नहीं जाते।

शिष्य—ब्रह्म प्राप्तिके बाद साधकोंके प्रकृति-भागका क्या होता है?

श्रीअरविंद—वे इसकी परवाह नहीं करते कि उनके प्रकृतिके अंशका क्या होता है। सिद्धिके इसी विचारने लोगोंको यह मान्यता दी कि वह बालवत्, जड़वत्, उन्मत्तवत् या पिशाचवत् हो जाता है।

शिष्य—जड़वत् हो जाना तो बहुत आसान है।

श्रीअरविंद—मुझे नहीं लगता कि यह इतना आसान है। मेरा ख्याल है कि एक ही आदमी इस अवस्थाके नजदीक पहुंचा था वह था संत जड़ भरत।

शिष्य—लेकिन वह भी तो राजाकी पालकी ले जाते हुए बरस पड़े थे—शायद बड़ा लोभप्रद अवसर था वह! (हंसी)

और एक शिष्य—लेकिन शंकर तो ब्रह्ममें समा गये होंगे।

श्रीअरविंद—ज्यादा अच्छा हो कि तुम स्वयं ब्रह्मसे पूछ लो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो बड़ा ही जटिल प्रश्न है। शायद ब्रह्म कहता, 'मेरे अंदर प्रवेश पानेके लिये तुम बहुत ज्यादा तर्कशील हो!' लेकिन यह तो मुर्गी और अंडेके जैसा प्रश्न है।

शिष्य—लेकिन अद्वैत दर्शनके अनुसार सब कुछ ब्रह्ममें है या यूं कहें भगवान् हर चीजमें हैं।

श्रीअरविंद—यह मानसिक सिद्धि है और तुम्हें बहुत दूर तक नहीं ले जाती।

शिष्य—क्या हम कह सकते हैं कि ऋत्-चेतना और जीव एक ही हैं?

श्रीअरविंद—अपने उच्चतम स्तरपर जीव दिव्य सत्ता है। जब तुम भगवान्को पा लेते हो तो तुम अपनी सच्ची सत्ताको भी जान लेते हो और तुम भगवान्को और जीवमें उनके प्रयोजनको भी जान लेते हो। तुम केंद्रीय सत्ता द्वारा उसके साथ संपर्क पा सकते हो।

शिष्य—मैं जानना चाहता हूं कि मानसिक, प्राणिक और भौतिक स्तरपर विश्वासको कैसे जाना जाता है?

श्रीअरविंद—मैं विश्वासके बारेमें कुछ कह देता हूं और तुम उसे उससे समझनेकी कोशिश करो जो वह नहीं है।

मानसिक विश्वास एक भावपर विश्वास करता है यानी मन उसीपर विश्वास करता है जो वह सोचता है। प्राण जिसकी कामना करता है उसीपर विश्वास करता है और भौतिक उसपर विश्वास करता है जिसे वह अनुभव करता है।

शिष्य—पहले रूपांतर आता है या दिव्य चेतनाकी उपलब्धि?

श्रीअरविंद—उच्चतर शक्तिके बिना तुम्हें रूपांतर प्राप्त कैसे हो सकता है?

शिष्य—क्या यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमारी प्रकृतिके सभी अंगोंमें श्रद्धाकी मांग करती है?

श्रीअरविंद—हां, वह मानसिक श्रद्धाकी मांग करती है जो आनेवाले ज्ञानका पूर्वाभास है। प्राणिक श्रद्धा आनेवाले कार्यान्वयनका पूर्वाभास है और भौतिकमें श्रद्धा उस चीजका पूर्वाभास है जो उपलब्ध होनेवाली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य—क्या कार्यान्वियन और उपलब्धिमें फर्क है ?

श्रीअरविंद—हां, कार्यान्यिवन शक्तिका कार्य है, उपलब्धि तथ्य है। यहां जो उद्देश्य है वह तथ्य है, शक्ति नहीं है।

कुछ बात

प्रिय संपादिका जी,

आपने एक संपादकीय 'पौरुषको चुनौती' लिखकर अच्छी लेख श्रृंखला शुरू कर दी। सच बात तो यह है कि भले-भले कहि छांड़िये, खोटे जप-तप दान। या फिर ब्रक्रचन्द्रमहिं ग्रसै न राहू। टेढ़ि जानि शंका सब काहू। भले और बुरे सभी जगह होते हैं और हमारे देशमें भी हैं। आपने उत्तर भारतकी कुछ घटनाएं सुनायी थीं, लीजिये मैं दक्षिणकी बानगी भेज रहा हूं।

इधर नवंबरके महीनेमें बहुत जोरकी वर्षा हुई, आंधियां आयीं और बेचारे बेघर बार लोगोंकी क्या अवस्था हुई न पूछिये। मेरे एक मित्र दिल्लीसे पांडिचेरी आ रहे थे। मद्रास और पांडिचेरीके बीच लगभग चार घंटेका बसका रास्ता है। आंधी तूफान थम जानेके बाद जब बसोंने रेंगना शुरू किया तो १७, १८ घंटे लगते थे। जिस दिनकी बात सुना रहा हूं उस दिन केवल नौ घंटे लगनेकी बात थी। हमारे मित्र एक टैक्सी लेकर चले: रास्तेमें एक टूटी हुई पुलिया मिली जिसकी मरम्मत हो चुकी थी लेकिन ठेकेदार और मजदूर अभी वहीं थे। ठेकेदारने हुकुम दिया, 'आप लोग इस पुलिया परसे नहीं जा सकते। दोनोंमें बहस होने लगी, शायद वह इन लोगोंसे कुछ आशा कर रहा था। एक कुलीने हमारे मित्रसे कहा, 'आप क्यों रार बढ़ाते हैं। अभी थोड़ी देरमें हम सब यहांसे चले जायेंगे, ठेकेदार भी चले जायेंगे तब आप आरामसे पुलिया पार कर लेना, यहां रोकनेवाला कोई न होगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठेकेदारने यह बात सुन ली और उसी समय नयी पुलिया तुड़वा दी। बोला, 'लो अब जाओ'। अपने साथीकी ओर देखकर बोला, 'मैं रपटमें लिख दूंगा, पुलियाके नीचेकी जमीन धंस गयी। लो खतम किस्सा।'

लेकिन संपादिका जी, हमारे देशके सब लोग ऐसे नहीं हैं। मुझे बैंग्लोर होते हुए पांडिचेरी आना था। बैंग्लोरके एक बस स्टैंडसे मैं कोई दो सौ मीटरकी दूरीपर था लेकिन इतनी दूरी पार करना मेरे लिये संभव न था। मैं हृद्रोगका रोगी जो ठहरा। इधर देखा, उधर देखा, कहीं कोई रिक्शा न दिखायी दी। पांव जवाब दे रहे थे और आंखें शून्यमें रिक्शा खोज रही थीं।

आखिर एक रिक्शा दिखलायी दी, अंधेको दो आंखें मिल गयीं लेकिन वह बस स्टैंडसे उल्टी दिशामें दौड़ रही थी। बड़ी मुश्किलसे उसे रोका, लेकिन यह क्या? रिक्शावालेने कहा, 'अब मैं घर जा रहा हूं, इस समय कोई सवारी न लूंगा, मेरे चेहरेपर बेचारगी का भाव रिक्शावालेने देख लिया और बोला, 'अच्छा चलिये पहुंचा दूं आपको' और मुझे लेकर बस स्टैंडपर खड़ा कर दिया। मैं उसे दो रुपये देना चाहता था, उसने हाथसे इशारा किया कि पैसे नहीं चाहियें और यह जा वह जा।

मैं बसमें सवार होकर पांडिचेरीकी ओर चल पड़ा। रास्तेमें वर्षाकी झड़ी लगी थी। बसने हमें बीचमें लाकर छोड़ दिया और जिधरसे आयी थी उसी तरफ लौट गयी। और लोग तो तुरंत इधर-उधर छितर गये पर मैं अपना थोड़ा-सा सामान लिये जमीनसे गड़ा था, वह जरा सा सामान भी मेरे लिये भारी था। कुछ ही मिनटोंमें एक मुसलमान युवक उधरसे आ निकला। वह मेरी बेबसी देखकर रुक गया और बोला, "आप कहां जाना चाहते हैं?" मैंने कहा, "पांडिचेरी"। वह बोला, 'आप यहां सारी रात खड़े रहेंगे तो भी कोई गाड़ी न मिलेगी। चलिये मैं आपका सामान ले चलूं।' संकोच तो बहुत हुआ, कुछ डर भी लगा पर और उपाय ही क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। शायद हम पन्द्रह-बीस कदम ही चले होंगे कि उस लड़केने कहा, 'ओह, आपको चलनेमें मुश्किल हो रही है। यहीं ठहर जाइये मैं अभी आता हूं।' वह अंधेरेमें गायब हो गया और थोड़ी देरमें कहींसे एक साइकिल ले आया। मुझे और मेरे सामानको साइकिल पर लादकर वह अगले बस स्टैंडतक ले गया। मुझे वहां उतार कर साइकिल लौटाने गया और फिर मेरी खोज खबर लेने आ गया। बस आयी तो वह भी मेरे साथ बैठ गया। वह बोला, 'मुझे भी पांडिचेरी जाना है, चलिये, आपके घरतक पहुंचा दूं।'

इस बार भी पानीके कारण बस उचित स्थानतक न जा सकी। मेरे फरिश्तेने कहा, 'आप यहां ठहरिये। वह कहींसे एक रिक्शा ले आया और उसमें मुझे बिठा दिया। उसने बसके लिये, रिक्शा-के लिये, साइकिलके लिये पैसे अपनी जेबसे ही दिये, मुझे इस विषय-में मुंह तक खोलने न दिया।

तो संपादिका जी, हमारे देशमें ऐसे लोग भी हैं। शायद 'कुछ बात'में ऐसी चीजें भी शामिल होंगी। जब कविने कहा था,

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
बरसों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।

—आपका वसंत

आशाके दीप

पूज्य अनुबेन,

सादर प्रणाम,

अग्निशिखाके किसी अंकका आपका संपादकीय और बिहारी सज्जन-की प्रतिक्रिया देखकर मेरे अंदर भी कुछ लिखनेका उत्साह जागा है। लीजिए।

यह सच है कि आज देशमें उथल-पुथलका एक रेला उमड़ रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। रोज-रोज हत्याओंकी वारदातोंसे अखबारकी सुर्खियां चमकती हैं और हर एक यही प्रश्न करता है कि लो फिरसे हत्यारे भाग निकले! हमारी पुलिस उन्हें पकड़ न पायी।

मैं पुलिसवालों या घटनास्थलपर मौजूद व्यक्तियोंकी तरफदारी नहीं कर रही लेकिन आजके आधुनिक युगमें नवीनतम हथियारोंसे लैस ऐसा नृशंस हत्याकांड सचमुच पलक झपकते हो जाता है। ऐसा लगता है कि सरकारको इन हत्यारों, लुटेरोंके साथ जल्दी ही डटकर मोर्चा लेना होगा। लेकिन साथ ही यह भी सच है कि इन प्रशिक्षित हत्यारोंके सामने शस्त्रोंसे लैस आदमी भी निहत्था बन जाता है, सचमुच जो निहत्थे हैं उनका घटनास्थलपर आकर साहस दिखाना एक दृष्टिसे मूर्खतापूर्ण होगा। आखिर हर एकको अपनी जान प्यारी होती है।

लेकिन यह सब कहकर हाथपर हाथ धरे बैठे रहना तो भारतीयता न होगी। सचमुच समय आ रहा है। आपके बिहार वाले सज्जन के मुंहसे सुनी बातोंसे यह स्पष्ट दीखता है कि अंधेरेमेंसे चिंगारियां छिटक रही हैं—ये ही आग बन कर भड़केंगी और धीरे-धीरे सभी गन्दगियोंको निगल जायेंगी।

प्राचीन भारतमें जहां अभिमन्यु जैसे वीर हो चुके हैं तो उत्तर कुमार जैसे युद्धसे भय खानेवालोंका भी उदाहरण मिलता है। सेना-को देखकर उत्तर कुमार घबरा उठे, वे युद्धसे भाग खड़े होनेको उद्यत थे। अगर अर्जुन उनसे यह न कहते कि तुम पीछे रहना, मैं युद्ध करूंगा तो शायद वे युद्धभूमिसे भाग खड़े होते! हर कालमें, हर युगमें वीर और कापुरुष दोनों साथ-साथ पले हैं, हां कहीं एकका प्रभुत्व होता है तो कहीं दूसरेका। आज कलियुगमें शायद कापुरुषका बोलबाला है लेकिन नहीं, यह कहना भी शायद ठीक न हो, कहते हैं कि उषाके पहलेका अंधकार सबसे घना होता है, क्या यह बढ़ता हुआ अंधेरा शगुनका चिह्न नहीं है?

तब फिर हम हताश क्यों हों? आज सब यह अनुभव कर रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, बहुत जोरसे अनुभव कर रहे हैं कि कोई महान् परिवर्तन शीघ्र ही आनेवाला है, अंदर ही-अंदर उसकी तैयारियां चल रही हैं—जी हां बिहारवाले सज्जन द्वारा सुनायी गयी बातें इसका प्रमाण हैं। बिहार जैसे नाम कमाये हुए प्रदेशमें अगर व्यवस्था और कानूनकी लहरें दौड़ रही हैं तब तो हम यही कह सकते हैं कि नया युग हमारा द्वार खटखटा रहा है।

प्रसंगवश मैं भी आपको एक मजेदार घटना सुनाती चलूं। दिल्लीकी सुप्रसिद्ध पुलिस अफसर किरण बेदीका नाम तो आपने जरूर सुना होगा जो दिल्ली महानगरमें क्रेन बेदीके नामसे मशहूर हैं क्योंकि रास्तोंमें 'नो पार्किंग'के स्थानोंपर खड़ी गाड़ियां, स्कूटर इत्यादि वाहनोंको यह क्रेनसे उठवाकर पुलिस स्टेशनकी यात्रा करवाती थीं। हां तो, दिल्ली शहरमें इनका काफी दबदबा था। एशियाडके समय हमारे एक परिचित दिल्ली गये, स्टेशनसे गन्तव्य स्थानपर पहुंच कर टैक्सीवालेने नये आदमीको देख ठगनेकी नीयतसे मीटरके हिसाबसे दुगना पैसा मांगा। सज्जनने बहस करनी चाही तो ड्राइवर साहबने छोटा-सा चाकू निकाल लिया। बेचारे सज्जन घबरा उठे, पैसे निकाल ही रहे थे कि उनकी मेजबान इत्तिफाकसे बाहर आ गयीं और यह क्या; ड्राइवर, 'अरे बाप रे क्रेन बेदी, क्रेन बेदी, मर गया', कहता हुआ ऐसी रफ्तारसे भागा कि बिचारे सज्जन हक्के-बक्के खड़े रह गये——बादमें पता लगा कि मेजबानकी शक्ल प्रसिद्ध किरण बेदीसे काफी मिलती-जुलती थी और इधर बिचारा ड्राइवर धोखा खा गया उधर मेहमानकी यात्रा मुफ्तमें हो गयी !

आपका यह कहना कि भारत कायरोंकी भूमि बन गया है भले सच हो लेकिन वीरताके उदाहरण भी कम नहीं मिलते——हमारे वीर जवानोंकी बेमिसाल वीरताकी घटनाओंको सुन श्रद्धासे सिर उनके प्रति झुक जाता है—भारतके उस पायलटको कौन भूल सकता है जिसने पेशावरके रडार——जिससे पाकिस्तानी भारतकी चौकियोंका पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा कर उन्हें एकके बाद एक नष्ट करते जा रहे थे--में अपना लड़ाकू जहाज भिड़ा दिया। देशकी रक्षाके लिये इससे गौरवपूर्ण आत्मबलि और क्या हो सकती है? और ऐसी एक नहीं सैंकड़ों वारदातें भारतीय सैनिकोंके सर वीरताका ताज पहनाती हैं।

आपका संपादकीय पढ़कर स्मृति पटपर रह-रह कर कौंध रहा है मेरी अम्माजीका (नानीजी) विशाल रूप—उन अम्माजीका जिनसे आप तथा आपके पाठक भी परिचित हैं—कह सकते हैं वीरताकी मिसाल थीं वे और यह बहुत नयी नहीं तो पुरानी बात भी नहीं है— हिंदू मुसलमानोंके भीषण दंगे चल रहे थे, हापुड़ जैसे छोटे-से शहरमें तब भी सब बिना भेद-भावके रह रहे थे लेकिन भड़कानेवालों-की दुनियामें कमी नहीं—रातों रात खबर फैल गयी कि वहांके हिंदू मुसलमानोंके घर जला डालेंगे, उनकी बीवियोंको उड़ा ले जायेंगे, बच्चोंका कत्ल कर देंगे क्योंकि यही सुलूक पाकिस्तानके किसी गांव-में हिंदू परिवारोंके साथ किया जा रहा है। हापुड़ शहर उन दिनों दो हिस्सोंमें बंटा था, एक तरफ हिंदुओंकी बस्ती थी तो दूसरी तरफ मुसलमानोंकी जिनमें अधिकतर नीची जातिके मोची, चमार, कहार इत्यादि रहते थे, हमारी अम्माजीके मकान एकदमसे बीचों-बीच थे —यह खबर उनके कानोंमें पड़ी तो उन्होंने बीड़ा उठा लिया अपने मुसलमान भाई-बहनोंकी सहायताका। अपने तीन अट्टालिकानुमा मकानोंमें सब मुसलमानोंको मय परिवार बुला लिया, हफ्ते भरका आटा दाल खरीद कर रख दिया और बाहरसे ताला लगा कर तन कर खड़ी हो गयीं चौराहेपर—मशाल हाथमें लिये बड़ी भीड़ जब चौराहेतक पहुंची तो अम्माजीने उसे ललकारा—मर्द हो तो पहले मेरी छातीसे होकर निकलो फिर अपने उन मुसलमान भाइयोंके घर फूंकना।

पता नहीं उस ललकारमें क्या जादू था, उस आवाजने उस पागल भीड़के किस मर्मको छू लिया, सबके सब उल्टे पैरों लौट पड़े—एक वीर युवतीने खून-खराबा रोक दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हीं नानीके बारेमें मैं आपको पहले भी लिख चुकी हूं कि उन्होंने कैसे चलती रेलमें तीन बुर्कापोश गुण्डोंको पकड़वाया था।

तो अनुबेन, हमारा भारत नपुंसक नहीं हो गया है। अपनी निराशाको इन आशा रूपी ज्वालाओंसे भस्म कर दीजिये। क्योंकि इन सब दुर्बलताओंके पीछे कहीं मां दुर्गाके जगनेकी तैयारी चल रही है। आज आवश्यकता है कि हम सब भारतवासी एक स्वरमें माता दुर्गाका आह्वान करें, जो भारतवर्षमें प्रकट होकर इस देशको इसके सच्चे मार्गपर ले आयें।

हमारी, आपकी, सबकी प्रार्थना यही हो——

जागो मां जागो, अपने प्रभामंडलकी संपूर्ण आभासे धरतीके कण-कणको सुनहरी आभासे प्रकाशित कर दो——

वीरमार्गप्रदर्शिनी, आओ! अब तुम्हारा विसर्जन न करेंगे। हमारा सारा जीवन अविच्छिन्न दूर्गा पूजा है, हमारा संपूर्ण कार्य, अविरत, पवित्र, प्रेममय, शक्तिमय, मातृसेवाव्रत हो, यही प्रार्थना है हे मातः, भारतवर्षमें प्रकट हो, प्रकाशमान हो।

——आपकी वन्दना

श्रीअरविंदके साथ बातचीत

(प्रतीकों, प्राणिक लोककी सत्ताओंके बारेमें)

२-९-१९२६

मनुष्यपर जलवायु और स्थानके प्रभावकी बात चली। किसीने कहा, कुछ बंगाली परिवार आसाममें जा बसे हैं और उनके नाक-नक्शे बिल्कुल आसामियों जैसे, मंगोल ढंगके हो गये हैं।

श्रीअरविंद——यह कुछ-कुछ सूक्ष्म भौतिककी बात है, जो लोग वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिये और मरे हैं वे एक प्रकारका प्रारूप छोड़ गये हैं जो वहां रहने वालोंपर काम करता है।

(प्रतीकोंकी बात करते हुए)

ज्यामितिका समचतुष्कोण अतिमानसका प्रतीक है, दोहरा त्रिभुज उच्चतर प्रकृतिके तीन लोकों और निचली प्रकृतिके तीन लोकोंका प्रतीक है, अतिमानस बीचमें है।

भौतिक जगतका रंग लाल है, प्राणका जामनी और हरा, मनका सीधा पीला। उच्चतर आध्यात्मिक लोकोंका रंग श्वेत, सुनहरा और नीला है।

श्वेत प्रकाश तात्विक शुद्धि है, सुनहरा प्रकाश सत्य है, नीला आध्यात्मिक आनंद और किसी और चीजका भी प्रतीक है।

शिष्य—चैत्य सत्ताका कौन-सा रंग है।

श्रीअरविंद—उसका कोई रंग नहीं होता।

३-९-१९२६

कुछ लोग मेजपर हाथ रखकर, उसपर टकोरे लगा कर आत्माओं-को बुलाते थे, मेजमें गति होती थी और वह प्रश्नोंका उत्तर देती थी, इस तरहके बहुत-से प्रदर्शन हुआ करते थे।

श्रीअरविंदने कहा कि इन प्रदर्शनोंमें सामान्यत: बाहरसे कोई आत्मा नहीं आती। माध्यम और इन प्रदर्शनोंमें भाग लेनेवालोंकी इच्छासे एक शक्ति पैदा होती है जो इस तरहकी चीजें करती है। उत्तर लोगोंके मनसे आते हैं। वे अवचेतन मनसे या अन्तस्तलीय मनसे आ सकते हैं जो मनुष्यकी अपेक्षा बहुत ज्यादा जानता है।

कभी-कभी निचले प्राणमय लोककी सत्ताएं और भौतिक लोककी सत्ताएं भी आ कर इसमें भाग लेती हैं और केवल विनोदके लिये इन प्रदर्शनोंमें सहायता देती हैं, हस्तक्षेपके सच्चे उदाहरण तो बहुत कम होते हैं। मृत प्राणी, अगर उन्हें रस हो और वे काफी नजदीक हों तो जीवित लोगोंके साथ संपर्क साध सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदने बतलाया कि माताजीने ऐसे परीक्षण किये थे कि केवल उनकी इच्छा-शक्तिके कारण ऐसी शक्तिका निर्माण हुआ जिससे मेज उछलती हुई सारा कमरा पार कर उनकी खाटके पास आ गयी।

लेकिन यह विचार गलत और बेतुका है कि मृत व्यक्ति सदियों-तक हमारे वातावरणमें लटके रहते हैं और मेजपर टकोरें मारने-वालोंके इशारेपर जवाब देते हैं।

मरते समय लोग विचारके ऐसे रूप बना सकते हैं जो कहीं दूरी-पर भी उनके नाते-रिश्तेदारोंके आगे प्रकट होते हैं। मरते समय लोग ऐसे प्रभाव छोड़ सकते हैं जिन्हें प्राणिक सत्ताएं लेकर अनु-प्राणित करें—यही उन कहानियोंका तथ्य है जिनमें हम सुनते हैं कि मृत व्यक्तियोंके भूत आकर लोगोंको तंग करते हैं।

भूत भी मानव शरीरमें आकर प्रकट हो सकते हैं, वे जन्मके समय ही शरीरपर कब्जा कर लेते हैं।

४-९-१९२६

शिष्य—माताजीके मेज हिलाने और खिसकानेके परीक्षणोंमें क्या उनकी इच्छा-शक्ति काम कर रही थी?

श्रीअरविंद—नहीं, इच्छा-शक्ति मेजको नहीं हिलाती, कोई प्राणिक शक्ति आ जाती है जो मेजको खिसकनेके लिये बाधित करती है।

शिष्य—मेजको खिसकाती है?

श्रीअरविंद—नहीं मेजको खिसकनेके लिये बाधित करती है।

शिष्य—क्या यह सुझावके द्वारा होता है?

श्रीअरविंद—नहीं, सुझाव मानसिक होता है। जिन लोगोंमें शक्ति होती है वे अपनी एकाग्रतासे ऐसा वातावरण रच डालते हैं जिसमें शक्ति अभिव्यक्त होती है। वह शक्ति सीधी भौतिक स्तरपर बिजलीकी तरह काम करती है। ऐसे लोग हैं जो वातावरणको माध्यम बनाये बिना सीधे जड़ वस्तुपर क्रिया कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिखरे मोती

भगवान् हमेशा मौजूद रहते हैं, केवल हम उन्हें अनुभव नहीं करते।

*

धन, धन कमानेके लिये नहीं है, धन धराको नयी सृष्टिके आगमन-के लिये तैयार करनेके लिये है।

*

तुम जो सुख देते हो वह तुम्हें उस सुखसे ज्यादा सुखी बनाता है जो तुम ग्रहण करते हो।

*

हर चीजके पीछे एक दिव्य सौंदर्य और सामंजस्य है। हमें इसी-के संपर्कमें आना चाहिये। हमें इसीको अभिव्यक्त करना चाहिये।

*

जन्मसे लेकर मृत्युतक जीवन एक खतरनाक चीज है। कई बार लोग खतरोंकी परवाह किये बिना उसमेंसे गुजरते हैं।

*

जीवनमें एक लक्ष्य है—और वही एकमात्र सच्चा और चिर-स्थायी लक्ष्य है—भगवान्। उनकी ओर मुड़ो और खोखलापन चला जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।
तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन
पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड
सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*"Live in his Being, Shine with His Light,
Act with His Power, Rejoice with His Bliss."*

The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast Packagings Private Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 *Telex:* 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

Works:

PLOT No. G. 1/3 MIDC AREA, BOISAR,

DIST. THANE MAHARASHTRA

Phones: 682, 491, 591 *Telex::* 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
A good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा किरण

युद्ध तो समाप्त हो गया पर भारतकी अवस्था बहुत अच्छी न थी। कलकत्तेका नर संहार और नुआखालीकी मारकाटने सारे देशके वातावरणको हिंसामय और निराशापूर्ण बना दिया, उस समय श्रीअरविंदने कहा :

"जहांतक बंगालका प्रश्न है, स्थिति निश्चित रूपसे खराब है। हिंदुओंकी अवस्था भयानक है और दिल्लीके अस्थायी गठबन्धनके बावजूद, अधिक खराब होती जायगी। लेकिन हमारी प्रतिक्रिया सीमासे बाहर न होनी चाहिए और न हमें निराशाको स्थान देना चाहिए। बंगालमें कम-से-कम दो करोड़ हिंदू तो होंगे ही और उनका मूलोच्छेदन नहीं किया जा सकता। हिटलर हत्याकांडके वैज्ञानिक साधनोंके होते हुए सभी यहूदियोंका सफाया नहीं कर पाया और आज वे बहुत ज्यादा जीवित-जाग्रत दिखायी दे रहे हैं। और रही हिंदू संस्कृति, तो वह इतनी कमजोर या छुई-मुई जैसी नहीं है कि कोई आसानीसे उखाड़ सके। वह कम-से-कम पांच हजार वर्षसे चली आ रही है और अभी इससे अधिक चल सकती है। उसने जीते रहनेके लिये काफी शक्ति जुटा ली है। आज जो हो रहा है इससे मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। जब मैं बंगालमें था तभी मैंने इसे पहलेसे देख लिया था और लोगोंको सावधान किया था। यह बहुत संभव और लगभग अनिवार्य है और उन्हें इसके लिये तैयार रहना चाहिए। उस समय मैंने जो कुछ कहा, उसे किसीने कोई महत्त्व न दिया। बादमें जब पहले-पहल गड़बड़ शुरू हुई तो कुछ लोगोंने इन बातोंको याद किया और कहा कि मेरी बात ठीक थी। केवल चित्तरंजन दासको इस चीजका भय था और जब वे पांडिचेरी आये तो उन्होंने मुझसे कहा कि वे नहीं चाहेंगे कि अंग्रेज इस खतरनाक समस्याके हल होनेसे पहले यहां से चले जायं। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

जो हो रहा है उससे मैं हतोत्साह नहीं हुआ हूं? क्योंकि मैं जानता हूं और मैंने सैंकड़ों बार अनुभव किया है कि घने-से-घने अंधकारके परे, जो भगवान्का कार्य है उसके लिये, भागवत विजयका प्रकाश मौजूद है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि मैंने संसारमें किसी चीजके होनेके लिये प्रबल और निरंतर संकल्प किया और वह पूरी नहीं हुई—यहां मैं व्यक्तिगत चीजोंकी बात नहीं कर रहा। ये चीजें बिलंब, पराजय और घोर विपदाके बाद भले हुई हों पर हुई जरूर हैं। एक समय था जब हिटलर सब जगह विजयी होता जा रहा था और ऐसा लगता था कि असुरका काला जुआ सारे संसार-पर रख दिया जायगा। पर आज कहां है वह हिटलर और कहां है उसका राज्य? बर्लिन और न्यूरेम्बर्गने मानव इतिहासके उस अन्धकारमय अध्यायकी इतिश्री कर दी। दूसरे अंधकार मनुष्य जातिपर छाया डाल रहे हैं और उसे लील जानेका भय दिखाते हैं, लेकिन उनका अंत भी उसी तरह आयेगा जैसे इस दुःस्वप्नका अन्त आया।"

सोसायटी समाचार

उत्तर-प्रदेश और आसपासके इलाकोंके सोसायटीके केंद्रों और उसकी शाखाओंका वार्षिक अधिवेशन ११, १२, १३ जूनको नैतीतालके वन-निवासमें होनेवाला है। वहीं पर १० से १८ जूनतक दिल्ली आश्रमकी तारा जौहरके तत्त्वावधानमें शिविर होगा। इनमें से दोनों या किसी एकमें भाग लेनेके इच्छुक श्रीप्रमोद चन्द्र अग्रवाल, २८, गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ—२२६००१ को पत्र लिख सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

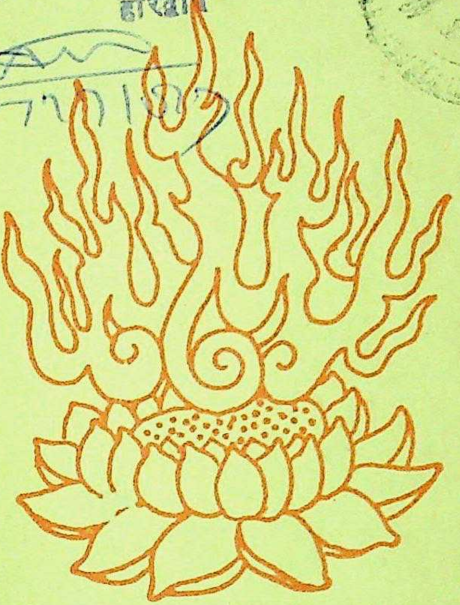

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जुलाई १९८७ वर्ष १७, अंक १२, पूर्णांक २०४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संदेश

संपादकीय : योग्यता — अनुबेन — १

दैनन्दिनी — २

रूपांतरोंका संचालन — ४

प्रार्थना — ९

अब जिस परम सत्यको चरितार्थ करना है — १०

श्रीअरविंद — १२

क्रम-विकास — २४

देव-मुहूर्त — २५

प्रयोगशाला — २६

मनुष्य — २८

प्रगतिके लिये प्यास — २९

एक कार्यक्रम — ३०

सरल बनो — ३२

खुश रहो — ३३

अचंचल रहो — ३४

अपना काम अच्छे-से-अच्छी तरह करो — ३५

अपने-आपको हमेशा मेरी ओर खुला रखो — ३६

सोसायटी समाचार — ३७

आ० ३

कृपया चेक न भेजें, उसमें बहुत असुविधा होती है। ड्राफ्ट, धनादेश या पोस्टल आर्डर भेज सकते हैं। अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

संपर्क : संपादक अग्निशिखा एवं पुरोवा, पांडिचेरी–६०५००२

संपादक : रवींद्र, अनुबेन

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदेश

निराशा प्रगतिके लिये कभी आवश्यक नहीं होती। वह हमेशा दुर्बलता और तमस्का चिह्न है। बहुधा वह एक विरोधी शक्तिकी उपस्थितिका संकेत देती है, कहनेका मतलब यह है कि वह एक ऐसी शक्ति है जो जान-बूझकर साधनाके विरुद्ध कार्य करती है।

तो, जीवनकी सब परिस्थितियोंमें तुम्हें हमेशा निराशासे बचनेकी सावधानी बरतनी चाहिये। इसके अलावा, इस विवर्ण, विषण्ण, निराश होनेकी आदतका आधार घटनापर नहीं बल्कि स्वभावमें श्रद्धाके अभावपर होता है। जिस व्यक्तिमें श्रद्धा हो, भले ही उसे अपने ऊपर ही श्रद्धा हो, वह सब कठिनाइयोंका सामना कर सकता है, वह सब परिस्थितियों, सबसे विपरीत परिस्थितियोंका सामना हतोत्साह या निराश हुए बिना कर सकता है। वह वीरकी भांति अंततक युद्ध करता है। जिन स्वभावोंमें श्रद्धाकी कमी होती है उनमें सहिष्णुता और साहसकी भी कमी रहती है।

—श्रीमाताजी

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'संपादकीय' :

योग्यता

"भारतके लोग कभी-कभी कच्ची बुद्धिके अपरिपक्व विचार और आचरण करते हैं। राष्ट्रकी हर समस्याके लिये वे वैसे ही हाथ बांधे खड़े रहते हैं जैसे सदियों पहले लोग सोमनाथ मंदिरके चारों ओर बैठकर यह आशा करते रहे कि पिनाकपाणि मंदिरसे बाहर निकल आयेंगे और गजनवीको पराजित कर देंगे।

क्या सदियोंके कटु अनुभवने हमें कुछ नहीं सिखाया?"

इस तरह मनका गुबार निकालते हुए दो मित्र समुद्र-तटपर टहल रहे थे कि एक हट्टे-कट्टे भिखारीने रिरियाना शुरू किया, "दस पैसे दे दो बाबूजी, एक कप चाय पी लूंगा।" कुछ देर तक उसकी रीं रीं अनसुनी करनेके बाद हठात् एक मित्र बोला, "तू जवान है, काम क्यों नहीं करता?"

भिखारी बेबस हो बोल पड़ा, "बाबू सब यही कहते हैं, काम कोई नहीं दिलवाता।"

मित्रमें परदुःखभंजन जाग उठा, बोले, "अच्छा चलो, काम दिला तो दूं पर फिर कहीं मुझे मुसीबतमें मत फंसा देना।"

भिखारी हाथ जोड़े बोला, "माई बाप, मैं किसान था, बस, कर्जेने मुझे डुबा दिया। आप देखिये तो..."

मित्रने दूसरे दिन जान-पहचान वालोंसे कहा कि वह उनके पास नौकर भेजेगा। कई दिनोंसे उनके यहां कोई नौकर न था सो वे बड़े खुश हुए किंतु जब वे भिखारीको ले कर गये तो उसे देख कर उन्होंने कह दिया कि उन्हें कोई अच्छा आदमी मिल गया है।

जान पहचानवाले सज्जनने दूसरे दिन मित्रको अच्छी खासी डांट पिलायी, "यह कोई बात है! सड़कपर जो मिल गया उसीको उठा लाये! पता है आजकल चोर उचक्कोंका यही नया धंधा है; किसी शरीफके घरमें नौकर बन कर जाते हैं, एकाध महीना अच्छी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कुछ देखभाल कर, एक दिन सब कुछ लेकर चंपत हो जाते हैं।"

ऐसा हितैषी पाकर भिखारी भी दूसरे दिन मित्रसे मिला। इस बार मित्रने उसे दस रुपये देकर कहा, "और कुछ नहीं कर पाया, लो इसके लेमन चूस खरीद कर बेचना शुरू करो लेकिन भीख मत मांगना।" भिखारी कृतज्ञतासे हाथ जोड़ कर चला गया। कुछ दिनों बाद दोनों मित्र भिखारीको भूल गये।

करीब एक महीने बाद दोनों मित्र अपनी दिनचर्याके मुताबिक समुद्र तटपर टहल रहे थे कि एक साफ-सुथरा आदमी उनके सामने आकर मुस्कुराया और बोला, "बाबूजी, पहचाना मुझे?" बाबूजीको चुप देख कर वह बोला, "आपने एक दिन मुझे दस रुपये दिये थे।" दोनोंके दिमागमें भिखारीका चित्र कौंध उठा। मित्रने कहा, "अरे तुम! कैसे हो? अब तो तुम भले मानुष लगते हो।" भूतपूर्व भिखारीने हाथ जोड़ गद्गद् हो कर कहा, "बाबूजी, आपने मुझे नया जीवन दिया। कहां दर-दर ठोकरें खाता फिरता था पर आप भगवान्की किरपाके रूपमें मुझे मिल गये। जुग जुग जियो बाबू! अब अपनी ठेला गाड़ी है, दो जून रोटीकी कोई कठिनाई नहीं रही। बस मुझे और कुछ नहीं चाहिये।" आंखें पोंछता हुआ वह चला गया।

कुछ क्षण दोनों स्तब्ध रहे, फिर एक मित्रने दूसरेका हाथ थाम कर कहा, "सुना, तुमने सुना! इस छोटी घटनाने मुझे बड़ा पाठ पढ़ाया है। हम, भारतवासी अगर जाग्रत और तत्पर रहें तो कोई कारण नहीं कि यह राष्ट्र फिर अपने गौरवको क्यों न पा सके। तुम्हारी तरह हर नागरिक राष्ट्रकी छोटी-बड़ी समस्याओंको हल करनेमें हाथ बंटायें तो तुम्हारी उस दिनकी भर्त्सना गलत साबित होगी कि भारतके लोग अपरिपक्व हैं, सारे समय सरकारका मुंह ताकते रहते हैं। अब तुम्हें मानना पड़ेगा कि भारतके लोग वयस्क हो चले हैं और जो स्वाधीनता हमें मिली है उसके योग्य बनते जा रहे हैं।

—अनुबेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिनी

जुलाई

१. तत्त्वतः जीनेका एक ही सच्चा कारण है: वह है अपने-आपको जानना। हम यहां सीखनेके लिये आये हैं—हम क्या हैं, हम यहां क्यों हैं और हमें क्या करना है—यह सीखनेके लिये। अगर हम यह न जान पायें तो हमारा जीवन रिक्त है—हमारे अपने लिये और दूसरोंके लिये भी रिक्त है।

२. जो नया पथ तुम्हें कहीं और ले जाएगा उसपर कदम रख कर कितनी राहत मिलती है, छलांग लगानेसे पहले बहुतसे सामान-से पिंड छुड़ानेकी मुसीबत सार्थक लगता है।
असलमें साहसोंमें सबसे उत्कृष्ट साहस यह है, और तुम्हारे अंदर थोड़ी सच्ची साहसिक वृत्ति हो तो सब पानेके लिये सब जोखिम उठाना सार्थक लगती है।

३ इस समय हम फिरसे पृथ्वीके इतिहासमें एक निर्णायक मोड़ पर आ खड़े हुए हैं। सब ओरसे मुझसे पूछा जाता है, "क्या होनेवाला है?" सब जगह दुःख प्रत्याशा और भय है। "क्या होने जा रहा है?" . . . उत्तर केवल एक ही है, "काश, मनुष्य आध्यात्मिक होनेके लिये अनुमति भर देता।"

४. मेरे मधुर स्वामी, मेरी नन्ही मां,
मुझे सच्चा प्रेम दो, वह प्रेम जो अपने-आपको भूल जाता है।

५. हे मां, तुम मेरी बुद्धिका प्रकाश हो, मेरी आत्माकी पवित्रता हो, मेरे प्राणकी शांत शक्ति हो, मेरे शरीरकी सहिष्णुता हो। मैं केवल तुमपर ही निर्भर हूं और पूरी तरह तुम्हारा रहना चाहता हूं। राहके रोड़ोंपर मुझे विजय दिला।

६. अटल शांतिका अनंद लेनेका एकमात्र उपाय है, सब परिस्थितियों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उसी चीजकी इच्छा करना जिसके लिये तू इच्छा करे।

७. प्रभु, हमारे अंदर चेतना और शांति बढ़ती रहें ताकि हम तेरे दिव्य विधानके अधिक-से-अधिक उपयुक्त माध्यम बन सकें।

८. प्रभु, परम सत्य,
हम तुझे जानने और तेरी सेवा करनेकी अभीप्सा करते हैं। अपना योग्य बालक बननेमें हमारी सहायता कर। तेरी ओरसे सतत मिलते रहनेवाले उपहारोंके बारेमें हमें सचेतन कर ताकि कृतज्ञता हमारे हृदयको भर दे और हमारे जीवन-पर शासन करे।

९. प्रभु, तेरा प्रेम इतना महान्, इतना उदात्त और पवित्र है कि वह हमारी समझसे परे है। वह विशाल और अनंत है, हमें उसे घुटनोंके बल बैठ कर ग्रहण करना होगा, फिर भी तूने उसे इतना मधुर बना दिया है कि हममें सबसे दुर्बल बच्चा भी तुझतक पहुंच सकता है।

१०. हे मेरे प्रभु, तेरा संरक्षण सर्वशक्तिमान है। वह हर शत्रुको हरा देता है।

११. प्रभु, जो कुछ है उसकी गहराईमें और जो कुछ होगा, उस सबमें तेरा दिव्य और अपरिवर्तनशील स्मित है।

१२. अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें आदर मिले तो तुम्हें आदरणीय होना चाहिये।

१३. क्या तुम ममता चाहते हो? ममतामय बनो।
क्या तुम सत्यकी मांग करते हो? सच्चे बनो।

१४. भला करनेकी कोशिश करो और यह मत भूलो कि भगवान् तुम्हें हर जगह देखते रहते हैं।

१५. मुंहमें मिठाईकी जगह एक सत्कार्य हृदयको अधिक मीठा लगता है। जो दिन बिना सत्कार्य किये बीतता है, वह आत्मा-विहीन होता है।

१६. हितका कार्य, सत्कार्यके प्रेमके लिये करो, किसी पुरस्कारकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशासे नहीं। अच्छे बने रहनेके हर्षके लिये अच्छे बनो, दूसरोंकी कृतज्ञता पानेके लिये नहीं।

१७. भागवत करुणासे प्रार्थना करो कि वह तुमसे हमेशा उचित कार्य उचित ढंगसे करवाये।

१८. हमेशा वही करो जिसे तुम उत्तम समझते हो, अगर वह सबसे कठिन कार्य हो तब भी उसे करो।

१९. एक दिन आता है जब हमारे अंदर और चारों ओर सारे व्यवधान ढह जाते हैं और हम पक्षीकी तरह निर्विरोध उड़ानके लिये पर तोल सकते हैं।

२०. हमारे विचार अब भी अज्ञानपूर्ण हैं, उन्हें प्रदीप्त होना चाहिये।

२१. हमारी अभीप्सा अबतक अपूर्ण है, उसे शुद्ध होना चाहिये।

२२ हमारा कार्य अब तक शक्तिहीन है, उसे प्रभावशाली होना चाहिये।

२३. भगवान् क्या चाहते हैं यह जान लो और तुम्हें प्रभुत्व प्राप्त होगा।

२४. आओ, हम इस भागवत हित-चिंताको समझें और कृतज्ञताके साथ उसे ग्रहण करें जिसे बहुधा समझा नहीं जाता।

२५. सौंदर्य एक महान् शक्ति है।

२६. जीवनमें सबसे मूल्यवान् चीजोंमें वे चीजें हैं जिन्हें तुम भौतिक आंखोंसे नहीं देख पाते।

२७. आशावाद: अपने विपरीत भावसे अधिक सहायक होता है।

२८. प्रयास एक छोटी-सी चीज है लेकिन यह भविष्यका वादा हो सकता है।

२९. यह साहस, यह वीरता जिसकी भगवान् हमसे मांग करते हैं, उसका उपयोग हम अपनी कठिनाइयोंसे लड़नेमें क्यों न करें, अपनी अपूर्णताओंसे, अपने अंधकारसे लड़नेमें क्यों न करें?

३०. आंतरिक शुद्धिकी अग्नि-परीक्षाका वीरताके साथ सामना क्यों न किया जाय ताकि फिरसे एक बार उन भयंकर, भीमाकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनाशोंमेंसे न गुजरना पड़े जो एक पूरी संस्कृतिको अंधकारमें ले डुबो देते हैं।

३१. जब कोई बालक उत्साहसे भरा हो तो उसपर कभी ठंडा पानी न डालो, उसे कभी यह न कहो: "पता है, जीवन ऐसा नहीं होता।" तुम्हें उसे हमेशा प्रोत्साहन देना चाहिये, यह कहना चाहिये, "हां, इस समय चीजें ऐसी नहीं हैं, वे कुरूप दीखती हैं, लेकिन इसके पीछे एक सौंदर्य है जो चरितार्थ होनेका प्रयास कर रहा है। तुम्हें उससे प्रेम होना चाहिये, और उसे अपनी ओर खींचना चाहिये। यही तुम्हारे स्वप्नों-का, महत्त्वाकांक्षाका लक्ष्य होना चाहिये।"

तुम्हारा निजी मूल्य, यहांतक कि तुम्हारी व्यक्तिगत उपलब्धि कुछ भी क्यों न हो, योगमें अपेक्षित पहला गुण है **विनम्रता**।

*

इन्द्रियां कहती हैं, "वह उस (स्त्री)से प्यार करता है"; परंतु आत्मा कहती है, "भगवान्, भगवान्, भगवान्।" बस, यही है संसारका सर्वालिंगनकारी सिद्धांत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके जन्ममें संस्थित था एक प्रतीक और एक संकेत;
उसका मानव रूप पारभासी आवरणके सदृश
आच्छादित करता था सर्व-प्रज्ञको जो मार्गदर्शक है अंधी दुनियाका...
उसकी आत्मा थी मानो शाश्वतताकी प्रतिनिधि...

(सावित्रीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

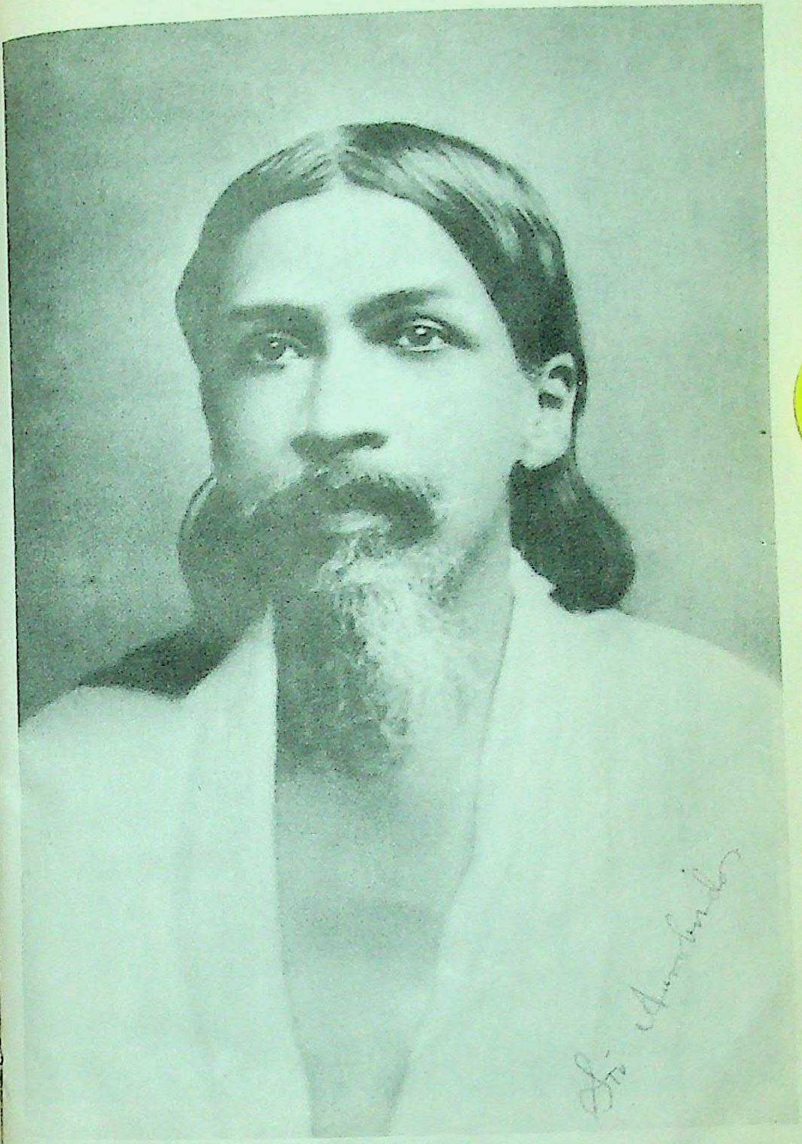

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

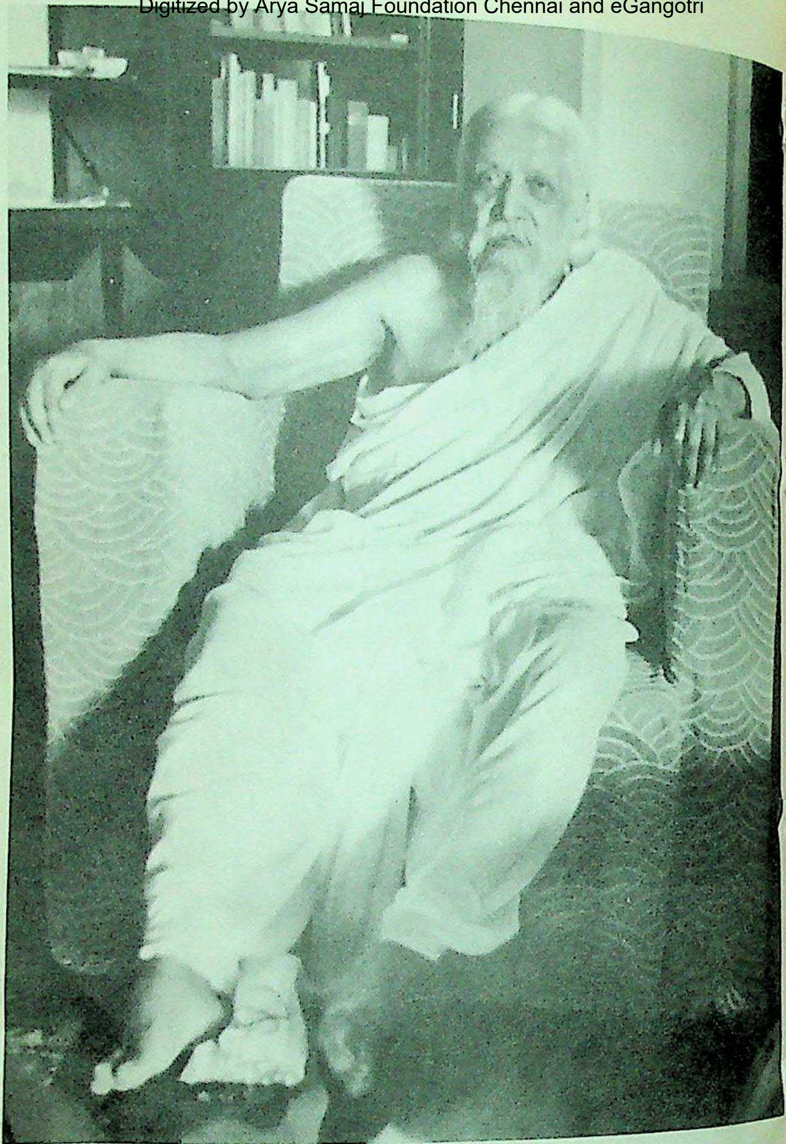

श्रीअरविंद (१९५०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपांतरोंका संचालन

पृथ्वीके इतिहासके आरंभसे ही श्रीअरविंदने किसी-न-किसी रूपमें, किसी-न-किसी नामसे हमेशा पृथ्वीके महान् रूपांतरोंका संचालन किया है।

——माताजी

पृथिव्या इतिहासस्य आरम्भात् श्रीअरविन्दः सदैव, येन केनापि रूपेण, येन केनापि नाम्ना, महतां भूगतरूपान्तराणाम् आध्यक्ष्यं कृतवान्।

—श्रीमाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना

हे परम स्वामी,

अब भी दिनमें कितनी ही बार मैं ऐसे कर्म करती हूं जब मेरी क्रियाएं 'तुझे' समर्पित नहीं होतीं;—मैं तुरंत एक ऐसी अवर्णनीय विकलताके द्वारा इसके बारेमें अभिज्ञ हो जाती हूं जो हृदयपर एक प्रहार द्वारा मेरे शरीरकी संवेदनशीलतामें अनूदित हो जाती है। तब मैं अपने कर्मको अपनेसे अलग करके देखती हूं और वह मुझे हास्यास्पद, बचकाना या दोषयुक्त प्रतीत होता है, मैं उसके लिये खेदका अनुभव करती हूं, क्षण भरके लिये मैं उदास हो जाती हूं, जबतक कि मैं तेरे अंदर डुबकी नहीं लगा लेती, उसमें एक बच्चेके विश्वासके साथ अपने-आपको खो नहीं देती, और अपने अंदर और अपने चारों तरफकी भूल-भ्रांतिको ठीक करनेके लिये तुझसे आवश्यक अभीप्सा और बल पानेकी प्रतीक्षा नहीं करती . . .

*

हमें जिस अवस्थाको लक्ष्य बनाना चाहिये, योगकी सच्ची उपलब्धि, अंतिम पूर्णता तथा प्राप्ति, जिसके लिये बाकी सब तैयारी मात्र है, वह वही चेतना है जिसमें भगवान्‌के बिना कुछ भी करना असंभव होता है, क्योंकि तब, अगर तुम भगवान्‌के बिना रहो तो तुम्हारी क्रियाका स्रोत ही विलीन हो जाता है; ज्ञान, शक्ति सब चले जाते हैं . . .।

योगके आरंभमें तुम्हारे अंदर भगवान्‌को भूल जानेकी प्रवृत्ति बहुधा होती है। लेकिन सतत अभीप्सा द्वारा तुम अपनी स्मरण-शक्तिको बढ़ा सकते हो और भूलनेकी आदतको कम कर सकते हो। लेकिन इसे कठोर अनुशासन या किसी कर्तव्यके रूपमें नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहिये; यह प्रेम तथा हर्षकी क्रिया होनी चाहिये। तब बहुत जल्दी एक ऐसी अवस्था आयेगी जब अगर तुम हर क्षण और जो कुछ कर रहे हो उसमें भगवान्‌की उपस्थितिका अनुभव न करो तो तुम उसी क्षण स्वयंको अकेला, दुःखी अनुभव करने लगते हो।

जब कभी तुम्हें लगे कि तुम भागवत उपस्थितिका अनुभव किये बिना कार्य कर रहे हो और फिर भी पूरी तरह आराममें हो तो तुम्हें यह जानना चाहिये कि अपनी सत्ताके उस भागमें तुमने समर्पण नहीं किया है। सामान्य मानवजातिका यही रास्ता है जो भगवान्‌की आवश्यकताका कोई अनुभव नहीं करती। लेकिन भागवत जीवनके अभीप्सुके लिये बात एकदम भिन्न है। और जब तुमने भगवान्‌के साथ पूरी तरहसे एकत्व सिद्ध कर लिया हो तब, अगर भगवान् क्षण भरके लिये भी तुमसे अलग हो जायं तो तुम एकदमसे धराशायी हो जाओगे; क्योंकि अब भगवान् ही तुम्हारे जीवनके जीवन हैं, तुम्हारा समग्र अस्तित्व हैं, तुम्हारा अनन्य तथा पूर्ण सहारा हैं। अगर भगवान् न हों तो कुछ नहीं बच रहता।

*

प्रश्न—हम . . . भगवान्‌को भूल क्यों जाते हैं या उनसे संपर्क क्यों खो बैठते हैं?

तुम संपर्क इसलियें खो बैठते हो क्योंकि तुम्हारी चेतना अबतक विभाजित है। भगवान् अबतक तुम्हारे मनमें प्रतिष्ठित नहीं हुए हैं; तुम पूरी तरहसे भागवत जीवनको समर्पित नहीं हो। और चीजोंपर तुम चाहे जितने एकाग्र रहो . . . और फिर भी तुम्हें यह भान रहेगा कि भगवान् तुम्हारी सहायता कर रहे और तुम्हें सहारा दे रहे हैं।

सभी प्रयत्नोंमें, चाहे वे बौद्धिक हों या क्रियाशील, तुम्हारा आदर्श वाक्य होना चाहिये, "स्मरण और समर्पण।"

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नींदसे जागने पर तुम्हें कुछ क्षणोंके लिये अचंचल रहना चाहिये और आनेवाले दिनको भगवान्के अर्पण करना चाहिये, भगवान्को हमेशा और सभी परिस्थितियोंमें याद रखनेकी प्रार्थना करनी चाहिये।

सोनेसे पहले तुम्हें कुछ क्षण एकाग्र रहना चाहिये, बीते हुए दिन-पर एक नजर डालो, यह याद करो कि कब और कहां तुम भगवान्-को भूल गये थे और प्रार्थना करो कि ऐसी विस्मृतियां फिरसे न आयें।

—माताजी

"प्रभो, मुझे इस कृपाका वर दे कि मैं तुझे कभी न भूलूं।"

अब जिस परम सत्यको चरितार्थ करना है*

वह प्रमुख दोष, जो हमेशा ही रास्तेमें बाधक रहा है और जो अब अपनी चरम प्रधानतामें अलग-थलग दिखायी देता है, वह निम्नतर प्राणिक सत्तामें प्रतिष्ठित है या कम-से-कम इस समय केंद्रित है। मेरा मतलब प्राणिक भौतिक प्रकृतिके उस भागसे है जिसके साथ तुच्छ तथा हठी अहंभाव जुड़ा होता है और जो बाह्य मानव व्यक्तित्व-को परिचालित करता है,—वह जो उसके सतही विचारोंको सहारा देता है और उसके अनुभव, चरित्र और कार्यके अभ्यासगत तरीकोंपर

---

*नवंबर १९२८ में श्रीअरविंद द्वारा किसी शिष्यको लिखे गये पत्रके लिये माताजीने १९७३ के आरंभमें यह शीर्षक चुना था। इस नये शीर्षकके साथ पत्र श्रीअरविंद अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-केंद्रकी बुलेटिन-के अप्रैल १९७३ के अंकमें परिशिष्टके रूपमें छपा था। बाकी उपशीर्षक संपादकके दिये हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार रखता है। यहां मैं सत्ताके अन्य भागोंकी बात नहीं कर रहा और न ही मैं उच्चतर मन, चैत्य पुरुष या उच्चतर अथवा विशालतर प्राणिक प्रकृतिकी बात कर रहा हूं क्योंकि जब निम्नतर प्राण ऊपर उठता है तो ये चीजें, अगर कुछ समयके लिये ढक न दी जायें, फिर भी इस निम्नतर प्राण-सत्ता तथा बाह्य व्यक्तित्वके द्वारा पृष्ठभूमिमें धकेल दी जाती हैं। इन उच्चतर भागोंमें, सत्यके लिये अभीप्सा, बाधाओं तथा विरोधी शक्तियोंको जीत लेनेका संकल्प या भक्ति, चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह सर्वांगीण नहीं बन सकता, वह मिश्रित या दूषित हुए बिना नहीं रह सकता और न ही तबतक सतत रूपसे प्रभावकारी रह सकता है जबतक निम्नतर प्राण और बाहरी व्यक्तित्व परम प्रकाशको स्वीकार नहीं कर लें और बदलनेके लिये राजी न हो जायें।

निम्नतर प्राण-सत्ताके परिवर्तनकी आवश्यकता

यह अनिवार्य था कि साधनाके मार्गमें प्रकृतिके ये निम्नतर भाग सामने लाये जायें ताकि सत्ताके अन्य भागोंकी तरह ये भी निर्णायक चुनाव कर सकें और या तो रूपांतरको स्वीकार करें या अस्वीकार कर दें। मेरा सारा कार्य इस क्रियापर निर्भर है, इस योगकी यही निश्चयात्मक अग्निपरीक्षा है। क्योंकि अगर यह परिवर्तित न हो तो भौतिक चेतना और पार्थिव जीवनमें परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। अगर यह कार्य नहीं हो जाता तो इससे पहले संपन्न की गयी किसी भी वस्तु, किसी भी आंतरिक प्रदीपन, अनुभूति, शक्ति या आनंदका अन्ततः कोई मूल्य नहीं रहता। यदि तुच्छ बाह्य व्यक्तित्व अपनी अंध और सीमित, अपनी क्षुद्र और हीन, अपनी स्वार्थपूर्ण, मिथ्या और मूढ़ मानव चेतनाको बनाये रखनेका हठ करे तो इसका अर्थ है कार्य तथा साधनाको स्पष्ट रूपसे अस्वीकार कर देना। मेरा इरादा बाह्य प्रकृतिके विधानमें किसी सच्चे या मौलिक परिवर्तनके बिना पुरानी असफलताके किसी नये संस्करणको, किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंशिक या क्षणिक आंतरिक उद्घाटनको अपनी अनुमति देनेका नहीं है। तब, अगर कोई साधक इस परिवर्तनको व्यवहारमें स्वीकार करनेसे इंकार करे या वह अपनी निम्नतर प्राणिक सत्ता और अपने अभ्यासगत बाह्य व्यक्तित्वमें किसी परिवर्तनकी आवश्यकता-तकको मानना अस्वीकार करे तो मुझे इस निर्णयपर पहुंचनेका अधिकार है कि उसकी घोषणाएं चाहे जो भी क्यों न हों, उसने न तो मुझे और न ही मेरे योगको स्वीकार किया है।

साधककी इच्छाकी आवश्यकता/सच्चा भाव

मैं इसके बारेमें अच्छी तरहसे अभिज्ञ हूं कि यह परिवर्तन आसान नहीं है, इसके प्रति गतिशील संकल्प एकदमसे तुरंत नहीं आता और इसे दृढ़ बनाना कठिन है और बादमें भी, अभ्यासकी शक्तिके विरुद्ध बहुधा साधक अपने-आपको निस्सहाय अनुभव करता है। इस बातको जानते हुए माताजी और मैंने अपने चारों ओर रहनेवाले लोगोंको समय देनेमें पर्याप्त धैर्य दिखाया है और अब भी दिखा रहे हैं ताकि साधनाका सच्चा भाव प्रकट हो, वह आकार ग्रहण करे और उनकी बाहरी सत्तामें सफलतापूर्वक कार्य करे। लेकिन अगर किसी व्यक्ति-में यह भाव केवल हठी, स्वाग्रही या आक्रामक ही नहीं बन जाये बल्कि मन तथा संकल्प-शक्तिके द्वारा समर्थित और पोषित हो और स्वयंको वातावरणमें फैलानेकी चेष्टा करे तो फिर यह भिन्न और बहुत अधिक गंभीर मामला बन जाता है।

निम्नतर प्राण-सत्ताकी वृत्ति :
वह पुराने अभ्यासगत तरीकोंसे चिपकी रहती है :

निम्नतर प्राण-सत्तामें कठिनाई यह है कि अब भी वह अपने पुराने स्वरूपसे गठबन्धन किये हुए है और परम प्रकाशके विरुद्ध विद्रोह करती है; उसने किसी महानतर सत्य या मेरे और माताजीके प्रति समर्पण तो किया ही नहीं है और न इसमें अभीतक इस प्रकार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कोई इच्छा है और यह भाव भी नहींके बराबर है कि सच्चा समर्पण क्या है। जब निम्नतर प्राण यह मनोवृत्ति अपना लेता है तो वह निम्नतर प्रकृतिके पुराने व्यक्तित्वों तथा निम्नतर प्रकृतिके पुराने रूपोंका सतत समर्थन करता रहता है। हर बार जब उन्हें निरुत्साहित किया जाता है तो वह उन्हें सहारा देता और उन्हें वापिस ले आता तथा स्वतंत्रताका अपना अधिकार जताता है,—अपने ही अनगढ़ और अहंकारपूर्ण विचारों, कामनाओं और तरंगों, आवेगों या सुविधाओंका जब चाहे तब समर्थन और उनका अनुसरण करनेकी स्वतंत्रताका अधिकार जताता है। वह गुप्त रूपसे या बहुत सारे शब्दोंमें अपनी प्रकृतिका अनुसरण करनेके अधिकारका दावा करता है—अपने मानव असंस्कृत स्वभावका अनुसरण करनेका; स्वयं वह जो है वही बने रहनेके अधिकारका—जो कुछ उसका स्वाभाविक मूल अपरिवर्तित स्वरूप है, सत्ताके इस अंगके लिये स्वाभाविक समस्त मिथ्यात्व, अज्ञान और असंगतिसे युक्त जो उसका स्वरूप है वही बने रहनेका अधिकार घोषित करता है और वह इस समस्त अशुद्ध तथा निम्नतर पदार्थको वाणी, कर्म और आचरणमें अभिव्यक्त करनेके अधिकारकी मांग करता है या सिद्धांत रूपमें नहीं मांग करता बल्कि व्यवहारमें उसका दावा करता है। वह सोचने, बोलने तथा अनुभव करनेके पुराने अभ्यासगत तरीकोंका समर्थन करता, उनपर मुलम्मा चढ़ाकर, उन्हें भड़कीले रंगोंसे रंगता और अनिश्चित कालतक जारी रखनेकी कोशिश करता है, तथा चरित्रमें जो कुछ विकृत और विरूप हो गया है उसे शाश्वत बनानेका प्रयत्न करता है। यह सब वह कभी-कभी तो खुले तौरपर आत्म-अधिकार जताकर और विद्रोह करके करता है, जो कुछ उसके विरोधमें किया गया या कहा गया है उसपर भूल-भ्रांति या दमन या अन्यायकी छाप लगा कर करता है, कभी-कभी आत्म-वंचनाके पर्देके या कपटके मुखौटेके पीछे करता है, वह कहता एक चीज और करता है दूसरी। बहुधा वह स्वयंको यह समझा लेने तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरोंको यह विश्वास दिलानेकी कोशिश करता है कि केवल ये ही चीजें उसके लिये या सबके लिये एकमात्र उचित समझदारीकी बातें हैं और कार्य करनेकी सच्ची विधि हैं या ये ही योगकी सच्ची क्रियाके अंग हैं।

इन क्रियाओंको छिपाओ नहीं;
उनके उत्सको जानो और उन्हें ठीक करो :

जब इस निम्नतर प्राणको क्रियापर प्रभाव डालनेकी स्वीकृति दी जाती है, जैसा कि तब होता है जब साधक किसी भी तरीकेसे उसके सुझावों, उसकी मनोवृत्तिका--चाहे यह सब उससे छिपा हो या सतहपर प्रकट हो--समर्थन करता हो, तब निम्न प्राण ही उसकी वाणी और क्रियाको पर्याप्त मात्रामें आदेश देता है और उसके विरुद्ध साधक कोई गंभीर प्रतिरोध नहीं करता। अगर वह अपने प्रति निश्छल हो और माताजीके प्रति निष्कपट और सच्चा हो तो वह बाधाके उद्‌गम तथा उसकी प्रकृतिको समझना आरंभ कर देगा और शीघ्र ही उसे बदलने तथा ठीक करनेके ऋजु मार्गपर आ जायेगा। लेकिन विरोधी प्रभावके अधीन होनेपर वह ऐसा बनना निरंतर अस्वीकार करता है, वह इन क्रियाओंको किसी भी प्रकारके आच्छादन, अस्वीकृति, समर्थन या बहाने या किसी दूसरी चीजकी ओटमें छिपाये रखना अधिक पसंद करता है।

निम्नतर प्राणिक सत्ताके सामान्य दोषोंके विशेष आकार

प्रकृतिमें यह प्रतिरोध कुछ विशेष आकार ग्रहण करता है जो अस्तव्यस्तता तथा रूपांतरकी कठिनाईको और अधिक बढ़ा देते हैं। इनमेंसे कुछ आकारोंकी रूपरेखा बतलाना आवश्यक है क्योंकि ये काफी सामान्य हैं, कुछ में कम तो दूसरोंमें अधिक मात्रामें होते हैं और इन्हें प्रबल तथा स्पष्ट रूपसे उद्‌घाटित करनेकी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथ्याभिमान घमंड तथा उग्र राजसिक भावना;

ये अपने-आपको भागवत शक्ति तथा कार्यके बीच ला खड़ा करते हैं और विरोधी शक्तियोंको बुलाते हैं:

१—एक प्रकारका मिथ्याभिमान, घमंड तथा स्वाग्रही उग्र राजसिक भावना जो इस तुच्छ प्राणिक सत्तामें—जिन लोगोंके इन अंगोंमें प्रबल शक्ति होती है—प्राण शक्ति तथा नेतृत्व करने तथा अधिकार जमानेकी आदतकी विकृति हैं—उच्चतर प्राणके कुछ विशेष गुण उन्हें ये चीजें प्रदान करते हैं। इसके साथ-साथ जुड़ा होता है अत्यधिक आत्म-सम्मान जो प्रभाव स्थापित करने, किसी भी तरह पद-प्रतिष्ठा बनाये रखने, यहांतक कि दूसरोंके सामने ढोंग करने, उन्हें प्रभावित करने, अपने अधिकारमें करने या "सहायता करने", एक उच्च साधककी—महत्तर ज्ञान तथा गुह्य शक्तियोंसे संपन्न साधककी—भूमिकाका दावा करनेकी आवश्यकता उत्पन्न करता है। स्वयं बृहत्तर प्राण-सत्ताको भी अपनी शक्तियों तथा क्षमताओंको उस भागवत परम शक्तिके हाथों समर्पित कर देना चाहिये जिससे वे आयी हैं और उसे उनका उपयोग केवल माताजीके यंत्रके रूपमें तथा उनके निर्देशनोंके अनुसार करना चाहिये; अगर वह अपने अहंके दावेके साथ हस्तक्षेप करे और स्वयंको माताजी तथा कार्यके बीचमें या माताजी तथा दूसरे साधकोंके बीच ला खड़ा करे तो उसकी स्वाभाविक शक्तियां चाहे जो भी क्यों न हों, वह सच्चे पथसे च्युत हो जाती है, कामको बिगाड़ देती है, विरोधी शक्तियों तथा गलत क्रियाओंको ले आती है, और उन लोगोंको हानि पहुंचाती है जिनके बारेमें वह सोचती है कि वह उनकी सहायता कर रही है। जब ये चीजें निम्नतर प्राणिक प्रकृतिकी, बाह्य व्यक्तित्वकी तुच्छतामें संक्रमित हो जाती हैं और निम्नतर तथा तुच्छतर रूप ले लेती हैं तब ये सत्यके लिये और भी अधिक मिथ्या, असंगत तथा विकृत बन जाती हैं और साथ ही बुरी तरहसे हानिकारक भी हो सकती हैं हालांकि होती हैं संकीर्ण धारामें। यहांके सामान्य कार्यमें इन विरोधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तियोंको बुलाना या अपनी साधनाको उनके प्रभाव तले खोलना या उसे विफल करनेका इससे अच्छा कोई दूसरा तरीका नहीं है। छोटे पैमानेमें मिथ्याभिमान, घमंड तथा राजसिक उग्रताके ये दोष प्रायः सभी मानव-स्वभावोंमें विद्यमान रहते हैं। ये भिन्न आकार ग्रहण कर लेते हैं, लेकिन फिर भी किसी सच्चे आध्यात्मिक परिवर्तनके लिये बहुत बड़ी बाधा बन जाते हैं।

अनाज्ञाकारिता और अनुशासनहीनता;
ये नवजीवन प्रदान करनेवाली तपस्याके मार्गमें बाधा देती हैं:

२—अनाज्ञाकारिता और अनुशासनहीनता। सत्ताका यह निम्नतर भाग हमेशा असंयत, अनियमित तथा स्वाग्रही होता है और वह अपने विचार तथा आवेगसे भिन्न किसी भी तरहके नियम-कानून और अनुशासनके आरोपणको स्वीकार करनेमें अनिच्छुक होता है। उच्चतर प्राण प्रकृतिपर सचमुच नवजीवन प्रदान करनेवाली तपस्या आरोपित करना चाहता है, उसके मार्गमें इसके दोष आरंभसे ही बाधा उत्पन्न करते हैं। आज्ञा और अनुशासनकी उपेक्षा करनेकी यह आदत इतनी प्रबल होती है कि यह जरूरी नहीं है कि वह सोद्देश्य हो; उसकी प्रतिक्रिया तत्क्षण, अदम्य और सहज प्रतीत होती है। इस भांति माताजीके प्रति आज्ञाकारी बने रहनेकी प्रतिज्ञा तो बार-बार की जाती है और उसका दावा भी किया जाता है लेकिन जो क्रिया की जाती है या जिस पथका अनुसरण किया जाता है वह बहुधा उस दावे या प्रतिज्ञाके एकदम विपरीत होता है। यह सतत अनुशासनहीनता साधनाकी मौलिक बाधा है और दूसरोंके लिये यथासंभव सबसे अधिक बुरा उदाहरण है।

कपटाचार और मिथ्याभाषण;
ये अपनी बनायी कीचड़में फंसे रहते हैं:

३—कपटाचार और मिथ्याभाषण। यह निम्न प्रकृतिकी अत्यंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हानिकारक आदत है। जो लोग ऋजु और निष्कपट नहीं हैं वे माताजीकी सहायतासे लाभ नहीं उठा सकते, क्योंकि वे स्वयं उससे मुंह मोड़ लेते हैं। जबतक वे परिवर्तित नहीं हो जाते, वे निम्न प्राणिक तथा भौतिक प्रकृतिमें अतिमानसिक प्रकाश तथा सत्यके अवतरणकी आशा नहीं कर सकते; वे अपनी ही बनायी कीचड़में फंसे रहते हैं और प्रगति नहीं कर सकते। बहुधा साधकमें केवल यही नहीं देखा जाता कि वह अतिरंजना या कल्पनाका मिथ्या प्रयोग करके यथार्थ सत्यपर रंग चढ़ा देता है बल्कि वह तथ्योंको स्पष्ट रूपसे अस्वीकार कर देता, उन्हें विकृत कर देता तथा मिथ्या रूप देकर छिपा देता है। ऐसा वह कभी-कभी तो अपनी अवज्ञा या क्रियाकी गलत तथा संदिग्ध प्रणालीको छिपानेके लिये करता है तो कभी अपनी पद-प्रतिष्ठाको बनाये रखनेके लिये करता है, कभी अपने ही तरीकेपर चलनेके लिये या कभी अपनी अभिरुचिकी आदतों या कामनाओंको प्रश्रय देनेके लिये करता है। अधिकतर जब मनुष्यमें इस तरहकी प्राणिक आदत होती है तो वह स्वयं अपनी ही चेतनाको धुंधला बना लेता है और वह जो कहता या करता है उसके मिथ्यात्वको बिल्कुल ही नहीं समझ पाता; लेकिन वह जो कुछ कहता या करता है, उसमें उसे इतना थोड़ा-सा बहाना करनेकी छूट देना भी एकदम असंभव है।

आत्म-समर्थन; यह परम सत्यको देखने या उसे जीवनमें उतारनेकी अनुमति नहीं देता :

निरंतर अपना समर्थन करनेकी खतरनाक आदत। जब यह साधकमें प्रबल हो जाती है तो उसे अपनी सत्ताके इस भागमें उचित चेतना तथा क्रियाकी ओर मोड़ना असंभव होता है क्योंकि प्रत्येक पगपर उसकी संपूर्ण तल्लीनता होती है अपने-आपका समर्थन करना। उसका मन अपने ही विचारको, अपनी ही पद-प्रतिष्ठाको या अपनी ही क्रिया-प्रणालीको बनाये रखनेके लिये तुरंत आ खड़ा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे वह किसी भी प्रकारका तर्क करके करनेके लिये तैयार रहता है, कभी-कभी तो वह एकदमसे भद्दा, मूर्खतापूर्ण या असंगत तर्क होता है जिसका वह एक क्षण पहले प्रतिवाद कर रहा होता है, वह किसी भी प्रकारका अयथार्थ विवरण दे देता है या कोई भी उपाय काममें ले आता है। यह सामान्य दुरुपयोग है लेकिन फिर भी चिंतनशील मनका दुरुपयोग है; लेकिन उसके अंदर यह अतिरंजित आकार ग्रहण कर लेता है और जबतक वह इससे चिपका रहता है तबतक उसके लिये परम सत्यको देखना या उसे जीवनमें उतारना असंभव होता है।

प्रकृतिकी इन कठिनाइयोंपर विजय कैसे पायी जाये :

प्रकृतिकी चाहे जैसी भी कठिनाइयां क्यों न हों; उनके साथ जूझनेकी प्रक्रिया चाहे जितनी लंबी और कष्टकर क्यों न हो, वे परम सत्यके विरुद्ध अंततक नहीं ठहर सकतीं, बशर्ते कि सत्ताके इन भागोंमें सच्चा भाव, सच्ची वृत्ति तथा सच्चा प्रयास हो या आ जाये। लेकिन अगर साधक आत्म-अहंकार स्वाग्रह या तामसिक जड़ताके कारण अपनी आंखें बन्द किये रखे या परम प्रकाशके विरुद्ध अपने हृदयको कठोर बनाये रखे तो जबतक वह वैसा करता रहेगा कोई भी उसकी मदद नहीं कर सकेगा। दिव्य परिवर्तनके लिये समस्त सत्ताकी स्वीकृति आवश्यक है और स्वीकृतिकी समग्रता तथा संपूर्णता ही सर्वांगीण समर्पणको लाती है। लेकिन निम्न प्राणकी यह स्वीकृति मात्र एक मानसिक स्वीकरण या कोई गुजरता हुआ भावनात्मक समर्थन नहीं होना चाहिये; इसे अपने-आपको एक स्थायी मनोभाव तथा सतत और संगत क्रियामें अनूदित करना चाहिये।

आवश्यक उद्यम; द्विविध जीवन नहीं :

इस योगको केवल वे ही अन्ततक कर सकते हैं जो इसके बारेमें पूरी तरहसे सच्चे हैं और अपने-आपको भगवान्‌में पानेके लिये अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुच्छ मानवीय अहंकार तथा उसकी मांगोंको समाप्त करनेके लिये तैयार हैं। इसे चंचलता या शिथिलताकी भावनासे नहीं किया जा सकता; कार्य बहुत ऊंचा और कठिन है, निम्न प्रकृतिमें विरोधी शक्तियां न्यूनतम अनुमति या लघुतम उद्घाटनका लाभ उठानेके लिये एकदमसे तत्पर रहती हैं, इसके लिये बहुत सतत तथा तीव्र अभीप्सा और तपस्याकी आवश्यकता होती है। यदि मानव-मनके विचार धृष्टतापूर्वक अपने-आपको प्रस्थापित करें या सत्ताके निम्नतम भाग अपनी मांगों, सहजवृत्तियों और दावोंकी मनमानी तुष्टि करना चाहें — सामान्यतः जिनका समर्थन मानव स्वभावके नामसे किया जाता है—तो यह योग नहीं किया जा सकता। अगर तुम अज्ञान-की इन निम्नतम वस्तुओंको भागवत परम सत्य या पथपर स्वीकार्य किसी निम्न कोटिके सत्यके साथ तादात्म्य करनेका हठ करो तो यह योग नहीं किया जा सकता। अगर तुम अपने पुराने रूप या उसकी पुरानी मानसिक, प्राणिक या भौतिक रचनाओं या आदतोंसे चिपके रहो तो यह योग नहीं किया जा सकता। तुम्हें निरंतर अपने पुराने रूपोंको पीछे छोड़ना पड़ता है और हमेशा उच्चसे उच्चतर सचेतन स्तरसे देखना, क्रिया करना और जीना होता है। अगर तुम अपने मानव मन या प्राणिक अहंकारकी "स्वतंत्रता"के लिये आग्रह करो तो यह योग नहीं किया जा सकता। जबतक मनुष्य साधारण जीवन बिताना चाहता है तबतक—अगर वह ऐसा करना पसंद करे—उसकी सत्ताके सभी अंगोंको यह अधिकार है कि वे अपने निजी तरीकेसे, अपने ही खतरों तथा संकटोंका सामना करते हुए स्वयं को अभिव्यक्त और संतुष्ट करें। लेकिन योग पथपर प्रवेश करनेकी बात दूसरी है, जिस पथका संपूर्ण उद्देश्य है इन मानवीय वस्तुओंके स्थानपर अधिक महान् सत्यके विधान तथा शक्तिको लाना और जिस-की पद्धतिका मर्म है भागवत शक्तिके प्रति आत्म-समर्पण करना। और फिर भी इस तथाकथित स्वतंत्रता—जो अमुक अज्ञानमय वैश्व शक्तियोंकी अधीनतासे बढ़कर और कुछ नहीं है—की मांग करनेका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ है विवेकशून्य विरोधमें रस लेना और द्विविध जीवन बितानेके अधिकारकी मांग करना।

दो चुनाव :

और फिर जो इस योगके साधक होनेकी घोषणा करते हैं अगर वे अपने-आपको हमेशा अज्ञानकी उन शक्तियोंके केंद्र, यंत्र या प्रवक्ता बनाये रखें जो इसके सिद्धांत तथा उद्देश्यका विरोध करती, इन्हें अस्वीकार करती और उनका उपहास करती हैं तो उनके लिये यह योग करनेकी और भी कम संभावना होती है। एक ओर है अतिमानसिक उपलब्धि, अतिमानसिक भगवान्‌की ऊपर छायी हुई और अवतरित होती हुई शक्ति, पृथ्वीपर अबतक उपलब्ध किसी भी सत्यसे कहीं अधिक परम सत्यका प्रकाश तथा शक्ति, यानी एक ऐसी वस्तु जो उस वस्तुके परे है जिसे क्षुद्र मानव मन और उसकी बुद्धि एकमात्र स्थायी वास्तविकताएं मानती है और जिसके यहांपर होनेवाले विकासके स्वभाव, पथ और प्रक्रियाका अनुमान मानव मन और बुद्धि नहीं कर सकती अथवा अपने अयोग्य साधनोंद्वारा देख नहीं सकती या अपने तुच्छ मानदंडोंसे उसका मूल्यांकन नहीं कर सकती; समस्त विरोधोंके बावजूद यह अतिमानसिक शक्ति भौतिक चेतना तथा जड़-भौतिक जीवनमें अभिव्यक्त होनेके लिये नीचेकी ओर दबाव डाल रही है। दूसरी ओर है अपने समस्त झूठे दम्भ, अज्ञान, अंधकार, मन्दता या अक्षम उग्रताके साथ यह निम्नतर प्राणिक प्रकृति जो अपने-आपको बनाये रखनेके लिये डटी हुई है, अवतरणके मार्गमें बाधक है, अतिमानसिक या अतिमानवीय चेतना और सृजनकी किसी भी सच्ची वास्तविकता या सच्ची संभावनामें विश्वास करना अस्वीकार करती है, या इससे भी अधिक मूर्खतापूर्ण बात यह है कि वह मांग करती है कि—यदि अतिमानसिक शक्तिका अस्तित्व है—तो उसे इसीके तुच्छ मानदंडोंके अनुरूप होना चाहिये, वह ऐसी प्रत्येक चीजको आतुरताके साथ पकड़ लेती है जो उसका खंडन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती प्रतीत होती है, वह भगवान्‌की उपस्थितिको अस्वीकार करती है—क्योंकि वह जानती है कि उस उपस्थितिके बिना कार्य असंभव है,—वह जोर-जोरसे अपने ही विचारों, निर्णयों, कामनाओं, सहज वृत्तियोंको प्रस्थापित करती है, अगर इनका खंडन किया जाय तो वह संदेह, अस्वीकृति, निन्दात्मक आलोचना, विद्रोह तथा अस्त-व्यस्तता-को फैला कर प्रतिकार करती है। आज हमारे सम्मुख ये दो चीजें हैं जिनमें प्रत्येक मनुष्यको चुनाव करना होगा।

चुनाव अनिवार्य है: सत्य या रसातल

क्योंकि यह विरोध, भागवत सत्यके अवतरणके विरुद्ध यह निस्सार बाधा और अवरोध हमेशाके लिये नहीं टिका रह सकता। प्रत्येक मनुष्यको अंतमें इस ओर या उस ओर, परम सत्यके पक्षमें या उसके विपक्षमें आना ही होगा। अतिमानसिक उपलब्धि निम्नतर अज्ञानके दुराग्रहके साथ-साथ नहीं बनी रह सकती; द्विविध प्रकृतिमें प्राप्त सतत संतुष्टिके साथ इसका कोई मेल नहीं बैठता।

—श्रीअरविंद

स्वतंत्रता बाहरी परिस्थितियोंसे नहीं, बल्कि आंतरिक मुक्तिसे आती है।

*

यहां हमारे लिये एक ही चीज महत्त्व रखती है। हम भगवान्‌के लिये अभीप्सा करते हैं, भगवान्‌के लिये जीते हैं, भगवान्‌के लिये काम करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद

श्रीअरविंद परम पुरुषके यहांसे धरतीपर एक नयी जाति तथा एक नये जगत्--अतिमानस--की अभिव्यक्तिकी घोषणा करने आये थे।

मनुष्य बीते कलकी सृष्टि है।

श्रीअरविंद आगामी कलकी सृष्टि--अतिमानसिक सत्ताके आने--की घोषणा करने आये थे।

श्रीअरविंद जगत्‌को भविष्यके उस सौंदर्यके बारेमें बतलाने आये थे जिसे चरितार्थ करना चाहिये।

वे उस भव्यताकी आशा ही नहीं, निश्चिति देने आये थे जिसकी ओर जगत् गति कर रहा है। जगत् एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना नहीं, एक अद्‌भुत वस्तु है जो अपनी अभिव्यक्तिकी ओर गति कर रही है।

--माताजी

श्रीअरविन्दः खलु परमेश्वरस्य विभूतिः यः धरामवतीर्णः नूतनजात्याः, नूतनविश्वस्य--अतिमानसस्य--अभिव्यक्तेः घोषणार्थम्।

मनुष्यः ह्यस्तनी सृष्टिः।

श्रीअरविन्दः श्वस्तनीं सृष्टिम्--अतिमानससत्तायाः आविर्भावं--घोषयितुमागतः।

श्रीअरविन्दः इमं लोकं तत् भावि सौन्दर्यं निबोधयितुम् अभ्यायातः यत् साधनीयम्।

सः तस्य भव्यसौन्दर्यस्य न केवलम् आशाम् अपि तु ध्रुवतां निष्पादयितुम् आगतः यत् प्रति लोकः प्रयाति। सृष्टिरियं न कापि अशुभा दुर्घटना, अद्‌भुता कृतिर्हि सा या प्रगच्छति निजाभिव्यक्तये।

--श्रीमाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

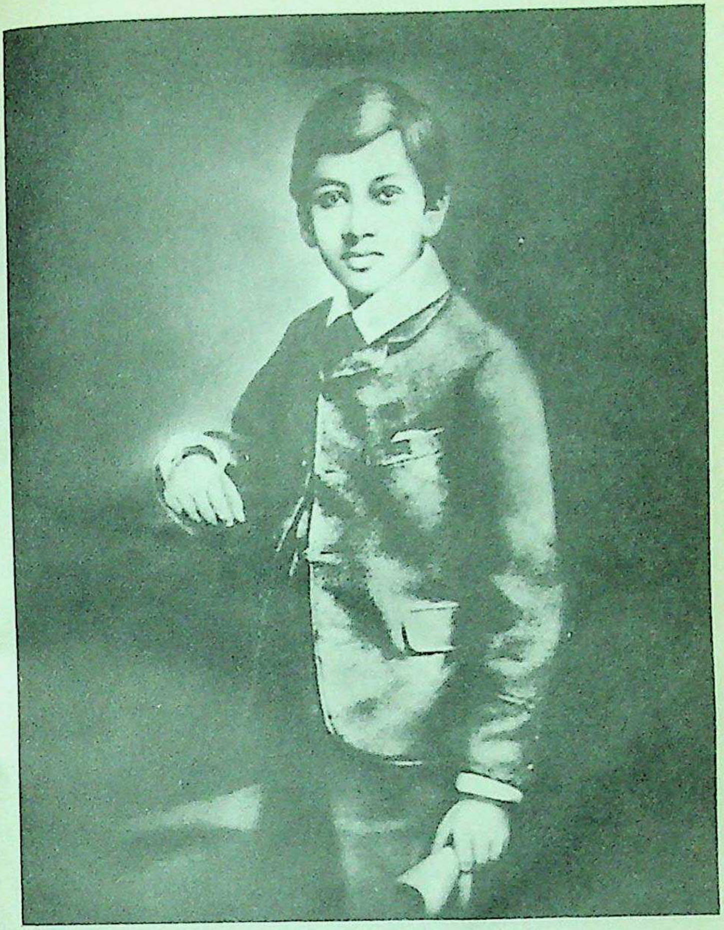

श्रीअरविंद सेंटपाल स्कूल, लन्दनमें (१८८८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक श्रीअरविंद, बड़ौदा (१९०६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम-विकास

प्रकृतिमें एक आरोहणकारी क्रम-विकास है जो पत्थरसे पौधेमें, पौधेसे पशुमें, पशुसे मनुष्यमें उठता है। चूंकि अभीतक मनुष्य आरोहणकारी क्रम-विकासके शिखरकी अंतिम सीढ़ी है अतः इस आरोहणमें वह अपने-आपको अंतिम अवस्था मान बैठता है और यह मानता है कि धरती पर उससे अधिक ऊंचा और कुछ नहीं हो सकता। यह उसकी भूल है। अपनी भौतिक प्रकृतिमें वह अबतक पूरी तरहसे पशु है, विचारशील और बोलनेवाला पशु, लेकिन फिर भी अपनी भौतिक आदतों और प्रवृत्तियोंमें है पशु ही। निस्संदेह प्रकृति ऐसे अपूर्ण परिणामसे संतुष्ट नहीं हो सकती; वह एक ऐसी सत्ताको प्रकट करनेके लिये उद्यमशील है जो मनुष्यकी तुलनामें वैसी ही होगी जैसा मनुष्य पशुकी तुलनामें है, ऐसी सत्ता जो अपने बाहरी रूपमें तो मनुष्य ही होगी लेकिन उसकी चेतना मन तथा अज्ञानकी उसकी दासतासे बहुत ऊंची उठ जायेगी।

श्रीअरविंद धरतीपर मनुष्योंको यह सत्य सिखानेके लिये आये थे। उन्होंने उनसे कहा कि मनुष्य केवल एक संक्रमणशील सत्ता है जो मानसिक चेतनामें रहता है, लेकिन उसमें एक नयी चेतना, सत्य-चेतना प्राप्त करनेकी संभावना है और वह पूरी तरह सामंजस्य-पूर्ण, शिव और सुन्दर, सुखी तथा पूर्णतः सचेतन जीवन जीनेके योग्य होगा।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव मुहूर्त

ऐसी घड़ियां आती हैं जब देव मनुष्योंके बीच विचरण करते हैं और हमारे जीवन-सलिलपर भगवान्का श्वास फैल जाता है; ऐसा भी समय आता है जब वे पीछे हट जाते हैं और मनुष्य अपने अहंकारकी सामर्थ्य या निर्बलतासे काम करनेके लिये छोड़ दिया जाता है। प्रथम कालमें थोड़ा-सा प्रयत्न करनेपर बड़े परिणाम पैदा होते हैं और भाग्य बदल जाता है; दूसरे कालमें जरासे परिणामके लिये बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। यह सच है कि दूसरा पहलेके लिये तैयारी कर सकता है, यज्ञका थोड़ा-सा धुंआ बनकर स्वर्गमें जा सकता है और वहांसे भगवान्की देनका आवाहन कर सकता है।

अभागा है वह मनुष्य या राष्ट्र जो भागवत मुहूर्तके आनेपर सोया हुआ रहे या उसके उपयोगके लिये तैयार न हो, क्योंकि उसके स्वागतके लिये दीया संजोकर नहीं रखा गया है और उसकी पुकार-की ओरसे कान बंद कर दिये गये हैं। पर कहीं अधिक अभागे हैं वे जो सशक्त और तैयार होते हुए भी, उस शक्तिका अपव्यय करते हैं और उस मुहूर्तका दुरुपयोग करते हैं, उनके भाग्यमें होती है पूरी न हो सकनेवाली क्षति या एक महान् विनाश।

भागवत मुहूर्तमें धो डालो अपनी अंतरात्मासे अपने-आपको धोखा देनेकी वृत्ति, ढोंगबाजी और झूठी आत्म-प्रशंसा ताकि तुम सीधे अंत:पुरुषको देख सको और उसकी पुकारको सुन सको। तुम्हारी प्रकृतिका कपट, जो पहले तुम्हें प्रभुकी दृष्टिसे तथा आदर्शकी ज्योतिसे बचाये हुए था, अब तुम्हारे कवचमें एक छेद बन जाता है और ऊपरसे प्रहारोंको निमंत्रण देता है। यदि क्षण भरके लिये तुम जीत भी गये, तो वह तुम्हारे लिये और भी बुरा है, क्योंकि प्रहार तो बादमें आयेगा ही और तुम्हारी विजयके समय भी तुम्हें पटक देगा। शुद्ध होकर झाड़ फेंको समस्त भयको; क्योंकि यह घड़ी प्रायः भयंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है, यह आग, बवण्डर और तूफानकी न्याई है और है रुद्रका तांडव नृत्य; परंतु जो इसमें अपने उद्देश्यकी सच्चाईके बलपर खड़ा रह सकता है वही खड़ा रहेगा—चाहे वह वायुके पंखोंपर उड़ भी क्यों न जाय, फिर भी वह जरूर वापिस आ जायगा। सांसारिक बुद्धिमत्ताको तुम अपने साथ अधिक कानाफूसी न करने दो, क्योंकि यह अप्रत्याशितकी, गणनातीतकी, अपरिमेयकी घड़ी है। भागवत श्वासकी शक्तिको अपने तुच्छ यंत्रोंसे न मापो, लेकिन विश्वास रखो और आगे बढ़ते चलो।

लेकिन सबसे बढ़कर, चाहे क्षण-भरके लिये ही क्यों न हो, अंतरात्माको अहंके कोलाहलसे मुक्त रखो। तब रातको अग्नि तुम्हारे आगे चलेगी और तूफान तुम्हारा सहायक होगा और तुम्हारी ध्वजा, जिस महानताको जीतना है उसके सबसे ऊंचे शिखरपर फहरायेगी।

—श्रीअरविंद

—*****—

यदि तू अत्यंत घृणित कीट तथा अत्यंत अधम अपराधीसे प्यार नहीं कर सकता, तो भला तू कैसे विश्वास कर सकता है कि तूने अपने अंतरमें भगवान्‌को स्वीकार कर लिया है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोगशाला

कहते हैं पशु एक जीवित प्रयोगशाला है जिसमें प्रकृतिने मनुष्य-को तैयार किया है। हो सकता है कि स्वयं मनुष्य एक ऐसी जीती-जागती प्रयोगशाला हो जिसमें और जिसके सचेतन सहयोगसे वह अतिमानव या देवको तैयार करना चाहती है। हम यह क्यों न कहें कि वह भगवान्‌को अभिव्यक्त करना चाहती है?

—श्रीअरविंद

उक्तं हि, पशुरयं ननु जीवत्प्रयोगशाला यत्र प्रकृत्या उपक्लृप्तो मानवः। अयं मानवोऽपि स्वयं भवितुमर्हति कापि मननशीला जीवत्प्रयोगशाला यस्मिन् यस्य च सचेतन-सहोद्योगेन सा (प्रकृतिः) अतिमानवम्, भगवन्तं ननु संसाधयितुं कृतसङ्कल्पा। अथ वा, कुतो न वाच्यं भगवन्तम् अभिव्यञ्जयितुमिति।

—श्रीअरविन्दः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

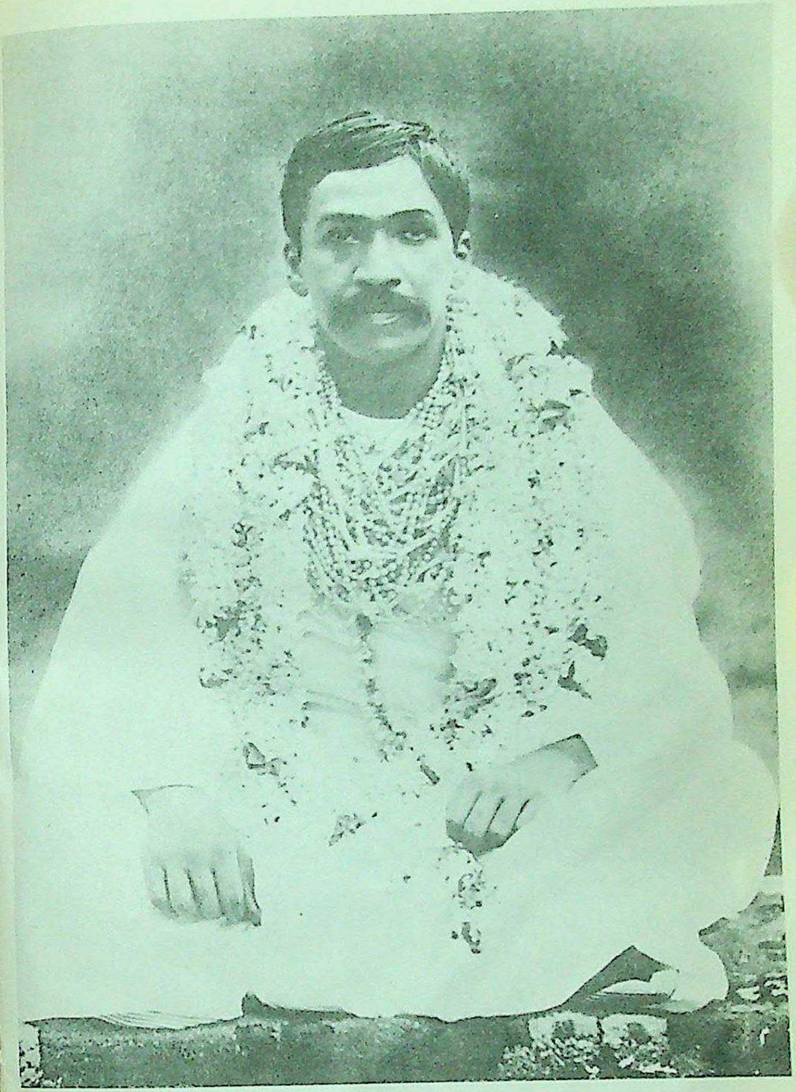

श्रीअरविंद कलकत्तेमें (१९०७)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

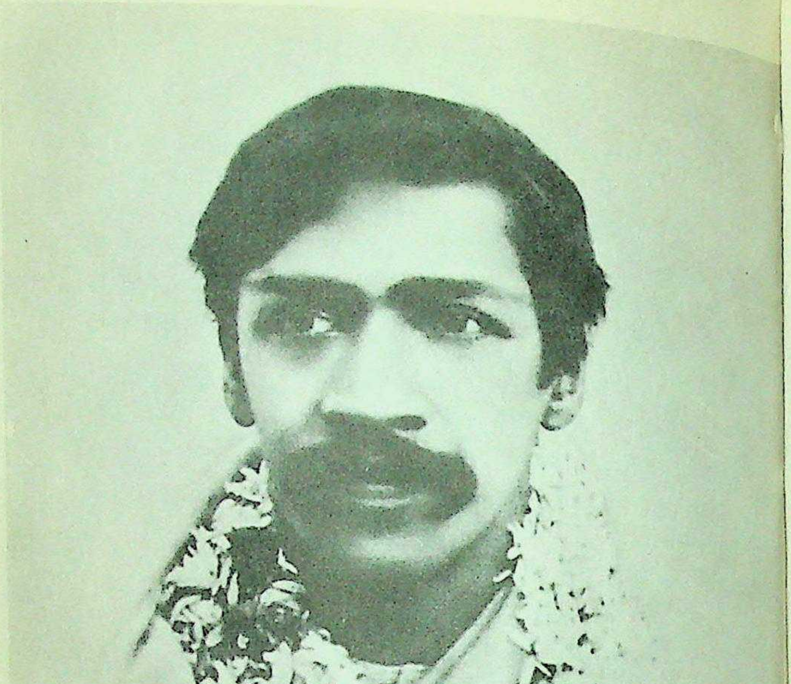

श्रीअरविंद अमरावतीमें (१९०८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य

मनुष्य अंतर्वर्ती सत्ता है; वह अंतिम नहीं है...।

मनुष्यसे हमारा मतलब है जीवंत शरीरमें बन्दी मन। लेकिन मन चेतनाकी उच्चतम संभव शक्ति नहीं है; क्योंकि परम सत्यपर मनका अधिकार नहीं है बल्कि वह तो उसका अज्ञानी जिज्ञासु है। मनके परे अतिमानस या चेतनाकी विज्ञानमय चेतना है जिसका सत्य-पर शाश्वत रूपसे अधिकार होता है। यह अतिमानस अपने स्रोतमें गतिशील चेतना है, अपनी प्रकृतिमें एक ही साथ और अविच्छिन्न रूपसे भागवत ज्ञाता और स्रष्टाकी अनंत प्रज्ञा और अनंत संकल्प है। अतिमन अतिमानव है; एक विज्ञानमय अतिमानवता वह अगला सुस्पष्ट तथा विजयी क्रम विकासात्मक कदम है जिसे पार्थिव चेतना-को लेना है।

धरतीके क्रम-विकासमें मानवसे अतिमानवकी ओर कदम ही आने-वाली अगली उपलब्धि है। यह अनिवार्य है क्योंकि यह एक ही साथ आंतरिक आत्माका अभिप्राय और प्रकृतिकी प्रक्रियाका तर्क है...।

अतिमानवत्व अपने स्वाभाविक चरम बिंदुतक पहुंचा हुआ मनुष्य नहीं है। मानव महानता, ज्ञान, शक्ति, बुद्धि, इच्छा, चरित्र, प्रतिभा, क्रियाशील शक्ति, साधुता, प्रेम, शुद्धि या पूर्णताकी श्रेष्ठतर अवस्था नहीं है। अतिमन एक ऐसी चीज है जो मानसिक मनुष्य और उसकी सीमाओंसे परे है, मानव प्रकृतिके लिये समीचीन उच्चतम चेतनासे अधिक महान् चेतना है।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगतिके लिये प्यास

. . . श्रीअरविंदको सर्वोत्तम श्रद्धांजलि हम यही दे सकते हैं कि हमारे अंदर प्रगतिके लिये प्यास हो और हम अपनी सारी सत्ताको उस भागवत प्रभावके प्रति खोल दें, श्रीअरविंद पृथ्वीपर जिसके संदेशवाहक हैं।

*

श्रीअरविंद अपनी उपलब्धिकी ओर आगे बढ़नेवाले भविष्य हैं। अतः हमें द्रुत प्रगतिके लिये आवश्यक शाश्वत यौवनको आसरा देना चाहिये ताकि हम रास्तेपर फिसड्डी न बन जायें।

*

पृथ्वीपर मनुष्योंके बीच भागवत परम कृपाकी मुक्तिदायिनी क्रियाके दो रूप हैं जो एक-दूसरेके पूरक हैं। ये दोनों रूप समान रूपसे आवश्यक हैं लेकिन इनका महत्त्व समान रूपसे नहीं समझा जाता।

परम अक्षर शांति जो दुश्चिंता, तनाव तथा दुःख-दर्दसे मुक्त करती है।

गतिशील सर्व शक्तिशाली प्रगति जो जंजीरों, बन्धनों और जड़तासे मुक्त करती है।

शांति तो समस्त विश्वमें समादृत होती तथा दिव्य मानी जाती है, लेकिन प्रगतिका स्वागत केवल वे ही लोग करते हैं जिनकी अभीप्सा तीव्र तथा साहसपूर्ण होती है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाई १९८७

हमें पूर्णताकी प्यास है।

...उस एकमात्र पूर्णताकी जिसमें पृथ्वीपर शाश्वत परम सत्यको अभिव्यक्त करनेकी शक्ति हो।

—माताजी

प्रगति मानव जीवनकी सार्थकताका हृदय है, क्योंकि इसका अर्थ है हमारा ज्यादा बड़ी और समृद्ध सत्तामें विकास। और ये युग उसपर जोर दे कर, हमें इसपर बाधित करके कि हम उसे अपना लक्ष्य और अपनी आवश्यकता मानें, एक निश्चल आत्म-संतोषकी मन्दता या स्थूल आनंदमें बने रहना असंभव बना कर पार्थिव जीवन-की अमूल्य सेवा करते और स्वर्गका रास्ता साफ करते हैं। बाहरी प्रगति उसके लक्ष्यका ज्यादा बड़ा भाग था और भीतरी प्रगति अधिक जरूरी है। लेकिन अगर बाहरीको छोड़ दिया जाय तो आंतरिक भी पूर्ण नहीं होता।

*

ऊपर उठो, स्वयंका अतिक्रमण करो, स्वयं बन जाओ। तुम मनुष्य हो और मनुष्यकी समस्त प्रकृति है अपने-आपसे अधिक बनना। वह मानव-पशु था, वह मानव-पशुसे ऊपर उठ गया है। वह चिंतक है, शिल्पी है, सौंदर्यको चाहनेवाला है। वह चिंतकसे अधिक बनेगा, वह ज्ञानका द्रष्टा बनेगा; वह शिल्पीसे अधिक बनेगा, वह अपने सृजनका स्रष्टा तथा प्रभु होगा; वह सौंदर्यके खोजीसे बढ़कर होगा क्योंकि वह समस्त सौंदर्य तथा आनंदका भोग करेगा।

इस अमर तत्त्वके लिये वह भौतिककी खोज करता है। अमर जीवन तथा अपनी सत्ताकी अनंत शक्तिके लिये वह प्राणकी खोज करता है; मानसिक तथा ज्ञानमें आंशिक वह समस्त प्रकाश तथा पूर्ण अन्तर्दर्शनकी खोज करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन वस्तुओंको प्राप्त करना अतिमानव बनना है; क्योंकि उसे मनसे निकलकर अतिमानवमें उठना है।

—श्रीअरविंद

*

"कालकी परवाह न करते हुए, देशके भयसे रहित होकर, अग्नि-परीक्षाकी ज्वालाओंसे शुद्ध पवित्र होकर, लहराते हुए ऊपर उठकर हम अपने लक्ष्यकी सिद्धि, अतिमानसिक विजयकी ओर बिना रुके उड़ते चलेंगे।"

—माताजी

एक कार्यक्रम

सरल बनो,
प्रसन्न रहो,
अचंचल रहो,
अपना काम अच्छे-से-अच्छी तरह करो,
अपने-आपको हमेशा मेरी ओर खुला रखो—
तुमसे बस इसीकी मांग की जाती है।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल बनो

जैसे ही किसी अभिव्यक्तिमेंसे समस्त प्रयासका लोप हो जाता है वह बहुत सरल बन जाती है, वैसी ही सरल जैसे कोई पुष्प बिना शोर-शराबे या प्रबल आवेगके सहज ही खिलता है तथा अपने सौंदर्यको अभिव्यक्त करता है और अपनी सुगन्ध फैलाता है। इसी सरलतामें महानतम शक्ति है, वह शक्ति जिसमें कम-से-कम मिलावट होती है और जो हानिकारक प्रति-क्रियाओंको कम-से-कम प्रकट करती है . . .।

सरलता, सरलता! तेरी उपस्थितिकी पवित्रता कितनी मधुर है! . . .

*

सृष्टिका एक विशेष पक्ष है—जो शायद बहुत आधुनिक भी हो सकता है—वह है अव्यवस्था तथा अस्तव्यस्तता, असामंजस्य और अस्तव्यस्ततासे बच निकलनेकी आवश्यकता: ऐसी अस्तव्यस्तता, ऐसी अव्यवस्था जो हर संभव रूप ग्रहण कर लेती है, जो संघर्ष, निरर्थक प्रयास, अपव्यय बन जाती है। यह उस स्तरपर निर्भर है जिसमें तुम हो, लेकिन भौतिक जगत्‌में, क्रियामें, इसका अर्थ है निरर्थक जटिलताएं, गलतफहमियां, घपला, अव्यवस्था। वेदमें इसे ही 'वक्रता' कहा जाता था—मुझे इस शब्दका पर्याय नहीं मालूम, एक ऐसी चीज जो विकृत है, जो सीधे लक्ष्यकी ओर जानेकी बजाय तेज तथा अनावश्यक टेढे-मेढ़े रास्ते लेती है। यह उस विशुद्ध भागवत क्रियाके सामंजस्यकी सबसे अधिक विरोधी वस्तुओंमेंसे एक है जिस भागवत क्रियामें सरलता है . . .

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथाकथित मानव बुद्धिकी समस्त जटिलताओंके ऊपर भागवत कृपाकी ज्योतिर्मय सरलता रहती है, और वह कार्य करनेको तत्पर है अगर हम उसे करने दें।

—माताजो

खुश रहो

प्रसन्न हृदय : हंसता हुआ, शांत, पूरा खुला, बिना किसी प्रतिच्छायाके।

भगवान्‌के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करनेका सबसे अच्छा तरीका है बस प्रसन्न रहना।

तुम्हें यह कभी न भूलना चाहिये कि तुम नाटकीय बननेकी अपेक्षा चुपचाप प्रसन्न रहकर ज्यादा सहायक बन सकते हो।

प्रसन्न रहनेकी कोशिश करो——तुम तुरंत प्रकाशके अधिक निकट होगे।

वर दे कि हम अपनी प्रसन्नता केवल भगवान्‌में ही ढूंढ़े।

वास्तवमें वह प्रसन्न है जो भगवान्‌से प्रेम करता है क्योंकि भगवान् हमेशा उसके साथ होते हैं।

परमोच्च प्रसन्नता है भगवान्‌के सच्चे सेवक बनना।

——माताजी

इस योगका उचित स्वभाव है सात्विक प्रसन्नता और स्थिरता और विश्वास...

यह (प्रसन्नचित्तता) चैत्यको कार्य करनेके लिये तुम्हें उचित अवस्थामें बनाये रखती है और इस बातको जाने बिना तुम आध्यात्मिक मनोवृत्तिके लिये एकदमसे उचित अंतर्दर्शन तथा उचित भाव विकसित कर लेते हो।

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचंचल रहो

जब मैं किसीसे कहती हूं, "अचंचल रहो," तो मेरा मतलब होता है: कोशिश करो कि तुम्हारे अंदर विक्षुब्ध, उत्तेजित, अशांत विचार न हों; अपने मनको अचंचल बनाये रखने और अपनी समस्त कल्पनाओं, अवलोकनों तथा मानसिक रचनाओंको एक वृत्तमें चक्कर काटते रहनेसे रोकनेका प्रयास करो . . .।

अब, हम तुरंत देखते हैं कि एक दूसरी अचंचलता भी है जो आवश्यक है, यहांतक कि उसकी बहुत अधिक आवश्यकता है—यह है प्राणिक अचंचलता यानी, कामनाका अभाव। केवल प्राण जब पर्याप्त रूपसे विकसित नहीं होता, तो जैसे ही उससे शांत-स्थिर रहनेके लिये कहा जाता है तो वह या तो सोने चला जाता है या फिर हड़ताल कर बैठता है; वह कहता है, "आह! नहीं। यह सब नहीं! मैं अब और आगे नहीं बढ़ूंगा। मुझे जिस पोषणकी आवश्यकता है, उत्तेजना, उत्साह, कामना, यहांतक कि आवेश आदि यदि तुम नहीं देते तो मैं हिलना-डुलना भी पसंद नहीं करता और अब मैं कुछ भी नहीं करूंगा।" तो यहां समस्या जरा ज्यादा नाजुक बन जाती है और संभवतः और भी अधिक कठिन; क्योंकि निस्संदेह, उत्तेजनामेंसे तमस्में जा गिरना प्रगतिसे बहुत दूर है! मनुष्यको तमस् या निद्राजन्य निष्क्रियताको कभी अचंचलता समझनेकी भूल नहीं करनी चाहिये।

अचंचलता बहुत भावात्मक स्थिति है; एक भावात्मक शांति है जो संघर्षकी विरोधी नहीं है—एक सक्रिय, संक्रामक, बलशाली शांति जो वशमें करती और शांत करती है, जो प्रत्येक वस्तुको यथास्थान रखती, व्यवस्थित करती है . . . सच्ची अचंचलता बहुत महान् शक्ति है, बहुत महान् बल है . . . और यह बात भौतिक क्षेत्र तकमें सच है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें बाहरी परिस्थितियोंमें अचंचलताको नहीं खोजना चाहिये, उसे अपने अंदरसे ढूंढ़ना चाहिये। सत्ताकी गहराईमें एक शांति है जो —अगर हम उसे अवसर दें तो—शरीरतक में वह समग्र सत्तामें अचंचलता उतार लाती है।

—माताजी

अपना काम अच्छे-से-अच्छी तरह करो

तुम चाहे जो कार्य करो, उसे जितना अच्छा कर सकते हो करो। यह भगवान्‌के प्रति मनुष्यकी उत्तम सेवा है।

काममें तुम्हारा आदर्श पूर्णतासे जरा भी कम न होना चाहिये और तुम निश्चित रूपसे भगवान्‌के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

संपादित कार्यकी पूर्णता उसकी राशि या उसके क्षेत्रकी विशालता-से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

तुमने जो काम हाथमें लिया हो उसमें सच्चे और निष्कपट बनो और भागवत कृपा तुम्हारी सहायताके लिये हमेशा उपस्थित होगी।

(किसी साधकको, उसके द्वारा उपेक्षित किसी कामके बारेमें:)

मैं तुम्हारी इस सफाईको स्वीकार करती हूं कि यह दुर्भावना नहीं बल्कि लापरवाही है। लेकिन मुझे तुम्हें यह बताना चाहिये कि मेरे लिये लापरवाही दुर्भावनाका सबसे बुरा रूप है; क्योंकि वह उस भागवत प्रेरणा तथा चेतनाके प्रति समर्पणकी अस्वीकृति है जो सतत सतर्कताकी मांग करती है।

प्रश्न—माताजी, क्या मैं भरसक आपकी सेवा करता हूं?

तुम मेरी भरसक सेवा करते हो लेकिन आगामी कलका तुम्हारा उत्तम तुम्हारे आजके उत्तमसे अधिक अच्छा होना चाहिये।

कार्योंमें, पूर्णताके प्रति अभीप्सा सच्ची आध्यात्मिकता है।

कुशल हाथ, यथार्थ सावधानी, सतत एकाग्रता हो तो तुम जड़-पदार्थको आत्माकी आज्ञा माननेके लिये बाधित करोगे।

—माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको हमेशा मेरी ओर खुला रखो

खुला रहना शक्ति और प्रभावको ग्रहण करने और प्रगतिके लिये उनका उपयोग करनेके लिये संकल्प है; परम चेतनाके साथ संपर्क बनाये रखनेकी सतत अभीप्सा है; यह श्रद्धा है कि शक्ति और चेतना हमेशा तुम्हारे साथ, तुम्हारे चारों तरफ, तुम्हारे अंदर हैं और तुम्हें बस इतना ही करना है कि उन्हें ग्रहण करनेके रास्तेमें किसी भी चीजको बाधक न बनने दो।

उद्घाटन चेतनाकी वह निर्मुक्ति है जिसके द्वारा वह भागवत प्रकाश तथा शक्तिकी क्रियाओंको अपने अंदर स्वीकार करना शुरू करती है।

*

मेरा प्रेम हमेशा तुम्हारे साथ है; अगर तुम उसका अनुभव न करो तो इसका कारण यह है कि तुम उसे ग्रहण करनेमें समर्थ नहीं हो। यह तुम्हारी ग्रहणशीलताकी कमी है और ग्रहणशीलता-को बढ़ाना चाहिये; क्योंकि इसके लिये तुम्हें अपने-आपको खोलना चाहिये और तुम अपने-आपको तभी खोलते हो जब **अपने-आपको** देते हो। निश्चय ही तुम भागवत प्रेम तथा शक्तियोंको न्यूनाधिक सचेतन रूपसे अपनी ओर खींचनेका प्रयास कर रहे हो। यह तरीका बुरा है। बिना लेखा-जोखा किये, बदलेमें किसी चीजकी आशाके बिना अपने-आपको दे दो और तब तुम ग्रहण करनेमें समर्थ होगे।

—माताजी

माताजीके प्रति खुले रहनेका अर्थ है हमेशा अचंचल, प्रसन्न तथा आश्वस्त रहना . . . उनकी शक्तिको अपने अंदर कार्य करने देना, अपना पथ-प्रदर्शन करने देना, तुम्हें ज्ञान देना, तुम्हें शांति तथा आनंद प्रदान करना।

*

माताजीमें विश्वाससे ही आवश्यक उद्घाटन आयेगा . . .

—श्रीअरविंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

O Lord, awaken in me an ardent desire to know Thee. I aspire that my life may be consecrated to Thy service.

The Mother

079507

Space donated by

Kooverji Devshi & Co., Pvt. Ltd.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Live in his Being, Shine with His Light,
Act with His Power, Rejoice with His Bliss."

The Mother

With Best Compliments from:

Auroplast India Limited

Manufacturers of HDPE/PP Circular Woven Sacks

Administrative Office:

77, 'ATLANTA', NARIMAN POINT, BOMBAY-400 021

Phones: 240277, 240367 *Telex:* 011-4104 AEPL IN

Gram: AUROSACK, BOMBAY

Works:

PLOT No. G. 1/3 MIDC AREA, BOISAR,
DIST. THANE MAHARASHTRA

Phones: 682, 491, 591 *Telex::* 132-219 APPL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A happy beginning
a good continuation
and no end —
an endless progression

14-5-57

New Horizon Sugar Mills (Pvt.) Ltd.

PONDICHERRY

Telegram : SAKAR
Phone : Town Office : 4280
Factory : 4423 4424

P.O. Box 29
Pondicherry
S. India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079507

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Foundation Chennai and eGangotri